ॐ अर्हं

शिवाचार्य

जीवन-दर्शन

प्रस्तुति :

शिरीष मुनि

(श्रमण संघीय मंत्री)

प्रकाशक :

भगवान महावीर मेडिटेशन एण्ड रिसर्च सेंटर ट्रस्ट

कुप्पकलां (पंजाब)

पुस्तक : शिवाचार्य जीवन दर्शन

प्रस्तुति : श्रमण संघीय मंत्री श्री शिरीष मुनि जी म.

सहयोग : श्रमण संघीय उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी म.

संपादक : विनोद शर्मा

प्रकाशक : भगवान महावीर मेडिटेशन एण्ड रिसर्च सेंटर ट्रस्ट,
आदीश्वर धाम कुप्पकलां, जिला संगरूर (पंजाब)

सहयोग राशि : चार सौ रुपए

प्रथम संस्करण : 30 अप्रैल 2006, अक्षय तृतीय के पावन प्रसंग पर

प्राप्ति स्थान : (1) भगवान महावीर मेडिटेशन एण्ड रिसर्च सेंटर ट्रस्ट
आदीश्वर धाम कुप्पकलां, जिला संगरूर (पंजाब)
: (2) श्री अनिल जैन, 1924, गली नं. 5, कुलदीप नगर,
लुधियाना, (पंजाब) फोन : 9417011298

मुद्रण व्यवस्था : कोमल प्रकाशन
c/o विनोद शर्मा, म.नं. 2088/5, गली नं. 19,
प्रेम नगर, नई दिल्ली, (निकट जखीरा)
दूरभाष : 011-55830064, 9810765003

आत्मने पद

महाप्राण गुरुदेव आचार्य डॉ. श्री शिव मुनि जी म. के संयमपूत जीवन को प्रकाश-पथ पर बढ़ रहे रोशनी के रथ की संज्ञा दें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। उनके जीवन में काव्य-सी सरसता है, उनकी वाणी में संगीत का स्वर बोलता है, उनके स्वर में ईश्वर का दर्शन होता है। उनका जीवन नंदनवन-सा पावन है, उनका वर्तन गंगाजल सा पवित्र है। उनकी वाणी मधुर-मधुर मंदाकिनी की तरह बहती है। ऐसा देखकर लगता है यह उनके व्यक्तित्व का अतिशय है या हमारी श्रद्धा!

महाप्राण गुरुप्रवर एक धर्मसंघ के आचार्य हैं। आध्यात्मिक नेतृत्व के विलक्षण गुण से महिमामंडित होने से आप के मार्गदर्शन में अध्यात्म अनुष्ठान के नव-नव प्रयोग हो रहे हैं। अब तक हमारा संघ सर्जनशील तो रहा है, तपस्वी रहा है, पर न जाने किन क्षणों में श्रमण संघ का संबंध ध्यान से टूट गया! इस सवाल का जवाब जानने के बजाय यह बात अब स्वयंसिद्ध है कि संघ ध्यानस्थ होकर आसन जमाए बैठा है। साधना की धारा को ध्यान की धरा पर बहाकर गुरुदेव ने श्रमण संस्कृति की ध्यान परम्परा को पुनर्जीवित किया है। इस तरह वे अप्रतिम ध्यानयोगी हैं।

श्वेताम्बर जैन परम्परा में पहली बार किसी स्कॉलर ने अपनी बात शास्त्र के आइने में रखी, यह श्रेय भी पूज्य गुरुदेव के पाणि-पद्मों को जाता है। उन्होंने जैन विद्या, साहित्य, संस्कृति, दर्शन और जीवन मुक्ति की अवधारणा पर पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त कर दुनिया को जैन दर्शन की सामयिक दृष्टि समझाई। इसके लिए भारतीय मनीषा पूज्य गुरुदेव को जैन विचारक के रूप में सदैव महत्व देती रहेगी। यह अलग बात है कि अब शोध और अनुसंधान की दिशा में बहुत ज्यादा प्रयास नहीं हो रहे हैं। फिर भी संघ और संघ के बाहर जितने शिक्षित संत हैं वे शिवाचार्य को सदैव अपना आदर्श मानते रहेंगे।

पूज्य गुरुदेव चतुर्विध तीर्थ को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में देखना चाहते हैं। उनका मानना रहा है कि शाश्वत बातों का सामयिक मूल्यांकन होना चाहिए। वे इस दिशा में हमेशा प्रयासरत रहे कि युग के अनुरूप आवश्यक परिवर्तन होने चाहिएं। परम्पराएं बदलती हैं, बदली जानी चाहिएं, नहीं बदलती हैं तो इसे स्वस्थ व्यवस्था नहीं कहा जा सकता है। हां, मर्यादाएं अपरिवर्तनीय होती हैं। पूज्य गुरुदेव इस दिशा में प्रयोगधर्मी कहलाने वाले युगप्रधान आचार्य हैं।

आगम ज्ञान और आगमानुसार संयमाचार के लिए गुरुदेव ने बृहद् प्रयोग किए

हैं। चाहे आगम संपादन का क्षेत्र हो, या स्वाध्याय का क्षेत्र हो, या प्रवचनों को आगम अनुकूल बनाने की बात कहकर संघस्थ मुनियों को आगम प्रवीण बनाने की प्रेरणा की बात हो। शिवाचार्य के इस रचनात्मक पक्ष को कैसे इतिहास अस्वीकार कर सकता है!

पूज्य गुरुदेव समन्वय के पक्षधर हैं। समन्वय उनके विचार में है, समन्वय उनकी भाषा में बोलता है, समन्वय उनके आचरण में डोलता है। उन्होंने हर मंच पर समन्वय का दर्शन प्रस्तुत किया। उन्होंने सभी दर्शनों को पढ़ा। जैन, सिख, बौद्ध संस्कृति को जितना करीब से गुरुदेव ने परखा वैसा अन्यत्र कोई उदाहरण मेरे देखने में नहीं आता है। चाहे मदर टैरेसा हो, चाहे शंकराचार्य हों, चाहे चर्च के पादरी हों, गुरुदेव के सभी धार्मिक प्रतिनिधियों के साथ मधुर सम्बंध रहे हैं। आपने हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई और पारसी मतवालों को अपनी बात समझाई और उनकी बात समझी। इससे अधिक और समन्वय का प्रयोगधर्मा आचार्य कौन हो सकता है ?

पूज्य गुरुदेव रचनात्मक धर्म में विश्वास रखते हैं। साधनात्मक धर्म के साथ सर्जनात्मक धर्म के आयोजन उनके नेतृत्व में संघ में शुरू हुए। चिकित्सालय, शिक्षालय और सेवालय खोले गए। रक्तदान, चक्षुदान एवं अर्थदान से समाज के पीड़ित वर्ग को राहत पहुंचाने के लोकोपकारी कार्य भी आप जैसे महान कर्मठ आचार्य के नेतृत्व में संपन्न हो रहे हैं। इस तरह से आहत को राहत पहुंचाने वाले आप एक मसीहा संत हैं। पूज्य गुरुदेव को इसलिए मानवता का मंत्रद्रष्टा ऋषि भी कहा जा सकता है।

बहुत वर्षों से सोच रहा था कि इस महान जीवन पर कलम चलाई जाए। चाहे प्रमाद कह लीजिए या अल्पज्ञता, या फिर इशारे-इशारे में गुरुदेव के द्वारा आज्ञा नहीं देना भी इस विलम्ब का कारण रहा। श्रद्धालु चतुर्विध संघ के कई प्रबुद्ध सहयोगियों द्वारा जब मुझे बार-बार उपालंभ मिले तो मैंने अपनी टूटी-फूटी भाषा में अपने गुरु का गुणगान किया है। यह उन सभी लोगों को भाएगा जिन्हें पूज्य आचार्य प्रवर भाते हैं। यह हमारे संघ का सौभाग्य है कि इनके जैसे ध्यानी, ज्ञानी, गुणी और अनुभवी संत के हाथ में नेतृत्व है। मुझे विश्वास है कि गुरुदेव के नेतृत्व में श्रमण संघ अविचल मंगल होगा। मैं अपने प्रयास के बारे में आश्वस्त हूं कि इसे गुरु गुणानुरागी पाठक पढ़ेगा। साहित्य के लिहाज से न मैंने इसे लिखा है न मैं इसके बहाने साहित्यकार कहलाना चाहता हूं। मेरी यह पहली कृति गुरु गुण गाथा के रूप में आई है इसे ही मैं अपना सौभाग्य समझूंगा। पाठकों को प्रेरणा का पावन प्रकाश मिले इसी सद्‌भावना के साथ–

–शिरीष मुनि

(श्रमण संघीय मंत्री)

भूमिका

अपने बारे में अपनी जुबान से कुछ बातें बयान करना चाहता हूं। मेरी अंतरंग इच्छा थी कि कोई ऐसा अवसर मिले जिसे मंच बनाकर मैं अपने बारे में आप लोगों से सीधी बातचीत कर सकूं। सद्भाग्य से यह अवसर मेरे आत्मप्रिय शिष्य श्रमण संघ के मंत्री सरल साधक शिरीष मुनि ने उपलब्ध करवा दिया। यह अवसर मेरी जीवन-यात्रा के पड़ावों, ठहरावों, आरोहों, अवरोहों, विवादों, विरोधों की मनसंवाद से जनसंवाद तक जो बातें पहुंची वे सच्चाई के आइने में कैसी हैं, इसे इस 'भूमिका' पर बैठकर आप साफ-सुथरे ढंग से समझ सकते हैं।

साधना के मार्ग में बढ़ते हुए मेरे मन में एक ही प्यास थी कि प्रभु महावीर की साधना क्या है? मैं कैसे वीतरागता को प्राप्त करूं? इसी उद्देश्य से मैंने मुनि दीक्षा ग्रहण की। यहां आकर साधना के मार्ग को खोजते हुए अनेक पड़ाव आये, उन्हीं पड़ावों में युवाचार्य एवं आचार्य पद भी पुण्य प्रताप से प्राप्त हुए। मैंने आचार्य द्वय की अन्तर पीड़ा का अनुभव किया था और आचार्य पद पर आने के बाद तीन वर्ष तक अनुभव किया। संयोग ऐसे बने कि उत्तरदायित्व के आधार पर मैंने कुछ निर्णय लिए, प्रकृति के संयोग में मुझे निमित्त बनन पड़ा। अब समझ में आ रहा है कि हम कर्त्ता नहीं हैं, हम केवल निमित्त हैं। धर्म-शासन के लिए यही आवश्यक होगा।

विवाद मेरी जिन्दगी का स्थायी कॉलम है। युवावस्था में अपने परिवर्तनवादी रवैये के कारण मुझे कभी-कभी विद्रोही साधक तक कहा गया। हां, मैं मर्यादाओं का, परम्पराओं का सम्मान करता हूं, पर प्रथाओं और रूढ़ियों से उपजे कर्मकाण्ड के प्रति नकारात्मक रहा हूं। मेरे दोनों आचार्य देव इस बारे में मेरी जिज्ञासाओं को लेकर हमेशा सहमत रहे। मैंने एक दो बार तो उनकी असहमतियों को अपने आचरण और अंतःकरण से स्वीकारा और स्वयं में परिवर्तन किया, स्वयं की सोच में परिवर्तन किया। मैं उन दोनों महापुरुषों के

प्रति श्रद्धावनत हूं कि उन्होंने मेरी परिवर्तन की प्यास को भी समझा, मुझे मर्यादित समझा, और मुझे मर्यादाएं समझाईं। मैं मर्यादाओं का पाठ अपने सहयोगियों की नकारात्मक कृपा से अब भी पढ़ रहा हूं। मर्यादा का सवाल मेरे लिए उनकी तरह ही सर्वोपरि है। मर्यादा के मुद्दे पर कोई टकराव नहीं है, पर मर्यादा की परिभाषा अपनी सुविधा के अनुसार नहीं, सब की सुविधा के अनुसार होनी चाहिए। स्वस्थ संवाद यानि सच्ची बहस के पक्ष में मैं अब भी हूं। इसके लिए मेरा कोई दुराग्रह नहीं, पर सामने वाले पक्ष को भी कोई पूर्वाग्रह रखकर मेरे बारे में नहीं सोचना चाहिए।

पूर्वाग्रह और दुराग्रह वे दुष्ट ग्रह हैं जो मन के आकाश को धूमिल करते हैं। मैं निवेदन करता हूं कि हम दुराग्रह मुक्त रहें, स्वभाव में जीएं, परभाव के प्रभाव में नहीं आएं। मैं नहीं समझता कि निर्ग्रन्थ बनने के बाद हमें किसी भी तरह की कोई असुविधा हो सकती है। मैं आचार्य के ऊपर अपने निर्ग्रन्थ को आसनायित करता हूं। मुझे विश्वास है कि एक समग्र दृष्टिकोण लेकर संघ, समाज रूपी चतुर्विध संघ मेरे नजरिए को समझने की कोशिश करेगा। मेरी जीवन यात्रा में जो उतार-चढ़ाव आए हैं उनको मैं साक्षी भाव से देखता हूं। आखिर हम सब छद्मस्थ हैं। श्रमण धर्म की साधना छद्मस्थ भाव से ऊपर उठाने का मंगल अनुष्ठान है। पर यह तो कोई दावा नहीं कर सकता कि मैं छद्मस्थ भाव से ऊपर उठ गया हूं। स्खलना, दोष किसी से भी, कहीं भी हो सकता है। हम परिस्थिति को मन:स्थिति पर हावी न होने दें यही मेरा अपना जीवन-दर्शन है।

मेरे सुयोग्य शिष्य शिरीष मुनि जी ने गुरु के जीवनवृत्त को इस पुस्तक में समेटा है। अपने बारे में प्रशंसा करना और अपनी निंदा करना दोनों बड़े जटिल काम हैं। मैं अपने ही बारे में कुछ कहूं कुछ लोगों की निगाह में यह बात ठीक नहीं होगी, पर यह सच्चाई है कि मैंने हर काम अपनी आत्मा को साक्षी रख कर किया है, इसलिए मेरा मूल्यांकन सच्चाई के आदम कद आइने के सामने खड़े एक श्रमण के रूप में किया जा सकता है। यह जरूरी नहीं कि वह सच्ची बात सबको अच्छी लगे। आखिर अच्छाई और सच्चाई के बीच एक झीना-बीना फर्क तो है ही।

शिष्य का काम गुरु का गुणकीर्तन करना है। शिरीष मुनि ने वह किया। शिष्य द्वारा गुरु के लिए यह सब कहना उपयुक्त ही होता है। पर देखना यह है कि जन श्रद्धा के दर्पण में मेरा जीवन कितना उपयोगी सिद्ध हुआ इसका

फैसला पाठक करेंगे। मेरे जीवन में जो कुछ श्रेष्ठ बना है वह श्रेष्ठ श्रमण धर्म के कारण बना है, मेरे जीवन में कोई एक भी सद्गुण उतरा है वह ज्ञान गुरु की कृपा का अमृत फल है, मेरे जीवन में जो प्रसिद्धि मिली है वह आचार्य त्रय (आत्म-आनन्द-देवेन्द्र) के आशीर्वाद का फल है। मेरे जीवन का कोई पक्ष यदि अभिनंदनीय है वह मुझे महान श्रमण संघ की श्रेष्ठ परंपराओं के निर्वहन से मिला है। इसलिए मैं अपनी जीवनी की सभी श्रेष्ठताओं को अरिहंत देव, शासन देव, शासन माता, आचार्य त्रय, गुरु और संघ के चरणों में समर्पित करता हूं। और मेरे जीवन में कोई दुर्बलता आई, किसी निर्णय के पीछे राग-द्वेष की किसी ग्रंथी ने काम किया तो एक निर्ग्रन्थ होने के नाते अपनी सारी कमियों और कमजोरियों को अपने खाते में डालता हूं। गुरु गुण-कीर्तन से आप अपने-अपने महान गुरु का गुण-कीर्तन करने की प्रेरणा लेंगे तो मेरा विश्वास है कि शिरीष मुनि की श्रद्धा महिमा मण्डित होगी।

मंगल मैत्री के साथ–

–शिव मुनि
(आचार्य श्रमण संघ)

सम्पादकीय

'शिवाचार्य जीवन दर्शन' नामक ग्रन्थ में जैन धर्म दिवाकर ध्यान-योगी आचार्य सम्राट् श्री शिव मुनि जी म. के जीवन और दर्शन की यथारूप प्रस्तुति हुई है। इसे पढ़कर पाठक शिवाचार्य के जीवन और दर्शन से परिचित होंगे तथा जानेंगे कि किस प्रकार एक मुमुक्षु आत्मा ने पहले स्वयं को साधना से तपाया, और उसके बाद विश्व- कल्याण के लिए स्वयं को समर्पित किया।

परम पूज्य शिवाचार्य का व्यक्तित्व क्षीरसागर के समान अगाध और आकाश के समान असीम है। उसे शब्दों की सीमा में समेट पाना संभव नहीं है। कह सकते हैं कि यह ग्रन्थ शिवाचार्य के अगाध-विशाल व्यक्तित्व की ओर इंगित-भर है। शिवाचार्य के समग्र जीवन-दर्शन को लिखने के लिए तो सैंकड़ों ग्रन्थ भी कम होंगे। फिर भी एक शिष्य ने अपने मन-महाकाश पर उभरे श्रद्धा और भक्ति के नील नक्षत्रों को शब्दों के सांचे में ढालने का स्तुत्य प्रयास किया है। युवा मनीषी श्रमणसंघीय मंत्री श्री शिरीष मुनि जी महाराज ने पूरी प्रामाणिकता से इस ग्रन्थ की रचना की है। इस ग्रन्थ की विशेषता यह है कि इसमें लेखक ने किंचित् मात्र भी अतिशयोक्ति को प्रवेश नहीं लेने दिया है। उन्होंने जैसा देखा और जैसा महसूस किया उसका अक्षरश: उल्लेख किया है।

पूज्य श्री शिरीष मुनि जी म. ने इस ग्रन्थ के लेखन के साथ साहित्यिक क्षेत्र में प्रवेश किया है। गुरु-गुणगाथा के रूप में उनका यह ग्रन्थ भाषा और भाव की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। जन्म से अद्यावधि पर्यंत पाठक स्वयं को शिवाचार्य के साथ यात्रायित अनुभव करता है। शिवाचार्य के जीवन में खिले-विकसे महान सद्गुण पाठक को मुग्ध बनाते हैं। संपादन के प्रसंग पर श्रद्धेय मुनिप्रवर ने मुझे स्मरण किया। इस महनीय ग्रन्थ के साथ जुड़कर मैं स्वयं को धन्य मानता हूं। असंख्य भव्य प्राणियों की तरह मुझ पर भी गुरुवर शिव का अनंत वात्सल्य-वर्षण हुआ है जो मेरे जीवन का सर्वोच्च निधान है।

आशा करता हूं कि पाठक एक महान आचार्य के जीवन-दर्शन को पढ़कर अपने जीवन में भी उन सद्गुणों को विकसित करेंगे जो श्रद्धेय शिवाचार्य की जीवन-धरा पर विकसित हुए हैं। इसी में इस ग्रन्थ और इसके रचयिता की सफलता निहित है।

–विनोद शर्मा

मंगल भावना

जैन शासन में रत्नत्रयी की आराधना का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसमें सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक चारित्र का एकांतवाद मान्य नहीं है। तीनों के समन्वय से मोक्ष का मार्ग बनता है।

जैन परंपरा में रत्नत्रय की विशिष्ट आराधना करने वाले आचार्यों और मुनियों की प्रलंब तालिका है। वर्तमान में अनेक जैन आचार्य और मुनि रत्नत्रयी की आराधना में संलग्न हैं। उनमें श्रमण संघ के आचार्य शिवमुनि जी का नाम उल्लेखनीय है। इनसे मेरा व्यक्तिगत संपर्क रहा है। निकटता से मैंने उनकी भावधारा को पढ़ा है। सन् 1985 में आचार्य तुलसी पाली में विराज रहे थे। प्रेक्षाध्यान का शिविर था। श्री शिवमुनि जी प्रेक्षाध्यान के शिविर स्थल पर आए, कुछ समय तक रहे। परस्पर विचार-विमर्श भी हुआ। मैंने उस समय श्री शिवमुनि जी में विनम्रता, ग्रहणशीलता और गुणग्राहकता–इस त्रिपदी का युगपत् अनुभव किया। वह अनुभव पुष्ट हो रहा है। यह अतिशयोक्ति नहीं है। एक पवित्र आत्मा की पवित्रता सतत बढ़ती जाए। हमारी मंगल भावना।

पंजाबी युनिवर्सिटी, पटियाला

3 अप्रैल, 2006

–आचार्य महाप्रज्ञ

मंगल संदेश

श्रमण संघ अनुशास्ता आचार्य सम्राट् श्री शिवमुनि जी म. जिनशासन के तेजस्वी नक्षत्र हैं। आपका व्यक्तित्व और कृतित्व विशाल और विराट् है। स्वाध्याय और ध्यान के क्षेत्र में आपका योगदान विशेष प्रशंसनीय है। परम पूज्य आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म. द्वारा व्याख्यायित आगमों को संपादित रूप में प्रकाशित कराके आपने आगम-स्वाध्यायिओं पर महान् उपकार किया है। आपका मौलिक साहित्य भी युग को नवीन चेतना और चिन्तन के नवीन क्षितिज प्रदान करता है।

ध्यान-साधना में आचार्यश्री की काफी रुचि है। आप अपना अधिकांश समय ध्यान साधना में अर्पित करते हैं। आप सामूहिक रूप से भी ध्यान शिविरों का आयोजन करते रहे हैं। सहस्रों लोगों ने आप द्वारा आयोजित शिविरों से शुद्ध धर्मध्यान का अनुभव किया है। ध्यान-साधना शिविरों द्वारा आपश्री विश्व मंगल का अभियान चला रहे हैं।

आचार्यश्री के 35वें दीक्षा वर्ष पर उनके सुशिष्य श्रमण संघीय मंत्री श्री शिरीष मुनि जी ने 'शिवाचार्य जीवन दर्शन' नामक ग्रन्थ की रचना द्वारा शिवाचार्य के साधनामय जीवन का अभिनंदन किया है। आचार्य श्री के दीक्षा दिवस पर हम भी उनकी महान साधना का अभिनंदन करते हैं एवं कामना करते हैं कि शिवाचार्य शतायु हों और अपनी साधना से जैन जगत को आलोकित करते रहें।

इन्हीं सदाकांक्षाओं के साथ--

-आचार्य सुभद्र मुनि

संदेश

यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता है कि आचार्य सम्राट् श्री शिवमुनि जी महाराज के 35वें दीक्षा दिवस के अवसर पर **'शिवाचार्य जीवन दर्शन'** शीर्षक से एक उपयोगी और प्रासंगिक पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस महत्वपूर्ण प्रकाशन के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

आचार्य श्री शिवमुनि जी महाराज के साथ हमारे अत्यंत आत्मीय और सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध हैं। जब-जब उनसे मिलना हुआ, उनके विचारों को पढ़ने का अवसर मिला एवं उनके व्यक्तित्व से रूबरू होने का अवसर प्राप्त हुआ, तब-तब ऐसा लगा कि वे अगाध ज्ञानी हैं और साथ ही साथ उनका ज्ञान उनके जीवन में घुलमिल गया है। उनका मन सरल एवं निर्मल है, जितने उनके विविध आयामी कार्य हैं, जितने वे ज्ञानी हैं, जितनी उनकी साधना है, जितना उनका तप है और जितनी उनकी उपलब्धियां हैं उतने ही वे सरल हैं, निर्ग्रंथ हैं एवं निर्भार हैं। उन्होंने न केवल जैन समाज की महान सेवा की है बल्कि समग्र भारतीय समाज को और विश्व मानवता को अपने महान व्यक्तित्व से अभिप्रेरित किया है। विशेषत: जैन आगमों के संपादन और प्रकाशन की दृष्टि से उनका उल्लेखनीय योगदान है।

आज जैन समाज को विश्वपटल पर स्थापित करने की जरूरत है। इस महान कार्य में आचार्य शिवमुनि जी के योगदान की विशेष प्रासंगिकता है। एक और महत्वपूर्ण कार्य धर्म के क्षेत्र में अपेक्षित है और वह है धर्म और विज्ञान का समन्वय। आचार्य शिवमुनि जी ने धर्म के साथ विज्ञान को जोड़ा है–धर्म का विवेक और विज्ञान की शक्ति के संयोग का नाम उन्होंने दिया है–भगवान महावीर मेडिटेशन एंड रिसर्च सेंटर ट्रस्ट। दर्शन, विवेचन, तर्क और विवेक को मानवीय संवेदना के साथ ग्रहण करने वाले आचार्य शिवमुनि ने ओजस्वी वक्ता एवं जनलेखक के रूप में अपने ज्ञान को इतना सहज बनाकर प्रस्तुत किया है कि श्रोता एवं पाठक को ग्रहण करने में कठिनाई न हो, उसे बोझ न लगे।

मैं आचार्य शिवमुनि के सुदीर्घ जीवन की एवं यशस्वी संतता की कामना करता हूं। शासनदेव से प्रार्थना करता हूं कि ऐसे परम ज्ञानी आचार्य का संपूर्ण जैन समाज को निरंतर और सक्रिय सान्निध्य, मार्गदर्शन और प्रेरणा प्राप्त होती रहे। हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

नोखा (राजस्थान) **–आचार्य श्रीमद् विजय नित्यानंद सूरीश्वर**

हार्दिक शुभकामनाएं

हम लोगों के लिए परम प्रसन्नता की बात है कि आचार्य सम्राट् श्री शिवमुनि जी महाराज के 35वें दीक्षा दिवस के अवसर पर **'शिवाचार्य जीवन दर्शन'** नामक ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है। इस महत्वपूर्ण प्रकाशन के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

आचार्य श्री शिवमुनि जी महाराज का जीवन और दर्शन संतता का विराट निदर्शन है। सातवें दशक में भी वे जिस सक्रियता एवं युवकत्व जैसी स्फूर्ति, ताजगी एवं कर्मठता को जी रहे हैं वह एक विलक्षण उदाहरण है। बालक, युवा और वृद्ध–आचार्य शिवमुनि तीनों अवस्थाएं एक साथ जी रहे हैं। एकांत चिंतन, सक्रिय ध्यान, प्रवचन के नियमित कार्य के साथ अंग्रेजी, हिंदी, संस्कृत, प्राकृत का अध्ययन, जैन दर्शन का मनन-संपादन। इस अनवरत चर्या का ही परिणाम है कि आचार्य शिवमुनि ने जहां आगम संपादन कार्य को गति दी वहीं करीब तीन दर्जन विभिन्न विधाओं की पुस्तकों का लेखन कर चुके हैं। जहां वे निरंतर साहित्य साधना में संलग्न हैं वहीं भगवान महावीर की वाणी को और जैन धर्म और दर्शन को विश्व-व्यापी बनाने के लिए प्रयासरत हैं।

आचार्य शिवमुनि जैन परंपरा के अद्वितीय शलाका पुरुष हैं और समग्र भारतीय मनीषा और चिंतन के प्रामाणिक व्याख्याता हैं। वे करुणार्द्र संत हैं, विश्वबधु हैं, युगद्रष्टा हैं, युगपुरुष हैं। उनकी समस्त रचनात्मक और सृजनात्मक ऊर्जा जहां गहन आत्मीयता से ओत-प्रोत है वहीं मानवीय मूल्यों से संप्रेरित और समलंकृत है। आचार्य शिवमुनि जहां अपनी संतता और साधना से उन्नत आध्यात्मिक जीवन जीते हुए स्वयं का कल्याण कर रहे हैं वहीं वे अपनी साधना को जनकल्याण में भी नियोजित कर रहे हैं। वे निरंतर समाज के नैतिक उत्थान एवं चारित्रिक उन्नयन की बात करते हैं तो लगता है कि वे समाज सुधारक हैं। एक तरह से वे समाज-सुधारक और अध्यात्म पुरुष दोनों के बीच समन्वय कायम किए हुए हैं जो उनकी संतता को नया आयाम देता है।

मै आचार्य श्री शिवमुनि के 35वें दीक्षा दिवस के अवसर पर उनके सुदीर्घ जीवन की एवं यशस्वी आध्यात्मिक जीवन की कामना करता हूं और शासनदेव से प्रार्थना करता हूं कि ऐसे महान आचार्य का संपूर्ण जैन समाज को निरतर और सक्रिय सान्निध्य, मार्गदर्शन और प्रेरणा प्राप्त होती रहे।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

नकोदर (पंजाब) **–आचार्य श्रीमद् विजय वीरेन्द्र सूरीश्वर**

संदेश

संतता के 35 वर्ष और वे भी निरंतर सक्रिय, सार्थक और बहुआयामी। आचार्य डॉ. शिवमुनि जी महाराज धन्य हैं जिन्होंने अपनी साधुता को सार्थकता में ढालते हुए 35 वर्षों का सफर पूरा किया है। वे इस दृष्टि से शतक पूरा करें, यही उनके प्रति मंगलकामना और शुभभावना है। 35वें दीक्षा दिवस के अवसर पर **'शिवाचार्य जीवन दर्शन'** नामक पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है, यह उस संत पुरुष एवं अध्यात्म के विराट व्यक्तित्व के प्रति भावांजलि का एक प्रेरक माध्यम है। इस तरह के उपक्रमों के माध्यम से हम महान पुरुषों के महान आदर्शों को जनता के सामने लाकर उन्हें आदर्श राहों पर अग्रसर करने का महान कार्य संपादित करते हैं। ऐसे महत्वपूर्ण प्रकाशन के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

आचार्य श्री शिवमुनि जी महाराज हमारे अपने हैं, आत्मीय हैं, और आध्यात्मिक सफर के पथिक हैं। इस समय वे जैन समाज के ही नहीं, बल्कि संपूर्ण भारत के और विश्व मानवता के ऐसे महान संत पुरुष हैं जिनकी आध्यात्मिक ऊर्जा से हर व्यक्ति संबल पाता है, समाधान पाता है और जीवन की सफल डगर पर अग्रसर होता है। किसी साहित्य पुरुष की पंक्तियां हैं कि कवि जितना स्वच्छ होता है, प्रतिबिम्ब उतना ही स्वच्छ होता है। इसी तरह मन जितना संवेदनाओं से भरा होता है अनुभूति उतनी ही गहन होती है। आचार्य शिवमुनि ने इसी स्वच्छ संवेदनशील मन से मानव जीवन की समस्याओं को देखा है, समझा है और उन्हें बहुमूल्य समाधान की दिशाओं तक पहुंचाया है।

मैं आचार्य श्री शिवमुनि के 35वें दीक्षा दिवस के अवसर पर उनके सुदीर्घ जीवन की कामना करता हूं और शासनदेव से प्रार्थना करता हूं कि ऐसे महान आचार्य का संपूर्ण मानवता को निरंतर सान्निध्य और पथदर्शन मिलता रहे।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

नकोदर (पंजाब)

16 फरवरी, 2006 **–आचार्य श्रीमद् विजय वसंत सूरीश्वर**

मंगल कामना

भारत देश अध्यात्म के लिए विश्व में पूजा जाता है। इस देश की मिट्टी को चंदन समझकर मस्तक पर लगाया जाता है। क्यों? क्योंकि इस पवित्र वसुंधरा ने महावीर और बुद्ध को जन्म दिया है, इसी मिट्टी में गांधी और विवेकानंद जन्मे हैं। यह भूमि सूर, तुलसी, कबीर की जन्मस्थली है। यह धरा मीरा, दादू, नरसी की है, इस देश की धरती संतों-सयानों की है, दिव्यात्माओं और पुण्यात्माओं की है। इसी दिव्य, अलौकिक और विलक्षण अध्यात्म परंपरा में आचार्य श्री शिवमुनि भी हैं जिन्होंने अपनी संपूर्ण आध्यात्मिक ऊर्जा से जाति, धर्म, वर्ण, भाषा के भेदभाव के बिना जन-जन का कल्याण किया है। वे जैन धर्म और दर्शन के, महावीर और महात्मा गांधी की परंपरा के ऐसे उज्ज्वल-प्रेरक प्रतीक हैं जिनके आसपास मानवता के कल्याण के ही कण विकीर्ण होते हैं। आचार्य शिवमुनि का जीवन चिंतन और सृजन, अहिंसा और अनेकांत का निकष और मानदण्ड है। उनका संपूर्ण रचना संसार विपुल और बहुआयामी है। जीवन का तत्त्व और यथार्थ उनके लेखन और विचार का धरातल है। अध्यात्म उनके चिंतन का क्षितिज है। आचार्य शिवमुनि शुद्ध, प्रबुद्ध प्रज्ञा और निर्मल चेतना के पर्याय हैं।

आम जन-जीवन एवं श्रद्धालुजनों पर आचार्य श्री शिवमुनि का विशेष प्रभाव है, वे गुणग्राही व्यक्तित्व हैं। अक्सर वे नैतिकता एवं चारित्रिक उन्नयन का जीवन जीने वाले अध्यात्म के पथिकों का प्रोत्साहन की भाषा में ही उत्साहवर्धन करते हैं। अभी हमने सुखी परिवार अभियान प्रारंभ किया। उनका निरंतर प्रोत्साहन मिल रहा है। हमारी पत्रिका श्री विजय इन्द्र टाइम्स के लिए भी उनकी शुभकामनाए समय-समय पर मिलती रहती हैं।

आचार्य श्री शिवमुनि में कल्पना और संकल्प का सुंदर समन्वय है। वे उन्नत समाज निर्माण के लिए नित नई कल्पनाओं को संजोते हैं और जल्दी ही वे कल्पनायें उनका संकल्प बन जाती हैं। संकल्पों को आकार देने के लिए वे पूरी जिजीविषा और पूरी ऊर्जा के साथ जुट जाते हैं। ऐसे संकल्प-पुरुषों से ही यह धरा धन्य बनी हुई है। आज उनके भीतर से जो ऊर्जा निकल रही है, वह ऊर्जा हजार गुना बढ़े और उस ऊर्जा से संपूर्ण मानवता का कल्याण हो, यही आचार्य शिवमुनि के 35वें दीक्षा दिवस के अवसर पर मेरी हार्दिक मंगलकामना है।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

नकोदर (पंजाब) **–गणिवर्य राजेन्द्र विजय**

16 फरवरी, 2006

Message

We experienced great pleasure in our first meeting and Satsang with Acharya Shreeji Shivacharyaji during their Dhyan Shivir at Koba, Jain Vishwa Bharati, Gandhinagar near Ahamdabad around five years back. The inner hearty desire of Veer-Shasan Vitrag approach and vision of Inner Soul Science understanding for one and all seemed to be guiding goal of Shivacharyaji.

Ever since our first satsang and meeting with Acharya Shreeji, we had great pleasure to meet again and again since then every year. We came to know well 'Acharya Shreeji's Jivan Darshan' and also found his inner straight forwardness and naturality of approach—basic tenets of Vitrag Marg and 'Divya Sangh Aachar Following'.

We are fully confident about wide and vast Inner Vision of Acharya Shreeji. We express our blessings from our Heart for the well-being of Acharya Shreeji and Sangh following the every one's inner bliss and peace for and in spreading Vitrag message to all.

With Best Compliments.

—Kanudadaji

SWARN SINGH BOPARAI
Kirti Chakra
*Awarded **Padma Shri** by the President*
Vice Chancellor
PUNJABI UNIVERSITY, PATIALA

हार्दिक बधाई

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई है कि आचार्य श्री शिवमुनि जी महाराज के 35वें दीक्षा दिवस के अवसर पर 'शिवाचार्य जीवन-दर्शन' एवं 'आत्मदीप' मासिक पत्रिका का एक विशेषांक प्रकाशित होने जा रहा है।

यह गौरव की बात है कि आचार्य शिवमुनि जी ने अपने मुनि जीवन के साथ-साथ पंजाबी युनिवर्सिटी के धर्म अध्ययन विभाग से 'भारतीय धर्मों में मोक्ष विचार' विषय पर शोध कार्य करके पी-एच. डी. उपाधि प्राप्त की थी और वर्तमान समय में वे श्री वर्द्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी संघ के चतुर्थ पट्टधर आचार्य हैं। मैं ध्यानयोगी आचार्य शिवमुनि जी के स्वास्थ्यपूर्ण लम्बे आयुष्य की कामना करता हूं एवं उन्हें इस मौके पर हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूं।

स्वर्ण सिंह

–स्वर्ण सिंह बोपाराय

संदेश

अर्हम् नमः

सौजन्य मूर्ति विद्वान् प्रभावक आचार्य श्री शिव मुनि जी महाराज के दीक्षा के 35 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में **'शिवाचार्य जीवन दर्शन'** और 'आत्मदीप' मासिक पत्रिका का विशेषांक प्रकाशित होने जा रहा है, यह जानकर अति प्रसन्नता हुई है।

आचार्य श्री से मेरा तो अल्प परिचय है, परन्तु उनकी सरलता, उदार स्नेह भावना, सौजन्यता आदि गुणों से मैं प्रभावित हूं। उनके द्वारा हो रही धर्म प्रभावना अनुमोदनीय है। जन-जन तक प्रभु महावीर की वाणी का उनका प्रचार कार्य भी सराहनीय है। अनुकंपा-जीवदया आदि शुभ कार्य जिनशासन के उनके द्वारा होते रहें, यही मेरी शुभकामना है।

संयम मार्ग में उत्तरोत्तर उनके आत्मा का विकास हो, उनका जीवन मंगलमय बने, यही इस शुभ अवसर पर मेरी मंगल भावना है।

जामनगर
(गुजरात)

–आचार्य पद्मसागर सूरि

हार्दिक शुभकामनाएं

आचार्य सम्राट् श्री शिवमुनि जी महाराज के 35वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में मेरी हार्दिक मंगलकामना है कि आपके शिवमार्ग प्रशस्त/ मंगलमय बनकर स्व-पर-विश्व के लिए भी 'सत्यं-शिवं-मंगलम्' बने। मेरी यह भी उदात्त भावना है कि-'विश्वकल्याणकारी, परम उदार, सर्वोच्च वैज्ञानिक, पवित्रमय जैन धर्म की एकता तथा विश्व शांति के लिए आपश्री श्रीसंघ सहित हमें अभी जैसे समर्थन दे रहे हैं इस से भी अधिक समग्र सहयोग हमें प्राप्त हो। आपके दीक्षा दिवस महोत्सव के उपलक्ष्य में हमारा यह शुभ-संदेश एवं शुभकामनायें हैं।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

परसाद
(राजस्थान)

-आचार्य कनक नन्दी

श्रमण संघ आचार्य सम्राट् :
मुनि शिव शोभित चौथे पाट!

('लावनीछंद' व 'ताटंक छंद')

–कविरत्न श्री चन्दन मुनि (पंजाबी)

महावीर, गुरु रूप मुनि जी, महामंत्र श्री नवकार।
पन्नालाल तपस्वी गुरुवर, कृपा करें ये मुझ पर चार।।
पावन पाल रहे हैं संयम, बत्तीसी आगम अनुसार।
डी.लिट. डॉ. शिवाचार्य की, महिमा का न कोई पार।।
'भाबू' वंश 'मलोट' नगर को, दुनिया में दमकाया है।
स्वर्गवासिनी मां 'विद्या' को, रोशन बहुत बनाया है।।
पिता 'चिरंजीलाल' स्वर्ग में, जाकर जो हैं गये विराज।
उनके भी उपकारों को न, भूल सकेगा जैन समाज।।
भाई 'राजकुमार' बड़े हैं, छोटे भाई 'विजयकुमार'।
जैन धर्म अनुयायी पक्का, सारे का सारा परिवार।।
मित्र विदेश घुमाकर लाये, गहरा और हुआ वैराग।
घरवालों के न-न करते, दिये जगत के सब सुख त्याग।।
'उगनी सौ बयाली' सन् में, जन्म यहीं पर पाया था।
मास 'सितम्बर' अष्टादश जग, फूला नहीं समाया था।।
'उगनी सौ बहत्तर' सन् जब, मई सतारह आई थी।
धूमधाम से जन्मनगर में, ही दीक्षा अपनाई थी।।
भरी हुई थीं गलियां सारी, भरे हुये थे सब बाजार।
जनता का इक सागर-सा ही, वहां रहा था ठाठें मार।।
महागुणी जब शिष्यरत्न ने, चरणन शीश झुकाया था।
पंडित गुरु श्री ज्ञान मुनि के, मन न मोद समाया था।।
पूर्व जन्म के पुण्यों से है, मति अति निर्मल पाई जी!
पहले, पीछे दीक्षा के की, भारी उच्च पढ़ाई जी!

चुस्त आपका संयम सबके, मन को भारी भाता है।
ध्यान साधना पर भी सबका, ध्यान बहुत ही जाता है।।
हाथी जैसे धीर बड़े हैं, सागर सम गंभीर बड़े।
कठिन परीषह सहने वाले, सचमुच ही हैं वीर बड़े।।
मात्र एक उपवास बहुत से, करने से भी डरते जी!
वर्ष हुये इक्कीस आपको 'वर्षीतप' पर करते जी!
वर्ष हुये दस पूरे जिनको, 'वर्षी तप' को धारे जी!
मंत्री श्री शिरीष मुनि हैं, शिष्य बड़े ही प्यारे जी!
'श्रीयश मुनि जी', 'शुभम मुनि जी', 'शमित' शशांक मुनीश्वर और।
सुव्रत मुनि 'सुगम' जी वक्ता, सेवाभावी भी हर तौर।।
शिष्य आपके छह ये प्यारे, दो प्रशिष्य हैं गहन गुणी।
'मुनि निशान्त' 'निरंजन मुनि' की, महिमा सबसे बहुत सुनी।।
उगनी सौ सत्तासी 'पूना', तेरह मई सुहाई थी।
'युवाचार्य' की पदवी प्यारी चार तीर्थ से पाई थी।।
'उगनी सौ निनानवें सन्', नौ-जून महीना आया था।
श्रमण संघ-आचार्य आपको, 'अहमदनगर' बनाया था।।
'सात मई' 'सन् दो हजार इक', दिल्ली अति हर्षाई थी।
लाखों ने आचार्य-पद की, चादर शुभ ओढ़ाई थी।।
श्रमण, श्रमणियां, श्रावक आदिक, झूम उठे थे लाखों लोग।
क्या बतलायें हर्ष-खुशी का, कैसा प्यारा था संयोग।।
पदयात्रा-पंजाब, हिमाचल, कर्णाटक, हरियाणा जी।
यू.पी., दिल्ली, दक्षिण भारत, महाराष्ट्र में जाना जी।।
उत्तरांचल, गुजरात गये फिर, देखा जाकर राजस्थान।
मध्यप्रदेश सुधारा प्यारा, अमृत जैसे दे व्याख्यान।।
वक्ता, लेखक व सम्पादक, विज्ञ, विचारक भारी जी।
'चन्दन मुनि' पंजाबी महिमा, लिखी जाय न सारी जी।।

गीदड़वाहा मण्डी (पंजाब)

शिवाचार्य के बाबा गुरुदेव
जैन धर्म दिवाकर जैनागम रत्नाकर
आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी महाराज

शिवाचार्य के गुरुदेव
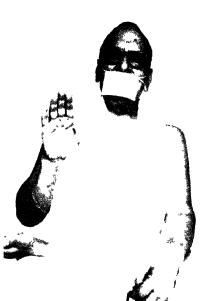
राष्ट्रसंत पंजाब केसरी महाश्रमण पूज्य गुरुदेव
श्री ज्ञान मुनि जी महाराज

श्रमण संघ के चार आधार-स्तंभ

आचार्य सम्राट
श्री आत्माराम जी म

आचार्य सम्राट्
श्री आनद ऋषि जी म

आचार्य सम्राट्
श्री देवेन्द्र मुनि जी म

आचार्य सम्राट्
श्री शिव मुनि जी म.

माता विद्यावती जी

उपाध्याय श्रमण श्री फूलचद जी
म० के सान्निध्य में सामायिक
करते हुए किशोर शिव कुमार
एव उनके अनुज विजय कुमार

युवा श्री शिवकुमार जी, एम ए की डिग्री के साथ

दीक्षापूर्व राजसी वेशभूषा में

युवा श्री शिवकुमार जी, अपनी तीनों विरक्त बहनों के साथ

प्रव्रज्या पर्व

दीक्षा पूर्व मंगल पाठ सुनते हुए
शिवकुमार जी, सतोष जी, निर्मला जी एवं सुमित्रा जी

ताया श्री बनारसी दास जी, पिता श्री चिरंजी लाल जी
दीक्षा की आज्ञा देते हुए

वायणा-धम्मकहा

उपा० श्रमण श्री फूलचंद जी म०सा०
से स्वाध्याय करते साधु, साध्वी एवं डॉ० शिवमुनि जी

खन्ना चातुर्मास में उद्बोधन देते
साधुरत्न डॉ० शिवमुनि जी, साथ हैं पूज्य श्री ज्ञानमुनि जी
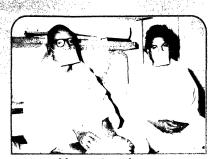
साधना के शिखर पुरुष पंजाब प्रवर्तक उपाध्याय श्रमण
श्री फूलचन्द जी म. के सान्निध्य में

आत्म जयंती पर आनंदाचार्य के साथ (1986 पूना)
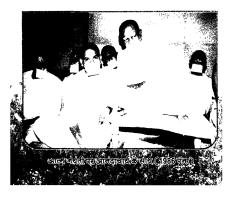
आनंदाचार्य का वात्सल्य-वर्षण (पूना प्रवास)

देवेन्द्राचार्य का स्नेह- वर्षण (नासिक)

भोले बाबा श्री रत्नमुनि जी म. के साथ

आनंद-दरबार

सेवा मेरा सुख है

युवाचार्य पदारोहण के समय आनंदाचार्य से
निर्देश लेते हुए

णमो संघस्स
(आचार्य-पदारोहण अहमदनगर में)

आचार्य-पद
चादर महोत्सव
7 मई 2001

उद्‌बोधन के क्षण

प्रसन्न मुद्रा में

अमृत वर्षा

मा पडिबंधं करेह

उद्‌बोधन के क्षण

ध्यान के क्षण

सृजन-स्वाध्याय
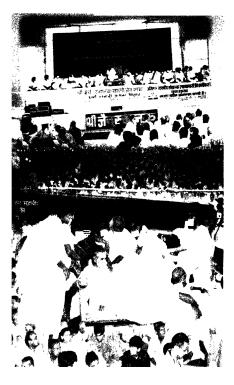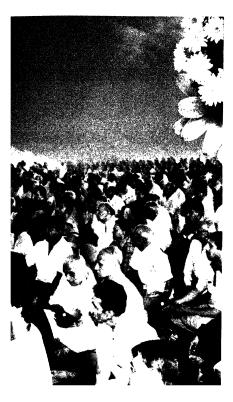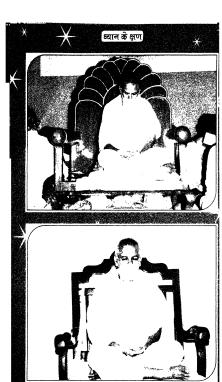
शिव-समवसरण

शिव-समवसरण

गुरुज्ञान के सान्निध्य में

जन्म जयंती पर गुरुदेव द्वारा आदर की चादर

पूज्य प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म. के साथ

उपाध्याय प्रवर श्री जितेन्द्र मुनि जी म.,
उपाध्याय प्रवर श्री रवीन्द्र मुनि जी म. एवं मंत्रीवर्य
श्री शिरीष मुनि जी म. के साथ उद्बोधन देते शिवाचार्य

लोकमान्य संत पूज्य प्रवर्तक श्री
रूपचंद जी म. के साथ

पूज्य प्रवर्तक श्री सुमन मुनि जी म.के साथ

अहमदनगर में तपस्वी श्री मगनमुनि जी, सेवाभावी श्री विनोद मुनि जी आचार्य भगवन् से वार्तालाप करते हुए

आनंद-जन्म शताब्दी समारोह में आचार्य भगवन् के साथ आदर्शऋषि जी, महेन्द्रऋषि जी, प्रशांतऋषि जी नेमिचंद जी, विनोद मुनि जी एवं सुयोगऋषि जी

विश्व केसरी श्री विमल मुनि जी म. एवं श्वे. आचार्य के साथ

आचार्य श्री चंदना जी के साथ

शिव संगीति
(जगरा ओं में श्रमणसंघीय सत्संग में श्रमण श्रमणियों के साथ)

शिवाचार्य द्वारा दीक्षा-मंत्र का दान

धर्मगुरुओं के साथ

आचार्य श्री विजय वीरेन्द्र सूरी के साथ

पन्यास श्री चन्द्र शेखर विजय जी के साथ

धर्मगुरुओं के साथ

अक्रम-विज्ञान प्रणेता कनुदादा के साथ

एस. एस. वाई. के फाउण्डर श्री ऋषि प्रभाकर जी के साथ

मदर टेरेसा के साथ

आर्ट ऑफ लिविंग के प्रणेता श्री श्री रविशंकर जी के साथ

धर्मगुरुओं के साथ

श्री शंकराचार्य जी एवं विभिन्न धर्माचार्यों के साथ

मनमाड़ में विभिन्न धर्मगुरुओं द्वारा स्वागत

राजनेताओं के साथ

पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के साथ

दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री श्री मदन लाल खुराना के साथ

राजनेताओं के साथ

जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री गुलाम नबी आजाद के साथ

केन्द्रीय मंत्री डॉ० कर्णसिंह के साथ

राजनेताओं के साथ

महाराष्ट्र के शिक्षामंत्री श्री सुरेशदादा जैन एवं दलुभाउ के साथ

केन्द्रीय वित्त राज्यमंत्री श्री पवन कुमार बंसल के साथ

राजनेताओं के साथ

राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के साथ

हरियाणा के राज्यपाल बाबू परमानंद के साथ

राजनेताओं के साथ

हरियाणा के तत्कालीन मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला के साथ

राकेश पांडे (मंत्री पंजाब सरकार) के साथ

आगम प्राप्त करते हुए केन्द्रीय मंत्री दिलीप गांधी

सांसद श्री सतपाल जैन के साथ

राजदूत एल.एम.सिंघवी से चर्चारत

हाईकोर्ट के जस्टिस एन.एन. कुमार को आशीर्वाद प्रदान करते हुए

आगम विमोचन

उत्तराध्ययन सूत्रम् का विमोचन करते हुए
श्री महेन्द्रपाल जी जैन एवं श्रीमती चांदरानी जैन

मालेरकोटला में श्री अन्तकृद्दशांग सूत्रम् का विमोचन
करते हुए प्रो. रत्न जैन एवं स्थानीय संघ के पदाधिकारी

आगम विमोचन

श्री आचारांग सूत्रम् का विमोचन करते हुए श्री हीरालाल जैन,
श्री नृपराज जैन, श्री रतनचंद जैन, श्री चमनलाल जैन, श्री बी० डी० जैन,
श्री चमनलाल जैन (सच्ची दुकान), श्री लाला नेमनाथ जैन,
श्री रतनचंद जैन (अध्यक्ष) एवं श्री राममूर्ति जैन।

भाबू - परिवार द्वारा
श्री स्थानांग सूत्रम् का लोकार्पण

शिष्य वृन्द के साथ शिवाचार्य

श्रमण संस्कृति का प्रतीक आदीश्वर धाम कुप्पकला

ध्यान मंदिर श्री सरस्वती विद्या केंद्र नासिक

प्रस्तुत ग्रंथ के लेखक श्रमण संघीय मंत्री
श्री शिरीष मुनि जी म. विभिन्न मुद्राओं में

नमन मुद्रा

ध्यान प्रशिक्षण-मुद्रा

आशीषदान मुद्रा

उद्बोधन-मुद्रा

सौजन्य

स्व. श्रीमती
सुमित्रा देवी जैन

श्री संदीप कुमार जैन

श्री पवन कुमार जैन

श्री राजकुमार जी जैन

श्रीमती मीनू जैन

श्रीमती रेनू जैन

सौजन्य

प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रकाशन श्रद्धाशील श्रावक श्री संदीप कुमार जी जैन एवं श्री पवन कुमार जी जैन ने अपनी आदरणीय मातुश्री सुमित्रा देवी जैन की पुण्य स्मृति में संपन्न कराया है। मातृ-भगवती श्रीमती सुमित्रा देवी जैन एक आदर्श श्राविका एवं धर्मप्राण सन्नारी थी। जैन धर्म के प्रति उनके हृदय में सुदृढ अनुराग भाव था। उनका समग्र जीवन सरलता, सज्जनता, सेवानिष्ठा आदि सद्गुणों की सुगंध से सुरभित था। उन्होंने अपने पुत्र पौत्र परिवार में भी इन सद्संस्कारों का विकास किया। एक दृढधर्मिणी श्राविका के जीवन आदर्शों का अनुगमन करते हुए माता जी ने 15 अप्रैल 2005 को अपनी जीवनयात्रा पूर्ण की।

श्री संदीप जी के पिता श्री राजकुमार जी जैन भी एक सरलमना और उदारहृदय श्रावकरत्न हैं। उल्लेखनीय है कि श्री राजकुमार जी परम पूज्य शिवाचार्य के बड़े भाई हैं। उनका जीवन भी पूज्य शिवाचार्य के समान ही सरल और विमल है।

श्री संदीप कुमार जी जैन एवं श्री पवन कुमार जी जैन आदर्श युवक हैं। आप सिरसा जैन संघ के अग्रगण्य श्रावक हैं। धार्मिक, सामाजिक एवं व्यापारिक क्षेत्र में आपने पर्याप्त सुयश अर्जित किया है। श्रीमती मीनू जैन (धर्मपत्नी श्री संदीप जैन) एवं श्रीमती रेणू जैन (धर्मपत्नी श्री पवन कुमार जैन) भी धर्मपरायण महिलाएं हैं। पूरे परिवार में पूज्य शिवाचार्य श्री के प्रति सुदृढ भक्तिभाव एवं जैन धर्म के प्रति अनन्य श्रद्धाभाव है।

श्री संदीप कुमार जी जैन श्री एस.एस. जैन महासंघ मंगलदेश के वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद पर रहते हुए समाजसेवा में समर्पित हैं।

प्रतिष्ठान :

मै० आदिनाथ ट्रेडर्स

कॉटन मर्चेन्ट एण्ड कमीशन एजेण्ट

34, न्यू एडीशनल मण्डी, सिरसा (हरियाणा)

दूरभाष : 01666-237705, 237739 (ऑ.)

237708, 237713 (निवास)

अनुक्रमणिका

●●●

नमन

वीर प्रभु महाप्राण, सुधर्मा जी गुणख्यान।
अमर जी युगभान, महिमा अपार है।
मोतीराम प्रज्ञावन्त, गणपत गुणवन्त।
जयराम जयवन्त, सदा जयकार है।।

ज्ञानी-ध्यानी शालीग्राम, जैनाचार्य आत्माराम।
ज्ञान गुरु गुणधाम, नमन हजार है।
ध्यान योगी शिवमुनि, मुनियों के शिरोमणि।
पूज्यवर प्रज्ञाधनी शिरीष नैया पार है।।

कथा

सत्यं शिवं सुन्दरम्

की

शिवाचार्य के स्वर में साधना का संगीत बजता है। उनके मौन में ध्यान का गीत रचता है। उनका अंत:करण उनके आचरण से ज्यादा पवित्र है। वे एक ऐसे श्वेताम्बर संत हैं जो दिगम्बर सत्य का कथन करते हैं। ऐसे महामनस्वी संत के जीवन की झील पर शब्दों को टहलाना किसी तीर्थयात्रा करवाने से कम नहीं है।

कथा सत्यं शिवं सुन्दरम् की

आचार्य श्री शिव मुनि जी मर्यादा में बंधा महासागर!
आचार्य श्री शिव मुनि जी कमलपत्रों पर तैरती ओस की बूंद!
आचार्य श्री शिव मुनि जी देह के गमले में चेतना का विशाल बरगद!
आचार्य श्री शिव मुनि जी श्रमण संस्कृति के अंतर्राष्ट्रीय धर्मदूत!
आचार्य श्री शिव मुनि जी सामाजिक-संचेतना के संवाहक!
आचार्य श्री शिव मुनि जी युग प्रवाह के विरोध में उठा क्रांति स्वर!

चिंतन, चेतना और चुनौती के प्रतीक क्रांतचेता किन्तु शान्त, सरल और तरल आचार्य श्री शिवमुनि जी का व्यक्तित्व पहाड़ की ऊंचाई से गिर रहे निर्झर का कलकल नाद है। वे युग प्रेरक और युग प्रभावक ही नहीं, बल्कि एक युगप्रधान आचार्य हैं। वे भले ही श्रमण संस्कृति से जुड़े हों पर वे समग्र मानवता को संबोधि का मंत्रदान प्रदान करने वाले मंत्रद्रष्टा महर्षि हैं। उनके स्वर में साधना का संगीत बजता है। उनके मौन में ध्यान का गीत रचता है। उनका अंत:करण उनके आचरण से ज्यादा पवित्र है। वे एक ऐसे श्वेताम्बर संत हैं जो दिगम्बर सत्य का कथन करते हैं। ऐसे महामनस्वी संत के जीवन की झील पर शब्दों को टहलाना किसी तीर्थयात्रा करवाने से कम नहीं है।

महाकवि कालीदास ने रघुवंश के गुणग्राम के लिए जब लेखनी उठाई थी तब उनके सामने एक यक्षप्रश्न था–

क्व सूर्य-प्रभवो वंशः क्व चाल्प-विषया मति?
तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्॥

कहां तो वह सूर्यवंश और कहां अल्प विषय को ग्रहण करने वाली मेरी बुद्धि? मानो अज्ञानवश मैं छोटी-सी नौका से विशाल समुद्र को पार करना चाहता हूं।

कलम संकुचाती है, साहस कांपता है, पर हृदय घट छलकने को उत्सुक है। गूंगे को गुड़ का माधुर्य आनंदित किए है, पंगु को सुमेरु के उत्तुंग स्वर्ण शृंगों के विहार का उल्लास जगा है।

पर सोचता हूं कि रस, छंद और शब्द के तल-अतल से सर्वथा अभिज्ञ मैं क्या उस महासंगीत को गुनगुना पाऊंगा?

ऐसे ही क्षण में आचार्य श्री मानतुंग ने कहा था-

वक्तुं गुणान् गुण-समुद्र! शशाङ्ककान्तान्!
कस्ते क्षमः सुरगुरु प्रतिमोऽपि बुद्ध्या।
कल्पान्त- काल- पवनोद्धत - नक्र - चक्र,
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्यां॥

हे अनन्त गुण सागर! हे शशी सम सौम्य प्रभु! जैसे कल्पांत काल में विकराल मगरों से भरे क्षुभित सागर को तैरना असंभव प्राय: है वैसे ही आपके अनंत गुणों का वर्णन करना असंभव है। स्वयं देवगुरु बृहस्पति भी आपके गुणों को कहने में समर्थ नहीं हैं।

अनन्त आस्थाओं के प्रतीक पुरुष श्रद्धेय शिवाचार्य भगवन् का जीवन भी असंख्य गुण-रत्नों से सम्पन्न विशाल क्षीरसागर के समान है। उन्हें देखकर दर्शक श्रद्धाभिभूत बन जाता है। तीर्थंकर महावीर की पट्ट-परम्परा के 94वें पट्टधर शिवाचार्य भगवन् के जीवन में ज्ञान, ध्यान और तपस्विता का अपूर्व संगम साकार हुआ है। जैसे सहस्रों सरिताएं सागर में आकर विलीन हो जाती हैं वैसे ही सद्‌गुणों की सहस्रों सरिताएं शिवाचार्य के विराट व्यक्तित्व में संल्लीन हुई हैं। विशाल जलराशि को धारण करके भी जैसे सागर अपनी गंभीरता का परित्याग नहीं करता है ऐसे ही आराध्य शिवाचार्य भगवन् असंख्य गुणों को धारण करके भी विशेष विनम्रता को प्राप्त हुए हैं। वे संसार के मध्य में रहकर भी जलकमलवत् संसार के ममत्वों से निर्लिप्त हैं। वे अद्‌भुत हैं, अनुपम हैं, अगाध, अक्षय और अनन्त हैं। कलिकाल के अवतारी पुरुषरत्न हैं।

वंश वृक्ष

आर्य सुधर्मा, आर्य जंबू आदि परम पुरुषों के परिचय आलेख आगमों के पृष्ठों पर उट्टंकित हैं। उनके परिचय क्रम में उनके लिए लिखा गया है-'कुल संपन्ने, जाइ संपन्ने'। वे कुल संपन्न और जाति सम्पन्न थे। कुल पिता से तथा जाति माता से सम्बन्धित होती है। व्यक्ति के जीवन पर उसके

कुल और जाति के संस्कारों का प्रत्यक्ष प्रभाव रहता है। उच्च कुल की प्राप्ति महती पुण्य का परिणाम होता है। आगम के आलेख इस तथ्य के साक्षी हैं। जिस आत्मा ने पूर्वजन्मों में महान् पुण्यों का उपार्जन किया है उसे ही उच्चकुल में जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त होता है।

हमारे आराध्य देव आचार्य भगवन् ने पूर्व जन्मों की पुण्य साधना के प्रतिफल के रूप में ओसवाल जाति के अन्तर्गत भाबू कुल में जन्म लिया। ओसवाल वंश जहां जन्म से ही लोरियों के गान के रूप में महामंत्र नवकार और तीर्थंकर देवों की स्तुतियां गूंजा करती हैं, जहां आत्मवत् सर्वभूतेषु, सत्यनिष्ठा, प्रामाणिकता और सच्चरित्रता की सुगंध सहज व्याप्त होती है, ऐसे महान कुल में श्रद्धेय आचार्य देव का अवतरण हुआ।

ओसवाल वंश का इतिहास

ओसवाल वंश का इतिहास काफी प्राचीन है। जोधपुर अंचल में स्थित 'ओसिया' नगरी से ओसवाल वंश का उदय हुआ। भगवान महावीर के निर्वाण की प्रथम शती के उत्तरार्द्ध में ओसिया नामक नगर एक समृद्ध राजधानी के रूप में प्रतिष्ठित था। वहां पर उप्पलदेव नामक राजा का शासन था। राजा चामुण्डा देवी का भक्त था। 'यथा राजा तथा प्रजा' उक्ति के अनुसार प्रजा भी बलिप्रथा आदि को धर्म मानती थी।

भगवान पार्श्व की परम्परा के आचार्य रत्नप्रभ सूरि के प्रभावशाली उपदेशों से प्रभावित होकर राजा और प्रजा ने संयुक्त रूप से बलिप्रथा आदि मिथ्यात्व का परित्याग किया। आचार्य श्री रत्नप्रभ सूरि का व्यक्तित्व इतना प्रभावक था कि उनकी प्राणवान् प्रेरणा से नरेश उप्पलदेव और समस्त नगरजनों ने मन: प्राण से जैन धर्म अंगीकार कर लिया। एक लाख चौरासी हजार लोगों ने जैन धर्म अंगीकार किया। उनमें सभी जातियों और वर्णों के लोग थे। जैन धर्म की विशुद्ध आराधना में आस्थाशील लोगों ने जातीय भेदभावों को तिलांजलि देकर परस्पर साधर्मी बन्धुत्व का सम्बन्ध बनाया।

ओसिया नगरी के होने के कारण वे लोग ओसवाल कहलाए। कालक्रम से यह शब्द उन लोगों के लिए जातिवाचक बन गया। जैन धर्म अंगीकार करने वाले ओसिया निवासियों में चारों ही वर्णों के लोग थे। इस तथ्य का सद्प्रभाव यह रहा कि ओसवालों में ब्राह्मणों की विद्वत्ता, वैश्यों की प्रामाणिकता, क्षत्रियों की वीरता और शूद्रों की सेवा-परायणता का सामूहिक विकास हुआ। ये गुण ओसवालों में आज भी सहज दृष्टिगोचर होते हैं।

लगभग चौबीस सौ वर्षों के कालखण्ड में ओसवाल जाति ने तीव्रता से उन्नति की। वर्तमान में देश के प्राय: प्रत्येक भाग में ओसवाल जाति के लोग रहते हैं। विदेशों में भी हजारों ओसवाल परिवार रहते हैं। विशेषता यह है कि इस जाति के लोग जहां भी गए, अपने मूल गुणों और विशेषताओं को अपने साथ ले गए। यही कारण है कि प्राय: सभी ओसवाल सत्यनिष्ठ और संपन्न हैं।

अवतरण

श्रद्धेय शिवाचार्य भगवन् ने इसी महिमा-मण्डित ओसवाल कुल में जन्म लिया। आपका जन्म 18 सितम्बर सन् 1942 के दिन रानियां (मलौट) मण्डी में हुआ। प्राची में सूर्य के उदय से जैसे भूमण्डल पर प्रकाश का प्रसार और जीवन की गूंज का विस्तार होता है वैसे ही शिशु शिव के जन्म से सब ओर मंगल और आनन्द का प्रसार हुआ। परिजनों और पुरजनों में उत्साह और उल्लास उतर आया। सर्वत्र उमंग फैल गई। पुण्यवान् के अवतरण से सर्वत्र हर्ष का संचार होता है, यह एक व्यावहारिक सत्य के साथ-साथ शास्त्रीय सत्य भी है।

शास्त्रीय सूत्र साक्षीमान हैं कि पुण्यवानों का अवतरण स्व-पर कल्याण का मूल होता है। वही मूल कारण अव्यक्त रूप से परिचित और अपरिचित, अपनों और परायों में सहज हर्ष को जगा देता है।

वर्धमान के अवतरण पर कुण्डलपुर और अन्य जनपदों में इसलिए खुशियां नहीं मनाई गईं कि वर्धमान राजकुल में पैदा हुए थे। वर्धमान के पुण्य प्रकर्ष और उनके भीतर निहित विश्व कल्याण की अव्यक्त संसूचनाओं ने सृष्टि के कण-कण में उमंग को जगा दिया था। दिव्य लोकों के निवासियों से लेकर पृथ्वी तल के क्षुद्र जंतुओं तक में उस क्षण अपूर्व हर्ष उतर आया था।

श्रद्धेय शिवाचार्य भगवन् का अवतरण भी पास-पड़ौस और दूर-दराज के लोगों के लिए सहज हर्ष का कारण बना। हर्षित परिजनों-पुरजनों में उस क्षण कोई नहीं जानता था कि यह नवजात शिशु एक दिन अखिल भारतीय श्री वर्धमान स्था. श्रमण संघ का सिरमोर और अर्हत् शासन का युगप्रधान आचार्य होगा, परन्तु प्रत्येक के हृदय में यह सुदृढ़ विश्वास अवश्य निर्मित हुआ था कि यह शिशु महान् पुण्यों का पुञ्ज लेकर जन्मा है और भविष्य में महान पुरुष बनेगा।

पारिवारिक परिवेश

विशुद्ध अध्यात्म की बात करें तो वहां परिवार-परिवेश का कोई मूल्य नहीं है। वहां तो संयम का मूल्य है, उस सुगंध का मूल्य है जो उस पारिजात से प्रगट हुई है।

श्रद्धाधार शिवाचार्य भगवन् के पारिवारिक परिचय के क्रम में सर्वप्रथम उनके दादाजी श्री मायाराम जी का नाम हमारे समक्ष आता है। घर में रहकर साधुओं जैसे विचारों से सम्पन्न श्री मायाराम जी मलौट नगरी के एक सुप्रतिष्ठित व्यक्तित्व थे। भाबू गोत्रीय श्री मायाराम जी की जैन समाज के साथ-साथ पूरे नगर में प्रतिष्ठा थी। नगर-जन उन्हें अपना हितैषी, परामर्शदाता और सच्चा मित्र मानते थे। श्री मायाराम जी स्वभाव से बड़े ही उदार थे। अभावग्रस्तों के लिए उनका द्वार सदा खुला रहता था। मलौट नगर के वृद्ध जन साक्षी हैं कि श्री मायाराम जी के द्वार से कभी किसी जरूरतमंद को निराश लौटते नहीं देखा गया।

उदारता के साथ-साथ श्री मायाराम जी के मन: प्राण में जैन धर्म के संस्कार कूट-कूट कर भरे थे। सामायिक-संवर की उनकी निष्ठा अद्‌भुत थी। साधुओं और साध्वियों की नियमित सेवा में वे संलग्न रहते थे।

व्यापारिक क्षेत्र में श्री मायाराम जी अपनी मिसाल स्वयं थे। उनकी प्रामाणिकता और सत्यनिष्ठा की लोग शपथें तक लिया करते थे।

श्री मायाराम जी के एक सहोदर थे—श्री शादीलाल जी। श्री शादीलाल जी के जीवन में उनके भाई श्री मायाराम जी के समस्त सद्‌गुण मौजूद थे। विशेषता यह थी कि उनका व्यावहारिक ज्ञान काफी प्रौढ़ था। भाबू कुल के इस परिवार में वंश-बेल श्री मायाराम जी से विकसित हुई, पर उस वंश बेल को आचार, विचार और अनुशासन के खाद-पानी से श्री शादीलाल जी ने सिंचित और पल्लवित किया।

धर्मप्राण श्रीयुत श्री मायाराम जी के दो पुत्र और छह पुत्रियां हुईं। बड़े पुत्र का नाम बनारसी दास एवं छोटे पुत्र का नाम चिरंजीलाल रखा गया। छह पुत्रियों के नाम क्रमश: इस प्रकार रखे गए—(1) विद्यावती (2) केसर देवी (3) सीता देवी (4) दुर्गा देवी (5) चम्पादेवी एवं (6) शकुंतला देवी।

यह सहज सिद्ध है कि माता-पिता के संस्कार स्वाभाविक रूप से संतानों में भी विकसित होते हैं। धर्मप्राण श्री मायाराम जी के समस्त सद्‌संस्कार उनकी संतानों में भी विकसित हुए। श्री बनारसी दास जी ने एक व्यवहारकुशल,

व्यापारकुशल और प्रामाणिक व्यक्तित्व के रूप काफी सुयश अर्जित किया। उनके दो सुपुत्र हुए-श्री कृष्ण कुमार जी एवं श्री सुभाष कुमार जी।

श्री मायाराम जी के लघुपुत्र श्री चिरंजीलाल जी साधु स्वभाव के व्यक्ति थे। उनकी सरलता, निष्कपटता और सच्चरित्रता की सुगंध सर्वत्र व्याप्त हुई। उनका समग्र जीवन धार्मिकता से ओत-प्रोत था।

श्री चिरंजीलाल जी का विवाह रानियां निवासी श्री प्रभुमल जी की सुपुत्री विद्यादेवी के साथ संपन्न हुआ। श्रीमती विद्यादेवी एक आदर्श नारी थी। करुणा, मृदुता, वात्सल्य, सेवा परायणता आदि नारी सुलभ समस्त गुणों से उनका जीवन सुरभित-कुसुमित था।

धर्मप्राण श्री चिरंजीलाल जी जैन एवं वात्सल्यमूर्त्ति श्रीमती विद्यादेवी जैन के तीन सुपुत्र एवं चार सुपुत्रियां हुईं। सुपुत्रों के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं-(1) श्री राजकुमार जी जैन (2)श्री शिव कुमार जी (जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् श्री शिव मुनि जी महाराज) एवं (3) श्री विजय कुमार जी। पुत्रियों की नामावली का क्रम इस प्रकार है-(1) पुष्पा जैन (2) निर्मला जी (तपस्विनी श्री निर्मला जी महाराज), (3) शुक्ला जैन एवं (4) प्रवीण जैन।

परम पुण्यात्मा श्री चिरंजीलाल जी एवं श्रीमती विद्यादेवी जैन की सात संतानों में से दो संतानों ने श्रामणी प्रव्रज्या अंगीकार कर अपने कुल को गौरवान्वित किया। पुत्रों में से द्वितीय पुत्र श्री शिव कुमार जी ने पंजाब केसरी गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज के चरणों में दीक्षा धारण कर अपने ज्ञान, ध्यान एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व से श्रमण संघ में शीर्ष पद प्राप्त किया तथा पुत्रियों में से द्वितीय पुत्री निर्मला जी ने संयमप्राण महासाध्वी श्री कौशल्या जी महाराज से दीक्षा अंगीकार की। श्री निर्मला जी महाराज ने एक तपस्विनी महासाध्वी के रूप में जैन जगत में प्रभूत सुयश अर्जित किया है।

श्रद्धेय शिवाचार्य के अग्रज श्री राजकुमार जी एवं अनुज श्री विजय कुमार जी ने श्रावक वृत्ति का अनुगमन करते हुए गृहीधर्म अंगीकार किया। श्री राजकुमार जी के दो पुत्र हैं-श्री संदीप कुमार जी एवं श्री पवन कुमार जी। इस परिवार का व्यापारिक, सामाजिक और धार्मिक जीवन सर्वभांति समृद्ध है। श्री संदीप जी वर्तमान में सिरसा श्री संघ (हरियाणा) के अध्यक्ष हैं।

श्री विजय कुमार जी सरल-विमल व्यक्तित्व के धनी हैं। आपका सामाजिक, व्यापारिक और धार्मिक जीवन पर्याप्त समृद्ध है। आपके पुत्र का नाम अभिषेक जैन है।

धर्मप्राण माता-पिता की तीन सुपुत्रियों में से प्रथम सुपुत्री पुष्पा जैन का विवाह सरदूलगढ़ (पंजाब) निवासी श्री नेमचंद जी जैन के साथ संपन्न हुआ। श्रीमती पुष्पा जैन एक आदर्श महिला हैं। समृद्ध घर की स्वामिनी होकर भी उनकी तप:रुचि अत्यंत ऊंची है। उन्होंने अपने जीवन में कई मासखमण भी किए हैं।

श्रीमान नेमचंद जी सरदूलगढ़ श्री संघ के एक प्रतिष्ठित श्रावक हैं। आपकी धर्मरुचि और दानवीरता विशेष प्रशंसनीय है।

द्वितीय पुत्री शुक्ला जैन का विवाह मण्डी डबवाली के युवकरत्न श्री महेन्द्र जैन से हुआ। यह परिवार भी धार्मिक संस्कारों से संपन्न तथा सुसमृद्ध है। तृतीय पुत्री प्रवीण जैन का विवाह लुधियाना निवासी श्री अनिल जैन से संपन्न हुआ। श्रीमती प्रवीण जी एवं श्री अनिल जी आदर्श पति-पत्नी हैं। इनका पूरा परिवार उदार और धर्मरुचि संपन्न है।

पारिवारिक परिचय क्रम में चरितनायक के ननिहाल पक्ष का संक्षिप्त परिचय भी अपेक्षित है। श्रद्धेय चरितनायक के नाना जी और मातेश्वरी श्रीमती विद्यादेवी जी के पूज्य पिता श्रीयुत् प्रभुमल ही रानियां नगरी के सुप्रतिष्ठित व्यापारी और धर्मात्मा व्यक्ति थे। उनकी धार्मिकता का प्रभाव उनके पूरे परिवार में देखने को मिलता है। उनकी सुपुत्री विद्यादेवी जैन के जीवन पर भी उनके संस्कारों का विशेष प्रभाव पड़ा। श्रद्धेय शिवाचार्य जब शैशवावस्था में थे तब अपने नाना जी के साथ मिलकर दूर जंगल में घूमने जाते और कबूतरों को दाना व पशुओं को चारा खिलाते थे।

अभावग्रस्त लोगों की सहायता करना, पक्षियों को दाना डालना, पशुओं को चारा डालना आदि संस्कार श्री प्रभुमल जी के मूलगुण थे। ऐसा वे जीवन-भर करते रहे। आत्मवत् सर्वभूतेषु का सिद्धांत उनका जीवन सिद्धांत था। हमारे श्रद्धालोक के देवता श्रद्धेय शिवाचार्य भगवन् की शैशवास्था में उनके नानाजी का उन पर प्रभूत प्रभाव रहा और उनके जीवन में इन सद्संस्कारों का महान विकास हुआ।

श्री प्रभुमल जी के दो सुपुत्र हैं–श्री कुंदनमल जी एवं श्री काशीराम जी। इन दोनों का जीवन भी अत्यंत पवित्र और सद्संस्कारों से परिपूर्ण है।

उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में पाठक सहज ही श्रद्धेय शिवाचार्य भगवन् के पारिवारिक परिदृश्य से परिचित हो सकते हैं। पीढ़ियों से ही भाबू कुल का यह परिवार आर्थिक और धार्मिक इन दोनों दृष्टियों से पर्याप्त समृद्ध रहा है।

सर्वविदित है कि पक्षी के जब दोनों पंख सकुशल और स्वस्थ हों तो वह अनन्त आकाश में स्वच्छंद/उन्मुक्त उड़ान भर सकता है। यही तथ्य एक गृहस्थ के संदर्भ में भी सच है। पुण्यवान् गृहस्थ वही है जिसके पास धन और धर्म के दोनों आधार मौजूद हों। इस दृष्टि से श्रद्धेय शिवाचार्य का परिवार अत्यंत पुण्यवान् रहा है। इस परिवार पर जहां लक्ष्मी की प्रभूत कृपा रही है वहीं पुण्यपुंज मुनीश्वरों का प्रभूत मार्गदर्शन भी इसे प्राप्त होता रहा है। पीढ़ी दर पीढ़ी सद्-संस्कारों की सरिता इस परिवार में प्रवहमान रही है। अतिथि सत्कार, साधर्मी सेवा, व्यापारिक प्रामाणिकता और नित्य नियम पूर्वक धार्मिक आराधना इस विशाल परिवार की मूलभूत पूंजी है। यही कारण है कि आज इस परिवार की यश:पताका सर्वत्र फहरा रही है।

संस्कृति संस्कार की

महान् पुण्यों के उदय से सुसंस्कारी परिवार में जन्म होता है। हमारे श्रद्धाधार शिवाचार्य भगवन् का जन्म एक सद्संस्कारी परिवार में हुआ। शिशु शिव ने इस संसार में आंखें खोलते ही सर्वप्रथम जो ध्वनि सुनी वह महामंत्र नवकार की ध्वनि थी। जिस माता का दुग्धपान किया वह वीरांगना सन्नारी विद्यादेवी थी जो अर्हत् धर्म की केवल विदुषी ही नहीं थी, बल्कि उसके सांस-सांस में अर्हत्-प्ररूपित धर्म समाया हुआ था।

मातृगोद शिशु के लिए प्रथम विश्वविद्यालय होता है। मनोविज्ञान कहता है कि व्यक्ति अपने जीवन के प्रथम पांच वर्षों में नब्बे प्रतिशत शिक्षा प्राप्त कर लेता है। शेष आयु में वह केवल दस प्रतिशत ही सीखता है। कारण स्पष्ट है कि जीवन के प्रारंभिक पांच वर्षों में शिशु समग्ररूपेण ग्रहणशील होता है। वह परिपूर्ण रूप से खुला होता है। वह प्रत्येक बात को ग्रहण करता है, प्रत्येक शब्द को ग्रहण करता है, प्रत्येक घटना जो उसके समक्ष घटित होती है वह उसके चेतन-अचेतन पर अंकित हो जाती है। जो भी उसके आस-पास होता है उसे बिना कांटे-छांटे वह यथारूप ग्रहण कर लेता है। कुछ ग्रहण करना और कुछ ग्रहण नहीं करना ऐसा सद्बोध उसके भीतर अविकसित होता है। हेयोपादेय से शून्य शिशु एक खुले पात्र की तरह सब कुछ अपने भीतर संग्रहीत करता रहता है।

प्रथम पांच वर्षों की अवधि में शिशु जो ग्रहण करता है उसके शेष जीवन में वही विकसित होता है। उस अवधि में यदि उसे सद्संस्कारों में खिला वातावरण प्राप्त होता है तो वह सद्संस्कारों की पूंजी को ग्रहण कर

लेता है। इसके विपरीत यदि उसे कुसंस्कारों का वातावरण प्राप्त होता है तो वह कुसंस्कारी बन जाता है।

श्रद्धाधार शिवाचार्य पूर्वजन्म से ही महान् पुण्यों का कोश अपने साथ लेकर आए थे। फलत: उन्हें सद्संस्कारों में रचा-बसा पारिवारिक परिवेश प्राप्त हुआ। मां विद्यादेवी की गोद में खेलते हुए शब्द भेद से शिशु शिव ने 'शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरंजनोऽसि' रूपी अध्यात्म के अक्षर अमृत का पान किया। अरिहंतों, सिद्धों और साधकों की स्तुतियों की अनुगूंज में आपने अठखेलियां कीं। सब ओर शुद्ध, पवित्र और धर्ममय वातावरण में आपका लालन-पालन हुआ।

जैसा कि ऊपर लिखा गया है कि मां शिशु की प्रथम गुरु, शिक्षिका अथवा शिक्षासंस्थान होती है। पूज्य शिवाचार्य भगवन् की भी प्रथम गुरु उनकी माता विद्यादेवी थीं। मां विद्यादेवी का स्वयं का जीवन एक आदर्श सन्नारी का जीवन था। उनका हृदय करुणा, मृदुता और वात्सल्य का पवित्र मंदिर था। तप और जप उनके दैनंदिन का अभिन्न अंग था। त्यागी मुनीश्वरों और आर्याओं को अपने द्वार पर देखकर उनकी रोमराजी खिल उठती थी। वे अल्प बोलती थीं और जो भी बोलती थीं वह सत्य और मधुर होता था। ईर्ष्या, द्वेष आदि दुर्गुण से वह बहुत दूर थीं।

माता विद्यादेवी के जीवन के ये स्वाभाविक सद्गुण शिशु शिव में संग्रहीत होने लगे। अथवा यों कहें कि पूर्व जन्मों की साधना के फलस्वरूप उनके भीतर संचित सद्गुणों का कोश मां विद्यादेवी के उत्तम गुणों का संसर्ग पाकर विकासमान होने लगा।

पूज्यवर पितृदेव श्री चिरंजीलाल जी एक देवपुरुष के समान थे। उन्हें निकट से जानने वाले कहते हैं कि उन जैसा सरल और निर्मल मन वाला व्यक्ति खोजना मुश्किल है। क्रोध और अहंकार में बहते उन्हें कभी नहीं देखा गया। छोटे-छोटे बच्चों से लेकर बड़े-बूढ़ों तक-सभी से वे खुल कर प्रेम करते थे और सभी का प्रेम प्राप्त करते थे। परिवार और समाज में वे सभी के आदर और प्रेम के पात्र रहे। उनकी सत्यवादिता की शपथें ली जाती थीं।

ऐसे देवस्वरूप पूज्य पितृदेव हमारे शिशु शिव के द्वितीय शिक्षक थे। पूज्य पितृदेव के समस्त सद्गुण आपमें विकसित हुए। आपमें बाल्यावस्था से ही सदा हंसते रहने, सब से प्रेम से मिलने और सरलतापूर्वक सब पर स्नेह की वर्षा करने के गुणों का विकास हुआ।

माता-पिता के अतिरिक्त अन्य परिजनों ने भी शिशु शिव का मार्गदर्शन

एवं शिक्षण किया। आपकी बड़ी बुआ विद्यावती जी का भी आपके जीवन पर विशेष प्रभाव रहा। विद्यावती जी एक भक्तिमति महिला थीं। धर्मध्यान में उनकी प्रगाढ़ आस्था थी। साधु-संतों की सेवा-भक्ति और आहार-विहारादि सम्बन्धी सेवा-कार्यों में वे सदैव तन्मय रहा करती थीं। मुनिराजों के आहारादि हेतु पदार्पित होने पर माता देवकी की तरह भक्ति-भाव पूर्वक आहारादि बहराती थीं।

बुआ विद्यावती जी की उदारता और सेवा-भक्ति के सद्‌गुण शिशु शिव में यथारूप विकसित हुए।

आपने अपने ताया श्री बनारसी दास जी से व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया। श्री बनारसीदास जी की कार्यकुशलता, व्यवहारकुशलता और धर्मनिष्ठा के बीजमंत्र आपके जीवन में विकसित हुए।

अक्षर आराधना

शिशु शिव जब पांच वर्ष के हुए तो उन्हें विद्यालय में प्रवेश दिलाया गया। आप जन्मजात मेधावी और प्रतिभापुञ्ज थे। आपने शीघ्र ही अक्षर ज्ञान सीख लिया। हिन्दी, पंजाबी, अंग्रेजी आदि भाषाओं के प्रारंभिक ज्ञान में देखते-ही-देखते आप निपुण बन गए। अपने शिक्षकों से आपने पर्याप्त स्नेह प्राप्त किया। स्पष्ट है कि मेधावी और विनीत छात्रों पर शिक्षकों का स्वाभाविक स्नेह होता ही है।

प्रत्येक कक्षा में प्रथम स्थान के साथ परीक्षा उत्तीर्ण कर आपने अपनी प्रतिभा से सभी को प्रभावित किया। परिजनों के साथ-साथ आपके सहपाठी और आपके शिक्षक आप पर भरपूर प्यार लुटाते थे। आप भी अपने सरल, विनम्र व्यवहार और मिलनसारिता से सभी को अपना बना लेते थे। पूरे विद्यालय में एक छात्र ऐसा न था जिसके साथ आपका विरोध रहा हो। समस्त सहपाठियों में भ्रातृभाव के दर्शन करते हुए आप शिक्षा की सीढ़ियों पर ऊपर और ऊपर चढ़ते रहे।

धर्मांकुरण

पूज्य शिवाचार्य भगवन् पूर्वजन्म के अमृत संस्कारों का कोश अपने साथ लेकर जन्मे थे। उन अमृत संस्कार-बीजों के पल्लवन के लिए उचित समय और सम्पर्क की प्रतीक्षा भर थी। आखिर वह शुभ क्षण भी आ गया जिसने आपश्री के शुभ संस्कारों को प्रगट कर दिया।

उस समय आपश्री अध्ययन में संलग्न थे। संभवतः आप छठी या

सातवीं कक्षा के छात्र थे। विद्यालय में कुछ दिनों का अवकाश घोषित हुआ। उस अवधि में आप अपने अनुज विजय कुमार के साथ अपने ननिहाल रानियां मण्डी गए। उस समय पंजाब प्रवर्तक उपाध्याय श्रमण श्री फूलचंद जी महाराज रानियां मण्डी में वर्षावास व्यतीत कर रहे थे। प्रवर्तक श्री जी एक महान् योगी साधक थे। वे जैन दर्शन के प्रकाण्ड पण्डित और सरल व्याख्याता थे। उनका चुम्बकीय व्यक्तित्व आबालवृद्ध को मंत्रमुग्ध बनाने वाला था।

आप अपने नाना जी के साथ स्थानक में गए। पूज्य प्रवर्तक श्री जी के चरणों में आपने वंदन किया। पूज्य प्रवर्तक श्री जी ने आपको आशीर्वाद दिया और आपका परिचय पूछा। कुछ देर प्रवर्तक श्री जी एवं आपके मध्य संवाद चला। प्रवर्तक श्री जी एक दूरदृष्टि साधक थे। ज्योतिष का भी उन्हें पूर्ण ज्ञान था। शिव कुमार की मस्तकीय रेखाओं को पढ़कर पूज्य प्रवर्तक श्री अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने नानाजी से कहा–प्रभुमल! खुशकिस्मत हो तुम! ऐसा दोहित्र तुम्हें मिला है। इसकी मस्तकीय रेखाओं में राजयोग है। इस बालक का भविष्य अत्यंत उज्ज्वल है। प्रवर्तक श्री जी के वचन सुनकर प्रभुमल जी आल्हादित हो उठे। तब प्रवर्तक श्री जी ने शिवकुमार और विजयकुमार से कहा–बच्चो! जब तक तुम यहां रहो, तब तक प्रतिदिन स्थानक में आना और सामायिक करना।

पूज्य प्रवर्तक श्री जी के कथन को हृदय पट्टिका पर अंकित करके आप नाना जी के साथ लौट आए। नाना जी ने आप दोनों भ्राताओं के लिए सामायिक के लिए वस्त्रों और मुखवस्त्रिकाओं की व्यवस्था कर दी। फिर दूसरे दिन से ही नियमित रूप से आप दोनों भ्राता स्थानक में जाकर सामायिक करने लगे। आपके पूर्वोपार्जित संस्कारों के पल्लवन का वह समय था। आप एक सामायिक करते, दो सामायिक करते, तीन सामायिक करते, पर सामायिक से आपका मन नहीं भरता। अनुज विजय से प्रतिस्पर्धा में आप एक-एक दिन में दस-दस, ग्यारह-ग्यारह तक सामायिक करते थे। उस स्वस्थ प्रतिस्पर्धा ने आपके अंतस् में सामायिक में सतत विहार की प्यास को जगा दिया। दिन-भर में आप खाना खाने के लिए ही घर जाते थे, शेष समय में सामायिक में रहते थे।

सामायिक के समय का उपयोग आप ज्ञानाराधना में करते थे। पूज्य प्रवर्तक श्री जी आपको याद करने के लिए पाठ देते और शीघ्र ही उस पाठ को आप याद कर लेते। उसी अवधि में आपने सामायिक सूत्र और प्रतिक्रमण सूत्र कण्ठस्थ किया।

अवकाश की उस अवधि में आप श्रद्धेय प्रवर्तक श्री जी की साधना से विशेष प्रभावित हुए। प्रवर्तक श्री जी डेढ़-डेढ़ घंटे तक शीर्षासन की साधना करते थे। आज भी श्रद्धेय शिवाचार्य यदा-कदा उस समय की बात बताते हैं और कहते हैं कि श्रद्धेय प्रवर्तक श्री जी की शीर्षासन साधना का मेरे चित्त पर गहरा प्रभाव पड़ा।

इस प्रकार बारह-तेरह वर्ष की अवस्था में श्रद्धेय शिवाचार्य की धर्मनिष्ठा परिपूर्ण रूप से परिपक्व बन गई थी। नगरी में संत विराजित होते तो आप अपना अधिकांश समय उनके ही चरणों में बिताते थे। प्रतिदिन कई-कई सामायिक करते। आहार-विहारादि संत सेवा में सबसे आगे रहते।

संतों का व्यक्तित्व और वेश-भूषा आपके मन को विशेष रूप से लुभाती थी। आप मन-ही-मन वैसा बनने की कल्पनाएं संजोते थे। बचपन की इन कल्पनाओं में आपका भावी विराट् व्यक्तित्व शनैःशनै आकारवान् बन रहा था। आपकी बाल-रुचियां आपमें प्रच्छन्न विराट् वृक्ष की पूर्व सूचनाएं थीं।

उस अवधि में पूज्य प्रवर्तक श्री जी के अतिरिक्त भण्डारी श्री पद्मचंद जी महाराज, वाणी भूषण श्री अमर मुनि जी महाराज प्रभृति मुनीश्वरों के दर्शन आपने किए। उसी समय में स्वामी श्री छगनलाल जी महाराज के दर्शनों का पुण्ययोग भी आपश्री को प्राप्त हुआ। स्वामी श्री छगनलाल जी महाराज की संयम साधना और योगाराधना बहुत उच्च थी। वे ज्योतिष शास्त्र के भी प्रकाण्ड पंडित थे। अपने ज्योतिष नेत्रों से शिवकुमार का भविष्य पढ़कर उन्होंने कहा था–यह तेजस्वी बालक भविष्य में जिनशासन का प्रभावशाली व्यक्ति बनेगा। स्पष्ट है कि शिवकुमार अपने बचपन से ही अपने स्वर्णिम भविष्य की सूचनाएं देने लगे थे।

वैराग्य उर्मियां

शिवकुमार ने यथासमय मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। उस समय आपकी आयु सोलह-सत्रह वर्ष की थी। पढ़ाई में आपकी जैसी रुचि थी वैसी ही रुचि संतों के सान्निध्य में बैठने की थी। संतों एवं साध्वियों का सान्निध्य आपको अपार सुखद् प्रतीत होता था।

आदि शंकराचार्य अपने युग के महान दार्शनिक थे। उन्होंने लिखा–

क्षणमिह सज्जन संगतिरेका।
भवति भवार्णव तरणे नौका॥

अर्थात् सज्जनों/साधुओं का क्षणिक सान्निध्य भी संसार सागर से पार ले जाने वाली नौका के समान होता है।

यह कथन अक्षरशः सच है। इतिहास और धर्मशास्त्रों के असंख्य आलेख इस संदर्भ के साक्षी हैं।

शिवकुमार के संदर्भ में भी यह कथन अक्षरशः सत्य सिद्ध हुआ। पूज्य प्रवर्तक श्री श्रमण जी महाराज का क्षणिक सान्निध्य आपके अंतर्तम में संन्यास की पिपासा को जन्म दे चुका था। तब से आप निरंतर संतों-साध्वियों के सान्निध्य में अपना अधिकांश समय बिताने लगे थे।

संत-सान्निध्य में बैठकर आप इधर-उधर की वार्ताओं में समय नहीं बिताते थे, बल्कि अपनी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त करते थे। जीवन और जगत, अध्यात्म और ईश्वर, साधना और आराधना आदि से सम्बन्धित प्रश्नावलियां आपके मस्तिष्क में जन्म लेती रहती थीं। उन प्रश्नावलियों के समाधान आप संतों-साध्वियों से पूछते थे। आपके कई प्रश्न समाधान पाते तो कई अनुत्तरित ही रह जाते। आपके मौलिक प्रश्न थे–महावीर कैसे साधना करते थे? महावीर की साधना का रहस्य क्या था? तप और जप द्वारा ईश्वर प्राप्ति कैसे सुलभ है? तप और जप का वास्तविक स्वरूप क्या है?

ऐसे मूलभूत प्रश्न आपके मस्तिष्क में निरंतर उठते रहते थे। आपके भीतर का साधक साधना के अतल सागर में पैठने को जिज्ञासित और उर्मिगत बन रहा था। किसी अदृश्य आमंत्रण की अनुगूंज आपके अस्तित्व को प्रतिक्षण आंदोलित करती रहती थी। विद्यालय में, क्रीड़ांगण में, गृहांगण में, जागरण में, निद्रा में–प्रत्येक स्थान और अवस्था में आमंत्रण की वह अनुगूंज आपके अनहद में अनुगुंजित रहती थी।

संत सान्निध्य में अधिकाधिक सुख का अनुभव आप करते थे। पर संतुष्टि से आपका हृदय रिक्त था।

कई साधु-साध्वियों का आपके परिवार पर विशेष कृपाभाव था। महासती श्री सौभाग्यवती जी महाराज, महासती श्री लज्जावती जी महाराज, महासती श्री सीता जी महाराज, महासती श्री कौशल्या जी महाराज आदि के सम्पर्क में आपका परिवार विशेष रूप से रहा। परिणामतः इन पूज्या आर्याओं का सान्निध्य और आशीर्वाद आपको भी प्रभूत रूप में प्राप्त हुआ।

आत्म गुरु के घाट पर

एक बार आप श्री लुधियाना में विराजित महार्या श्री सौभाग्यवती जी

महाराज के दर्शनार्थ मलौट से लुधियाना गए। आपको ज्ञात हुआ कि लुधियाना में ही जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज विराजित हैं। पूज्य आचार्य देव का नाम आपने अनेक बार सुना था, पर दर्शन करने का सुयोग प्राप्त नहीं हो पाया था। आचार्य श्री के दर्शनों के लिए आपका हृदय उमंगित बन गया। मुख्य स्थानक में आचार्य श्री के दर्शनों के लिए आप गए। जिस समय आप उपाश्रय में पहुंचे उस समय आचार्य श्री ऊपर सीढ़ियों में खड़े थे। पूज्य आचार्य देव को देखते ही आपने दूर से ही हाथ जोड़कर वंदन किया। पूज्य आचार्य देव की दृष्टि आप पर पड़ी। आत्मद्रष्टा आत्मगुरु की दृष्टि ने पलक झपकते ही आपके भविष्य को पढ़ लिया। अपने दृष्टि आशीष से ही आत्मगुरु ने आपके वैराग्य-बीज को अभिसिंचित कर दिया।

आचार्य देव के दर्शनों के उस क्षण को श्रद्धेय शिवाचार्य ने अपने जीवन का स्वर्णिम क्षण स्वीकार किया है। आपश्री अक्सर उस क्षण के बारे में फरमाते हैं– श्रद्धेय आचार्य देव के दर्शन करते ही मेरे अन्तर में श्रद्धा और भक्ति का ज्वार उमड़ आया। उनमें मैंने एक उच्चकोटि के साधक के दर्शन किए। मैं रोमाञ्चित हो गया और अपना मस्तक साधना के सुमेरु शिखर के चरणों पर रख दिया। उस क्षण मैंने स्वयं को समग्रत: निर्भार अनुभव किया। मेरे भीतर में एक भीष्म संकल्प निर्मित हुआ कि मैं इन जैसी ही साधना करूंगा। संन्यास और साधना के सर्वोच्च शिखर के सान्निध्य ने आपके भावों में शनै:-शनै: पल्लवित हो रहे वैराग्य के बीज को एकाएक महावृक्ष का रूप प्रदान कर दिया। अपने मन में आपने सुदृढ़ संकल्प संजो लिया कि संयम और संन्यास ही मेरा ध्येय है। प्रकृति भले अपने कायदे-कानूनों से फिर जाए पर मैं अपने ध्येय से नहीं फिरूंगा।

आचार्य देव के क्षणिक सान्निध्य से आपने जाना कि वे युग के धुरंधर विद्वान मुनि हैं। साथ ही यह भी जाना कि ज्ञान की गंगोत्री से ही संन्यास की सरिता (गंगा) का प्रवाह फूटता है। ज्ञानाभाव में संन्यास उद्देश्यहीन है और संन्यास/संयम के बिना ज्ञान भारमात्र है। श्रद्धेय युवा शिवकुमार भाबू आचार्य देव के सान्निध्य से ज्ञान प्राप्ति और संन्यास में प्रवेश की अपराभूत पिपासा लेकर लौटे। फिर समय के साथ बहुत कुछ घटित हुआ, पर आपकी लगन की लौ क्षणभर के लिए भी मद्धिम नहीं पड़ी। परवाने की आंख जैसे दीपशिखा पर टिकी रहती है वैसे ही आपका ध्यान अपने लक्ष्य पर पूर्णत: टिका रहा।

संग सद्गुरु का

पूर्व में लिखा जा चुका है कि शिवकुमार बाल्यकाल से ही मुमुक्षु वृत्ति से सम्पन्न थे। तीर्थंकर महावीर आपके आराध्य देव थे। महावीर की ध्यान मुद्रा आपको बाल्यकाल से ही आन्दोलित करती आई थी। आप महावीर की साधना विधि को जानने और जीने के लिए उत्सुक थे। उसके लिए आप जब भी समय मिलता संतों के दर्शनों के लिए जाते और उनसे महावीर की साधना के बारे में पूछते।

एक बार संत-दर्शन करते हुए अनुक्रम से आप आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म. के प्रमुख शिष्य पंजाब केसरी श्री ज्ञान मुनि जी महाराज के चरणों में पहुंचे। श्रद्धेय गुरुदेव के विराट् और प्रभावशाली व्यक्तित्व से आप विशेष रूप से प्रभावित हुए। श्रद्धेय गुरुदेव से आपने कई प्रश्न पूछे, जिनके सटीक समाधान आपको प्राप्त हुए।

वार्तालाप के माध्यम से श्रद्धेय गुरुदेव ने जान लिया कि आप दीक्षा के लिए स्वयं को परिपक्व बना रहे हैं। श्रद्धेय गुरुदेव जैन दर्शन के तो प्रकाण्ड पण्डित थे ही, साथ ही ज्योतिष आदि में भी उनकी पर्याप्त गति थी। आपकी मस्तकीय रेखाओं का अध्ययन कर उन्होंने जान लिया कि आपसे भविष्य का एक महामुनि प्रकट होने वाला है। आपकी मस्तकीय रेखाओं को पढ़कर श्रद्धेय गुरुदेव का गुरु-हृदय प्रमोद भाव से खिल उठा। उन्होंने कहा–शिव! आत्मगुरु के प्रशिष्य के रूप में मैं तुम्हें देखना चाहता हूं। मुझे वचन दो कि तुम आत्मगुरु की फुलवारी के फूल बनोगे।

श्रद्धेय गुरुदेव के भावनात्मक वचनों ने आपकी हृत्तन्त्री को झंकृत बना दिया। आपने कहा–गुरुदेव! सद्गुरु का आमंत्रण मेरा अहोभाग्य है। मैं आत्म-गुरु की फुलवारी का फूल अवश्य बनूंगा। जब भी मैं दीक्षा लूंगा आप श्री के चरणों में ही लूंगा।

श्रद्धेय सद्गुरु से प्रथम भेंट ही अनुबंध का एक आध्यात्मिक दस्तावेज बन गया। फिर आप श्री श्रद्धेय गुरुदेव के सतत सम्पर्क से जुड़ गए। समय-समय पर दर्शनार्थ उपस्थित होते और ज्ञानगुरु से नवीन ज्ञान प्राप्त करते, जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त करते।

ध्यान का पनघट

शिवकुमार बीस वर्षीय युवा हो चुके थे। साधारणतः यह आयु ऐसी होती है जब युवकों में भौतिक आकर्षणों और भोगों की ओर झुकाव होता

है। पर शिवकुमार साधारण युवाओं से विलग थे। यौवन के शिखर पर पहुंचकर आपके हृदय में योग की पिपासा ने जन्म लिया। महावीर की ध्यान मुद्रा देखकर आपके हृदय में ध्यान के प्रति जिज्ञासा जगी। आप ध्यान की विधि और ध्यान के उद्देश्य को जानने के लिए उत्सुक बन गए। इसके लिए आपने वृद्धजनों से पूछा, साथियों से जानना चाहा, संत-साध्वियों के द्वार पर दस्तक दी, ध्यान सम्बन्धी साहित्य का अध्ययन किया, पर आपको उचित समाधान नहीं मिला।

उसी अवधि में एक बौद्ध भिक्षु से आपकी भेंट हुई। आपके भीतर जन्मजात संस्कार थे और तदनुसार प्रत्येक धर्म और प्रत्येक धर्मगुरु का आप आदर करते थे। आपने बौद्ध भिक्षु को प्रणाम किया और उससे ध्यान संबंधी जिज्ञासा प्रस्तुत की। बौद्ध भिक्षु ने आपको विपश्यना ध्यान का स्वरूप बताया और अध्ययन के लिए एक पुस्तक भी दी।

ध्यान की जिज्ञासा के साथ आप निरंतर अपने पथ पर बढ़ते रहे। पर आपकी जिज्ञासा को समुचित समाधान प्राप्त नहीं हुआ। जैसा आप सुनते अथवा पढ़ते तदनुसार ध्यान का अभ्यास भी करते, पर आपका मन संतुष्ट नहीं हुआ।

ध्यान के प्रति आपका आकर्षण और समर्पण बीस वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हुआ जो अद्यतन नूतन है। ध्यान के क्षेत्र में विचित्र और विरल अनुभवों का कोष आज आपके पास है, पर आज भी आप स्वयं को ध्यान-पथ का विद्यार्थी ही स्वीकार करते हैं। ध्यान पर अध्ययन, अन्वेषण और अभ्यास में विगत पैंतालीस वर्षों से आप साधनाशील हैं। आपके यही विरल गुण आपको अन्य मुनियों से महान सिद्ध करते हैं।

पहले जागरण फिर आचरण

संन्यासी होने की अनन्त पिपासा को हृदय में संजोए शिवकुमार आगम के इस सूक्त को हृदयंगम कर चुके थे कि ज्ञान संयम की प्रथम सीढ़ी है। फलतः आप ज्ञानार्जन हेतु प्राणपण से जुट गए। आध्यात्मिक ग्रन्थों के अध्ययन के साथ-साथ विद्यालयी शिक्षा भी आप प्राप्त करते रहे।

पहले आपने डी.ए.वी. कॉलेज जालंधर में मैडिकल की पढ़ाई हेतु प्रवेश लिया। पर जैसे-जैसे पढ़ाई आगे बढ़ी, आपको ज्ञात हो गया कि डॉक्टरी की पढ़ाई में हिंसा का प्रावधान है। आपके हृदय ने कहा, जिस शिक्षा की यात्रा हिंसा के क्लिष्ट और कंकरीले पथ से गुजरती है वह शिक्षा मेरे

लिए अशिक्षा से भी बदतर है। वहां से आपने एफ.ए.सी. नॉन मैडिकल करने के बाद अपना नाम वापिस ले लिया।

उस समय आपके दादाजी श्री शादीलाल जी ने आपको पूर्णरूप से सहयोग और मार्गदर्शन दिया। दादाजी के आदेशानुसार आपने चण्डीगढ़ विश्वविद्यालय से प्रभाकर की परीक्षा उत्तीर्ण की। उसके बाद पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला से बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण कर जे.वी.जी. कॉलेज सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) से अंग्रेजी में एम.ए. की। इतने भर से आपकी ज्ञान पिपासा शांत नहीं हुई। अंग्रेजी में एम.ए. करने के पश्चात् दर्शनशास्त्र से आपने डबल एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की।

अध्ययन की तीव्र उत्कण्ठा शिवकुमार के हृदय में थी। समाधिस्थ होकर आप अध्ययन करते थे। उसी के परिणामस्वरूप शिक्षा की सीढ़ियां चढ़ते-चढ़ते आपने डबल एम.ए. तक की शिक्षा ग्रहण की। इतनी उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले अपने परिवार के आप प्रथम सदस्य थे। आपके परिजनों ने आपके शिक्षण में पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

शिवकुमार सुंदर, स्वस्थ और सुशिक्षित युवक थे। आपके लिए विभिन्न उच्च कुलों से अनेक वैवाहिक प्रस्ताव आए। आप पहले ही अपने परिजनों से स्पष्ट कह चुके थे कि मैं विवाह नहीं करूंगा। परंतु आपके निर्णय को अस्वीकार करते हुए आपके दादाजी ने आपके लिए एक रिश्ता स्वीकार कर लिया। घर आने पर इसकी सूचना आपको प्राप्त हुई। इससे आपका अंतर्मन आंदोलित हो उठा। परंतु दादाजी के सामने बोलने की हिम्मत किसी की नहीं थी। पूरे परिवार पर उनका कठोर अनुशासन था। आपके हृदय में भी दादाजी के प्रति अपार सम्मान और स्नेह था। परंतु दादाजी के उक्त निर्णय से आप सहमत नहीं हुए। आपने विनम्रतापूर्वक दादाजी से कहा–बाबा! मैं आजीवन विवाह नहीं करूंगा। वैवाहिक बंधन को वहन करने के लिए मेरा मानस किंचित् भी तैयार नहीं है।

शिवकुमार के स्पष्ट अस्वीकार करने पर भी दादाजी और अन्य परिजनों ने स्थिर किए गए संबंध का विच्छेद नहीं किया। सभी का मानना था कि आज नहीं तो कल शिव विवाह के लिए राजी हो ही जाएगा। विवाह के लिए आपको राजी करने के लिए आपके परिजन निरंतर छह वर्षों तक प्रयास करते रहे। छह वर्षों तक आपके सगाई संबंध को यथावत् रखा गया।

वस्तुतः मानव-रत्न वही होते हैं जो अपने सत्संकल्प से कभी भी विचलित नहीं होते। विकट और विकराल परिस्थितियों में भी जिनका

संकल्प-सूर्य और अधिक तेजस्वी बन जाता है उन्हीं का जीवन जीवंत इतिहास बनता है।

प्रेरणादान : प्रतिदान

कॉलेज का अवकाश चल रहा था। शिवकुमार घर पर थे। परिजनों ने विचार किया कि शिवकुमार को अबोहर में बुआ जी श्रीमती विद्यावती जी के पास भेज दिया जाए, जिससे वहां कुछ समय रहकर ये व्यापारादि में रुचि लेने लगें। विचारानुसार शिवकुमार जी को अबोहर भेजा गया। अबोहर में आपके फूफा जी का विशाल व्यवसाय था। फूफा जी ने आपको व्यापार में रुचि लेने के लिए प्रेरित किया। पर चाहकर भी आप उधर उन्मुख नहीं हो पाए।

आपके हृदय में तो वैराग्य का दीप प्रज्ज्वलित था। आपको वैराग्य में रस था। फलत: आप अपना अधिकांश समय बुआ जी के पास बिताते थे। पहले लिखा जा चुका है कि बुआ जी एक भक्तिमती सन्नारी थी। बुआ जी के सान्निध्य में आपको सुख मिलता था। आप अपने हृदय की बातें उनसे दिल खोलकर करते थे।

आपकी बुआ जी की पुत्री शिमला जी भी विरक्तमती बाला थीं। वह स्वयं दीक्षित होना चाहती थीं। इस प्रकार दो वैराग्यशील दिव्य आत्माओं का पारस्परिक सान्निध्य पारस्परिक वैराग्य को सुदृढ़ बनाने वाला सिद्ध हुआ। शिमला बहन आपके लिए और आप शिमला बहन के लिए प्रेरणा का सम्बल बने।

राग और विराग दो विरोधी ध्रुव हैं। राग संसार का और विराग संन्यास का द्वार है। विराग की घटना राग-रक्त संसारियों को उद्वेलित बना देती है। ऐसा होना स्वाभाविक है।

जब परिजनों ने जाना कि शिमला कुमारी भी दीक्षित होने को उत्सुक है तो आप दोनों विरक्तात्माओं के मार्ग में परिजनों द्वारा अनेक बाधाएं उपस्थित की गईं। मृदु और कठोर वचनों द्वारा आपको प्रताड़ित किया गया। विभिन्न आकर्षणों के सपने दिखाए गए। पर वह वैराग्य ही क्या जो रागाकर्षण के समक्ष ध्वस्त हो जाए?

राग के अवरोधों से अपने वैराग्य को परिपक्व बनाते हुए अध्ययन के लिए आप कॉलेज चले गए। उधर विरक्त बाला शिमला जी ने अपने त्याग और संकल्प के बल पर परिजनों से अनुमति प्राप्त कर 2 मई 1971 को

श्रामणी प्रव्रज्या अंगीकार कर अपने जीवन को संयम और तप के प्रति पूर्णतः अर्पित कर दिया।

सात समंदर पार

चरितनायक बचपन से ही जिज्ञासु-वृत्ति से सम्पन्न रहे हैं। आपकी जिज्ञासा वृत्ति ने ही आपको इस ऊंचाई तक पहुंचाया है। अजाने को जानने की आपकी जिज्ञासा अद्भुत है। एक बालक से भी आप कुछ जानने को उत्सुक रहते हैं। यह आपकी विनम्रता, निरहंकारिता और ज्ञान-पिपासा का ज्वलंत प्रमाण है।

जिज्ञासु वृत्ति आपका जन्मना स्वभाव है। अपनी इसी वृत्ति के कारण आपका ज्ञान अत्यंत विस्तृत हुआ। जहां भी आपको कुछ नया जानने को मिला, निःसंकोच आपने उसे जाना और उपादेय को विनम्रतापूर्वक ग्रहण भी किया।

आप कॉलेज में अध्ययनरत थे। इसे अपूर्व घटना ही माना जाएगा कि कॉलेज में अध्ययनरत एक युवक अन्तस् में वैराग्य को जी रहा हो। हॉस्टल में रहते हुए भी नित्य नियमपूर्वक सामायिक और प्रतिक्रमण की आराधना करता हो। इस अपूर्व घटना के नायक हमारे चरितनायक रहे हैं।

अध्ययन की अवधि में विदेश यात्रा का प्रसंग आपके समक्ष आया। इस संयोग को योग पथ के पथिक शिवकुमार ने एक नई दिशा में उठे एक क्रांतचरण के रूप में लिया। आपके मन के पोर-पोर में आकुल प्रश्नों के दीप जल उठे। आप पश्चिमी भौतिकता के चरम में परम आध्यात्मिकता को जीना चाहते थे। आपकी चेतना में हिलोर-सी उठी। आपका चित्त तरंगायित हो उठा। भौतिकता के महासागर से अध्यात्म के मौक्तिक कण चुनने के लिए आप जिज्ञासित बन गए। उपनिषद्, आगम और धम्मपद के समवेत स्वर आपके मन महाकाश पर नील नक्षत्र बनकर तैर रहे थे। वस्तुतः भौतिकता के परम वैभव के बीच जाकर ही आत्म वैभव को जीया जा सकता है। बीसवीं सदी का विवेकानंद यह बात जानता था कि पश्चिम की प्यास को पूरब की भूख से जोड़कर ही एक नई दिशा और एक नई दृष्टि को समझा जा सकता है।

जब भौतिकता चरम पर होती है तो उसकी यात्रा अध्यात्म की ओर उन्मुख होती है और जब अध्यात्म परम वैभव के साथ खिलता है तब भौतिकता अध्यात्म की उपज के लिए खाद-पानी बनती है। 'जे कम्मे सूरा ते धम्मे सूरा' की आगम वाणी और 'तेन त्यक्तेन भुंजिथा' अर्थात् जिसने

भोगा उसी ने त्यागा, इस उपनिषद वाणी को जीने के लिए पूरब का जिज्ञासु मन पश्चिम के उन देश-देशांतरों की यात्रा के लिए जिज्ञासित हो उठा जो शांति और परम सुख की तलाश के लिए पूरब के सामने याचना की मुद्रा में खड़े रहते हैं।

आपने अपनी जिज्ञासा परिजनों के समक्ष प्रस्तुत की। परिजनों ने आपकी बात को सुना। पारस्परिक विचार-मंथन किया गया। परिजनों ने परस्पर निर्णय किया कि विदेश की भौतिकवादी चकाचौंध शिव के हृदय में संसार के प्रति आकर्षण का द्वार खोलने वाली सिद्ध हो सकती है। अत: इन्हें सहर्ष विदेश भ्रमण के लिए भेजा जाए।

पारिवारिक अनुमति प्राप्त होने पर आपने कॉलेज प्रशासन की विदेश भ्रमण इच्छुक छात्रों की सूची में अपना नाम दर्ज करवा दिया।

समूचे भारतवर्ष में से ग्यारह विद्यार्थियों के चयन का अधिकार दिल्ली की एक सोसायटी ने चंडीगढ़ विश्वविद्यालय को दिया था। चंडीगढ़ विश्वविद्यालय में से तीन छात्रों का चयन किया गया जिनमें से एक श्री शिव कुमार जी थे। आप तीनों छात्रों को दिल्ली की सोसायटी के अधिकारियों के पास साक्षात्कार के लिए भेजा गया। साक्षात्कार में आपका चयन हो गया।

मई 1971 में युवा श्री शिव कुमार जी ने विदेश के लिए यात्रा प्रारंभ की। अमेरिका, इंग्लैण्ड, कनाडा, कुवैत आदि देशों के कई विख्यात नगरों की आपने 51 दिनों तक यात्रा की। अपनी इस यात्रा में आपने विश्व संस्कृति का और विशेष रूप से पाश्चात्य संस्कृति का बारीकी से अध्ययन किया। पाश्चात्य जगत की कई विशेषताओं ने आपको आकर्षित किया। वहां के लोगों की कर्त्तव्यपरायणता, प्रामाणिकता, श्रमनिष्ठा, पारस्परिक सहयोग भावना, समय का मूल्यांकन आदि विशेषताओं से आप विशेष प्रभावित हुए। पश्चिम की इन विशेषताओं के साथ आपने यह भी अनुभव किया कि वहां के लोगों का एकमात्र उद्देश्य अधिक से अधिक धन कमाना और ऐश्वर्य का उपभोग करना है। अर्जन और उपभोग के अतिरिक्त भी कुछ संभव है उससे वहां के लोग अनभिज्ञ हैं। अध्यात्म से प्राय: वे शून्य हैं। आत्मा, परमात्मा के सम्बन्ध में सोचने का उनके पास समय ही नहीं है।

आपने अनुभव किया कि पाश्चात्यों के लिए सुंदर वस्त्र, सुंदर मकान और भौतिक प्रतिष्ठा ही जीवन का मूल उद्देश्य है। वहां के अध्ययन का सार-संक्षेप अधिकाधिक भौतिक साधनों की प्राप्ति है। आध्यात्मिक साधना का भी कुछ अर्थ है इससे वे अनभिज्ञ हैं।

शिवकुमार ने एक युवा दार्शनिक के रूप में उस यात्रा में पश्चिम के कई सांस्कृतिक और ऐतिहासिक स्थलों को देखा। विश्व प्रसिद्ध नियाग्राफाल का आपने पर्यावलोकन किया। प्रकृति प्रेमी शिवकुमार प्रकृति के उस विहंगम दृश्य को देखकर आह्लादित बन गए। विभिन्न कलाकेन्द्रों, म्युजियमों, पुस्तकालयों, सांस्कृतिक प्रतिष्ठानों, ऐतिहासिक स्थलों के साथ-साथ 'एम्पायर' जैसी विश्व प्रसिद्ध इमारतों को आपने देखा। दस दिनों तक आप न्यूयार्क में रहे।

संस्कृति के अंतर्स्वर

विदेश यात्रा के दौरान एक ऐसा प्रसंग भी आया जो आपकी सांस्कृतिक परीक्षा का प्रश्न-पत्र सिद्ध हुआ। सोसायटी द्वारा निर्धारित कार्यक्रमानुसार आपका एक अमेरिकन परिवार के साथ ठहरना निश्चित हुआ था। आपने पहले ही सूचित कर दिया था कि मैं जैन हूं और विशुद्ध शाकाहारी हूं।

यथासमय आप सहयात्री साथी छात्रों के साथ उस परिवार में पहुंचे। खुले दिल से आपका स्वागत किया गया। पर जैसे ही आप भोजन की मेज पर पहुंचे तो परोसे गए भोजन में मांस देखकर आपका हृदय वितृष्णा से भर गया। आपने स्पष्ट शब्दों में कहा–मैं जैन हूं और मांसाहार मेरे लिए सर्वथा निषिद्ध है। मांसाहार के स्थान पर मैं अनाहारी रह जाना पसंद करूंगा।

उस समय उस अमेरिकन परिवार के एक युवक ने प्रश्न दागा–मिस्टर जैन! कल्पना करो कि आप जंगल में भटक जाओ और वहां खाने के लिए मांस के अतिरिक्त अन्य कुछ न हो तो आप मांस खाएंगे या मरना पसंद करेंगे? उस समय शिव कुमार ने स्पष्ट उत्तर दिया–मैं मर जाना पसंद करूंगा, मगर मांस खाने की कल्पना तक नहीं कर पाऊंगा।

आपके उत्तर की दृढ़ता से अमेरिकन परिवार बहुत प्रभावित हुआ और उन्होंने असुविधा के लिए आपसे क्षमा-याचना की।

शिवकुमार के जीवन की यह घटना उनमें रहे हुए भारतीय संस्कृति के 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' के अमृत संगीत का सुमधुर संगान प्रस्तुत करती है और स्वामी विवेकानंद के उस सिंहनाद को पुन: अनुगुंजित करती है कि मैं एक भारतीय हूं और भारतीय संस्कृति मुझे प्राणों से भी प्रिय है।

फिर जितने दिनों तक आप उस परिवार के अतिथि रहे उस अवधि में मांसाहार सर्वथा प्रतिबंधित रहा।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋

गुणद्रष्टा शिवकुमार ने उसी परिवार में एक उत्तम गुण देखा। आपके ही शब्दों में–वे लोग एक ही टेबल पर सामूहिक रूप से भोजन करते थे। भोजन प्रारंभ करने से पूर्व उस घर का प्रमुख प्रार्थना करता था। उस प्रार्थना में भगवान के प्रति कृतज्ञता का भाव प्रदर्शित किया जाता था। वह परिवार सूर्यास्त से पूर्व भोजन कर लेता था और परिवार का प्रत्येक सदस्य अपना कार्य स्वयं करता था।

✸ ✸ ✸ ✸ ✸

अमेरिका के कई नगरों और गांवों का शिवकुमार ने भ्रमण किया। आपने देखा–उन लोगों के घर सुन्दर और गांव स्वच्छ थे। वहां के कृषकों के पास विपुल मात्रा में गोधन था। कृषक प्रत्येक दृष्टि से सम्पन्न और समर्थ थे। गायों का दूध मशीनों से निकाला जाता था। वहां का मौसम शीत प्रधान था। मिलावट और बनावट जैसी वहां कोई बात नहीं थी। वहां की पारिवारिक स्थिति में कुछ मूलभूत बातें आपने देखी। वहां वृद्धों के लिए ओल्ड हाऊस बने थे। बच्चों को आठ–नौ वर्षों तक ही माता–पिता साथ रखते थे। उसके बाद बच्चे स्वयं पुरुषार्थ करके बड़े होते थे।

इस प्रकार अपनी यात्रा में आपने कई चित्र–विचित्र बातें देखीं। समृद्धि और भौतिकता के शिखरों का दर्शन किया। परंतु वह दर्शन आपके भीतर जल रहे वैराग्य के अखण्ड–अकम्प दीप में हल्का–सा भी प्रकम्पन पैदा नहीं कर पाया। उस यात्रा के दौरान सामायिक और प्रतिक्रमण की साधना अबाधित रूप से गतिमान रही।

✸ ✸ ✸ ✸ ✸

यथासमय शिवकुमार विदेश से स्वदेश लौट आए। परिजनों को प्रतीक्षा थी कि विदेशी वातावरण में रहने से शिवकुमार का वैराग्य शिथिल पड़ जाएगा। पर आपके घर लौट आने पर आपके आचार, व्यवहार और वाणी में वैराग्य की प्रकर्षता देखकर परिजनों की कल्पनाएं ध्वस्त हो गईं।

नित नवीन कल्पनाओं और विधियों से परिजन युवा शिव के हृदय में सांसारिक आकर्षण जगाने का यत्न करने लगे।
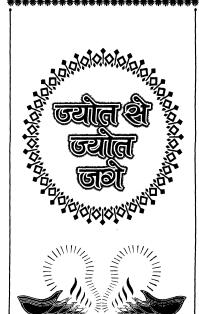
ज्योत से
ज्योत
जगे

विद्या के सनातन स्वरूप की अधिष्ठात्री मां विद्या ने निशब्द से शब्दों को टटोलते हुए कहा शिव! शिवत्व से कम पर संतुष्ट मत होना। सत्य के लिए मिट जाना पर सत्य की शर्त पर समझौता मत करना! भले ही इसके लिए तुझे गरलपान ही क्यों न करना पड़े।

ज्योत से ज्योत जगे

युवा शिवकुमार का संन्यास प्रेम और वैराग्य भाव सब ओर चर्चित हो चला था। आप परिवार के प्रत्येक सदस्य के चहेते थे। आपका मृदु और विनीत व्यवहार अपनों और दूरस्थों को बरबस आकर्षित कर लेता था। सब आपसे प्रेम करते थे और आपको अपना हितैषी मानते थे। ऐसे में सब ओर से आग्रह पर आग्रह आ रहे थे कि आप दीक्षा न लें, घर में रहकर ही धर्मध्यान करें।

आग्रहों की भीड़ में अनाग्रही शिव अपनी निश्छल मुस्कान से सभी को मुग्ध बनाते हुए अपने ध्येय पर बढ़ते रहे। ऐश्वर्यों के मध्य अनासक्त योगियों का सा आपका जीवन व्यवहार उच्चतम आदर्शों को यथार्थ स्वरूप प्रदान कर रहा था। आपको समझाने, मनाने और दबाने के निरंतर प्रयास चल रहे थे। पर आपका ध्यान अविचलित था। परिजन आप पर नाराज होते, पर आप उनकी नाराजगी में भी ममत्व को देखते और मुस्का भर देते।

राग और विराग के इस द्वन्द्व में प्रतिपल साक्षी रही आपकी सहोदरा बहन निर्मला जी एवं चचेरी बहनें सुमित्रा जी एवं संतोष जी का मन भी निर्वेद से भर गया। आपके भीतर प्रज्ज्वलित विराग का दीप अपनी बहनों के हृदय में भी विराग की चिंगारियां जगा गया। निर्मला, सुमित्रा और संतोष ने परस्पर मिलकर सुदृढ़ निश्चय कर लिया कि हम भी भाई के साथ ही संसार का परित्याग कर दीक्षा ग्रहण करेंगी।

एक ही दिशा से उठी वैराग्य की आंधी को परिजन रोक नहीं पा रहे थे, जब यह आंधी चतुर्दिक् से उठी तो परिजन सहम गए। एक ही द्वार से एक ही दिन चार-चार सदस्यों की विदायी की कल्पना मात्र से भाबू परिवार दहल गया।

संन्यास किसी को पीड़ित करने का साधन नहीं है। संन्यास तो समष्टि की पीड़ा को अपने हृदय से अनुभव करने का विज्ञान है। संन्यास की

अन्तरात्मा के पाठक शिवकुमार पारिवारिक वेदना को अनुभव कर रहे थे। परिजनों को शांत-संतुष्ट करने के लिए आपने कहा—मेरा वैराग्य मुझे घर से भाग कर अथवा आपका हृदय दुखाकर संयम लेने को प्रेरित नहीं करता है। मेरा आपसे कोई आग्रह नहीं है। मैं आपके मध्य में हूं। जब आप समस्त परिजन मुझे सहर्ष विदा देंगे तभी मैं प्रव्रज्या के लिए प्रस्थान करूंगा। आप सभी संतुष्ट रहें। आपके इस आश्वासन से परिजन संतुष्ट हो गए। घर का वातावरण शांत और मधुर बन गया।

जल कमलवत्

कमल जल में जन्मता, पलता और खिलता है, परंतु वह जल से अछूता रहता है। जल में रहकर भी वह जल से ऊपर रहता है। युवा शिवकुमार का व्यक्तित्व भी कमल के समान था। आप परिवार में रहते थे, मोह और ममत्व के मध्य में रहते थे परन्तु आप ममत्व से मुक्त थे। आज से चार दशक पूर्व भी आपका परिवार करोड़पति था, धन और ऐश्वर्य के समस्त साधन आपके पास मौजूद थे, पर उनमें आपकी कोई रुचि नहीं थी। वर्धमान ने जैसे कुण्डलपुर के महलों में निरासक्त योगी का जीवन जीया था, वैसा ही जीवन आप जी रहे थे। आप उचित समय की प्रतीक्षा में थे। **'खणं जाणाहि पंडिए'** आपकी प्रज्ञा क्षण का अध्ययन कर रही थी। परिजनों के सघन ममत्व को कुचल कर निकल जाने में आपकी प्रज्ञा हिंसा के दर्शन करती थी। तीर्थंकर महावीर के जीवन-दर्शन का अध्ययन करते हुए आपने अनुभव किया था कि महावीर जैसे परम पुरुष ने भी मातृ-ममत्व को पूरा मूल्य दिया था और माता त्रिशला के कहने से संन्यास को उत्सुक महावीर घर में ही रुक गए थे। आपका मन पंछी अध्यात्म के उन्मुक्त गगन में स्वतंत्र विहार को उत्सुक था। श्रावक का मनोरथ—कि कब वह शुभ समय आएगा जब मैं द्रव्य और भाव परिग्रह से मुक्त होकर आगार से अनगार धर्म में प्रवेश करूंगा—यह मनोरथ आपका मनोरथ बन चुका था।

धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन, आत्मचिंतन-मनन और यथासंभव संत-सान्निध्य— इन्हीं अवस्थाओं में आपका समय व्यतीत हो रहा था।

आप घर में थे पर घर आपके भीतर से विदा ले चुका था। मोह और ममत्व का विशाल संसार आपके आस-पास प्रसृत था पर उसके ममत्व के विस्तार से आप पार जा चुके थे। विशाल संपदा आपका स्वामित्व चाहती थी पर आप आंतरिक संपदा का स्वामित्व पा चुके थे। बाह्य संपदा का आकर्षण

आपके अस्तित्व से विलीन हो चुका था। आप भोजन करते, पर भोजन में आपका रस न था। गद्दों पर सोते, पर गद्दों में आपको आकर्षण न था। आपकी प्रज्ञा ने प्रासाद और वन-कांतर के भेद को अभेद का दर्शन दे दिया था। निर्वेद का महानद आपके तन, मन, प्राण में ठाठे मार रहा था। वैराग्य की उर्मियां आपके नयनों में प्रतिक्षण तैरा करती थीं। उस अवधि में आपका मस्तकीय तेज निरंतर बढ़ रहा था। अपने भीतर में आप आनंदित थे। खेलते और मुस्काते थे। भीतर बाहर आते-जाते थे। व्यावहारिक तल पर आप परिवार में मौजूद थे, पर निश्चय के तल पर आप परिवार और संसार से विदा ले चुके थे।

मदालसा-सी मां

कहते हैं कि इस पौद्गलिक जगत में मातृ-ममत्व से सघन, गहन, विराट और उच्च अन्य कुछ नहीं है। मातृ-ममता एक सत्य है, इसे नकारा नहीं जा सकता है। पौद्गलिक जगत की कोई वस्तु अध्यात्म के यदि सर्वाधिक निकट है तो वह माता की ममता और वात्सल्य ही है। एक मां अपने पुत्र के लिए अपने प्राण भी दे सकती है, केवल इसीलिए मातृ-वात्सल्य का यशोगान नहीं है। उससे भी आगे का कार्य मातृ-वात्सल्य संभव कर देता है। उससे भी आगे के उस कार्य का स्वरूप है—अपने पुत्र की प्रसन्नता के लिए वह अपने ममत्व को भी अपने हृदय में दफन कर लेती है, पुत्र के कल्याण के लिए पुत्र-विरह का हलाहल भी वह हँस कर पी लेती है।

वात्सल्य के इस शिखर स्वरूप के दर्शन आगम और आगमेतर साहित्य के पृष्ठों पर सहज उपलब्ध हैं। हम देखते हैं कि मां धारिणी अपने इकलौते पुत्र मेघ की प्रसन्नता के लिए अपनी ममता को अपने हृदय में ही समेट कर उसे प्रव्रज्या की अनुमति दे देती है। माता देवकी अपने पुत्र गजसुकुमाल को विदा देते हुए अपने वात्सल्य-वारिधि को अपने भीतर ही समेटने का प्रयास करती है। आंखों में सावन का महामेह लेकर भी वह मुस्काती है और पुत्र को विदा देते हुए कहती है—गज! ऐसे तपना कि तेरे विरह में अन्य किसी मां को वह क्षण न झेलना पड़े जो मैं झेल रही हूं।

मां मां है। आकाश की असीमता उसकी असीमता के समक्ष नगण्य है। स्वयंभूरमण की गहराई और सुमेरु की ऊंचाई उसके समक्ष उथली और बौनी है। मां अपनी उपमा आप है। उसके लिए अन्य उपमाएं अत्यंत छोटी हैं। मां मां है।

मां के इसी शिखर स्वरूप के दर्शन मां विद्यादेवी में प्रगट हुए। यह सच है कि परिजनों के ममत्व को सीमा की श्रेणी में नहीं बांधा जा सकता है। पर यह भी सच है कि मां विद्यादेवी का ममत्व शिवकुमार के प्रति शेष परिवार से सघन होना स्वाभाविक है। पर उससे भी बढ़कर सच यह है कि मां विद्यादेवी ने अपने ममत्व को अध्यात्म का शिखर देने का निर्णय कर अमर बना दिया।

वात्सल्य मूर्ति मां विद्यादेवी ने अनुभव किया—अपने क्षुद्र ममत्व से परास्त बनकर शिव को संसार में बांधे रखना मातृ-ममत्व को कलंकित करना ही होगा। मेरी ममता का श्रेयस् स्वरूप तो यही है कि अपनी विरह-व्यथा को छिपाकर हंसते-हंसते पुत्र को उसके काम्य की सिद्धि के लिए विदा दूं।

और फिर नारी जाति की नारायणी स्वरूपा मदालसा-सी मां विद्यादेवी ने पूरे परिवार को आमंत्रित किया। हृदय पर प्रस्तर बांधकर वात्सल्य वारिधि मां विद्यादेवी ने समस्त परिजनों से विनम्र शब्दों में कहा—अब हमें शिव को दीक्षा की अनुमति दे देनी चाहिए। शिव का वैराग्य अटल और अविनाशी है। उसे अनाज्ञा के आग्रह में बांधे रखना मेरे लिए अब संभव नहीं है। मां के नाते मैं शिव को प्रव्रज्या की आज्ञा देती हूं।

मां विद्यादेवी के इन शब्दों के साथ ही समस्त आग्रह गिर गए। विद्यादेवी के शिव के प्रति ममत्व से प्रत्येक परिजन सहज परिचित था। उसी परिचय ने समस्त परिवार को दीक्षार्थ आज्ञा प्रदान करने को विवश कर दिया।

शिवकुमार को दीक्षा के लिए आज्ञा-प्राप्ति की सूचना शीघ्र ही सर्वत्र फैल गई। जैन संघ में सर्वत्र हर्ष छा गया।

शिव की अनुगामिनी बनने के लिए प्रणशीला उनकी तीनों भगिनियों को भी पारिवारिक आज्ञा प्राप्त हुई। राग में विराग और विराग में राग का उत्सव सर्वत्र व्याप्त हो गया। विवाहोत्सव पर जैसी चहल-पहल होती है वैसी ही चहल-पहल मां विद्यादेवी के द्वार पर थी। परिजन, पुरजन और संबंधिजनों की भीड़ लग गई। कोई शिवकुमार को दीक्षा में प्रवेश के लिए आवश्यक आज्ञा प्राप्ति पर बधाइयां दे रहा था तो कोई उनके विरह की कल्पना से साश्रू नयन था। कोई मां विद्यादेवी के साहस को सराह रहा था तो कोई पिता चिरंजीलाल के अप्रतिम त्याग की प्रशंसा कर रहा था।

दीक्षार्थ अनुमति का स्वरूप

जैन परम्परा में दीक्षा के लिए आज्ञा-प्राप्ति की सनातन परम्परा रही है। कर्मयुग और धर्मयुग के आद्य प्रवर्तक ऋषभदेव भी दीक्षा के प्रसंग पर अपने पुत्रों और परिजनों से दीक्षा की अनुमति लेते हैं। अंतिम तीर्थंकर महावीर भी दीक्षा के लिए माता-पिता से दीक्षा की अनुमति मांगते हैं। माता से अनुमति नहीं मिली तो महावीर घर में ठहर गए। माता-पिता के स्वर्गारोहण के पश्चात् महावीर सहोदर नंदिवर्धन से दीक्षा की आज्ञा प्राप्त करते हैं। जैन धर्म में दीक्षा लेने वाले प्रत्येक मुमुक्षु के लिए यह आवश्यक है कि वह उसके लिए अपने परिजनों की अनुमति प्राप्त करे।

ऐसा क्यों है? अनुमति अपरिहार्य क्यों है?

व्यावहारिक दृष्टि से यदि विचार करें तो इसका समाधान सरल है। परिजनों से आज्ञा प्राप्त कर दीक्षा लेने से सामाजिक अनुशासन और सौहार्द पर आंच नहीं आती है। दीक्षार्थी पर दायित्वों से भागने और दीक्षा देने वालों पर दीक्षार्थी को बहकाने-भगाने का आरोप नहीं लगता है। यह दीक्षार्थ अनुमति का व्यावहारिक पक्ष है।

दीक्षार्थ अनुमति के आध्यात्मिक पक्ष पर विचार करें तो इसकी मौलिक अपरिहार्यता स्पष्ट होती है। वस्तुत: दीक्षा मोह को मिटाने की साधना का प्रवेश-द्वार है। दीक्षित होने का अर्थ है—ममत्व-शृंखलाओं को मिटा देना। दीक्षार्थी दीक्षा की अनुमति मांगते हुए अपने माता-पिता और परिजनों से ममत्व मुक्ति की प्रार्थना करता है। एक दीक्षार्थी जब कहता है कि 'मां! मुझे दीक्षा की आज्ञा दो', इसका आन्तरिक पक्ष यह होता है कि मां! मैं उस ममत्व को आज विराम दे रहा हूं जो किसी को मां और किसी को पुत्र रूप प्रदान करता है। मां भी जब पुत्र को दीक्षा की अनुमति देती है तो वह भी ममत्व के बन्धन का छेदन करती है। ममत्व का छेदन ही वस्तुत: समस्त दुख परम्पराओं का छेदन है।

दीक्षार्थ अनुमति में यदि अनुमति का आध्यात्मिक पक्ष गौण रहता है तो दीक्षार्थी दीक्षा के अमृत फल से शून्य रह जाता है।

श्रद्धेय शिवकुमार ने माता-पिता और परिजनों से दीक्षार्थ अनुमति मांगी। उसका अर्थ इतना ही नहीं था कि मैं घर छोड़कर साधु हो जाना चाहता हूं। उसका अर्थ था—घर और परिजनों का ममत्व मेरे अन्तस् से शून्य हो गया

है। जैसा यह घर मेरे लिए है ऐसे ही प्रत्येक घर मेरे लिए है। आप परिजन मेरे लिए जैसे हैं ऐसे ही विश्व के समस्त जन मेरे लिए हैं। आप परिजनों और विश्वजनों में मेरे लिए कोई भेद शेष नहीं रहा है। आप मेरे अपने हैं तो अन्य समस्त जन भी मेरे अपने हैं। मेरे अपनत्व से ममत्व की सीमाएं विदा ले चुकी हैं। मेरे प्रेम की परिधि ध्वस्त हो गई है। इसीलिए मैं प्रव्रज्या के बहाने समष्टि में परिव्रजन को उत्सुक हूं।

मां विद्यादेवी ने आपकी अनुमति-याचना में छिपे इस सनातन स्वर को अनुभव किया और स्वार्थ विजय के लिए उन्होंने अपने साहस को तोला। जब उन्होंने स्वयं को सक्षम पाया तो उन्होंने घोषणा कर दी—शिव! मैं अपना आग्रह वापिस लेती हूं! स्वार्थ में खो गई थी मैं! तुम्हारी चेतना के प्रकाश ने मेरे स्वार्थ के धुंधलके को धो दिया है! तुमसे मुझे जननी का सौभाग्य मिला इससे मुझ सहित नारी जाति धन्य हुई!

सम्बन्धों, आकांक्षाओं और पारस्परिक अपेक्षाओं पर आत्यंतिक विराम ही दीक्षार्थ अनुमति का सत्यस्वरूप है।

सन् 1960 से सन् 1972 तक गृहयोगी के रूप में तप कर श्रद्धेय शिवकुमार ने स्वयं को दीक्षार्थ तैयार किया और जिस क्षण समय परिपक्व हुआ अथवा जिस क्षण दीक्षा में प्रवेश की पूर्ण पात्रता आपमें प्रगट हुई उसी दिन परिजनों से आपको सप्रेम-सोत्साह अनुमति भी प्राप्त हो गई।

प्रस्थान

दीक्षा की अनुमति प्राप्त होने पर श्रद्धेय शिवकुमार प्रस्थान को तैयार हुए। एक अपूर्व भावनात्मक परिदृश्य बन गया। विदायगी की इस बेला में समस्त परिजन और सम्बन्धी जन उपस्थित थे। रणांगण में जाने को सन्नद्ध वीरवर योद्धा में जो उल्लास और उत्साह होता है वही उल्लास और उत्साह आपके अंग-प्रत्यंग से प्रकट हो रहा था। परिजनों के साथ-साथ पुरजन भी उस क्षण के साक्षी हैं। हमने सुना— उस समय शिवकुमार के मस्तक पर अपूर्व तेज था, उनके हृदय में अप्रतिम उत्साह था। वे राजकुमारों जैसी वेश-भूषा में थे।

विदायगी के उस क्षण में श्रद्धेय शिवकुमार ने सर्वप्रथम सर्वज्येष्ठ पूज्य ताया श्री बनारसी दास जी के चरणों का स्पर्श किया। ताया जी ने दोनों हाथों से आपको आशीर्वाद दिया और बोले—प्यारे पुत्र! जिस भाव से आज तुम

विदा ले रहे हो, सदैव इन्हीं भावों में रमण करना। जा ही रहे हो तो अब पीछे मुड़कर मत देखना!

पूज्य ताया जी से आशीष प्राप्त करने के पश्चात् पूज्य पितृदेव के चरणों पर मस्तक रख कर आपने विदा मांगी। भावविह्वल पितृदेव श्री चिरंजीलाल जी ने कहा–शिव! तू हमारे कुल का रत्न है। मैं चाहता हूँ कि अब तू साधुरत्न बन। आज मेरा पितृत्व धन्य हो उठा है। पितृत्व का सच्चा गौरव आज मुझे अनुभव हो रहा है।

तदनन्तर वीरांगना मां विद्यादेवी के चरणों पर आपने मस्तक रखा। मातृत्व की मिशाल मां के चरणों पर मस्तक रख कर आपके नयनकोर आर्द्र बन गए। आपने भाव-विह्वल होकर कहा–मां! मैं अमर-पथ का पथिक बनने जा रहा हूँ, पर कामना करता हूँ कि प्रत्येक भव्य जीव को मां के रूप में तुम मिलो।

भगवती मां विद्यादेवी ने अपने अतिजात पुत्र शिवकुमार को कण्ठ से लगा लिया। समय सहम कर मां के शब्दों की प्रतीक्षा में ठहर-सा गया। विद्या के सनातन स्वरूप की अधिष्ठात्री मां विद्या ने निशब्द से शब्दों को टटोलते हुए कहा–**शिव! शिवत्व से कम पर संतुष्ट मत होना! सत्य के लिए मिट जाना पर सत्य की शर्त पर समझौता मत करना! भले ही इसके लिए तुझे गरलपान ही क्यों न करना पड़े!** मुझ नश्वर को तूने अनश्वर मातृत्व प्रदान कर जो गौरव दिया इसी से तुम्हारा मातृ-ऋण अदा हो गया है। शिव! जाओ! संयम और साधना में ऐसे रमो कि चतुर्थ काल के संयम का सत्य-स्वरूप साकार हो उठे। विद्रोह की आँधियों में भी शिव! तुम्हारा शिवत्व अमंद रहे!

मां का शिव-आशीष और शिव-दर्शन पाकर श्रद्धेय शिवकुमार गद्‌गद हो गए। बोले-मां! तुम्हारी कुक्षी से जन्म पाकर मैं धन्य हो गया हूँ।

उसके बाद शिवकुमार ने अग्रज श्री राजकुमार जी एवं अनुज विजय कुमार जी से गले मिलकर अनुज्ञा प्राप्त की। शेष समस्त परिजनों से भी विदाई ली।

तदनन्तर शिवरमणी के कामी शिव गृही से अगृही होने के लिए, आगार से अनगार होने के लिए, संन्यास को स्व में जगाने के लिए और महावीर को सांसों में जीने के लिए अदम्य उत्साह के साथ प्रस्थान कर गए।

शिवकुमार श्रद्धेय गुरुदेव ज्ञान महोदधि श्री ज्ञान मुनि जी महाराज के

चरणों में पहुंचे। सद्गुरु के चरणों पर शीश रखकर आपने कहा, गुरुदेव! समय पक चुका है, मुझे संयम का वरदान दो।

श्रद्धेय गुरुदेव ने बाहें फैलाकर आपका स्वागत किया। उन्होंने फरमाया– शिव! आत्मगुरु के शिष्य परिवार में तुम्हारा स्वागत है। आत्मगुरु के प्रशिष्य के रूप में तुम उन्हीं ऊंचाइयों का स्पर्श करो जिन ऊंचाइयों पर आत्मगुरु ने विहार किया।

सद्गुरु का आशीष प्राप्त कर शिव कृतकृत्य बन गए।

वैराग्य का स्वर्णिम क्षण

संभवत: इतिहास की यह प्रथम घटना थी कि उच्च शिक्षा प्राप्त एक कोटीश्वर युवक दीक्षा लेने जा रहा था। इस के साथ यह तथ्य भी जुड़ा था कि शिवकुमार का दीक्षित होने का निर्णय परिस्थितिजन्य अथवा भावुकता का परिणाम नहीं था। विशुद्ध वैराग्य भाव से आपने दीक्षित होने का निर्णय लिया था। एक वैरागी के रूप में आपने दस वर्ष घर में ही बिताए थे। दस वर्षों की प्रलम्ब अवधि में परिजनों ने जब यह अनुभव किया कि आपका वैराग्य अटल है तभी आपको दीक्षा की अनुमति प्रदान की।

इस ऐतिहासिक दीक्षा का सर्वत्र चर्चित होना स्वाभाविक था। समग्र जैन जगत में और विशेष रूप से उत्तरभारत के कोने-कोने में शिव कुमार की दीक्षा का समाचार फैल गया। इस ऐतिहासिक उत्सव के आयोजन के लिए अनेक श्रीसंघों में होड़ लग गई। श्रद्धेय गुरुदेव पंजाब केसरी श्री ज्ञान मुनि जी महाराज के चरणों में दीक्षा महोत्सव के आयोजन की प्रार्थनाओं के साथ श्रीसंघ उपस्थित होने लगे।

उधर वैरागी शिव कुमार के परिजनों ने मिलकर निर्णय किया कि भाबू कुल अवतंश शिव कुमार के दीक्षा महोत्सव को आयोजित करने का पुण्य अवसर उन्हें प्राप्त हो। ताया जी श्री बनारसी दास के नेतृत्व में समस्त भाबू परिवार गुरुदेव के चरणों में पहुंचा। श्री बनारसी दास जी ने गुरुदेव से प्रार्थना की–गुरुदेव! भाबू कुल के देदीप्यमान रत्न शिव कुमार की दीक्षा के आयोजन का पुण्य लाभ हमें प्रदान करने की कृपा करें।

शिव कुमार के परिवार की प्रार्थना पर श्रद्धेय गुरुदेव ने गंभीरतापूर्वक चिंतन किया। गुरुदेव ने विचार किया– भाबू परिवार की प्रार्थना को अस्वीकार करना उसके महान त्याग का असम्मान होगा। ऐसा विचार कर श्रद्धेय गुरुदेव

ने दीक्षा महोत्सव के समायोजन का अधिकार आप के परिजनों को प्रदान कर दिया।

पर्यटन और प्रव्रजन

यायावरी मुनि का सहज स्वभाव होता है।

मुनिधर्म में प्रवेश से पूर्व ही शिव कुमार को यायावरी का सहज शौक था। दूर देशान्तरों में परिभ्रमण, प्रकृति से लयबद्ध होकर उसका दर्शन, ऐतिहासिक स्थलों का पर्यटन आपको स्वभाव से ही रुचिकर रहा है। दीक्षा में प्रवेश से पूर्व श्रद्धेय गुरुदेव ने आपको आपके स्वभाव के अनुसार संत-दर्शन और यथेच्छ पर्यटन की अनुमति प्रदान की।

पर्यटन पर संतदर्शन को आपने प्रमुखता प्रदान की। अपनी इस यात्रा में आपने भारत के विभिन्न प्रांतों में विराजित ऋषीश्वरों और मुनीश्वरों के दर्शन किए। प्रमुख रूप से आपने महाराष्ट्र में विराजित संघनायक आचार्य सम्राट् श्री आनंद ऋषि जी महाराज, मुंबई में विराजित उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी महाराज, करोल बाग दिल्ली में विराजित पंजाब केसरी श्री प्रेमचंद जी महाराज प्रभृति महामहिम मुनिराजों के दर्शन किए और उनके आशीर्वाद प्राप्त किए।

पंजाब केसरी श्री प्रेमचंद जी महाराज ने आपको आशीर्वाद देते हुए कहा था—शिव कुमार! जिस भाव से तुम दीक्षा ले रहे हो उस भाव की उत्तरोत्तर वृद्धि करते रहना।

मुनि-दर्शन के पश्चात् आपने विभिन्न पर्यटन स्थलों का भी परिभ्रमण किया। भारत के प्रमुख पर्यटन स्थल कश्मीर, नैनिताल, शिमला, कुल्लू, मनाली, देहरादून, हरिद्वार, ऋषिकेश, मोक्षधाम, आगरा के ताजमहल आदि ऐतिहासिक एवं प्राकृतिक स्थलों का आपने परिभ्रमण किया।

वेष और विचार

शिव कुमार उच्च शिक्षा प्राप्त युवक थे, विश्व के कई देशों का भ्रमण कर चुके थे और कोटीश्वर परिवार के चश्मेनूर थे। ऐसे में आपका वेश-विन्यास राजकुमारों जैसा होना अस्वाभाविक नहीं था। पेंट-शर्ट अथवा कोट-पेंट सामान्यतः आप धारण करते थे।

जैन जनमानस में एक वैरागी के लिए श्वेत कुर्ता और चोलपट्ट धारण करने की परम्परा रही है। पर इस परम्परा से विपरीत आपको सूटेड-बूटेड

परिधान में देखकर लोगों में चर्चा होना स्वाभाविक था। उस समय ये चर्चाएं चलीं कि आधुनिकता में लिपटा यह युवक कैसे दीक्षा ले सकेगा। कुछ अवसरों पर इन चर्चाओं से आपको प्रत्यक्ष भी होना पड़ा।

ऐसे में आप ने स्पष्ट किया–संन्यास वस्त्रों में नहीं जन्मता, वह तो हृदय में खिलता है। आप लोग वस्त्रों में क्यों अटकते हो! संन्यास के सत्य से साक्षात्कार कीजिए, आपके अनावश्यक आग्रह स्वतः ही समाप्त हो जाएंगे।

प्राज्ञ श्रावक आपके दृष्टिकोण को समझ गए। आपके प्रति उनका सम्मानभाव वृद्धिंगत हुआ।

दीक्षा का दर्शन

'दीक्षा' का शाब्दिक अर्थ है धार्मिक संस्कार के लिए स्वयं को समर्पित कर देना।

प्रव्रज्या का अर्थ है–परिव्रजन करना, निर्बन्ध विचरण करना।

जैन परम्परा में दीक्षा और प्रव्रज्या पर्यायवाची शब्द के रूप में व्यवहृत हुए हैं। दीक्षा के स्वरूप, विधि और उद्देश्य पर जैनागमों में प्रकीर्ण रूप से विशद प्रकाश डाला गया है।

व्यावहारिक रूप में दीक्षा अध्यात्म का प्रवेश-द्वार है। दीक्षा एक आत्म-प्रतिज्ञा है बाहर से भीतर लौटने की। दीक्षा में प्रवेश लेते हुए दीक्षार्थी अपने भीतर संकल्प लेता है कि इस क्षण के पश्चात् समस्त ब्रह्माण्ड मेरा कुटुम्ब है, सृष्टि के समस्त प्राणी मेरे आत्मीय जन हैं। दीक्षा **'आत्मवत् सर्वभूतेषु'** के अंतर्स्वीकार का मंगलमय महापर्व है।

अनंत जीवन पथ पर 'दीक्षा' एक आदिम मंगल का क्षण है। अनादिकालीन भ्रमणाओं और भटकावों से मुक्ति का महापर्व है प्रव्रज्या। 'प्रव्रज्या' से पूर्व का अनन्त जीवन भ्रमणाओं का भ्रमण मात्र रहा है। अज्ञान के तमस-थपेड़े जीवन की नौका को जन्म, मरण, दुख, दारिद्र्य के चक्रवातों में जहां चाहे फैंकते रहे। प्रव्रज्या का क्षण ज्ञान की आंख के साथ स्वतंत्र परिव्रजन के प्रारंभ का क्षण बनता है।

बोध पाहुड में प्रव्रज्या की परिभाषा निम्न प्रकार से की गई है–

सज्झाय-झाण-जुत्ता पव्वज्जा एरिसा भणिया।

अर्थात् स्वाध्याय और ध्यान में तन्मय होना प्रव्रज्या है।

मात्र वेश परिवर्तन से प्रव्रज्या घटित नहीं होती है। उसके लिए अंतरंग

का परिवर्तन आवश्यक है। स्वाध्याय और ध्यान की गहराई में पैठना आवश्यक है। श्रद्धेय शिवकुमार के अंतरंग में प्रव्रज्या घटित हुई। वह प्रव्रज्या किसी भावातिरेक का परिणाम नहीं थी। वह आपके अंतरंतग के परिवर्तन का परिणाम थी। निरंतर दस वर्षों तक उसके लिए आपने वैराग्य की साधना की थी। फिर एक क्षण आया कि आप व्यावहारिक रूप से प्रव्रज्या में प्रवेश पा गए।

अभिनिष्क्रमण उत्सव

पंजाब प्रांत के गौरवशाली और सर्वतोभावेन समृद्ध एवं श्रद्धेय चरितनायक के जन्म-नगर मलौट मण्डी में 17 मई 1972 का शुभ दिन दीक्षा महोत्सव के लिए सुनिश्चित किया गया। दीक्षार्थियों में शिव कुमार जी के साथ उनकी तीन भगिनियां सम्मिलित थीं। आप की भगिनियों के नाम इस प्रकार थे-(1) निर्मला जी (2) सुमित्रा जी एवं (3) संतोष जी।

एक ही परिवार की चार भव्य आत्माएं एक ही दिन जैन दीक्षा ग्रहण करने जा रही थीं। इस समाचार से समग्र जैन जगत में श्रद्धा और उत्साह की लहर दौड़ गई। मलौट मण्डी और भाबू परिवार का विमल सुयश दिग्-दिगन्तों में व्याप्त हो गया।

मलौट नगरी के इतिहास में उच्च स्तर पर दीक्षा-महोत्सव के आयोजन का प्रथम अवसर था। मलौट मण्डी में हजारों छोटे-बड़े परिवार रहते हैं। यहां सभी जातियों के लोग हैं जो विभिन्न धर्मों के अनुयायी हैं। परन्तु आपके दीक्षा महोत्सव के अवसर पर पूरी मलौट नगरी एक परिवार के रूप में रूपायित हो गई थी। प्रत्येक जाति और.प्रत्येक धर्म के लोग जाति और धार्मिक प्रतिबन्धों से ऊपर उठकर श्रद्धेय शिवकुमार के अभिनिष्क्रमण महामहोत्सव में तन-मन-धन से सम्मिलित हुए। नगरी के प्रत्येक बालक, युवा और वृद्ध ने आपके दीक्षा महोत्सव को निजी महोत्सव माना था। वैश्यों, सिखों और अन्य जाति के लोगों में वैसा ही उत्साह और जोश दिखाई पड़ रहा था जैसा उत्साह और जोश जैन समाज और भाबू परिवार में मौजूद था। एक ही वाक्य में यदि कहा जाए तो कह सकते हैं कि श्रद्धेय शिवकुमार का दीक्षा महोत्सव मलौट नगरी के इतिहास का पारस्परिक सौहार्द और सर्वजन-बन्धुत्व का महामहोत्सव बन गया था। सर्वत्र उमंग और उल्लास का वातावरण था। आबालवृद्ध के हृदय में आपके प्रति श्रद्धा और अपनत्व का सागर लहरा

रहा था। जुबान-जुबान पर आपका यशगान था। द्वार-द्वार पर दीवाली की दीपमालाएं प्रज्ज्वलित थीं।

धर्म जागरण

श्रद्धेय संतों और आर्याओं के मण्डल दीक्षा तिथि से कई दिन पूर्व ही मलौट मण्डी में पधार चुके थे। श्रद्धेय मुनिराजों में पंजाब केसरी बहुश्रुत गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज, नवयुवक सुधारक भण्डारी श्री पद्मचंद जी महाराज, प्रवचन भूषण श्रुतवारिधि श्री अमर मुनि जी महाराज आदि मुनि अपने-अपने शिष्य वृन्द सहित, एवं श्रद्धेय महासाध्वियों में संयम शिरोमणी श्री कौशल्या जी महाराज, महासती श्री सीता जी महाराज, महासती श्री महेन्द्रा जी महाराज, महासती श्री शिमला जी महाराज, महासती श्री विमला जी महाराज आदि साध्वी वृन्द मलौट नगरी में पदार्पित हुए।

मंगलमय प्रवचनों के कार्यक्रम प्रतिदिन चल रहे थे। गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज एवं श्री अमरमुनि जी महाराज के ओजस्वी व्याख्यानों को सुनने के लिए जनता बरसाती नदी के जल प्रवाह की तरह उमड़ रही थी। जिनत्व की महान प्रभावना हो रही थी, जिनत्व देदीप्यमान हो रहा था।

श्रद्धेय-वैरागी श्री शिवकुमार के जनक श्रीयुत चिरंजीलाल जी, ताया श्री बनारसीदास जी, मातृ भगवती श्रीमती विद्यादेवी जी, मामा श्री भगवानदास जी एवं श्री बजरंगदास जी, तथा अग्रजों, अनुजों सहित समस्त परिवार का उत्साह देखते ही बनता था। भाबू परिवार ने पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान आदि प्रदेशों तथा दूरस्थ मुंबई तक के श्री संघों को आमंत्रण पत्रिकाएं भेज कर दीक्षा महोत्सव में आमंत्रित किया।

जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है कि श्रद्धेय शिवकुमार जी का महाभिनिष्क्रमण महोत्सव समग्र भारत वर्ष के सुदूर अंचलों तक में बहुचर्चित हुआ था। तीर्थंकर देवों के अभिनिष्क्रमण के समय जैसे तीनों लोकों में उत्सव और उत्साह का संचार होता है, वैसा ही उत्सव और उत्साह तीर्थंकर प्ररूपित धर्मतीर्थ के भावी 94वें पट्टधर शिवाचार्य के अभिनिष्क्रमण के अवसर पर सर्वदिशाओं में दिखाई दे रहा था। विभिन्न प्रांतों और सुदूर अंचलों के श्रावक-श्राविकाएं आपके अभिनिष्क्रमण महोत्सव में सम्मिलित होने के लिए भारी मात्रा में मलौट नगरी में एकत्रित होने लगे। भाबू परिवार ने अतिथियों और आगन्तुक साधर्मी बन्धुओं की सेवा-सत्कार में अपना तन-मन-धन अर्पित किया।

सुनिश्चित तिथि से सात दिन पूर्व से ही मलौट मण्डी में सांस्कृतिक और धार्मिक कार्यक्रम प्रारंभ हो गए थे। स्थानीय और बाहर नगरों के भाई-बहन पूरे उत्साह से इन कार्यक्रमों में भाग ले रहे थे।

केसर संजम की

श्रद्धेय मुनिराजों और महासाध्वियों के सान्निध्य में वैरागी शिव कुमार और वैराग्यशीला तीनों बहनों की केसर-रस्म का कार्यक्रम पूरे उत्साह से आयोजित हुआ। सैकड़ों भाइयों और बहनों ने केसर-रस्म उत्सव में भाग लिया। केसर शौर्य और मंगल का प्रतीक मानी गई है। संयम का पालन शूरवीरों द्वारा ही संभव होता है। संयम में प्रवेश का अवसर मंगलमय अवसर होता है। अत: संयम और संयम में प्रवेश के क्षण को प्रतीकात्मक रूप से ध्वनित करने के लिए दीक्षा-प्रसंगों पर केसर-रस्म का इतिहास काफी पुराना है।

दीक्षार्थी शिव कुमार एवं तीनों बहनों पर केसर की वर्षा की गई। केसर की सुरभि से सभी के चित्त आल्हादित बन गए। यत्र-तत्र-सर्वत्र केसर ही केसर दिखाई दे रही थी। केसर से श्वेत वस्त्रों को चित्रित किया गया। यह वही केसरिया वस्त्र थे जो दीक्षा के उपरांत दीक्षार्थियों को संयम के प्रथम परिधान/बाणा के रूप में प्रदान किए जाने वाले थे।

प्रव्रज्या पर्व

एक जोड़ी कदम चलने को उत्सुक थे संयम के संघर्षी पथ पर।

एक जोड़ी आंखें निहार रही थीं एक ऐसे सपने को जो इस जगत को एक सपना मानती हैं।

एक जोड़ी हाथ प्रणाम की मुद्रा में गुरु के सामने थे।

एक जोड़ी कान सुनने को आतुर थे उस दीक्षा-मंत्र को जो मन-मन्वंतर व भव-भवांतर से छुटकारा दिला दे।

जैन दीक्षा अग्नि-पथ पर जीवन-रथ की यात्रा है।

जैन दीक्षा जीवन में मरण का अनुभव है।

जैन दीक्षा अपने आपके अवसान का अनुष्ठान है।

जैन दीक्षा मृत्यु के काले पाषाण खण्ड पर मुक्ति के स्वर्णिम हस्ताक्षर हैं।

शिव कुमार के हाथ आज अपने माटी के देह में एक विदेह की मूर्त्ति को रचने को उत्सुक हैं। शिवकुमार के गुरु श्री ज्ञान मुनि जी आज नश्वर देह के पाषाण को ईश्वर की प्रतिमा में बदलने जा रहे हैं संयम की छैनी से।

17 मई 1972 का दिन आया। मलौट नगरी में जन-सैलाब उमड़ आया था। दूर और निकट के सहस्रों श्रावक और श्राविकाएं इस प्रसंग पर उपस्थित थे। प्रभात में तिलक रस्म के कार्यक्रम के पश्चात् दीक्षार्थी शिव कुमार जी एवं दीक्षार्थिनी बहनों-निर्मला जी, सुमित्रा जी तथा संतोष जी की भव्य शोभायात्रा निकाली गई। सुसज्जित रथ पर राजसी परिधान में दीक्षार्थियों की शोभा देखने योग्य थी। दीक्षार्थी श्री शिव कुमार जी के मस्तक पर अपूर्व तेज व्याप्त था। दीक्षार्थिनी वीर बालाओं का उत्साह गगनतल का स्पर्श कर रहा था। रथ पर आसीन दीक्षार्थी दोनों हाथों से सिक्कों की बरसात कर रहे थे जो तीर्थंकर भगवंतों के वर्षीदान का ही प्रतीक प्रतीत हो रहा था। विरक्तात्माओं द्वारा बरसाए जा रहे सिक्कों को लक्ष्मी का आध्यात्मिक प्रतीक मानकर बड़े-बड़े धनपति भी ग्रहण करने को उत्सुक थे।

दीक्षार्थियों के धर्मरथ के आगे और पीछे जैन संस्कृति की प्रतीक स्वरूप कई भव्य और दर्शनीय झांकियां जन-जन के मन को आकर्षित कर रही थीं। स्थान-स्थान पर जलपान और अल्पाहार के स्टॉल लगाए गए थे।

सहस्रों आंखें शिव कुमार के तेजस्वी मुखमण्डल पर चिपकी हुई थीं। आपके उत्कृष्ट त्याग और वैराग्य की प्रशस्तियां सहस्रों कण्ठों से जयगान बनकर फूट रही थीं। 'जब तक सूरज चांद रहेगा शिव कुमार का नाम रहेगा' इत्यादि गगनभेदी जयकारों से दसों दिशाएं गूंज रही थीं।

भौतिकवाद के घटाटोप में अध्यात्मवाद का एक अलौकिक सूर्य अपनी शुभ्र आभा यत्र-तत्र-सर्वत्र विकीर्ण कर रहा था। चारों मुमुक्षु आत्माएं संसार की असारता को स्पष्टतः संसूचित कर रही थीं। सभी के मुख-मण्डल पर एक नवीन कांति और एक नवीन क्रांति युगपत रूप से परिदृश्यमान थी।

शनैः-शनैः शोभा यात्रा दीक्षास्थल पर पहुंची। दीक्षास्थल पर दो भव्य मंच थे जिनमें से एक पर जैन जगत के ज्योतिर्धर नक्षत्र मुनिवृंद विराजमान और शोभायमान हो रहे थे तथा दूसरे मंच पर जैन जगत की उज्ज्वल तारिकाएं महासाध्वी जी महाराज विराजमान थीं। संत-भगवंतों के सम्मुख भी दो मंच निर्मित थे, जिनमें से एक मंच पर वैराग्य मूर्ति श्री शिव कुमार जी उपस्थित

थे तथा दूसरे पर तीन भव्य आत्माएं दीक्षार्थिनी भगिनियां उपस्थित थीं। मंच पर पदार्पण से पूर्व चारों भव्य आत्माओं ने उपस्थित श्रद्धेय मुनिराजों और महासाध्वियों को वंदन किया। वंदना का यह दृश्य अपने आप में आंतरिक समर्पण का परिचायक था।

इस पुण्य प्रसंग पर सहस्त्रों श्रावक और श्राविकाएं मौजूद थे। विशिष्ट अतिथियों में प्रदेश के कई मंत्री तथा नेता उपस्थित थे। मुख्य वक्ताओं ने दीक्षा के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए दीक्षार्थियों का अभिनंदन किया।

उसके बाद वैरागी श्री शिव कुमार जी एवं वैराग्यमती तीनों भगिनियां मुण्डन तथा वेश परिवर्तन हेतु पाण्डाल के निकट ही निर्धारित कक्ष में गए। वैरागी बन्धु एवं वैरागिन भगिनियों के लिए अलग-अलग कक्षों की व्यवस्था की गई थी।

श्री शिव कुमार जी का मुण्डन संस्कार संपन्न हुआ। उसके बाद एकांत में जाकर आपने निरपेक्ष और निरासक्त भाव से राजसी परिधानों को एक-एक करके उतार दिया। शरीर पर धारण किए गए बहुमूल्य आभूषण आपने उतार दिए। तदनंतर परिजनों ने आपको सुगंधित जल से स्नान कराया। स्नान के पश्चात् आपने केसर-रंजित संयम के योग्य श्वेत वस्त्र धारण किए। मुख-वस्त्रिका धारण की। इस विधि से आपने एक राजकुमार के रूप से भिक्षु स्वरूप में प्रवेश किया। जैसे केंचुली का परित्याग करने पर सर्प केंचुली की ओर मुड़कर भी नहीं देखता है, ऐसे ही आपने परित्यक्त वस्त्राभूषणों की ओर मुड़ कर भी नहीं देखा।

तीनों वैराग्यमती बहनों का भी मुण्डन संस्कार कार्यक्रम संपन्न हुआ। साध्वी वेश में तीनों वीर बालाएं विशेष शोभा को प्राप्त हो रही थीं।

उसके बाद शिव कुमार सहित चारों विरक्त समारोह स्थल में विराजित श्रद्धेय गुरुदेव के चरणों में पधारे। केसर रंजित श्वेत-संयम परिधान में विरक्तात्माओं को देख कर जनमानस आंदोलित हो उठा। वातावरण भावनात्मक बन गया। सभी के रोम-रोम अगम्य अनुभव से आप्लावित हो रहे थे। सभी लोगों के अन्तर्मानस में यह चिन्तन चल रहा था कि–यह समूचा संसार वस्तुतः निस्सार है। हम इस निस्सार संसार में सार खोजने का व्यर्थ उपक्रम कर रहे हैं। धन्य हैं युवा शिव कुमार को जिन्होंने तीस वर्ष के भरे यौवन में संसार से सार ग्रहण कर निस्सार का परिहार कर दिया है। वस्तुतः सार

का ग्रहण करना ही संयम है एवं निस्सार का विसर्जन करना ही संन्यास है। आत्मभाव में स्थिर होना ही दीक्षा है एवं अध्यात्म भाव में विहार करना ही प्रव्रज्या है।

श्रद्धेय श्री शिव कुमार जी ने दस वर्षीय वैराग्य काल में उन सभी का अनुभव प्राप्त किया, नवनीत प्राप्त किया। उसके आस्वादन की जो प्रक्रिया तब प्रारंभ हुई थी वही बाह्य रूप में श्रमण परिवेश में दृष्टिगत हो रही थी। सहस्रों आंखें उस दृश्य को देखती हुई अघाती नहीं थीं।

गुरु मंत्र

विरक्तमना श्री शिव कुमार जी मुनि वेश में एवं वैराग्यमती बालाएं सुश्री निर्मला जी, सुमित्रा जी एवं संतोष जी साध्वी वेश में दीक्षा समवसरण में पधारे। वहां विराजित श्रद्धेय पंजाब केसरी गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज, श्रद्धेय भण्डारी श्री पद्मचंद जी महाराज, वाणी भूषण श्री अमर मुनि जी महाराज आदि मुनि मण्डल एवं परमश्रद्धेया महासती श्री सीता जी महाराज, संयम प्राण महासती श्री कौशल्या जी महाराज आदि साध्वी मण्डल को विरक्तात्माओं ने नमन किया। नमन के पश्चात् विरक्तात्माएं दीक्षा रूपी महामंत्र प्राप्त करने के लिए विनम्र मुद्रा में खड़े हो गए।

परम श्रद्धेय गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज ने नियमानुसार सार्वजनिक रूप से दीक्षार्थी विरक्तात्माओं के परिजनों से आज्ञा मांगी। श्रद्धेय गुरुदेव के वचनों को सुनकर पितृदेव श्री चिरंजीलाल जी जैन, मातेश्वरी श्रीमती विद्यादेवी जैन, ताया जी बनारसी दास जी जैन आदि परिजनों ने अपने नौनिहालों की प्रव्रज्या की आज्ञा प्रदान की।

आज्ञा प्राप्ति के पश्चात् श्रद्धेय गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी म. की प्रार्थना पर पूज्य भण्डारी श्री पद्मचंद जी म. ने आगम के विधान के अनुसार वैरागी श्री शिव कुमार जी और उनकी तीनों भगिनियों को श्रामणी दीक्षा का अभिमंत्र प्रदान किया। पूज्यश्री ने इक्कीस बार नवकार मंत्र का उच्चारण आपको कराया और संक्षेप में महामंत्र के प्रत्येक पद का अर्थ और उद्देश्य समझाया। तदनन्तर गुरु के आदेशानुसार इच्छाकारेण के पाठ द्वारा दीक्षार्थियों ने वर्तमान और विगत भव सम्बन्धी पापों की आलोचना की। तब कायोत्सर्ग की शुद्धि के लिए उत्तरीकरण सूत्र का उच्चारण कराके अरिहंतों की स्तुति रूपी चतुर्विंशति स्तव सूत्र द्वारा आपको कायोत्सर्ग में प्रविष्ट किया। उसके

बाद पूज्यश्री ने सस्वर अरिहंत स्तुति (लोगस्स का पाठ) का उच्चारण करवाया। तदनन्तर क्रमश: सामायिक सूत्र द्वारा आपको आजीवन समता में प्रतिष्ठित रहने की प्रतिज्ञा प्रदान की।

इस प्रकार दीक्षा मंत्र के पश्चात् श्रद्धेय गुरुदेव ने आपकी एवं श्रद्धेया महासती जी महाराज ने नवदीक्षिता बहनों की शिखा का लुंचन किया। स्वाध्याय की प्रेरणा के लिए शास्त्र और निर्दोष भिक्षा प्राप्ति के लिए काष्ठमय पात्र तथा अहिंसा के प्रतीक के रूप में रजोहरण आपको प्रदान किए गए।

केसरिया परिधान में नवदीक्षित मुनि श्री शिव कुमार जी एवं नवदीक्षिता बहनें परम शोभा को प्राप्त हो रहे थे। संयम के असिधारा पथ पर आपके चरणन्यास के सहस्रों साक्षियों के नेत्र धन्य बन गए। कण्ठ-कण्ठ से आपके नाम के जयगान ध्वनित/अनुगुंजित बन रहे थे।

दीक्षा-मंत्र प्रदान करने के पश्चात् नवदीक्षित मुनिवर शिव कुमार जी को श्रद्धेय गुरुदेव ने पाट पर आमंत्रित किया। मुनि मण्डल के मध्य विराजित मुनि शिव कुमार अपूर्व शोभा को प्राप्त हुए।

श्रद्धेय गुरुदेव के आदेश पर नवदीक्षित मुनिवर श्री शिव कुमार जी ने उपस्थित विशाल जनमेदिनी के समक्ष अपने ओजस्वी उद्गार अभिव्यक्त किए। आप द्वारा दिए गए भाषण को यहां शब्दश: उद्धृत किया जा रहा है–

'दीक्षा का यह पावन प्रसंग मेरे लिए परम सौभाग्य का क्षण है। साथ में मेरी बहनें निर्मला जी, सुमित्रा जी एवं संतोष जी का भी महान सौभाग्य है कि वे प्रभु महावीर के साधना पथ पर अग्रसर हो रही हैं। अनन्त-अनन्त उपकार है प्रभु महावीर का, जिन शासन का, मेरे आराध्य स्वरूप आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज का, जिन्होंने मेरे जीवन की दिशा परिवर्तित कर दी। मेरे उपकारी परम पूज्य गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज, परम पूज्य भण्डारी श्री पद्मचंद जी महाराज एवं वाणी भूषण श्री अमर मुनि जी महाराज का अनुग्रह एवं कृपा भाव मेरे जीवन का संबल है।

मेरी आस्था के आयाम महासती श्री सौभाग्यवती जी महाराज, महासती श्री सीता जी महाराज, महासती श्री कौशल्या जी महाराज, महासती श्री शिमला जी महाराज का मैं अभिनंदन करता हूं जिन्होंने मेरी दीक्षा की भावना को दृढ़ीभूत करते हुए समय-समय पर पूर्ण सहयोग दिया।

मैं जिस भाव से वीतराग प्रभु के मार्ग पर आरूढ़ हुआ हूं, उस पर मैं

निरंतर आगे से आगे बढ़ता रहूंगा और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में तत्पर रहूंगा। मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ कि मुझे वीतराग धर्म मिला है।

इस अवसर पर मेरे परिवार के सभी सदस्यों ने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में जो सहयोग प्रदान किया है उसके लिए मैं सभी के प्रति कृतज्ञ हूं। विशेष रूप से पितामह श्री शादीलाल जी, आदरणीय ताया श्री बनारसी दास जी, पूज्य पितृदेव श्री चिरंजीलाल जी, पूज्य माता विद्यादेवी जी, मामा श्री कुन्दनलाल जी, श्री काशीराम जी, श्री बिहारी लाल जी, अग्रज श्री राजकुमार जी, अनुज श्री विजय कुमार जी, श्री कृष्ण कुमार जी, श्री सुभाष चंद जी, बुआ श्रीमती विद्यावती जी, सीता जी, शकुंतला जी, आदि का आभारी हूं जिनका वात्सल्य, प्रेम, सहृदयता मेरे लिए संयम पथ पर अग्रसर होने में सहायक बने। आज तक मेरे किसी व्यवहार से उन्हें किसी प्रकार का भी कष्ट पहुंचा हो तो हार्दिक भाव से क्षमाप्रार्थी हूँ। वे सभी मुझे क्षमा कर अनुग्रहीत करें।

श्रमणधर्म के प्रवेशद्वार दीक्षा के इस परम पुनीत अवसर पर मैं हार्दिक उल्लास और उमंग का अनुभव कर रहा हूँ। आज जिस हार्दिक हर्ष और उत्साह के साथ मैं संयम में प्रवेश ले रहा हूँ आजीवन इस हर्ष और उत्साह को अक्षुण्ण रखते हुए मैं संयम पथ पर आगे से आगे बढ़ता रहूंगा। आप सभी भाई-बहनों ने मेरे अभिनिष्क्रमण पर्व पर पधार कर मेरे संयम-प्रवेश का अनुमोदन किया है, इसके लिए मैं आप सभी का अभिनन्दन करता हूँ।'

नवदीक्षित मुनिवर के इस सारगर्भित भावपूर्ण उद्‌बोधन से उपस्थित विशाल जन समुदाय गद्‌गद बन गया। नवदीक्षित मुनिवर शिव कुमार के जयगानों से पुनः नभ मण्डल गूंज उठा।

नवदीक्षिता वैराग्यशीला साध्वियों ने भी अपने-अपने सार-संक्षिप्त उद्‌बोधनों द्वारा सभी का हार्दिक धन्यवाद किया और आजीवन अप्रमत्त भाव से संयम-पथ पर आगे बढ़ते रहने का संकल्प दोहराया।

उसके बाद प्रवचन भूषण श्री अमर मुनि जी महाराज ने अपने ओजस्वी उद्‌बोधन में प्रव्रज्या के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए नवदीक्षित भव्यात्माओं के त्याग की अनुशंसा की। श्रद्धेय गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज ने अपने प्रवचन में नवदीक्षित मुनिवर शिव कुमार के उत्कृष्ट वैराग्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा समारोह के सफल आयोजन के लिए सभी को साधुवाद प्रदान किया।

समारोह में उपस्थित हुए पंजाब के गवर्नर तथा अन्य राजनेताओं ने भी विरक्तात्माओं का अभिनन्दन किया। समाजरत्न श्री हीरालाल जैन ने अपने भाषण में अपने हृदयोद्गार प्रगट करते हुए कहा–मेरा यह अजीज नवदीक्षित मुनि शिव कुमार मेरी समाज का भविष्य हैं। मेरा यह सुदृढ़ विश्वास है कि अपने उत्कृष्ट त्याग और विशाल ज्ञान के बल पर एक दिन ये हमारे धर्मसंघ के कर्णधार बनेंगे।

कई सांस्कृतिक कार्यक्रमों और धर्मप्रभावनामयी अनुष्ठानों के साथ वैराग्य के पुरोधा श्री शिव कुमार जी का दीक्षा महामहोत्सव सम्पन्न हुआ।

बड़ी दीक्षा

'बड़ी दीक्षा' की परम्परा काफी प्राचीन है। लघु दीक्षा के आठवें दिन 'बड़ी दीक्षा' में दीक्षार्थी को प्रवेश दिया जाता है। मध्य के सात दिनों में गुरु शिष्य की मानसिक और आध्यात्मिक क्षमता और पात्रता का निरीक्षण करते हैं। शिष्य की पात्रता का अध्ययन कर आठवें दिन वे उसे पांच महाव्रत रूप बड़ी दीक्षा प्रदान करते हैं। पात्रता में अपूर्णता है तो एक अथवा छह महीने के बाद तक बड़ी दीक्षा देने की परम्परा रही है।

पूज्यवर्य मुनिवर श्री शिव कुमार जी अपनी पात्रता बहुत पहले ही सिद्ध कर चुके थे। पात्रता के दृष्टिगत उन्हें लघुदीक्षा के प्रसंग पर ही बड़ी दीक्षा प्रदान की जा सकती थी। परन्तु परम्परा का मूल्य सुरक्षित रखते हुए श्रद्धेय गुरुदेव ने लघुदीक्षा के आठवें दिन आप श्री को बड़ी दीक्षा का पाठ प्रदान किया। मलौट नगरी के धर्मप्रांगण में ही बड़ी दीक्षा का कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर श्रद्धेय गुरुदेव ने आपको श्रमणाचार से अवगत कराते हुए आप में पांच महाव्रतों का आरोपण किया एवं धर्म के स्वरूप की समझ के रूप में दशवैकालिक सूत्र के चार अध्ययनों का पाठ पढ़ाया। जीवन भर पांच समिति, तीन गुप्ति रूप अष्ट प्रवचन माता की साधना-आराधना की कुंजी बताई।

पूज्य नवदीक्षित मुनिवर शिव कुमार जी ने करबद्ध विनीत मुद्रा में श्रद्धेय गुरुदेव से बड़ी दीक्षा का महादान ग्रहण किया और संयम के महापथ पर अप्रमत्त यात्रायित बने रहने के अपने संकल्प को पुनः दोहराया।

सर्वत्र त्याग और वैराग्य की सुगंध व्याप्त थी। आप जैसे शिष्य को पाकर गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज महान गौरव का अनुभव कर रहे थे।

उस समय समाज में एक नवीन चेतना का संचार हो रहा था। जनमानस पूर्णतः विश्वस्त हो उठा कि भगवान महावीर के शासन में एक समर्थ व्यक्तित्व ने प्रवेश पाया है और इस हीरे की चमक और दमक से जैन जगत लाभान्वित होगा। जिनशासन और अधिक प्रभावी बनेगा। यह पुण्यशाली जीव अपने तेजस्वी व्यक्तित्व एवं उत्कृष्ट कृतित्व से जिनशासन की ऐसी प्रभावना करने वाला होगा जिसका उल्लेख किए बिना वर्तमान सदी का इतिहास अपूर्ण माना जाएगा।

साधना और आराधना

मई- जून का आग बरसाता सूर्य मध्य आकाश पर था। सिकता- कणों में अग्नि घुल गई थी। ताप की भीषणता को सह न पाने के कारण पक्षियों ने वृक्षों के सघन पातो में आश्रय खोज लिया था। ऐसे में नंगे सिर और नगे पांव से कल तक के राजकुमार मुनिवर शिव कुमार बिना उफ किए, बिना मस्तक पर सलवट डाले, अपनी साधना के प्रथम परीषह- पथ पर यात्रायित थे। सुकोमल पगतलों में रक्त उतर आया, सुकुमार देह स्वेद से निचुड़ गई, पर आपके कदम अवरुद्ध नहीं बने। साधना के प्रथम चरण पर ही भीष्म- ग्रीष्म और पिपासा का कठोर परीषह उपस्थित था। पर श्रद्धेय प्रवर मुनिवर शिव कुमार के संयमीय- सकल्प को परीषह की वह दुधारी- खड्ग किंचित्- मात्र भी आहत नहीं बना पाई।

साधना और आराधना

उत्तराध्ययन सूत्र के वचन हैं–

–बाहाहिं सागरो चेव तरियव्वो गुणोदही! उत्त. 19/37

–असिधारा गमणं चेव, दुक्करं चरिउं तवो। उत्त. 19/38

साधना का मार्ग भुजाओं से सागर को तैरने के समान दुस्तर है।

संयम का आचरण तलवार की धार पर चलने के समान दुष्कर है।

आगम के ये वचन संयम की दुष्करता को प्रगट करते हैं। बाहों से सागर को तैरना तथा तलवार की धार पर नंगे पैरों से चलना जैसे अतीव दुष्कर कार्य हैं ऐसे ही संयम पथ पर अप्रमत्त यात्रा करना भी अतीव दुष्कर कार्य है।

दु:साध्य और दुष्कर होने पर भी कुछ भव्य मानव संयम पथ को अपने लिए चुन लेते हैं। साधारणत: मानव का यही विचार और प्रयास रहता है कि उसका मार्ग सुंदर और सुकर हो। जगत के अधिकांश प्राणी अहर्निश इसी यत्न और श्रम में संलग्न रहते हैं कि उन्हें किसी प्रकार का कष्ट न सहना पड़े अथवा किसी भी मनोज्ञ पदार्थ का उन्हें अभाव न रहे। मनोज्ञ वस्तुओं के संयोजन और नूतन अन्वेषण में वे प्रतिक्षण श्रमशील रहते हैं।

पदार्थ के जगत में अटका हुआ व्यक्ति पदार्थ को ही जीवन का श्रेयस् तत्व मानता है। उसकी चेतना पदार्थ को ही सत्य और सुख का साधन मानती है। यह उसके अज्ञान का परिणाम है।

जिसकी चेतना में ज्ञान की दिव्य ज्योति प्रगट हो जाती है पदार्थ पर से उसकी पकड़ शिथिल पड़ जाती है। वह अपनी आत्मा में रमणशील बन जाता है। उसी अवस्था में उसके अन्दर संयम घटित होता है। फिर देखने वालों को लगता है कि वह एक कठोर जीवन जी रहा है, कि बाहों से सागर को तैर रहा है, कि असिधार पर यात्रा कर रहा है।

सरल सत्य है कि अन्तर में ज्ञान-ज्योति के प्रज्ज्वलित होने का सहज परिणाम है—पदार्थ पर से ममत्व का मिट जाना।

दूसरी तरह से इसे ऐसे भी कह सकते हैं कि—जिसने संयम के स्वाद को चख लिया है उसके लिए बाह्य स्वाद आकर्षणहीन बन जाते हैं। युवा मुनिवर शिव कुमार जी के भीतर ज्ञान की ज्योति जल चुकी थी। गृहवास में रहते हुए ही उन्होंने उस बोध को पा लिया था जो सत्यासत्य के भेद को स्पष्ट कर देता है। उसी भेद-ज्ञान के परिणामस्वरूप पदार्थ पर से उनका ममत्व मिट गया था। अथवा यों कहें कि उन्होंने संयम के स्वाद को चख लिया था, परिणामतः उनके बाह्य जगत के स्वाद खो गए थे।

श्रद्धेय मुनिवर श्री शिव कुमार जी अपने अन्तर में ज्ञान की ज्योति जलाकर संयम-पथ पर आनंद से भीगे चित्त के साथ बढ़ चले। आपके नेत्रों में नूतन आशाओं की दिव्य चमक थी और कदमों में कभी न थकने वाला अदम्य उत्साह था।

बड़ी दीक्षा के पश्चात् श्रद्धेय गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज और अग्रज गुरुभ्राता श्री भगवत मुनि जी महाराज के साथ आप श्री ने मलौट से विहार किया। पूरा नगर अपने महानायक को विदाई देने को उमड़ पड़ा। मखमली गद्दों पर चलने वाले चरण बिना किसी पादत्राण के पथरीली जमीन पर बढ़ चले। गांव की ममत्व में भीगी गलियां पीछे छूटने लगीं। प्यार और कृतज्ञता में आर्द्र सहस्रों नेत्र एक-एक कर पीछे छूटते गए। बन्धु-बान्धव निराश हो एक-एक करके लौट गए। पर निराशाओं और ममत्वों से मुक्त श्रद्धेय मुनिवर अपने गन्तव्य पर यतनापूर्वक—'जयं चरे' की आंख खोले शनैः-शनैः मन्थर गति से बढ़ते चले गए। एक क्षण के लिए भी लौटकर नहीं देखा।

मई-जून का आग बरसाता सूर्य मध्य आकाश पर था। सिकता-कणों में अग्नि घुल गई थी। ताप की भीषणता को सह न पाने के कारण पक्षियों ने वृक्षों के सघन पातों में आश्रय खोज लिया था। ऐसे में नंगे सिर और नंगे पांव से कल तक के राजकुमार मुनिवर शिव कुमार बिना उफ किए, बिना मस्तक पर सलवट डाले, अपनी साधना के प्रथम परीषह-पथ पर यात्रायित थे। सुकोमल पगतलों में रक्त उतर आया, सुकुमार देह स्वेद से निचुड़ गई, पर आपके कदम अवरुद्ध नहीं बने। साधना के प्रथम चरण पर ही भीष्म ग्रीष्म और पिपासा का कठोर परीषह उपस्थित था। पर श्रद्धेय प्रवर मुनिवर

शिव कुमार के संयमीय संकल्प को परीषह की वह दुधारी खड्ग किंचित् मात्र भी आहत नहीं बना पाई। शिव-पथ के अमर साधक मुनिवर शिव को प्रथम परीक्षा में पूर्णांक प्राप्त करते देख गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज का गुरु-हृदय गौरवान्वित बन गया।

यह एक अकाट्य सत्य तथ्य है कि संयम का संकल्प और संयम की श्रद्धा बड़ी-बड़ी बाधाओं को नष्ट कर देती है। संयम में संकल्प और श्रद्धा की शून्यता हो तो वह मात्र वेश परिवर्तन ही सिद्ध होता है। वहां छोटी-छोटी बाधाएं भी साधक के लिए दुर्लंघ्य वादियां बन जाती हैं।

मुनिवर शिव में तो एक दशक पूर्व ही संयम के शिव-संकल्प का जन्म हो चुका था। राजपथ और कण्टकपथ आपके लिए समान थे। राजपथ आपके अन्दर उत्साह और कण्टकाकीर्ण पथ अनुत्साह नहीं जगा पाया। आपकी ज्ञान ज्योति सतत जगमगाती रही। परीषहों की आँधियां उसे कभी भी प्रकम्पित नहीं कर सकीं।

अणगार शिव

सागार अर्थात् गृही। अणगार अर्थात् अगृही। जो गृहबन्धन से मुक्त हो गया है वह अगृही है, अणगार है। जो घर के ममत्व में बंधा है वह गृहस्थ है।

ईंटों और पत्थरों से निर्मित घर प्रतीक मात्र है। वस्तुत: घर मनुष्य की चेतना में बसा होता है। चेतना में रहे हुए ममत्व के घर से मुक्त व्यक्ति ही वस्तुत: अणगार होता है। जो उससे मुक्त नहीं हो पाता वह ईंट-सीमेंट से बने घरों का परित्याग करके भी अणगार नहीं बन पाता है।

श्रद्धेय मुनिप्रवर श्री शिव कुमार जी चेतना के तल पर गृह-बन्धनों से मुक्त हो चुके थे। उनके चित्त में चैतन्य के तल पर शिव होने की पिपासा सघनतम रूप में जन्म ले चुकी थी। अक्सर आप कहा करते थे–मैं नाम से ही नहीं, बल्कि अन्तरात्मा से शिव होना चाहता हूं। अंतरात्मा से शिव होने के संकल्प ने ही आपको घर में रहते हुए ही अगृही बना दिया था। घर की चार दीवारियों और मधुर-सम्बन्धों के मध्य रहते हुए ही आप अणगारत्व को जी चुके थे।

फिर 17 मई 1972 के दिन आप प्रकट रूप से अणगार हो गए। स्पष्ट है कि आपका अणगारत्व ओढ़ा हुआ अथवा आरोपित अणगारत्व नहीं था।

वह आपके अन्तस् के भावों से सृजित हुआ था। अणगार-धर्म को जीकर आप अणगार हुए थे।

गृहस्थ घर से बंधकर जीवन यापन करता है। वह घर से कितनी ही दूर चला जाए, वह जहां भी जाएगा घर का आकर्षण उसे आकर्षित करता रहेगा। उसी आकर्षण के कारण वह दूर-दूर की यात्राएं करके भी आखिर घर में लौट आता है। अणगार गृह-बन्धन से उन्मुक्त हो जाता है, इसलिए वह सदैव अणगार भाव में संल्लीन रहता है। वह प्रासादों में रहे अथवा काननों में, उसके लिए सब समान होता है। क्योंकि उसके निवास का आश्रय स्थल बाहर में नहीं अंतर में होता है। वह समता रूप प्रासाद में सदैव समाधिस्थ रहता है।

श्रद्धेय मुनिवर श्री शिवकुमार जी भी समता के प्रासाद में समाधिस्थ बन गए। बाहर में वे ग्रामानुग्राम विहार करते थे, दैहिक और लौकिक व्यवहारों को साधते थे, पर भीतर में वे स्थितप्रज्ञता में स्थिर बन गए थे। कानन उन्हें खलते न थे, प्रासाद उन्हें प्रमुदित नहीं बनाते थे। क्योंकि वे अपने भीतर ही इतने प्रमुदित बन चुके थे कि बाह्य जगत के प्रमोद अथवा क्षुद्र परीषह उनके चित्त पर कोई भी प्रभाव नहीं छोड़ पाते थे।

जिज्ञासा और समाधान

मुनि जीवन में प्रवेश लेने के बाद श्रद्धेय मुनिवर श्री शिव कुमार जी साधना में संलग्न रहने लगे। पूरे भाव से आप पांच महाव्रतों का पालन करते, पांच समितियों और तीन गुप्तियों की आराधना करते तथा स्वाध्याय और तप में तल्लीन रहते। एक मुनि के लिए जो-जो प्रचलित आवश्यक करणीय साधनाएं थीं उन्हें पूरे भाव से आप पूर्ण करते थे।

यह सब करते हुए भी आप अपने भीतर एक रिक्तता, एक शून्यता अनुभव करते थे। साधना से विश्रान्ति के क्षणों में आपके मस्तिष्क में प्रश्न उभरा करते थे कि–आराध्य देव तीर्थंकर महावीर की साधना की वास्तविक विधि क्या थी? कैसे उन्होंने आत्म-साक्षात्कार किया? भीषण उपसर्गों और परीषहों में भी महावीर अकम्प और समाधिस्थ कैसे रह पाते थे? किन साधना विधियों से उन्होंने केवलज्ञान और केवलदर्शन को अपने भीतर प्रकट किया?

इस प्रकार के अनेक प्रश्न आपके मस्तिष्क में उभरते। आप गहन चिन्तन करते, परन्तु किसी समाधान पर नहीं पहुंच पाते।

एक दिन ऐसे ही सघन चिन्तन सागर में आप पैठे हुए थे। श्रद्धेय गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज ने आपके मन की भूमिका पर चल रहे चिन्तन को अनुभव किया। उन्होंने आपको अपने पास बुलाया और पूछा—शिव! किस चिन्तन सागर में गोते लगा रहे हो?

युवा मुनिवर श्री शिव कुमार जी ने श्रद्धेय गुरुदेव को वन्दन किया और बड़े ही विनम्र शब्दों में बोले—भगवन्! मैं तीर्थंकर महावीर की साधना की विधि और साधना का रहस्य जानना चाहता हूं। यही चिन्तन मेरे भीतर चल रहा है। गुरुदेव! कृपा करके मुझे वह विधि समझाने की अनुकंपा करें।

श्रद्धेय गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज वस्तुतः ज्ञान महोदधि मुनि थे। उनका ज्ञान विशाल और गम्भीर था। उन्होंने शिष्य शिव के सिर पर हाथ फेरा और कहा—वत्स! तुम्हारी जिज्ञासा तुम्हारे स्वर्णिम भविष्य की ओर स्पष्ट इंगित कर रही है। जैन जगत तुम्हारी साधना से चमत्कृत और उपकृत होगा। तुम महावीर की साधना का रहस्य जानना चाहते हो तो सुनो! महावीर की साधना का रहस्य था— अपनी आत्मा से साक्षात्कार, और साधना की विधि थी—स्वाध्याय, तप और ध्यान।

मुनिप्रवर श्री शिव कुमार जी ने पूछा—गुरुदेव! स्वाध्याय का स्वरूप क्या है?

श्रद्धेय प्रवर गुरुदेव ने फरमाया—स्वाध्याय मुख्यतः दो प्रकार की होती है—(1) धर्मग्रन्थों का अध्ययन और (2) स्वयं द्वारा स्व का अध्ययन। धर्मग्रन्थों के अध्ययन से धार्मिक ज्ञान का क्षेत्र विस्तृत बनता है, धर्म संस्कार पुष्ट बनते हैं और धर्म क्रियाओं व साधना में उत्साह बढ़ता है। स्वयं द्वारा स्व के अध्ययन से साधक आत्म-निरीक्षण और आत्म-परीक्षण की प्रक्रिया से गुजरता है। आत्म-निरीक्षण से साधक अपने दुर्गुणों और सद्गुणों से साक्षात्कार करता है। आत्म साक्षात्कार से शनैः-शनैः दुर्गुण दुर्बल होते हुए क्षीण हो जाते हैं और सद्गुण पुष्ट बनते जाते हैं। दुर्गुणों का नष्ट हो जाना और सद्गुणों का आत्यन्तिक विकास होना ही जीवन में महाजीवन का द्वार खोलता है।

मुनिवर शिव कुमार ने पुनः प्रश्न किया, गुरुदेव! तप का स्वरूप क्या है?

श्रद्धेय गुरुदेव ने फरमाया—शिव! शरीर और आत्मा को तपाना ही तप है। स्वर्ण को तपाने पर ही जैसे उसका विशुद्ध रूप कुन्दन उत्पन्न होता है

वैसे ही शरीर को तपाने से उसके आधार पर रही हुई आत्मा का शुद्ध स्वरूप–परमात्मा प्रगट होता है। परन्तु वह तप स्वाध्याय अर्थात् ज्ञानपूर्वक ही होना चाहिए। अज्ञान तप संसार का ही वर्धक है। ज्ञान तप से ही जीवन में महाजीवन और आत्मा में परमात्मा अवतरित/अनावृत होता है।

पूज्य प्रवर चरितनायक ने अपनी जिज्ञासा को आगे बढ़ाते हुए पूछा–गुरुदेव! ध्यान क्या है?

गुरुदेव ने समाधान दिया–स्वाध्याय और तप से विशुद्ध चित्त की अवस्था ही ध्यान है। स्वाध्याय और तप से आर्त्त और रौद्र रूप चित्त की दुःअवस्थाएं समाप्त हो जाती हैं। धर्म और शुक्ल रूप चित्त की सम्यक् अवस्थाएं वर्धमान बनती हैं। धर्म और शुक्ल भावों में सम्यक् विहार ही ध्यान का स्वरूप है।

'ध्यान' श्रद्धेय मुनिवर शिवकुमार जी का बाल्यकाल से ही प्रिय विषय रहा है। मुनि-दीक्षा से पूर्व ही आप के अन्तर में ध्यान के प्रति विशेष जिज्ञासाएं जागृत हो चुकी थीं। आराध्य देव तीर्थंकर महावीर की ध्यानमुद्रा आपको रोमांचित और मुग्ध बनाती रही थी। आपने कल्पना की थी कि मुनि-धर्म में प्रवेश लेने पर मैं अपना पूरा समय और पूर्ण चेतना ध्यान में समर्पित करूंगा। परन्तु जैसी आपने कल्पना की थी वैसा संभव नहीं हो पाया था। कारण था कि ध्यान की वे सूक्ष्म विधियां अभी तक अनुपलब्ध थीं। श्रद्धेय गुरुदेव से चर्चा चली और चर्चा ध्यान के स्वरूप तक आ पहुंची। आपका हृत्कमल खिल उठा। जिज्ञासाएं जाग उठीं। आपने श्रद्धेय गुरुदेव से विनम्र निवेदन किया–गुरुदेव! मैं तीर्थंकर देव महावीर की ध्यान साधना की उन विधियों को जानने के लिए उत्सुक हूं जिनके द्वारा उन्होंने अपने भीतर अनन्त करुणा, अनन्त वात्सल्य और समष्टि के कल्याण और मंगल के भावों को उपलब्ध किया था। ध्यान के उस रहस्य से साक्षात् चाहता हूं जो महावीर के अनन्त ज्ञान और अनन्त आध्यात्मिक आनन्द का उत्स बना था।

श्रद्धेय गुरुदेव ज्ञान महोदधि श्री ज्ञान मुनि जी महाराज ने फरमाया–शिव! तुम्हारी जिज्ञासा परम और उत्तम है। ध्यान की जिस विधि को जानने के लिए तुम उत्सुक हो उस विधि के ज्ञाता और ध्याता आज हमारे मध्य नहीं हैं। श्रद्धेय गुरुदेव आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी महाराज की श्रमण साधना ज्ञान और ध्यान का अद्भुत संगम थी। अध्ययन, पठन, पाठन और लेखन में विशेष रुचि होने के कारण मैं स्वयं उस परम आध्यात्मिक विद्या की ओर विशेष ध्यान नहीं दे पाया।

श्रद्धेय गुरुदेव के प्रामाणिक उत्तर से मुनिवर श्री शिवकुमार जी गद्‌गद हो उठे। ज्ञान से प्रतिफलित सत्य, सरलता और निरभिमानिता को गुरुदेव के उत्तर में साकार बनते देख कर आप धन्य हो उठे।

गुरुदेव ने फरमाया–शिव! स्वाध्याय में संन्यस्त बनकर ध्यान का अन्वेषण करो। तुम्हारी जिज्ञासा, समर्पण और प्यास ही तुम्हारे लिए ध्यान का द्वार सिद्ध होगी।

गुरुदेव के मंगलमय आशीष पाकर आप कृतकृत्य बन गए। स्वाध्याय में संन्यस्त होने के लिए आपने संकल्प को सुदृढ़ किया और समस्त जगत से निरपेक्ष बनकर स्वाध्याय-सागर में गहरे से गहरे पैठ गए।

स्वाध्याय के शिखर-सोपानों पर

परम श्रद्धेय गुरुदेव के आदेश-आशीष को जीवन का मंत्र बनाकर पूज्यवर्य मुनिवर श्री शिवकुमार जी स्वाध्याय-साधना में गहरे और गहरे पैठे। श्रद्धेय गुरुदेव के चरणों में बैठकर आपने नियमित रूप से आगमों का स्वाध्याय प्रारंभ किया। वाचना, पृछना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा और धर्मकथा– स्वाध्याय के उक्त पांचों अंगों के साथ आप स्वाध्याय करते थे। आर्य जंबूस्वामी जैसी सहज जिज्ञासा आपमें स्वभाव से ही थी। आगम के एक-एक पद, एक-एक शब्द की आप वाचना लेते, ज्ञान की स्पष्टता के लिए श्रद्धेय गुरुदेव से पूछते, पठित पदों को पुनः-पुनः दोहराते, पठित पदों के शब्दों और अर्थों पर चिन्तन-अनुचिन्तन करते और यथासमय धर्मकथा/धर्मचर्चा करते। उक्त विधि से आगम ज्ञान को आप श्री हृदयंगम करने लगे।

आगम ज्ञान के साथ-साथ भाषा ज्ञान को भी आपने प्रमुखता प्रदान की। श्रद्धेय गुरुदेव ने आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म. के संस्मरण सुनाते हुए फरमाया–पूज्य श्री से पूर्व पंजाब मुनि संघ में संस्कृत के पठन-पाठन का प्रचलन नहीं था। आगमों का अध्ययन करते हुए पूज्य गुरुदेव ने अनुभव किया कि संस्कृत के ज्ञान के बिना आगम ज्ञान को सम्यक् प्रकार से हृदयंगम नहीं किया जा सकता है। उन्होंने अपने हृदय की बात श्रद्धेय गुरुदेव श्री शालिगराम जी महाराज से कही। गुरुदेव श्री शालिगराम जी म. ने शिष्य की बात को सुना और उनके लिए संस्कृत-प्राकृत के अध्ययन की समुचित व्यवस्था की। श्रद्धेय गुरुदेव प्रखर प्रज्ञा के धनी मुनिराज थे। उन्होंने कुछ ही वर्षों में संस्कृत, प्राकृत, पाली, अपभ्रंश आदि भाषाओं का अधिकृत ज्ञान ग्रहण कर लिया। उसी के बल पर उन्होंने न केवल आगमों का गम्भीर

अध्ययन किया, बल्कि अठारह आगमों पर विशाल हिन्दी व्याख्याएं भी लिखीं।

श्रद्धेय गुरुदेव से गुरुमह आचार्य देव का अध्ययन वृत्त सुनकर मुनिवर श्री शिवकुमार जी के हृदय में संस्कृत भाषा सीखने की विशेष रुचि जागृत हुई। श्रद्धेय गुरुदेव के सान्निध्य में आप श्री ने सुप्रसिद्ध व्याकरण ग्रन्थ 'लघु सिद्धान्त कौमुदी' का अध्ययन प्रारंभ किया। श्रद्धेय गुरुदेव से प्राप्त सूत्रों को आप पुनः-पुनः दोहराते और स्मृति में सहेज लेते। विहारों में, प्रवासों में स्वाध्याय का क्रम सतत प्रवहमान रहा।

स्वाध्याय भी चलता रहा और विहार भी होते रहे। मलौट से गीदड़वाह मण्डी का संस्पर्श करते हुए श्रद्धेय गुरुदेव के अनुगामी बने आप श्री बरनाला पधारे। बरनाला मण्डी में उस समय परम श्रद्धेय श्री पन्नालाल जी महाराज स्थिरवास में विराजमान थे। पूज्य श्री की सेवा में उनके सुशिष्य कविचक्रचूड़ामणि श्री चंदन मुनि जी महाराज सेवा-साधना कर रहे थे। कविवर्य श्री चंदन मुनि जी म. ज्योतिष शास्त्र के प्रकाण्ड पण्डित मुनिराज हैं। उन्होंने मुनि प्रवर श्री शिवकुमार जी की हस्तरेखाओं का अध्ययन किया। मस्तकीय रेखाओं को पढ़ा और घोषणा की—यह नवदीक्षित मुनि एक उच्चकोटि के श्रमण श्रेष्ठ सिद्ध होंगे, ये जिनशासन की महान प्रभावना करने वाले होंगे और संघ में सर्वोच्च पद के अधिकारी बनेंगे।

आज से लगभग चौंतीस वर्ष पूर्व की गई उक्त घोषणा को जैन जगत ने सत्य रूप में साकार होते देखा। देखा कि मुनिवर शिवकुमार का प्रभावशाली व्यक्तित्व किस प्रकार शीघ्र ही जैन जगत के क्षितिज पर तेजस्वी सूर्य बनकर चमका। मात्र पन्द्रह वर्ष की दीक्षा पर्याय में आपश्री श्रमण संघ के सर्वाधिक यशस्वी और वर्चस्वी मुनियों में गिने गए और भावी संघशास्ता के रूप में नियुक्त हुए। पच्चीस वर्षीय दीक्षा पर्याय में आप जिनशासन नायक बने।

अस्तु! बरनाला प्रवास में पूज्य कविवर्य महामुनि का सम्पूर्ण स्नेह-सान्निध्य और मंगल आशीष आपश्री को प्राप्त हुआ।

प्रथम वर्षायोग

मुनित्व परम स्वातंत्र्य की साधना है। समस्त तंत्रों से स्वतंत्र होना मुनि का लक्ष्य होता है। मुनित्व में प्रवेश लेते हुए व्यक्ति सर्वप्रथम घर और परिजनों के ममत्व से स्वयं को स्वतंत्र करता है। उसके बाद उसका प्रत्येक

कदम स्वतंत्रता की दिशा में उठता है। वह किसी स्थान, वस्तु या व्यक्ति से नहीं बंधता है। उन्मुक्त सरिताओं की तरह वह बहता रहता है। कोई भी बंधन उसे बांध नहीं सकता है। निर्बन्ध बहता है वह।

समग्ररूपेण निर्बन्ध होकर भी मुनि करुणा से निर्बंध नहीं होता है। करुणा का अनुबंध उसके चरणों की गति को अवरुद्ध कर देता है। वर्षावास की अवधि में चार मास के लिए एक क्षेत्र में ठहर जाना सतत विहारी श्रमण का करुणा का अनुबंध ही होता है।

चातुर्मास जैन श्रमण की महान करुणा का कारण है। ग्रीष्म ऋतु के पश्चात् वर्षा ऋतु का प्रारंभ होता है। वर्षा के योग से वनस्पतियां पुनर्जीवित बन जाती हैं। पृथ्वी पर हरितिमा की चादर बिछ जाती है। वर्षा जल से मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं। गमनागमन से वनस्पतिगत और जलजनित जीवराशि की हिंसा की संभावनाएं होती हैं। समष्टि के प्रति महाकरुणा को आत्मसात् करने वाले तीर्थंकर महावीर ने सूक्ष्म जीवराशि की रक्षा के लिए मुनि के लिए नियम निर्धारित किया कि वर्षा ऋतु की अवधि में वह विहार को विराम दे। विहार के विश्राम की यह करुणा-परम्परा शाश्वत है।

उसी शाश्वत परम्परा के निर्वाह के लिए अथवा अपनी करुणा को एकेन्द्रिय सूक्ष्म जीवों तक के लिए परिस्पंदित पाकर श्रद्धेय गुरुदेव के नेतृत्व में श्रद्धेय मुनिवर ने वर्षावास में चार माह के प्रवास की स्वीकृति मालेरकोटला श्रीसंघ को प्रदान की। यहां इस तथ्य का उल्लेख भी अप्रासंगिक न होगा कि उस समय पंजाब प्रांत के सभी प्रमुख श्रीसंघ वैराग्य के प्रतिमान उच्च शिक्षा प्राप्त श्रद्धेय मुनिवर के वर्षावास के लिए करबद्ध प्रार्थनाओं सहित पंक्तिबद्ध थे। सभी क्षेत्र आपके सान्निध्य को प्राप्त करने के लिए उत्सुक थे। पर यह सौभाग्य मालेरकोटला श्रीसंघ को प्राप्त हुआ।

मालेरकोटला श्रीसंघ प्रारंभ से ही एक आदर्श संघ रहा है। आचार्य प्रवर श्री रामबख्श जी महाराज की तपोभूमि मालेरकोटला नगर का स्वर्णिम इतिहास रहा है। यहां के श्रावक-श्राविकाओं की नसों में श्रद्धा और सेवा का अमृत बहता है।

श्रद्धेय गुरुदेव के अनुगामी बनकर नवदीक्षित मुनिसत्तम श्री शिवकुमार जी ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए, परिचय-पथ पर आने वाले भव्य आत्माओं के हृदयों में धर्मानुराग जागृत करते हुए, अपने त्याग, वैराग्य और उच्च शिक्षा की अमिट छाप छोड़ते हुए यथासमय मालेरकोटला नगर में पधारे। श्रीसंघ

ने पलक-पांवड़े बिछाकर आपका स्वागत-अभिनन्दन किया। आपश्री के पदार्पण से मालेरकोटला में दीपावली जैसा उत्सव उतर आया।

वर्षावास की अवधि में आपश्री ने स्वाध्याय पर विशेष रूप से अपना ध्यान केन्द्रित किया। आगम स्वाध्याय के साथ-साथ संस्कृत-प्राकृत आदि भाषाओं का अध्ययन भी आप करते रहे। श्रद्धेय गुरुदेव के अतिरिक्त पंडित श्री पद्मचंद जी से आपने लघुसिद्धान्त कौमुदी का अध्ययन कया।

प्रखर प्रवाचक

जनमानस में श्रद्धेय मुनि श्री शिव कुमार जी के भव्य व्यक्तित्व और उच्च त्याग के प्रति विशेष आकर्षण था। शिक्षा और समृद्धि के शिखरों को स्पर्श करने वाले तथा भौतिकता को भोगकर त्यागपथ को चुनने वाले श्रद्धेय मुनिवर के दर्शन कर लोग रोमांचित हो जाते थे। आपको सुनने के लिए निरंतर आग्रह होने लगे। तब श्रद्धेय गुरुदेव के आदेशानुसार रविवार के दिन आप ने व्याख्यान प्रारंभ किया। प्रत्येक रविवार को आप प्रवचन देने लगे। श्रोता परिषद् के अनुसार आपश्री कभी हिन्दी भाषा में तो कभी इंग्लिश भाषा में प्रवचन फरमाते। प्रारंभ से ही आपकी वक्तृत्व कला विशेष प्रभावशाली थी। गम्भीर से गम्भीर विषयों को आप सरल भाषा में प्रस्तुत करते, जिसे अज्ञ-विज्ञ श्रोता सहजता से हृदयंगम कर लेते थे।

आपका कण्ठ प्रारंभ से ही सुमधुर रहा है। भक्ति और शिक्षा प्रधान गीतिकाओं को गाते हुए आप संगीत की आत्मा का स्पर्श कर लेते हैं। आपको सुनकर श्रोता मंत्रमुग्ध बनकर झूम उठते हैं।

व्याख्यान के क्षेत्र में प्रथम वर्ष में ही—अर्थात् प्रारंभ में ही आपश्री ने विशेष विचक्षणता प्राप्त की।

तपश्चर्या

मुनिसत्तम श्री शिव कुमार जी के हृदय में स्वभाव से ही साधना की विशेष रुचि थी। पर्युषण की वेला में तपानुष्ठान के रूप में आठ दिन का उपवास (अठाई) किया। अष्ट दिवसीय उपवास की अवधि में आपश्री ने जप और मौन की साधना की।

आपकी कोई भी क्रिया देखा-देखी अथवा भावातिरेक से प्रभावित नहीं होती थी। प्रत्येक क्रिया के साधनात्मक पक्ष पर वैज्ञानिक विधि से चिन्तन-अनुचिंतन करके ही आप उसमें प्रवेश करते और उसे पूर्ण करते।

अष्ट दिवसीय उपवास पूर्ण कर आपने अपनी डायरी में एक नोट्स लिखा–'तवेण परिसुज्झइ'। आगम का यह वाक्य तप की वास्तविक प्रशस्ति है। निःसंदेह तप से व्यक्ति के मन और आत्मा का शुद्धिकरण होता है।

अध्ययन यात्रा : अनुसंधान पथ पर

दशवैकालिक सूत्र का अध्ययन करते हुए आपने पढ़ा–**'पढमं णाणं तवो दया...'** प्रस्तुत सूत्र पर चिन्तन करते हुए आप इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि साधना का प्रथम चरण ज्ञान है। **'अन्नाणी किं काही'** अज्ञानी कर ही क्या सकता है। अज्ञानी साधना भी करेगा तो वह भी संसार-वृद्धि का ही साधन बन जाएगी। साधक को यदि बोध नहीं है तो मोक्ष भी उसके लिए संसार ही होगा। बोध जग गया तो संसार में रहकर भी वह मुक्ति में रह सकता है।

इस सूत्र की स्वाध्याय से श्रद्धेय मुनिवर के हृदय में ज्ञानार्जन की एक अपराभूत पिपासा जाग उठी। ज्ञानार्जन को एक समुचित दिशा देने के लिए आपने शोध का निश्चय किया। शोध के लिए आप ने एक समीचीन विषय का चुनाव किया जिसका शीर्षक था–'भारतीय धर्मों में मोक्ष: जैन धर्म के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन'।

भाई रवीन्द्र जी जैन एवं पुरुषोत्तम जी जैन ने शोधकार्य की प्रगति हेतु विशेष सहयोग दिया। पंजाब विश्वविद्यालय पटियाला के प्रोफेसर डा. एल. एम. जोशी से आपका साक्षात्कार हुआ। जोशी जी अंग्रेजी भाषा और दर्शन शास्त्र के अधिकारी विद्वान थे। उनके नेतृत्व में आप श्री ने पी-एच.डी. का फार्म भरा।

यहां यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि आज से तीन दशक पूर्व शोध प्रबन्ध का स्तर बहुत ऊंचा था। वर्तमान व्यावसायिक युग में शोध कार्य भी व्यावसायिक बन गया है और बिना विशेष बौद्धिक व्यायाम और गहन अध्ययन के भी यह कार्य कर लिया जाता है।

दूसरी बात मुनिसत्तम श्री शिव कुमार जी जैन जगत के प्रथम मुनि थे जो अंग्रेजी भाषा और दर्शनशास्त्र में डबल एम.ए. करके मुनि बने थे तथा मुनि जीवन में रहकर आगे की पढ़ाई करने के लिए प्रस्तुत हुए थे। शोध प्रबन्ध हेतु आपके फार्म भरने की सूचना जब प्रसृत हुई तो कई परम्परावादी लोग आपके विरोध में उतर आए। मुनि जीवन में प्रवेश के प्रथम वर्ष में

आपको परम्परावादियों का प्रबल विरोध झेलना पड़ा। परन्तु आप जिस उद्देश्य हेतु प्रस्तुत हुए थे उसके लिए आपकी प्रज्ञा का यही समाधान था कि–शोध प्रबन्ध का लेखन श्रमण साधना में किसी भी भाँति से बाधक नहीं है, अपितु वह तो साधना का सहयोगी तत्त्व ही है।

अपनी आत्मा की आवाज और श्रद्धेय गुरुदेव की प्रेरणा के बल पर विरोधों के बाद भी आप अपने शिक्षा-पथ पर बढ़ते रहे।

आपकी साधना और स्वाध्याय दोनों का लक्ष्य था–मोक्ष। यह विषय आपके लिए इतना रुचिकर रहा कि अग-जग को भूलकर आप आध्यात्मिक और बौद्धिक इन दोनों तलों पर मोक्ष के स्वरूप को जानने और समझने के लिए साधना व स्वाध्याय में समाधिस्थ बन गए।

श्रद्धेय गुरुदेव का अपने अतिजात शिष्य के लिए पूर्ण समर्थन और सहयोग रहा। मुनिवर के शोध अध्ययन का विरोध करने वालों को गुरुदेव समझाते और स्पष्ट करते कि उनका शिष्य श्रमण-मर्यादाओं का निष्ठा से पालन करते हुए अध्ययनरत है। केवल विरोधी मानसिकता से किया गया विरोध अतार्किक और अस्वीकार्य है।

विरोध उठते रहे और स्वत: ही गिरते रहे। मुनिसत्तम अपने स्वाध्याय पथ पर बढ़ते रहे। मालरेकोटला का वर्षावास ऐतिहासिक सिद्ध हुआ। धर्मध्यान और जिनत्व की अभूतपूर्व प्रभावना हुई। प्रथम वर्षावास से ही श्रद्धेय मुनिवर की सृजनधर्मी साधना की सुगंध दूर-दूर तक प्रसृत हुई।

वर्षावास की परिसमाप्ति के पश्चात् श्रद्धेय मुनिवर श्रद्धेय गुरुदेव के अनुगामी बनकर पटियाला पधारे। पटियाला में डॉ. एल. एम. जोशी का सतत सम्पर्क रहा। फलत: शोध अध्ययन में विशेष प्रगति हुई। लगभग तीन माह तक आप श्री पटियाला में रहे।

अम्बाला श्रीसंघ श्रद्धेय गुरुदेव के चरणों में क्षेत्र स्पर्शना की प्रार्थना के साथ उपस्थित हुआ। श्रद्धेय गुरुदेव इस बात से सहज ही परिचित थे कि अम्बाला स्थित् आचार्य श्री काशीराम जैन कॉलेज का अपना एक विशाल पुस्तकालय है। गुरुदेव ने इस सम्बन्ध में अपने अतिजात शिष्य से चर्चा की। मुनिवर ने अध्ययन की प्रगति की संभावनाओं को देखते हुए अम्बाला-स्पर्शन की भावना गुरुदेव के समक्ष प्रकट की। गुरुदेव की स्वीकारोक्ति पर अम्बाला श्रीसंघ उल्लसित हो उठा।

पटियाला से अम्बाला के लिए विहार किया गया। यथासमय पूज्यवर्य मुनिवर अपने श्रद्धेय गुरुदेव के साथ अम्बाला पधारे। अम्बाला में विराजित श्रद्धेय तपस्वी श्री सुदर्शन मुनि जी महाराज के दर्शन कर मुनिवर को हार्दिक हर्ष हुआ। सरल साधुता में सर्वतोभावेन विकसित संयम-संन्यास से आप अत्यन्त प्रभावित हुए। श्रद्धेय तपस्विराज भी वैराग्य में खिले-विकसे युवा-संन्यास के प्रतिमान मुनिवर को देखकर गद्‌गद हो उठे। सहस्रों आशीष पूज्य तपस्विराज ने आप पर बरसाए। तपस्विराज ने फरमाया–शिव मुनि! तुम्हारा भविष्य बहुत सुन्दर होगा, तुम्हें बहुत कुछ मिलेगा। अम्बाला के दो मास के प्रवास की अवधि में श्रद्धेय तपस्विराज अपना संयमीय वात्सल्य मुनिवर पर उंडेलते रहे।

'पूज्य आचार्य श्री काशीराम जैन कॉलेज' के पुस्तकालय का आपने अवलोकन किया। शोध विषय के लिए उपयोगी कई ग्रन्थों का आपने अध्ययन किया। अम्बाला का प्रवास आपके लिए आध्यात्मिक और शैक्षणिक दृष्टियों से बहुत लाभदायक रहा।

दूसरा वर्षायोग

वर्ष 1973 के वर्षावास के लिए कई श्रीसंघों की प्रार्थनाएं आईं। परन्तु श्रद्धेय मुनिवर श्री शिव कुमार जी आत्मगुरु की जन्मभूमि राहों में वर्षावास के लिए उत्सुक थे। आत्मगुरु की जन्म भूमि के प्रति आपके हृदय में स्वाभाविक श्रद्धा और भक्ति थी। आपके भावों को पढ़कर श्रद्धेय गुरुदेव ने राहों श्रीसंघ को वर्षावास की स्वीकृति प्रदान की।

अम्बाला से विहार कर आस-पास के क्षेत्रों में विहार करते हुए यथासमय आप श्री श्रद्धेय गुरुदेव के साथ राहों नगरी में पधारे। राहों एक छोटा-सा कस्बा है। उस समय वहां जैनों के घर आठ-दस ही थे। परन्तु जैनेतर परिवारों में भी अच्छी श्रद्धा-भक्ति थी। आपके पदार्पण और नित्य सत्संग-प्रवचन से राहों नगरी के आबालवृद्ध में धर्म की अच्छी लहर आ गई। स्थानीय लोगों की सुविधानुसार प्रवचन रात्रि में होते थे। बड़ी संख्या में लोग प्रवचन में आते। श्रद्धेय गुरुदेव के साथ आपश्री भी प्रवचन देते।

आपके प्रवाहमयी प्रवचनों से जनता मन्त्रमुग्ध बन गई। आत्मगुरु के पौत्र शिष्य के रूप में वहां की जनता में आपके लिए विशेष अनुराग और आकर्षण भाव था।

लोकमंगल का अनुष्ठान

वर्षावास अपनी गति से प्रगतिमान था। संयोग ऐसा बना कि वर्षाऋतु का काफी समय व्यतीत हो जाने पर भी वर्षा का योग नहीं बना। वर्षा के अभाव में कृषकों के मुख लटक गए। कृषि सूखने लगी। आम जनता में भी उद्विग्नता दिखाई देने लगी। भीषण ताप असहज हो चला था। ऐसे में एक भ्रान्त धारणा चली कि जहां जैन मुनि रहते हैं वहां वर्षा नहीं होती है। उक्त भ्रान्त धारणा के स्वर श्रद्धेय गुरुदेव के कानों तक पहुंचे। मुनि शिव कुमार जी ने भी ऐसी बातें सुनीं। लोगों की अल्पज्ञता पर आप करुणा से भर गए। अपने प्रवचन में आपने फरमाया–बन्धुओ! वर्षा से जैन मुनि का कोई विरोध नहीं है। जैन मुनि समष्टि के कल्याण का कामी होता है। लोक के मंगल और कल्याण के पवित्र भाव उसकी संपदा होते हैं। उसके लिए वह अपना समग्र जीवन अर्पित करता है। ऐसे में वह सुकाल की प्रतीक वर्षा का विरोधी कैसे हो सकता है? वर्षा का होना, न होना, कम होना अथवा अधिक होना, यह प्राकृतिक संयोग पर निर्भर है। उसमें जैन संत को संयोग मानना नितान्त भ्रामक धारणा है।

श्रद्धेयवर्य मुनिवर शिव कुमार जी के वैज्ञानिक उत्तर का स्वर जुबान दर जुबान दूर-दूर तक पहुंचा। लोगों की भ्रान्त धारणा नष्ट हो गई।

उधर लोकमंगल के प्रतिमान पुरुष श्रद्धेय गुरुदेव ने नवकार मन्त्र के जाप द्वारा लोकमंगल का अनुष्ठान किया। श्रद्धेय गुरुदेव की प्रेरणा से पूरे गांव के लोग प्रवचन सभा में उपस्थित हुए। गुरुदेव ने परमपूज्य आत्मगुरु और शासन देव का स्मरण कर सामूहिक रूप से नवकार मंत्र का जाप प्रारंभ किया। लय बद्ध नवकार मंत्र के जाप का अचिन्त्य प्रभाव देखने को मिला। इधर जाप चल रहा था और उधर देखते ही देखते आकाश में काले-कजरारे मेघ उमड़ आए। महामंत्र के जाप की अवधि में ही मेघ उमड़-घुमड़ कर बरसने लगे। इस चामत्कारिक प्रसंग से लोग रोमांचित हो उठे। जैन धर्म के जयगानों से गगन मंडल गूंज उठा।

वर्षावास की अवधि में आत्मगुरु की जन्म जयंती का भव्य आयोजन किया गया। कई सांस्कृतिक कार्यक्रम और आध्यात्मिक अनुष्ठानों को सम्पन्न किया गया। उस अवसर पर बाहर नगरों से हजारों की संख्या में लोग राहों में पहुंचे और अपने श्रद्धालोक के देवता के जन्म दिन पर उन्हें स्मरण-नमन

किया। पूज्य आचार्य देव आत्मगुरु के नाम पर श्री आत्माराम जी महाराज जैन डिस्पेंसरी शुरू की गई। उसी प्रांगण में आचार्य देव की स्मृति में समाधि स्थल की स्थापना की गई। जिस मकान में आचार्य देव का जन्म हुआ था उस मकान को जैन समाज के लोगों ने प्राप्त किया और एक स्मारक के रूप में उसे स्थापित किया गया।

निरन्तर चार महीनों तक राहों गांव तीर्थस्थल बना रहा। गांव के इतिहास में वह वर्षावास अभूतपूर्व माना गया। चार महीनों की अवधि में पूरा गांव एक कुटुम्ब की तरह बन गया। प्रत्येक व्यक्ति ने अपनी सेवाएं दी, समय दिया और हार्दिक श्रद्धा दी।

साहू मंगलम्

मुनि जहां ठहरता है वहां मंगल की वर्षा करता है, जहां गमन करता है वहां मंगल बरसाता है। उसका उठना, बैठना, बोलना सब कुछ मंगलरूप होता है। क्योंकि वह तन, मन और प्राण से मंगल रूप होता है। मंगल रूप श्रद्धेय गुरुदेव एवं मंगल रूप श्रद्धेय मुनिवर के चार मास के राहों प्रवास में मंगल की वर्षा होती रही। वर्षावास की समाप्ति पर श्रद्धेय मंगल रूप महामुनियों का विहार नवांशहर की दिशा में हुआ। आपके मंगल पदार्पण से नवांशहर में नया उत्साह जाग उठा। नगरजनों ने हृदय की धड़कनें बिछाकर आपका स्वागत किया। श्रीयुत वेद प्रकाश जी जैन आदि संघ के प्रमुख सदस्यों ने पूर्ण निष्ठाभाव से सेवा लाभ लिया। उस अवधि में वहां पर महासती श्री महेन्द्रा जी महाराज आदि ठाणे विराजमान थीं। आपके दर्शन कर साध्वी मंडल प्रमुदित हुआ। सप्त-दिवसीय प्रवास में प्रवचन, सत्संग, स्वाध्यायादि का सुन्दर योग चलता रहा।

राहों से आप श्री बंगा पधारे। वहां पर भी प्रवचन-सत्संग के सुन्दर कार्यक्रम चले। जैन स्कूल के अधूरे भवन के निर्माण के लिए कार्यक्रम रखा गया। गुरुदेव की प्रेरणा से उदार दाताओं ने हृदय पट खोलकर दान दिया। इस प्रकार आपकी प्रेरणा से शिक्षा-मंदिर का अधूरा कार्य पूर्ण हुआ। संघ के अध्यक्ष श्री हजारीलाल जी जैन ने गुरुदेव के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित की।

बंगा से आपश्री फगवाड़ा पधारे। फगवाड़ा में लगभग अष्ट दिवसीय प्रवास रहा। स्कूल भवन के प्रांगण में प्रवचन के कार्यक्रम संपन्न होते रहे। फगवाड़ा के मुमुक्षु भव्य श्रावकों ने सत्संग-गंगा में आकण्ठ गोते लगाए।

मंगलमय विहार यात्रा आगे बढ़ी। होशियारपुर पदार्पण हुआ। होशियारपुर के प्रबुद्ध श्रावकों पर श्रद्धेय मुनिवर श्री शिव कुमार जी के त्याग, वैराग्य और ज्ञान की अपूर्व छाप पड़ी।

लुधियाना का स्मरणीय प्रवास

साहू मंगलम् के जीवंत प्रतीक श्रद्धेय गुरुदेव के अनुगामी बनकर आपश्री मध्यवर्ती गांवों और नगरों का स्पर्श करते हुए, धम्मो मंगलं का अलख जगाते हुए लुधियाना पधारे।

लुधियाना भारतवर्ष की सुविख्यात औद्योगिक नगरी है। यहां के उत्पादों की गुणवत्ता विदेशों में भी स्वीकार की जाती रही है। व्यापारिक केन्द्र के साथ-साथ यह नगरी धर्म और संस्कृति का केन्द्र रही है। सभी धर्मों को मानने वाले लोग यहां परस्पर मिल जुल कर रहते हैं। विगत दो शताब्दियों से यहां पर जैन संतों का विशेष वर्चस्व रहा है। कई दिव्य विभूतियों की यह नगरी साधना स्थली रही है। जैन धर्म दिवाकर श्रमण संघ के प्रथम पट्टधर आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी महाराज ने अपनी साधना का काफी समय यहां व्यतीत किया। इसी पावन धरा पर तीर्थंकर महावीर की मूलवाणी–आगम साहित्य पर श्रद्धेय आचार्य श्री ने बृहद् व्याख्याओं का लेखन किया। अंत में पूज्य आचार्य देव ने इसी धरा पर अपनी अंतिम साधना को पूर्ण कर इस नगरी की धवल-धौत यशस्विता को अमर बना दिया।

धम्मो मंगलम् का अमर उद्घोष करते हुए एवं साहू मंगलम् को अपने प्राणों में परिस्पंदित करने वाले युगपुरुष श्रद्धेय गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज एवं आत्मगुरु के शिष्य परिवार के सबसे यशस्वी महामुनि श्री शिव मुनि जी महाराज आत्मगुरु की साधना सुवास से सुवासित नगरी लुधियाना पधारे। आपश्री का धवल यश बहुत पूर्व ही लुधियाना में व्याप्त हो चुका था। अपने श्रद्धाधार के पौत्र शिष्य के प्रथम पदार्पण पर लुधियाना के गली-कूचों में नवीन उमंग उतर आई। आबालवृद्ध बरसाती महानद की भांति आपके स्वागत एवं दर्शन के लिए उमड़ पड़ा।

उस समय लुधियाना में (पंजाब प्रवर्तक) परम पूज्य उपाध्याय श्री फूलचंद जी महाराज 'श्रमण', आत्मकुलकमल दिवाकर श्री रत्न मुनि जी महाराज, भण्डारी श्री पद्मचंद जी महाराज, वाणी भूषण श्री अमर मुनि जी महाराज आदि मुनिवृन्द तथा महासती श्री सीता जी महाराज, महासती श्री

कौशल्या जी महाराज आदि साध्वी मण्डल विराजमान थे। श्रद्धेय गुरुदेव एवं मुनिवर श्री शिव कुमार जी का मुनिमण्डल तथा साध्वीमण्डल द्वारा हार्दिक स्वागत किया गया।

पूज्य प्रवर्तक श्री जी अपने प्रतिबोधित शिष्य को मुनिरूप में देखकर गद्‌गद बन गए। आपश्री को प्रवर्तक श्री जी ने कण्ठ से लगाते हुए कहा–शिव! धन्य है तुम्हारा त्याग! पंजाब मुनि संघ के तुम गौरव हो! अखिल भारतीय मुनि संघ में तुम सूर्य बनकर चमकोगे, ऐसा मेरा हार्दिक विश्वास है।

पूज्य श्री से मंगल आशीर्वाद पाकर आपका हृदय कृतज्ञता से पूर्ण बन गया। पूज्य श्री के चरणों पर मस्तक रखते हुए आपने कहा, गुरुदेव! आपका प्रतिबोध मेरे जीवन का सम्बल है। आपके आशीष के प्रकाश में मैं सतत आगे बढ़ने का प्रयास करता रहूंगा।

प्रतिबोधक सद्‌गुरु और प्रतिबुद्ध शिष्य के इस संवाद का साक्षी साधु-साध्वी मण्डल रोमांचित हो उठा। साधु-सांध्वी मण्डल की कल्पनाओं में आपश्री का स्वर्णिम भविष्य आकार लेने लगा।

श्रद्धेय प्रवर्तक श्री के सान्निध्य में पूज्य मुनिवर शिव कुमार जी ने आगमों के गुरु-गम्भीर रहस्यों से साक्षात्कार किया। साधना की गहराइयों में आप उतरे। संक्षेप में जैन साधना विधि का ज्ञान आपने प्राप्त किया। पूज्य प्रवर्तक श्री जी के सान्निध्य का वह संक्षिप्त प्रवास आपके साधना जीवन का स्वर्णिम अध्याय बन गया।

श्रद्धेय शिवाचार्य भगवन् संगोष्ठी के कई प्रसंगों पर पूज्य प्रवर्तक श्री जी के बारे में फरमाते हैं–पूज्यपाद प्रवर्तक श्री जी आत्मगुरु की अध्यात्म विद्या के सच्चे उत्तराधिकारी थे। जैन साधना विधि का उनका ज्ञान विशाल था। आगमों में उल्लिखित साध्वाचार के वे सच्चे संवाहक थे। उनके सान्निध्य में बैठना अनुपम और दिव्य सुख का कारक होता था। निःसंदेह उनकी साधना को शब्दों में कह पाना संभव नहीं है।

युवाचार्य पद : चर्चित चरितनायक

व्यक्ति आयु या पर्याय से छोटा और बड़ा नहीं बनता है। कई बार अल्पायु और अल्प पर्याय वाला व्यक्ति भी अपने बड़े गुणों के कारण बड़ा बन जाता है। जैन धर्म परम्परा में गुणों को महत्त्वपूर्ण स्थान उपलब्ध है। वहां योग्यता और सद्‌गुण सदा से प्रशंसनीय और प्रणम्य रहे हैं।

पूज्य श्री शिव मुनि जी महाराज की दीक्षा पर्याय अभी दो वर्ष की ही थी। उस समय श्रमण संघ के सरताज महामहिम आचार्य सम्राट् श्री आनन्द ऋषि जी महाराज अपने उत्तराधिकारी अर्थात् युवाचार्य पद के लिए सर्वाधिक योग्य मुनि को खोज रहे थे। संघीय वरिष्ठ मुनिराजों और मेढिभूत श्रावकों से पूज्य श्री इस विषय में गंभीरता से विमर्श-चिन्तन कर रहे थे। उस समय युवाचार्य जैसे महान गौरवशाली पद के लिए परमश्रद्धेय श्री मधुकर मुनि जी महाराज के साथ ही श्रद्धेय श्री शिव मुनि जी महाराज का नाम भी विशेष रूप से चर्चित रहा। मात्र दो वर्षीय दीक्षा पर्याय में विशाल श्रमण संघ के भावी अधिशास्ता के रूप में चर्चित होना श्रद्धेय मुनिवर के विराट व्यक्तित्व और ज्ञान गाम्भीर्य का ज्वलंत उदाहरण है।

तीसरा वर्षायोग

परम उपकारी श्रद्धेय गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज का सतत दिशा निर्देशन और सम्पूर्ण सहयोग अपने अतिजात शिष्य रत्न के लिए रहा। श्रद्धेय गुरुदेव ने अपने शिष्य के शोध अध्ययन में प्रगति के लिए पटियाला श्रीसंघ को वर्षावास की स्वीकृति प्रदान की।

यथासमय श्रद्धेय गुरुदेव अपने शिष्य मुनिसत्तम श्री शिव कुमार जी के साथ पटियाला पधारे। गुरुदेव अपने युग के यशस्वी और प्रतिष्ठित महामुनि थे। उनके चातुर्मासों को बड़े चातुर्मासों के रूप में माना जाता था। वे जहां भी जाते, अथवा वर्षावास करते वहां धर्म की लहर जगा देते थे। पटियाला में भी धर्म की लहर जग गई। जनता उमड़-उमड़कर श्रद्धेय गुरुदेव एवं मुनिसत्तम के दर्शनों तथा प्रवचनों को सुनने के लिए आने लगी। श्रद्धेय गुरुदेव समसामयिक विषयों पर जनता को सम्बोधित करते। धर्म प्रेरणाएं प्रदान करते, तप का महत्त्व बताते। फलतः पटियाला में तप, जप, सामायिक और साधना की विशेष बहार आ गई।

श्रद्धेय मुनिवर श्री शिव कुमार जी ने इस वर्षावास में शोध अध्ययन पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित किया। अपने विषय से सम्बन्धित ग्रन्थ आप विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी से प्राप्त करते और उनका गहन अध्ययन करते। भारत की विभिन्न धर्म परम्पराओं के ग्रन्थों में वर्णित मोक्ष के स्वरूप को समझना और जैन धर्म के विशेष संदर्भ के साथ तुलनात्मक अध्ययन को आंग्लभाषा में स्वीकृत पद्धति की सीमाओं में रहकर लिखना आपका दैनंदिन

का प्रमुख कार्य था। आदरणीय डॉ. श्री एल. एम. जोशी का संपूर्ण सहयोग और निर्देशन आपको प्राप्त था।

शोध कार्य के लिए पुस्तकादि के चयन के लिए अथवा डॉ. जोशी के विशेष आमंत्रण पर कई बार आप विश्वविद्यालय में भी जाते थे। उसी अवधि में दो साधकों से आपका संपर्क हुआ। उनमें से एक बौद्ध भिक्षु थे जो जर्मनी से पी-एच. डी. के लिए विश्वविद्यालय आए हुए थे। उनसे साधना सम्बन्धी वार्तालाप हुआ। उन्होंने बौद्ध दर्शन और विपश्यना ध्यान की विधि आपको बताई। दूसरे साधक एक हिन्दू संन्यासी थे। वे भी उच्च कोटि के साधक थे। उनसे भी अध्यात्म पर आपने विचार-विमर्श किया।

श्रद्धेय मुनिवर श्री शिव कुमार जी के पास बचपन से ही हंस दृष्टि रही है। जहां भी उन्हें कुछ श्रेष्ठ दिखाई देता है वे निसंकोच उसे ग्रहण करने को उत्सुक रहते हैं। आज भी जब वे साधना के शिखर-सोपानों पर विहार करते हैं, उन्हें जहां भी कुछ श्रेष्ठ दिखाई देता है उसे सीखने में वे संकोच नहीं करते हैं। एक नन्हे से बालक से भी सीखने में उन्हें संकोच नहीं होता है। सद्गुणों के शिखर-शैल आचार्य देव की गुण संपदा का मूल हेतु उनकी हंस दृष्टि और जिज्ञासु वृत्ति ही रही है।

पटियाला वर्षावास में शोध कार्य की विशेष प्रगति हुई। इस वर्षावास में डॉ. एल. एम. जोशी के विशेष सहयोग के साथ-साथ श्रीमती उषा जैन, श्री बी.डी. बंसल, श्री सुभाष जैन, श्री नरेन्द्र जैन, श्री राजेन्द्र जैन आदि का भी उल्लेखनीय सहयोग रहा।

भक्त हृदय श्री रोशनलाल जी जैन

श्रद्धेय मुनिप्रवर की साधना के प्रथम वर्षों में एक भक्तहृदय श्रावक उनसे देहच्छायावत् जुड़कर उनकी सेवा आराधना करते रहे थे। उन श्रावक जी का नाम था श्री रोशनलाल जी। श्री रोशनलाल जी की सेवा, सहयोग और प्रेरणाओं को श्रद्धेय आचार्य देव आज भी स्मरण करते हैं।

श्री रोशनलाल जी जैन गीदड़वाहा मण्डी के रहने वाले थे। आपश्री के दीक्षा समारोह में वे उपस्थित हुए थे। आपके महान त्याग और वैराग्य को देखकर वे अतिशय रूप से प्रभावित हुए। दीक्षा के उस प्रसंग पर उन्होंने अपने मन में यह संकल्प कर लिया कि अब मैं घर नहीं लौटूंगा। अपना संपूर्ण जीवन श्रद्धेय मुनि प्रवर की सेवा-भक्ति करते हुए ही बिताऊंगा।

श्री रोशनलाल जी ने अपने संकल्प का जीवन भर निर्वाह किया। अपने आराध्य देव श्री राम की सेवा में जैसे भक्तराज हनुमान तन, मन, प्राण से समर्पित थे ऐसे ही श्रद्धेय मुनिप्रवर की सेवा-आराधना में भक्त श्री रोशनलाल जी दस वर्षों तक समर्पित बने रहे। श्रावक के **'अम्मा पियरो'** स्वरूप को उन्होंने साकार किया। उनका सेवा और समर्पण पराकाष्ठा का था।

श्रद्धेय मुनिवर के प्रत्येक कार्य में—आहार में, विहार में, साधना में, स्वाध्याय में, शोध कार्य में भक्त जी का सतत सहयोग जुड़ा रहा।

स्वप्न-
द्रष्टा
संत

स्वस्थ परम्पराओं का पालन कीजिए! मृत परम्पराओं की पोषणा में जीवन को न गंवाइए! यह भी सच है कि ऐसा करते हुए आपको अन्ध परम्परा–पोषकों के कोप का भाजन भी बनना पड़ेगा! गालियां और पत्थर भी खाने पड़ेंगे! पर सत्य के राही अपमान और पत्थरों की परवाह नहीं करते हैं! वे निरंतर आगे बढ़ते हुए अपनी मंजिल को प्राप्त कर लेते हैं!

स्वप्न द्रष्टा संत

परम श्रद्धेय पंजाब केसरी प्रवर्तक श्री प्रेमचंद जी महाराज के दिल्ली करोलबाग में स्वर्गारोहण से पंजाब मुनिसंघ में प्रवर्तक पद रिक्त हो गया। श्रमण संघ नायक आचार्य सम्राट् श्री आनन्द ऋषि जी महाराज ने उपाध्याय प्रवर श्रमण श्री फूलचंद जी महाराज को प्रवर्तक पद प्रदान किया। पूज्य आचार्य प्रवर की इस उद्घोषणा से पंजाब मुनिसंघ में हर्ष की लहर दौड़ गई। सभी ने माना कि एक सुयोग्य मुनि की सुयोग्य पद पर नियुक्ति हुई है। पूज्य प्रवर प्रवर्तक श्री जी के अभिनन्दन के लिए चण्डीगढ़ में एक अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया। पंजाब प्रान्त के सभी मूर्धन्य मनस्वी संत और साध्वियां उस अवसर पर पधारे।

पटियाला वर्षावास के पश्चात् श्रद्धेय गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज एवं श्रद्धेय श्री शिव मुनि जी महाराज भी उस अवसर पर पदार्पित हुए। उत्तर भारतीय स्तर के उस आयोजन के अवसर पर श्रद्धेय मुनिवर की प्रतिभा सभी साधु, साध्वियों, श्रावक और श्राविकाओं के समक्ष प्रगट हुई। प्रायः अपनी स्वाध्याय और साधना में ही संलग्न रहने वाले मुनिवर ने प्रथम बार अपनी मुखर उपस्थिति दर्ज कराई।

पंजाब परम्परा में उस समय तक प्रवर्तक पद अभिनंदन महोत्सव पर चादर समर्पण की परम्परा नहीं थी। श्रद्धेय श्री शिव मुनि जी महाराज एवं श्री सुशील मुनि जी महाराज ने चादर समर्पण विषय पर विचार विनिमय किया और निश्चय किया कि परम पूज्य प्रवर्तक श्री जी का अभिनन्दन आदर की प्रतीक चादर प्रदान कर किया जाना चाहिए। कतिपय मुनिराजों ने इस प्रस्ताव का विरोध किया। उस समय आप श्री जी ने श्री सुशील मुनि जी महाराज के साथ मिलकर साधु-साध्वी मंडल की एक तात्कालिक मीटिंग बुलाई और यह प्रस्ताव पारित करवाया कि प्रवर्तक श्री जी को आदर की प्रतीक चादर प्रदान की जाए।

इस प्रकार श्रद्धेय मुनिवर ने पंजाब परम्परा में एक नवीन और स्वस्थ परम्परा के सूत्रपात में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

यथासमय समारोह का भव्य आयोजन हुआ। शताधिक साधु-साध्वियों और हजारों श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में श्रद्धेय पूज्य प्रवर्तक श्री जी को आदर की चादर समर्पित की गई। प्रमुख मुनिराजों और श्रावकों ने पूज्य प्रवर्तक श्री जी का पदाभिनन्दन किया और अपने-अपने विचार रखे।

उसी क्रम में युवा मुनिवर श्रद्धेय श्री शिव मुनि जी महाराज को भी अपने विचार प्रगट करने के लिए समय दिया गया। समस्त गण्यमान्य मूर्धन्य मनस्वी संतों की उपस्थिति में श्रद्धेय मुनिवर ने ओजस्वी वाणी में अपने हृदयोद्‌गार प्रगट किए। पूज्य श्री के उस भाषण को निम्न पंक्तियों में शब्दशः उद्‌धृत किया जा रहा है–

''व्यक्ति समाज की इकाई है, व्यक्ति और समाज का परस्पर गहरा सम्बन्ध है। एक शिशु जब मां के गर्भ से जन्म लेकर पृथ्वी पर पहला कदम रखता है तभी से उसका समाजीकरण शुरू हो जाता है। समाज और व्यक्ति का सम्बन्ध फूल और डाली का सम्बन्ध है। एक वृक्ष को देखिए! उसका मूल है, तना है, शाखाएं और प्रशाखाएं हैं, छोटी-छोटी डालियां हैं, पत्ते हैं, फूल हैं, फल हैं। इन सभी से मिलकर एक वृक्ष शोभा और सम्पन्नता को प्राप्त होता है। वृक्ष के अस्तित्व में इन सभी का अपना-अपना महत्त्व है। फूल कहे कि मेरा ही महत्त्व है डाली का नहीं, और डाली कहे कि मेरा महत्त्व है फूल का नहीं, तो ऐसा हो नहीं सकता। डाली और फूल इन दोनों का परस्पर अटूट सम्बन्ध है, पारस्परिक निर्भरता और सहयोग है। जैसे मूल के साथ तना, तने के साथ शाखाएं, शाखाओं के साथ प्रशाखाएं, फिर फल और फूल आदि सबकी संयुक्त चेतना है, ऐसे ही समाज में प्रत्येक व्यक्ति का परस्पर सम्बन्ध है। कोई व्यक्ति मूल की तरह कार्य कर रहा है तो कोई स्कंध बनकर काम कर रहा है, कोई शाखा, प्रशाखाओं की तरह कार्य कर रहा है तो कोई फल-फूल बनकर कार्य कर रहा है। प्रत्येक व्यक्ति और प्राणी पारस्परिक सहयोग पर ही अवलम्बित है। इसी सत्य को जैन दर्शन में **'परस्परोपग्रहो जीवानाम्'** इस सूत्र द्वारा अभिव्यक्त किया गया है।

समाज में कई प्रकार की परम्पराएं, धारणाएं और रीतियां रहती हैं। परम्पराएं नदी के उन कूल-किनारों की तरह होती हैं जिनके मध्य मर्यादित बनकर जल प्रवाहित होता है। पर जब नदियों की धाराएं अन्य मार्गों से

प्रवाहित होने लगती हैं तो वे पुराने किनारे व्यर्थ हो जाते हैं। फिर उन्हीं किनारों को पकड़कर बैठ जाना और आग्रह करना कि यही किनारे जल प्रवाह को मर्यादित करने वाले हैं और पूजनीय हैं, यह समझदारी नहीं है। स्वस्थ परम्पराओं का पूर्ण निष्ठा से पालन और मृत परम्पराओं का निरपेक्ष विसर्जन ही बुद्धिमत्ता है।

स्वस्थ परम्पराओं का पालन कीजिए! मृत परम्पराओं की पोषणा में जीवन को न गंवाइए! यह भी सच है कि ऐसा करते हुए आपको अन्ध परम्परा-पोषकों के कोप का भाजन भी बनना पड़ेगा। गालियां और पत्थर भी खाने पड़ेंगे। पर सत्य के राही अपमान और पत्थरों की परवाह नहीं करते हैं।

मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि क्या आज आप वही पोशाक पहनते हैं जो आपके दादा जी पहनते थे? क्या आप आज उन्हीं जीवन-सुविधाओं का उपयोग करते हैं जिनका उपयोग आपके पूर्वज करते थे? आपके दादा जी धोती पहनते थे और पगड़ी बांधते थे। परन्तु आप तो पैंट और शर्ट पहनते हो! आपके दादा जी बैलगाड़ी या घोड़ा-बग्घी से यात्राएं करते थे, पर आप कार, रेल और हवाई जहाजों का उपयोग करते हैं। अपने जीवन व्यवहारों में आपने समयानुसार काफी परिवर्तन कर लिया है। क्या इस परिवर्तन को पाप की संज्ञा दी जाए?

समय बदलता है तो जीवन व्यवहार बदलते हैं। पाप और पुण्य का उससे सम्बन्ध नहीं है। ऐसे ही समयानुसार परम्पराएं भी बनती और रूपान्तरित होती हैं। **'पण्णा समिक्खए धम्मं'** भगवान महावीर के इस सूत्र के आलोक में अपना मार्ग निर्धारित कीजिए। सत्य की संवाहक परम्पराओं का गला कटा कर भी पालन कीजिए। मृत परम्पराओं को पत्थर खाकर भी विसर्जित कीजिए।

सत्य के पथ पर आगे बढ़ते हुए घबराइए मत! जो आज आपको पत्थर मार रहे हैं कल वही आपको गले लगाएंगे। आज जो गालियां दे रहे हैं कल वही आपकी प्रशस्तियां गाएंगे। ऐसा सदा से होता रहा है, आज भी हो रहा है और आगे भी होता रहेगा। इतिहासों का निर्माण करने वाले शूरवीर सत्य पथ पर सुदृढ़ कदमों से आगे ही आगे बढ़ते रहते हैं।

परम पूज्य उपाध्याय प्रवर श्रमण श्री फूलचंद जी महाराज के प्रवर्तक पद चादर समर्पण के इस ऐतिहासिक महामहोत्सव पर मैं पूज्य श्री का

हार्दिक अभिनंदन करता हूं। पूज्य प्रवर्तक श्री जी सत्य के अंतःस्वरूप को अपने श्वासोच्छवास में जीने वाले महान साधक हैं। श्रमण संघ की एकता और संघ में साधनात्मक विकास के लिए पूज्य श्री ने अपना समग्र जीवन समर्पित किया है। नूतन संभावनाओं को प्रोत्साहित कर सम्मानित करना पूज्य श्री का स्वभाव है। पूज्य श्री का पारस सान्निध्य लोहे को भी पारस बनाने वाला है। पूज्य श्री का मुझ पर महान उपकार है। अध्यात्म का प्रथम पाठ पूज्य श्री ने ही मुझे पढ़ाया है। पूज्य श्री मेरे जीवन के निर्माता हैं। मेरी ही तरह सहस्रों लोगों का इन्होंने मार्गदर्शन और जीवन निर्माण किया है।

समष्टि के कल्याणमित्र पूज्य उपाध्याय प्रवर के नेतृत्व में उत्तर भारत का जैन संघ नित नूतन प्रगति करेगा ऐसा मेरा हार्दिक विश्वास है। इस महनीय प्रसंग पर पूज्य श्री का मैं शत-शत अभिनंदन करता हूँ। आप सभी के लिए भी मैं मंगल कामना करता हूँ कि मुझे समय दिया और मेरी बातों को सुना।''

उपरोक्त सार-संक्षिप्त शब्दों में पूज्य मुनिवर ने अपना वक्तव्य पूर्ण किया। आपके वक्तव्य की सभी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। सभी के मनों में यह विश्वास सुदृढ़ बना कि यह युवा मुनि भविष्य में एक महान यशस्वी महामुनि बनेगा।

चौथा वर्षायोग

श्रद्धेय पंजाब केसरी गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज ने वर्ष 1975 के वर्षावास की स्वीकृति चण्डीगढ़ श्रीसंघ को प्रदान की। यथासमय श्रद्धेय गुरुदेव एवं श्रद्धेय मुनिवर श्री शिव कुमार जी महाराज वर्षावास के लिए चण्डीगढ़ पधारे। प्रतिदिन प्रवचन होने लगे। विशाल संख्या में भाई-बहनें प्रवचन का लाभ लेने लगे। युवा मुनिवर के नव नवोन्मेषी प्रवचनों से लोग विशेष प्रभावित हुए। तप और जप की आराधना पूरे वर्षावास चलती रही।

युवा मुनिवर ने अपना अधिक समय स्वाध्याय में ही संयोजित किया। भारत की सभी धर्मपरम्पराओं का आपने गहन अध्ययन किया। शोध कार्य निरंतर प्रगतिमान रहा।

वर्षावास की परिसमाप्ति पर आस-पास के क्षेत्रों में विचरण किया गया। गांवों अथवा नगरों में जहां भी गुरुदेव पधारते वहीं पर अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व और ओजस्वी वक्तृत्व से धर्म की लहर जगा देते थे। पूज्य प्रवर

युवा मुनिवर भी अपने त्याग-वैराग्य और गम्भीर ज्ञान की छाप प्रत्येक व्यक्ति के हृदय पर छोड़ते थे।

वर्ष 1976 का वर्षावास खन्ना मण्डी में स्वीकृत किया गया।

पांचवां वर्षायोग

श्रद्धेय मुनि प्रवर श्री शिव कुमार जी महाराज ने अपने संयमीय जीवन का पंचम वर्षावास अपने श्रद्धेय गुरुदेव के सान्निध्य में खन्ना मण्डी में किया। खन्ना मण्डी लुधियाना से लगभग 40-45 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। उस समय भी वहां पर जैन परिवार सीमित थे और आज भी सीमित ही हैं। परन्तु श्रद्धेय गुरुदेव और श्रद्धेय युवा मुनिवर के पदार्पण से खन्ना मण्डी में धर्मध्यान की अपूर्व लहर जागृत हो गई। जैन और अजैन सभी लोगों ने गुरुदेव के प्रभावशाली उपदेशों का निरंतर चार महीनों तक लाभ लिया।

श्रद्धेय मुनिवर श्री शिव कुमार जी महाराज भी सामयिक अवसरों पर अपने उद्बोधनों से श्रद्धालुओं को लाभान्वित करते रहे। विशेषतः उन्होंने अपना ध्यान अध्ययन पर ही केन्द्रित किए रखा। तप और ध्यान का अभ्यास भी आप नियमित रूप से करते रहे।

खन्ना वर्षावास की परिसमाप्ति पर श्रद्धेय गुरुदेव के अनुगामी बनकर श्रद्धेय मुनिवर श्री शिवकुमार जी ने आस-पास के क्षेत्रों में विचरण किया। आगामी वर्षावास के लिए राजपुरा श्रीसंघ की प्रार्थना को स्वीकार किया गया।

छठा वर्षायोग

यथासमय मुनि श्रेष्ठ गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज एवं श्रद्धेय श्री शिवमुनि जी महाराज वर्षावास हेतु राजपुरा पधारे। पूज्य मुनिराजों के पदार्पण से धर्मध्यान और जप-तप का सुंदर वातावरण निर्मित हुआ। नित्य प्रवचन होने लगे। श्रद्धेय श्री शिव मुनि जी महाराज सेवा, स्वाध्याय और साधना में संलग्न रहे। कदम-कदम आपकी संयम साधना परिपक्व बनती रही। अपने प्रत्येक विचार और आचार को आगम के अनुसार ढ़ालने में आपश्री अप्रमत्त प्रयत्नशील रहे।

स्वाध्याय के समय में मुनि प्रवर श्री शिवकुमार जी एकनिष्ठ होकर स्वाध्याय करते थे। उसके पश्चात् ध्यान मुद्रा में बैठकर अधीत विषय पर अर्थ सहित चिन्तन-अनुचिन्तन करते थे। चिन्तन-अनुचिन्तन से फलित

अमृत को ग्रहण कर उसे अपने जीवन का अंग बना लेते थे।

'पण्डित' पद को प्राप्त करना अथवा ऊंची डिग्रियों को पाना आपके अध्ययन का लक्ष्य नहीं था। ऐसा होता तो मुनि जीवन के प्रथम दो वर्षों में ही आप शोध कार्य को पूर्ण कर डिग्री प्राप्त कर सकते थे। शोध कार्य को तो आपने स्वाध्याय के लिए साधन मात्र माना था। उसके निमित्त से आप समग्र भारतीय वाङमय का अध्ययन करना चाहते थे। जानना चाहते थे कि भारत के प्राचीन ऋषि-मुनियों और समकालीन चिन्तकों ने जीवन के परम लक्ष्य मोक्ष को किस रूप में जाना, समझा और प्रकट किया है। उसी के लिए आप योगियों की सी योग समाधि में गहरे पैठ कर अध्ययनशील थे।

इस छह वर्ष की अवधि में श्रद्धेय मुनिवर ने जहां भारतीय वाङमय का गम्भीर अध्ययन किया वहीं समग्र जैन वाङमय का भी सूक्ष्म अध्ययन किया। ज्ञान के गौरी शिखर गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज जैन वाङमय के प्रकाण्ड पण्डित थे, उनका अध्यापन आपको अनवरत रूप से प्राप्त हो रहा था।

राजपुरा वर्षावास श्रद्धेय मुनिवर के लिए अध्ययन की दृष्टि से विशिष्ट रहा। वर्षावास की अवधि में श्रद्धेय गुरुदेव के सान्निध्य में कई सांस्कृतिक और धार्मिक कार्यक्रम भी सम्पन्न हुए। गुरुदेव की पावन प्रेरणा से वहां स्थानक भवन का शुभारंभ भी हुआ। राजपुरा के श्रावक और श्राविकाओं ने सेवा के क्षेत्र में आदर्श प्रस्तुत किया। श्री हरबंश लाल जैन, श्री राजकुमार जी जैन आदि ने वर्षावास की पूरी अवधि में स्मरणीय सेवाएं प्रदान कीं।

संत संगम

राजपुरा का रचनात्मक वर्षावास पूर्ण कर अपने श्रद्धेय गुरुदेव के चरणों का अनुगमन करते हुए मुनि प्रवर श्री शिव कुमार जी पटियाला पधारे। उस समय पटियाला नगर में शासन प्रभावक श्रद्धेय श्री सुदर्शनलाल जी महाराज, भारतीय मनीषा के मेरुतुंग श्री रामप्रसाद जी महाराज आदि मुनिराज विराजमान थे। आत्मगुरु और मदनगुरु के शिष्य-सत्तम महामुनियों का मिलन हुआ। आचार्य सम्राट् गुरुदेव श्री आत्माराम जी महाराज एवं व्याख्यान वाचस्पति श्रद्धेय श्री मदनलाल जी महाराज का पारस्परिक स्नेह सम्बन्ध सर्वविख्यात रहा है। दोनों ही महामुनिराज विगत शती के ज्ञान और संयम के शिखर-पुरुष थे।

श्रद्धेय गुरुदेवों की स्नेह-सरिता पटियाला की धरा पर पुनः प्रवाहित हुई। स्वाध्याय और संयम की गंगा-यमुना साकार हो उठीं।

एक निर्ग्रन्थ की ग्रन्थ साधना

पटियाला में कुछ दिन विराजने के पश्चात् आस-पास के क्षेत्रों में विचरण किया। उस समय का उपयोग श्रद्धेय मुनिवर ने अपने शोध ग्रन्थ की संपूर्ति में किया। उस अवधि में डॉ. एल. एम. जोशी निरंतर आपके संपर्क में रहे। तकनीकी दृष्टि से शोध ग्रन्थ का निरीक्षण कर डॉ. साहब सन्तुष्ट हुए। उसके बाद उनकी प्रार्थना पर आपश्री पुनः पटियाला पधारे। निर्धारित समय पर आपने अपना शोध ग्रन्थ विश्वविद्यालय में प्रस्तुत किया। आपश्री द्वारा अंग्रेजी भाषा में रचित प्रस्तुत शोध ग्रन्थ के निरीक्षण परीक्षण हेतु निर्णायक मण्डल विदेश से आया था। आप के इस कठोर श्रम साध्य ग्रंथ को देख-परखकर निर्णायक मण्डल अति प्रसन्न हुआ। आपकी विद्वत्ता और व्यक्तित्व की एक झलक प्राप्त करके अधिकारी वर्ग इस कदर संतुष्ट हुआ कि साक्षात्कार हेतु भी आपको नहीं बुलाया गया।

शिक्षा गुरु के घाट पर

शोध कार्य पूर्ण करने के पश्चात् श्रद्धेय मुनिवर ने अपना संपूर्ण ध्यान आगमों के सम्यक् अध्ययन पर केन्द्रित किया। उसी के लिए आपश्री श्रद्धेय गुरुदेव के साथ लुधियाना पधारे। उस समय लुधियाना में पंजाब प्रवर्तक उपाध्याय श्रमण श्री फूलचन्द जी महाराज विराजमान थे। श्री श्रमण जी महाराज आगम-वाङमय के गंभीर ज्ञाता थे। पूज्य श्री के सान्निध्य में रहकर आपने प्रज्ञापना और तत्त्वार्थ सूत्र का अध्ययन किया। आपके साथ ही प्रवचन भूषण श्री अमर मुनि जी महाराज, श्री सुव्रत मुनि जी महाराज, महासती श्री मीना जी महाराज, महासती श्री शिमला जी महाराज आदि ने भी स्वाध्याय में भाग लिया।

सेवानिष्ठा

श्रद्धेय मुनि प्रवर श्री शिव मुनि जी महाराज का जीवन प्रारंभ से ही सद्गुणों का पुष्पोद्यान रहा है। सद्गुणों रूपी पुष्पों को चुनने के लिए आप सदैव जिज्ञासाशील बने रहे। जहां भी आपको सद्गुण दिखाई पड़ते हैं उन्हें आप ग्रहण कर लेते हैं। एक छोटे से बच्चे से भी आपको कुछ सीखने को मिलता है तो उसे आप सीखते हैं।

आपकी दूसरी बड़ी विशेषता यह है कि आप प्राप्त अवसर का पूरा लाभ उठाते हैं। **'खणं जाणाहि पंडिए'** इस सूत्र को आपने अपना जीवन सूत्र बनाया है।

पूज्य प्रवर्तक श्री जी के सान्निध्य में आगम स्वाध्याय का अवसर प्राप्त हुआ तो आपश्री पूरे भाव से आगम स्वाध्याय में संलग्न हो गए। उसी अवधि में एक अन्य अवसर जो स्वाध्याय से भी श्रेष्ठ था आपको प्राप्त हुआ। वह था–सेवा का अवसर। एक क्षण में ही आपके चिन्तन ने निर्णय प्रस्तुत किया–स्वाध्याय का सार सेवा ही है। अपने चिन्तन के निर्णयानुसार स्वाध्याय को विराम देकर आपश्री सेवा के लिए विदा हो गए।

घटना इस प्रकार थी–बरनाला मण्डी में वयोवृद्ध मुनिराज श्री पन्नालाल जी महाराज स्थिरवास साधना में साधनाशील थे। उनके शिष्य कविरत्न श्री चन्दनमुनि जी महाराज उनकी सेवा-आराधना में थे। पूज्य श्री वृद्ध तो थे ही, अस्वस्थ भी थे। साथ ही कर्म विपाक ऐसा हुआ कि श्री चन्दन मुनि जी के हाथ की हड्डी टूट गई। ऐसे में कविरत्न श्री चंदन मुनि जी महाराज ने गुरुसेवा में स्वयं को असमर्थ अनुभव किया। स्पष्ट था कि एक सेवाभावी मुनि की आवश्यकता गुरुदेव को हर समय थी।

ऐसे में कविरत्न श्रद्धेय श्री चंदन मुनि जी महाराज ने लुधियाना में विराजित प्रवर्तक श्री जी के पास संदेश भिजवाया कि उन्हें गुरुसेवा के लिए एक सेवानिष्ठ मुनि की आवश्यकता है। पूज्य प्रवर्तक श्री जी ने वहां विराजित मुनिमण्डल के समक्ष कवि जी महाराज के संदेश की बात रखी और कहा–पूज्य मुनिराज श्री पन्नालाल जी म. की सेवा के लिए एक या दो मुनियों को जाना चाहिए। जो भी मुनि इस पुण्य अवसर का लाभ लेना चाहे वह अपनी स्वीकृति दे।

पूज्य प्रवर्तक श्री जी की बात सुनकर सभी मुनियों ने अपनी-अपनी स्थितियों पर विचार किया। एकाएक कोई भी मुनिराज बरनाला जाने की स्वीकृति नहीं दे पाया। उस समय श्रद्धेय मुनिवर शिवकुमार जी ने चिन्तन किया–पूज्य प्रवर्तक श्री जी के सान्निध्य में मुझे आगम स्वाध्याय का सुअवसर प्राप्त हुआ है। ऐसे अवसर पुनः-पुनः नहीं मिलते हैं। परन्तु ऐसे में एक वयोवृद्ध मुनिराज की सेवा का जो प्रसंग आया है वह तो परम दुर्लभ अवसर है। आखिर स्वाध्याय का सार सेवा ही तो है। इस दुर्लभ अवसर को मुझे चूकना नहीं चाहिए।

इस चिन्तन के साथ उत्साही हृदय से आपने पूज्य प्रवर्तक श्री जी के चरणों में निवेदन किया- भगवन्! सेवा का यह पुनीत अवसर मुझे प्रदान करें। मैं इसी क्षण बरनाला के लिए प्रस्थान करने को तैयार हूं।

आपके सेवा-उत्साह को देखकर पूज्य प्रवर्तक श्री जी गद्‌गद हो गए। उन्होंने आपके सिर पर आशीष का हाथ रखकर कहा—शिव! स्वाध्याय पर सेवा को प्राथमिकता देकर तुमने सहज ही सिद्ध कर दिया है कि तुम स्वाध्याय में उत्तीर्ण हुए।

पूज्य प्रवर्तक श्री जी के निर्देशानुसार श्रद्धेय मुनिवर श्री शिव कुमार जी एक लघु मुनि के साथ उसी दिन बरनाला के लिए विहार कर गए। अध्ययन क्रम बाधित हुआ, इस बात का कोई खेद आपको नहीं था। सेवा का पुण्य प्रसंग प्राप्त हुआ इस बात का उल्लास आपके उत्साह से अवश्य प्रकट हो रहा था।

यथाशीघ्र आपश्री बरनाला पहुंचे। पूज्य कवि जी महाराज के साथ मिलकर आपश्री ने परम श्रद्धेय श्री पन्नालाल जी महाराज की सेवा में स्वयं को समर्पित कर दिया। आपका सेवा सहयोग प्राप्त कर कविरत्न पूज्य श्री चन्दन मुनि जी महाराज अतीव प्रसन्न हुए।

सातवां वर्षायोग

समय पंख लगाकर उड़ता रहा। वर्षावास की अवधि सन्निकट थी। पूज्य मुनिवर ने श्रद्धेय गुरुदेव से अनुज्ञा प्राप्त कर वर्ष 1978 का वर्षावास पूज्य श्री पन्नालाल जी महाराज की सेवा में ही व्यतीत करने का निश्चय किया। पूज्य श्री की सेवा के साथ-साथ प्रवचन, जन संपर्क, गोचरी आदि साध्वाचार मूलक क्रियाओं को आपश्री सम्पन्न करते रहे। आपके भव्य व्यक्तित्व की बरनाला निवासियों पर अनुपम छाप पड़ी। विज्ञान सम्मत धार्मिक विषयों पर आपके प्रवचनों से जनता को नवीन दृष्टि प्राप्त हुई। वर्षावास की संपूर्ण अवधि में आपकी अप्रमत्त व्यस्तता एक उदाहरण बन गई। आपकी निष्काम सेवा निष्ठा की प्रशस्तियां सर्वत्र प्रसृत हुईं।

लोकैषणा से आंखें मूंद कर श्रद्धेय मुनिवर श्री शिवकुमार जी संयम साधना, सेवा-आराधना और धर्म-प्रभावना में समग्रभावेन समर्पित बने रहे। ऐसे ही वर्षावास संपूर्ण हो गया। परन्तु पूज्य श्री पन्नालाल जी महाराज की अस्वस्थता बढ़ती ही जा रही थी। ऐसे में आप विहार करने की सोच भी कैसे सकते थे? आपने अपना निश्चय दोहरा दिया—जब तक पूज्य श्री

को मेरी सेवा की आवश्यकता रहेगी तब तक मैं बरनाला से विहार नहीं करूंगा।

पूज्य श्री पन्नालाल जी महाराज का स्वास्थ्य निरंतर गिरता जा रहा था। ऐसे में उनके दर्शनों के लिए कुछ मुनि मण्डल पधारे। परम पूज्य विश्व केसरी श्री विमल मुनि जी महाराज, परम पूज्य श्री सुमन मुनि जी महाराज आदि संत बरनाला पधारे। सभी मुनियों ने सेवानिष्ठ युवा मुनिवर की अनुशंसाएं कीं।

एक रात्रि को पूज्य महामुनि की तबियत अत्यधिक बिगड़ गई। शारीरिक वेदना चरम पर थी। पर अमर संयम सेनानी पूज्य प्रवर महामुनि ने देह वेदना के समक्ष अपनी संयम निष्ठा को सुमेरु-सा सुदृढ़ रखा। प्रभात में 3-4 बजे के आस-पास पूज्य श्री ने नश्वर देह का त्यागकर देवलोकों के लिए प्रस्थान किया। पूज्य श्री की सुमेरु समान संयम निष्ठा का अपूर्व प्रभाव युवा मुनि श्री शिव कुमार के मानस पर अंकित हुआ।

श्रद्धेय गुरुदेव के विरह से कविरत्न श्री चंदन मुनि जी महाराज वज्राहत हो उठे। आपके सहयोग से उन विकट पलों में उन्हें पर्याप्त संबल प्राप्त हुआ। आखिर श्रद्धेय कविरत्न श्री चंदन मुनि जी महाराज के साथ मुनि प्रवर श्री शिवकुमार जी महाराज ने बरनाला से विहार किया। मालेरकोटला, रायकोट आदि क्षेत्रों को स्पर्शित करते हुए आपश्री लुधियाना पधारे।

प्रवेश : ध्यान की मुद्रा में

जीवन के प्रत्येक पल को सृजन में समर्पित करने वाले श्रद्धेय मुनिवर श्री शिवकुमार जी लुधियाना पहुंचकर पूज्य प्रवर्तक श्री जी के सान्निध्य में अधूरे छुटे आगम के अध्ययन में पुनः तन्मय बन गए। अविचल श्रद्धा और लग्न से आप आगमों का अध्ययन करते रहे। आगमों के अध्ययन से जीवन और जगत से जुड़े अनेक रहस्यों का ज्ञान आपने प्राप्त किया। आचाराङ्ग सूत्र का अध्ययन करते हुए भगवान महावीर स्वामी की ध्यान-साधना से आप परिचित बने। पूज्य प्रवर्तक श्री जी के निर्देशन में महावीर की मूल ध्यान साधना का आपश्री ने नियमित रूप से अभ्यास शुरू कर दिया। ध्यान के निरंतर अभ्यास से ध्यान में निरंतर गहराई आती गई। आपके इस विश्वास को सुदृढ़ आधार प्राप्त हुआ कि ध्यान ही मोक्ष रूपी शिखर का सोपान है। ध्यान के द्वारा ही जीवन में सदा स्थिर रहने वाले आनन्द को विकसित किया जा सकता है।

पूज्य प्रवर प्रवर्तक श्री जी ने मुमुक्षु मुनिवर श्री शिवकुमार जी को आचार्य प्रवर पूज्य श्री आत्माराम जी म. की ध्यान-विधियों से भी परिचित कराया। पूज्य श्री ने आपको बताया–पूज्य आचार्य श्री की ध्यान साधना अत्यन्त उच्च कोटि की थी। प्रतिदिन प्रभात में दो बजे निद्रा को विराम देकर आचार्य श्री एकान्त स्थान पर तीन घण्टे तक ध्यान में लीन रहते थे। ध्यान मुद्रा में प्रवेश करने के पश्चात् बाहर घट रही घटनाओं से वे सर्वथा अलग हो जाते थे। ध्यान की अवस्था में शारीरिक परीषहों के संवेदन से भी वे अतीत हो जाते थे। शीत, उष्ण, दंश-मशक आदि परीषह ध्यानलीन आचार्य देव को किंचित् भी विचलित नहीं कर पाते थे। ध्यान कोष्ठक में प्रविष्ट आचार्य देव देह में रहकर भी विदेह अवस्था में पहुंच जाते थे।

तीर्थकर महावीर और आचार्य देव की ध्यान साधना पर पूज्य मुनिवर श्री शिवकुमार जी पूज्य प्रवर श्री प्रवर्तक जी म. से घण्टों चर्चा करते। एक-एक बात को, एक-एक जिज्ञासा को पूज्य श्री के समक्ष प्रकट करते। पूज्य श्री जी मौखिक तथा क्रियात्मक समाधान प्रस्तुत करते।

कई मास तक पूज्य मुनिवर श्री शिवकुमार जी पूज्य प्रवर्तक श्री जी के सान्निध्य में रहे। पूज्य मुनिवर के लिए ध्यान और स्वाध्याय के संदर्भ में वे कुछ मास उनके जीवन का स्वर्णिम शिक्षण-काल रहा। उस अवधि में आपने ध्यान के स्वरूप को समझा, ध्यान की विधियों को हृदयंगम किया और घण्टों एकांत में बैठकर ध्यान का अभ्यास किया।

ध्यान योग के शिखर पुरुष श्रद्धेय शिवाचार्य श्री जी कई बार अतीत के स्मृति पृष्ठ उघाड़ते हुए फरमाते हैं–सन् 1978 में मैंने ध्यान की गहराइयों का प्रथम अनुभव किया। उस समय मुझे सर्वथा नवीन अनुभव हुए। मैंने जाना कि महावीर की समग्र साधना ध्यान और तप की साधना थी। ध्यान की प्रायोगिक भूमिका में प्रवेश करके मैंने साक्षात् अनुभव किया कि कानों में कीलें ठोके जाने जैसे विकट उपसर्ग को ध्यान की अवस्था के बिना जीया नहीं जा सकता है। महावीर के साधना काल के अनेक ऐसे कठिन क्षण हैं जहां व्यक्ति का जीवित रहना कठिन है। ऐसे विकट क्षणों में भी महावीर पूर्ण स्वस्थ रह पाए, यह सब ध्यान का ही चमत्कार था। ध्यान की वैसी गहराई यदि आज भी उपलब्ध कर ली जाए तो वैसे ही चमत्कार आज भी घट सकते हैं।

महाजनो येन गतः

एक पुरानी उक्ति है–**महाजनो येन गतः स पंथाः**। अर्थात् श्रेष्ठ पुरुष जिस मार्ग मे यात्रा करते हैं वही सुपथ होता है।

बने-बनाए पथों पर यात्रा करने वाले साधारण मानव होते हैं। जिनके कदम कंटीले-कंकरीले पथों पर बढ़कर पथ का निर्माण करते हैं ऐसे पुरुष पूज्य और वन्दनीय होते हैं। ऐसे महापुरुषों के चरणों पर इतिहास सदैव नमन करता है।

श्रद्धेय मुनिवर श्री शिवकुमार कदम दर कदम साधना पथ पर बढ़ते रहे और मार्ग निर्मित होते रहे। जिस समय मुनिवर ने शोध कार्य प्रारंभ किया था उस समय समाज में तीव्र विरोधी स्वर उठे थे। मुनिवर सहज ही इस संदर्भ में विज्ञ थे और जानते थे कि किसी भी नवीन कार्य का प्रथम अभिनंदन पत्थरों से ही होता है। आपने पत्थरों का भी स्वागत किया। पत्थर बरसाने वालों का फूलों से स्वागत किया। पर आपने शोध अध्ययन को विराम नहीं दिया। अनवरत छह वर्षों की स्वाध्याय साधना के उपरांत आपने शोध कार्य पूर्ण किया। पंजाब विश्वविद्यालय ने पूरे सम्मान से आपको 'डॉक्ट्रेट' पद से अलंकृत किया। उस समय आपश्री लुधियाना में विराजित थे। पंजाब विश्वविद्यालय पटियाला ने टेलिग्राम द्वारा आपको इस बात की सूचना लुधियाना प्रेषित की।

विश्वविद्यालय की इस सूचना पर समग्र मुनिसंघ और श्रावकसंघ में उत्सव उतर आया। जिन लोगों ने शोध कार्य प्रारंभ करते हुए आपका डटकर विरोध किया था उन्हीं लोगों को उस समय मिठाइयां बांट कर हर्ष अभिव्यक्त करते हुए देखा गया। समग्र संघ ने स्वंय को गौरवान्वित अनुभव किया।

तीर्थंकर महावीर की वर्तमान चारों धर्म संघ परंपराओं के आप प्रथम मुनि थे जिन्होंने डॉक्ट्रेट की उपाधि प्राप्त की थी। आपके बाद साधु-साध्वी मण्डल में अध्ययन की विशेष प्रेरणा प्रबल बनी। अनेक साधुओं और साध्वियों ने शिक्षा के क्षेत्र में चरण बढ़ाए और आज मुनि संघ में कई साधु-साध्वी उच्च शिक्षा प्राप्त हैं।

निःसंदेह श्रेष्ठ पुरुष भीड़ के पीछे नहीं चलते। अपने मार्ग का वे स्वयं अनुसंधान करते हैं। उनका प्रत्येक कदम नवीन मार्ग का सृजन करता है। फिर भीड़ उस मार्ग पर स्वयं खिंची चली आती है।

आठवां वर्षायोग

लुधियाना से विहार करके श्रद्धेय श्री शिवमुनि जी महाराज ग्रामानुग्राम विहार करते हुए डेराबस्सी पधारे। डेराबस्सी में कुछ दिन विराजने के पश्चात् सरहिंद पधारे। सरहिंद पंजाब का एक छोटा-सा ऐतिहासिक नगर है। 'सरहिंद' इस शब्द में दो शब्द हैं–सर और हिंद। शब्दार्थ स्पष्ट है कि वह पवित्र स्थल जहां हिन्द की आन के लिए सिर दिया गया। इस पवित्र स्थल पर गुरु गोविंद सिंह जी के दो साहिबजादों को दीवाल में चिनवा दिया गया था। हिन्द के गौरव की रक्षा के लिए हंसते-हंसते सिर बलिदान करने वालों की शौर्य सुगंध उस माटी में अमर हो गई है। उस स्थल के दर्शन करने वाले लोग आज भी भाव-विह्वल हो जाते हैं। उस मिट्टी की महक आज भी लोगों की रगों में शौर्य का रक्त उबाल देती है।

धन्य हैं वे अमर बलिदानी! धन्य है वह धरा–और उस वीरांगना की कोख जिसने ऐसे दीवानों को जन्म दिया। धन्य है उस पिता का शिक्षण जिसने अपने लख्ते-जिगरों में ऐसे वज्र-संकल्पों को भरा।

अस्तु! डेराबस्सी से विहार कर श्रद्धेय मुनिवर सरहिंद पधारे। सरहिंद के पवित्र स्थलों का साक्षात्कार किया। हृदय की धड़कनों में श्वास-श्वास जीने वाले मुनिवर उस बलिदानी माटी का स्पर्श पाकर रोमांचित हो उठे। अपने प्रण के लिए प्राण न्यौछावर कर देने का मुनिवर का संकल्प और भी प्रबल और प्रकृष्ट बन गया।

सरहिंद से आप बनूड़ पधारे। वही बनूड़ जहां आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी महाराज ने एक वृक्ष के नीचे श्रमणधर्म में प्रवेश किया था। आस्था के प्रतीक उस वृक्ष की शीतल छाया में मुनिवर पधारे। कुछ क्षण वहां पर बैठे। ध्यान मुद्रा में बैठकर सुदूर अतीत में झांकने का उपक्रम किया। तन-मन से रोमांचित बन गए। मन उल्लास और उत्साह से भर गया।

बनूड़ में कुछ दिन विराजने के पश्चात् महामुनिवर के चरण आगे बढ़े। ग्राम-नगरों का स्पर्श करते हुए, हृदय-हृदय पर करुणा और समता के दस्तक देते हुए आप पंचकुला पधारे। पंचकुला में स्थित गुरुकुल को देखकर प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली और शिक्षा व्यवस्था की कल्पनाएं साकार हुईं। गुरुकुल के शिक्षकों का गुरुभाव और छात्रों की विनम्र अनुशासिता में शिष्यभाव का दर्शन कर मुनिवर का मन मुदित बन गया। गुरुकुल का शान्त वातावरण आपके मन को छू गया। संकल्प जगा कि यहां रहकर आगम

स्वाध्याय को आगे बढ़ाया जाए। आगम और आगमज्ञ वहां सहज उपलब्ध थे ही। संकल्प की विनम्र सूचना श्रद्धेय गुरुदेव के चरणों में प्रेषित की। महाप्रज्ञ शिष्य का महत्संकल्प भला सद्गुरु को कब अस्वीकृत हुआ है?

ज्ञान के गौरीशिखर गुरुदेव ने सूचना संप्रेषित की–शिव! गुरुकुल के प्रांगण में तुम्हारा वर्षावास विशेष ज्ञानाराधना का सेतु सिद्ध हो, ऐसी मेरी मंगल कामना है।

श्रद्धेय मुनिवर की संसार पक्षीय बहनें–महासती श्री सुमित्रा जी महाराज, महासती श्री संतोष जी महाराज आदि साध्वी मंडल ने भी अध्ययन की दृष्टि से पंचकुला में ही वर्षावास करने का निर्णय किया।

गुरुकुल के निर्माण और संचालन में अपना समग्र जीवन समर्पित करने वाले पंडितवर्य श्री कृष्णचंद्र जी एवं पंडित प्रवर श्री अमृतचंद्र जी संस्कृत और प्राकृत के अधिकारी विद्वान तो थे ही, साथ ही बत्तीस आगमों के भी मर्मज्ञ थे। श्रद्धेय मुनिवर जैसे मुमुक्षु छात्र को देखकर पंडित जी अत्यंत हर्षित हुए। फिर प्रारंभ हुआ आगमों का अध्ययन। आगम के प्रत्येक शब्द में छिपे अर्थ को, अर्थ में निहित परमार्थ को मुनिवर ने हृदयंगम किया। वर्षावास की संपूर्ण अवधि में आपश्री ज्ञानाराधना में समाधिस्थ बने रहे। आगमों के अध्ययन के साथ-साथ मुनिवर ने दिगम्बर परम्परा के एक विद्वान से पंचास्तिकाय, तत्त्वार्थ सूत्र, राजवार्तिक, नियमसार, समयसार, गोम्मटसार, जीवसार, कर्मकाण्ड आदि ग्रन्थों का भी अध्ययन किया। साध्वी-बहनें भी प्रवाहित ज्ञान गंगा से निरंतर लाभ प्राप्त करती रहीं।

सीखने और सिखाने को प्रतिपल उत्सुक श्रद्धेय मुनिवर जहां स्वयं अध्ययन करते रहे, वहीं समय-समय पर गुरुकुल के छात्रों को सम्यक् संस्कारों की शिक्षा भी देते रहे। आपके दिव्य व्यक्तित्व से छात्र विशेष प्रभावित हुए। संक्षेप में कह सकते हैं कि गुरुकुल के प्रांगण में निरंतर चार मास तक ज्ञान और साधना की गंगा-यमुना बहती रहीं।

सभी लोग सम्यक् संस्कारों को अपने जीवन में ढ़ाल सकें इस चिंतन के साथ मुनिवर ने समाज और गुरुकुल के वरिष्ठ अधिकारियों को प्रेरित किया। प्रेरणा प्राणवान् बनी और सम्यक् संस्कारों को संवहन करने वाली एक मासिक पत्रिका 'वन्दे वीरम्' का गुरुकुल से नियमित प्रकाशन प्रारंभ हुआ। यह पत्रिका विगत सत्ताईस वर्षों से आज भी समाज का पथ प्रदर्शन कर रही है। जिनवाणी और जैन संस्कारों का प्रचार-प्रसार करने वाली यह

पत्रिका कभी भी साम्प्रदायिक संकीर्णताओं में कैद नहीं हुई।

वर्षावास की सानंद परिसमाप्ति पर श्रद्धेय मुनिवर विहार साधना में संलग्न हुए। गुरुदेव की आज्ञानुसार ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए वीर जयंती के पुण्य-प्रसंग पर मालेरकोटला पधारे। उक्त अवसर पर श्रद्धेय गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी म. एवं विश्व केसरी श्री विमल मुनि जी महाराज भी पधारे। वीर के दीवाने मालेरकोटला निवासियों ने वीर जयंती का भव्य महोत्सव आयोजित किया।

वीर जयंती के पश्चात् श्रद्धेय मुनिवर ने विश्व केसरी श्री विमल मुनि जी महाराज के साथ हिमाचल प्रदेश में विचरण किया। इस विहार यात्रा में आपश्री ने कई नवीन अनुभव प्राप्त किए। यात्रा-पथ पर कुछ ऐसे ग्राम भी आए जहां जैन मुनियों का पूर्व में विचरण नहीं हुआ था। लोग जैन धर्म और जैन मुनियों की मर्यादाओं से सर्वथा अपरिचित थे। एक बार ऐसे ही एक ग्राम में आपश्री पधारे। विहार की श्रांति और आहार-पानी की अनुपलब्धता के रूप में परीषह उपस्थित हुआ। परीषहों को अपनी चर्या का अभिन्न अंग मानने वाले मुनिवर उस क्षण में भी आनंदित थे। श्री विमल मुनि जी महाराज और आपश्री एक वृक्ष के नीचे ठहर गए। उस समय आपश्री ने पूज्य श्री विमल मुनि जी महाराज से कहा–महाराज! यहां के लोग जैन मुनियों से सर्वथा अपरिचित हैं। परंतु इनकी सरलता और सच्चाई इनके चेहरों पर स्पष्ट पढ़ी जा सकती है। इनके हृदय में धर्म संस्कारों को पल्लवित करना कठिन नहीं होगा। आप कुछ ऐसा उपक्रम कीजिए जिससे इन लोगों के हृदय में धर्म की जिज्ञासा जगे।

पूज्य श्री विमल मुनि जी महाराज ने फरमाया–मुनिवर! आपका कहना उचित है। परंतु कोई मेरे निकट तो आए जिसे मैं कुछ सुनाऊं!

श्रद्धेय मुनिवर ने कहा–पूज्यवर! मैं आपका श्रोता हूं! मुझे सुनाइए!

मुनिवर के प्रस्ताव पर श्रद्धेय श्री विमल मुनि जी महाराज ने भक्ति प्रधान एक गीत का गायन प्रारंभ किया। पूज्यवर्य श्री विमल मुनि जी महाराज स्वर और संगीत की गहरी समझ रखने वाले मुनि हैं। उनकी गायन कला और स्वर माधुर्य से पंजाब जैन जगत का आबालवृद्ध सहज परिचित है। महामुनि गाने लगे और मुनिवर सुनने लगे। भक्तिपूर्ण सुमधुर स्वर-लहरियां वातावरण में गूंजने लगीं। जिस भी व्यक्ति के कान में पूज्य श्री के संगीत स्वर पड़े वह अकस्मात् खिंचा चला आया। देखते ही देखते वहां पर भीड़

एकत्रित हो गई। श्रद्धेय मुनिवर ने अपना गीत पूरा किया तो श्रोता जैसे भक्ति के स्वप्न लोक से जगे। प्रत्येक चेहरे पर जिज्ञासा थी यह जानने की कि ये श्वेत पुंस्कोकिल हैं कौन? इनका घर-गांव कहां हैं? इन्हें पूर्व में तो कभी देखा नहीं?

श्रद्धेय मुनिवर ने लोगों की जिज्ञासा को पढ़ा और सार संक्षिप्त संभाषण में जैन धर्म और जैन मुनियों के बारे में लोगों को बताया। मुनिवर के मधुर संभाषण से गांव के सीधे-सरल लोग आत्यन्तिक रूप से प्रभावित हुए। फिर उस गांव में भक्ति का जो महानद प्रवाहित हुआ वह अद्‌भुत था। सरल ग्रामीणों के हृदयों में जैन धर्म और जैन संतों का अतिशय प्रभाव अंकित हुआ। ग्रामीणों के अत्याग्रह वश मुनिवर वहां कई दिनों तक ठहरे। जिनत्व की महान प्रभावना हुई।

नौवां वर्षायोग

अपने साधना जीवन के प्रथम आठ चातुर्मास श्रद्धेय मुनिवर श्री शिव कुमार जी ने अपने आराध्य गुरुदेव अथवा वरिष्ठ मुनिराजों के सान्निध्य में किए थे। वर्ष 1980 के वर्षावास हेतु श्रद्धेय गुरुदेव ने अपने शिष्य की योग्यता की परीक्षा के लिए अथवा सुशिष्य को सर्वभांति योग्य जानकर स्वतंत्र वर्षावास की अनुमति प्रदान की। श्रद्धेय गुरुदेव ने अपने शिष्य के लिए चण्डीगढ़ श्रीसंघ की प्रार्थना को प्राथमिकता प्रदान की।

अस्तु! गुरुदेव के आदेशानुसार एक साथी मुनि के साथ श्रद्धेय मुनिवर चण्डीगढ़ वर्षावास हेतु पधारे। श्रद्धेय मुनि प्रवर श्री शिव मुनि जी महाराज ने अपने ओजस्वी प्रवचनों द्वारा जैन समाज में नवीन चेतना जागृत कर दी। नियमित रूप से चार मास तक आप प्रवचन देते रहे। जैन जगत आपके ज्ञान की विशालता और गंभीरता से परिचित बना।

वर्षावास की अवधि में नियमित रूप से विद्वद् गोष्ठियां होती रहीं। विद्वानों के साथ अपने ज्ञान को बांटना, उनसे पूछना और अपनी कहना आपका प्रारंभ से ही सहज स्वभाव रहा है। जो आप नहीं जानते हैं उसे पूछने में आपने कदापि संकोच नहीं किया। एक छोटे से शिशु से भी सीखने को आपको कुछ मिलता है तो आप पूरे मन और पूरे भाव से उससे भी पूछते और सीखते हैं। आपके इसी सद्‌गुण ने संभवत: आपके सामान्य और असामान्य ज्ञान को प्रभूत रूप से विस्तृत किया है।

स्थानीय संघ के अध्यक्ष श्री राधेश्याम जी जैन, श्री दिलीप सिंह जी जैन, श्री अभय कुमार जी जैन, श्री भूषण जी जैन आदि श्रावकों ने इस वर्षावास में प्रभूत सेवा का लाभ लिया एवं वर्षावास की ऐतिहासिक सफलता में अपना पूर्ण योगदान दिया।

वर्षावास की परिसमाप्ति के पश्चात् श्रद्धेय गुरुदेव श्री शिव मुनि जी महाराज कई क्षेत्रों में विचरण करते हुए पटियाला पधारे। राजस्थान प्रान्त का गौरवशाली वर्षावास पूर्ण कर संयमप्राण महासती श्री कौशल्या जी म. भी अपनी शिष्या मण्डली के साथ ग्रामानुग्राम विचरण करती हुई पटियाला पधारीं। महासती जी से मिलन हुआ। महासती जी ने राजस्थान विचरण के अपने सुंदर अनुभव सुनाए एवं आपश्री को राजस्थान प्रांत में विचरने के लिए प्रेरित किया।

उसी अवधि में श्रद्धेय गुरुदेव पंजाब केसरी श्री ज्ञान मुनि जी म. ने हिमाचल प्रदेश के एक युवक को दीक्षित किया और उसे अपने सुशिष्य मुनिराज श्री शिव मुनि जी महाराज का शिष्य घोषित किया। नवदीक्षित प्रशिष्य को श्रद्धेय गुरुदेव ने 'जितेन्द्र मुनि' नाम प्रदान किया। श्री जितेन्द्र मुनि जी आगामी कई वर्षों तक श्रद्धेय गुरुदेव श्री शिव मुनि जी म. के साथ विचरण करते रहे। बाद में प्रलम्ब विहारों में असमर्थता के कारण वे श्रद्धेय गुरुदेव की सेवा में पंजाब लौट आए।

दसवां वर्षायोग

श्रद्धेय गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज ने अपने सुशिष्य श्री शिव मुनि जी महाराज एवं प्रशिष्य श्री जितेन्द्र मुनि जी महाराज ठाणे-दो के लिए रोपड़ श्रीसंघ की वर्षावास की प्रार्थना को स्वींकृत किया। महासती श्री कौशल्या जी महाराज आदि ठाणा ने भी रोपड़ श्रीसंघ को वर्षावास हेतु स्वीकृति प्रदान की।

यथासमय मुनिवर डॉ. श्री शिव कुमार जी महाराज एवं महासती जी महाराज वर्षावास हेतु रोपड़ पधारे। नियमित प्रवचन, सत्संग, स्वाध्याय आदि कार्यक्रम चलने लगे। आपके ओजस्वी प्रवचनों से रोपड़ में धर्म की लहर जाग उठी। प्रवचन सभा में उपस्थिति निरंतर बढ़ती रही। आपकी विद्वत्ता सर्वत्र चर्चित हुई। आपके सरल व्यक्तित्व से प्रत्येक व्यक्ति पर गहरी छाप पड़ी।

परम विदुषी महासती श्री कौशल्या जी महाराज के साथ बैठकर आपश्री आगम साहित्य की स्वाध्याय करते थे। पारस्परिक चर्चाओं में आगम के गूढ़ रहस्य सरल बनने लगे।

आपकी ध्यान साधना भी नियमित रूप से प्रगतिमान रही। ध्यान में निरंतर गहराई आती रही। आत्मबल निरंतर वर्धमान बनता रहा।

आत्मसाधना और धर्मप्रभावना की दृष्टि से यह वर्षावास पूर्ण सफल रहा।

वर्षावास की परिसमाप्ति पर आप अपने गुरुदेव के चरणों में लौट आए।

कमल खिले
कदम-कदम

विजन–वनो मे यात्रा करते हुए मुनिवर ने ध्यान के प्रयोग किए। तीर्थकर महावीर की साढ़े बारह वर्षीय साधना का अधिकाश समय विजन–वनो में ही व्यतीत हुआ था। 'महावीर विजन–वनो मे कैसे ध्यान करते थे' उक्त अनुभव को मुनिप्रवर ने आत्म–अनुभव मे महसूस किया। परीषह पूर्ण विहार–यात्रा को भी साधना के अतिशयी अनुभव के रूप मे आपने जीया।

कमल खिले कदम-कदम

श्रद्धेय गुरुदेव पंजाब केसरी श्री ज्ञान मुनि जी म. का नाम पंजाब मुनि परम्परा के सर्वाधिक यशस्वी मुनिराजों में परिगणित होता है। उसका कुल कारण इतना ही नहीं है कि आप श्रमण संघीय प्रथम पट्टधर आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी महाराज के प्रमुख और प्रिय थे। उसका मौलिक कारण था–श्रद्धेय गुरुदेव द्वारा किए गए धर्म प्रभावना के असंख्य उपक्रम। जैन धर्म की प्रभावना के लिए श्रद्धेय गुरुदेव ने अपना समग्र जीवन समर्पित कर दिया था। पंजाब के गांव-गांव में घूमकर आपने जैन धर्म के यश को सर्वत्र प्रसृत किया। जैन और अजैन सभी को समान भाव से पूज्य श्री जिनत्व का पाठ पढ़ाते रहे। अपनी कलम कला से जिनत्व का प्रसार करते रहे। पर पूज्य गुरुदेव के हृदय में एक टीस थी कि मैं सुदूर प्रांतों में भ्रमण कर जैन धर्म का प्रचार-प्रसार न कर सका। अपनी इसी टीस को श्रद्धेय गुरुदेव ने एक दिन अपने अतिजात शिष्य के समक्ष प्रकट किया। श्रद्धेय गुरुदेव ने कहा–

'शिव मुनि! उग्र विहार में असमर्थ होने के कारण मैं भारतवर्ष के सुदूर अंचलों में घूमकर जैन धर्म की प्रभावना नहीं कर सका। पर जैसे एक पिता अपने पुत्र के माध्यम से अपने सपनों को साकार करना चाहता है वैसे ही मैं भी चाहता हूं कि जो कार्य मैं नहीं कर सका, उस कार्य को तुम पूर्ण करो। तुम सर्वथा सुयोग्य और सक्षम हो। मैं चाहता हूं कि तुम भारत के सुदूर अंचलों में घूमकर जिनत्व के धवल यश को प्रसृत करो। तीर्थंकर महावीर और आत्मगुरु की धर्म-ध्वजा को भारत के कोने-कोने में फहराओ।

शिष्य मन मुनिवर श्री शिव कुमार जी ने श्रद्धेय गुरुदेव के चरणों पर मस्तक रखकर कहा–गुरुदेव! मुझ अल्पज्ञ और अल्प सत्त्व लघु मुनि से क्या यह संभव हो पाएगा?

श्रद्धेय गुरुदेव ने फरमाया—साधना के प्रति तुम्हारा समर्पण तुम्हारा प्रेरणा प्रदीप होगा। आत्मगुरु का अदृश्य आशीष तुम्हारे प्रत्येक कदम पर प्रकाश-स्तंभ बनकर तुम्हारा पथ-प्रदर्शन करेगा। साधनात्मक सफलताएं तुम्हारे कदम चूमेंगी! एक गुरु का आत्मविश्वास घोषणा करता है कि समग्र संघ तुम्हें पलकों पर बैठाएगा। शिवत्व की तुम जैसी प्रज्ज्वलित प्यास सदियों में किसी एक आत्मा में पैदा होती है। तुम्हारी वह परम शुभ प्यास ही तुम्हारी सफलताओं का प्राणतत्त्व होगी।

श्रद्धेय गुरुदेव की आशीष वर्षा पाकर श्रद्धेय मुनिवर कृतकृत्य बन गए। परम कृतज्ञता से भरे मन से मुनि प्रवर ने श्रद्धेय गुरुदेव को वन्दन किया और कहा—गुरुदेव! आपके आदेश और आशाओं को पूर्ण करने के लिए मैं अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दूंगा। मैं जहां भी रहूंगा आपका आशीष और विश्वास सदैव मेरे दो नयनों का प्रकाश रहेगा।

आज से लगभग बाईस वर्ष पूर्व एक गुरु के आशीष और शिष्य के समर्पण से विकासमान 'शिव जीवन दर्शन' समाज के समक्ष है। एक लघु पर्याय मुनि ने अपनी साधना निष्ठा और उच्च जीवनादर्शों को अपने सांसों में जीया और साधना के इस प्राणपुरुष को समग्र संघ ने अपनी पलकों पर बैठाया।

श्रद्धेय गुरुदेव का आशीष पाकर मुनिवर शिव जहां भी गए उनका मार्ग प्रशस्त होता चला गया। जिस क्षेत्र में गए वहां के श्रावक आपके साधना स्नात व्यक्तित्व के दीवाने बन गए। बड़े-बड़े मुनीश्वरों ने हृदय कपाट खोलकर आपका स्वागत किया। व्यक्ति-व्यक्ति का हृदय आपके प्रेम की छलक से, साधना की दस्तक से अनुगुंजित हो उठा और मात्र पंचवर्षीय अवधि में ही आपश्री समग्र संघ की आंखों के सितारे बन गए। समग्र संघ ने एक स्वर और एकनिष्ठ भाव से आपको भावी आचार्य के रूप में स्वीकार किया।

ग्यारहवां वर्षायोग

आत्म साधना की अनन्त अभिप्सा को हृदय में संजोए श्रद्धेय मुनि प्रवर साधुरत्न डॉ. श्री शिव मुनि जी महाराज श्रद्धेय गुरुदेव की आज्ञा प्राप्त कर प्रस्थित हुए। ग्रामों और नगरों में धर्म की अलख जगाते हुए सम्यक् जीवन और जागरण का संदेश देते हुए मुनि प्रवर मेरठ (उत्तर प्रदेश) पधारे। मेरठ आगमन के पीछे आपके हृदय में एक विशेष उल्लास था। मेरठ में विराजित अध्यात्मयोगी श्री शांतिस्वरूप जी म. की अध्यात्म साधना काफी विश्रुत थी।

पूज्य मुनीश्वर की साधना की चर्चाएं मुनिवर सुनते रहे थे। साधना के गुरु-गम्भीर रहस्यों के साक्षात् का सम्यक् आकर्षण हृदय में संजोए मुनिवर मेरठ पधारे। साधना के शिखर पुरुष महामुनि श्री शाँतिस्वरूप जी म. के दर्शन कर आपका हृदय सात्विक हर्ष से आप्लावित बन गया। महामुनि के सान्निध्य में रहकर आपश्री ने आत्मसाधना की गहराइयों में पर्यटन किया। साधना के साथ-साथ आगमों का स्वाध्याय भी आपश्री पूज्य मुनीश्वर के सान्निध्य में करते रहे।

अध्यात्म योगी पूज्य मुनीश्वर भी आपकी साधना रुचि से विशेष प्रसन्न थे। उनके आग्रह पर आपश्री ने मेरठ में ही वर्ष 1982 के वर्षावास की स्वीकृति प्रदान की।

वर्षावास की अवधि में निरंतर चार मास तक आपश्री अपने प्रवचनों द्वारा जन-जागृति का अभियान चलाते रहे। आपके भव्य व्यक्तित्व और उत्कृष्ट विद्वत्ता की छाप मेरठ श्रीसंघ पर अँकित हुई। धर्म की अच्छी प्रभावना हुई। यथासमय सांस्कृतिक समारोहों का आयोजन भी होता रहा।

स्वर्गारोहण साधना के सुमेरु का

लुधियाना में विराजित संयम और साधना के सुमेरु शृंग पंजाब प्रवर्तक उपाध्याय श्रमण श्री फूलचंद जी महाराज का अकस्मात् स्वर्गवास हो गया। महामना महाश्रमण के स्वर्गवास की सूचना शीघ्र ही सर्वत्र प्रसृत हो गई। सकल जैन जगत में शोक की लहर दौड़ गई। इस दुखद समाचार से श्रद्धेय मनीषी मुनिवर श्री शिव मुनि जी वज्राहत हो उठे। साधना और स्वाध्याय के संबल से इस वज्रोपम आघात को मुनिवर ने सहा।

परम पूज्य उपाध्याय श्री की स्मृति में मेरठ श्रीसंघ ने श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया। सभी प्रमुख वक्ताओं और लोगों ने पूज्य श्री के प्रति अपनी-अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। मनीषी मुनिवर श्री शिव कुमार जी ने भी उक्त अवसर पर अपने हृदयोद्‌गार प्रकट किए। अपने सार-संक्षिप्त उद्‌बोधन में पूज्य मुनि प्रवर ने फरमाया–

'मेरी श्रद्धालोक के देवता, संयम प्राण महामुनि पंजाब प्रवर्तक उपाध्याय श्रमण श्री फूलचन्द जी महाराज आज हमारे मध्य में नहीं हैं। पूज्यश्री का विरह जहां सकल जैन जगत के लिए एक भारी आघात है वहीं मेरे अपने लिए भी यह एक वज्राघात के समान है। पूज्य प्रवर्तक श्री जी ही वह परम

पुरुष थे जिन्होंने मेरे जीवन में वैराग्य का प्रथम बीज वपन किया था। पूज्य श्री की साधना और समाधि ने मेरे जीवन को आन्दोलित किया था। उनकी संयम-सुगंध ने ही मुझे उन जैसा होने के लिए उत्साहित किया था। मुनि जीवन में प्रवेश से पूर्व और पश्चात् उनका दिव्य स्नेह और आशीष सावन का महामेघ बनकर मुझ पर बरसता रहा था। पूज्य प्रवर्तक श्री एक ऐसे पुष्प थे जिनकी सुगंध कदापि समाप्त न होगी। उनका सान्निध्य चंदन से शीतल और स्वभाव मधु से भी मधुर था। आज वे हमारे मध्य नहीं रहे। मृत्यु जीवन का ध्रुव सत्य है। नि:संदेह उन्हें एक दिन विदा तो होना ही था। पर मैं समझता हूं कि अभी समाज को उनकी बहुत जरूरत थी। साथ में संतोष इस बात का भी है कि वे अपनी साधना के ऐसे ध्रुव पदचिन्ह छोड़ गए हैं जो हमारे लिए प्रकाश की मिनारें बनकर हमारा पथ-प्रदर्शन करते रहेंगे। उनके पदचिन्हों पर चलकर ही हम उन्हें सच्ची श्रद्धांजली अर्पित कर सकते हैं।'

श्रद्धेय मुनि प्रवर का मेरठ वर्षावास साधना, स्वाध्याय, धर्मप्रभावना आदि प्रत्येक दृष्टि से सफल रहा। आपका विमल-धवल सुयश दूर-दूर तक प्रसृत हुआ। एक युवा योगी के रूप में लोगों की श्रद्धा आपसे जुड़ती चली गई।

प्रवर्तक पद चादर समर्पण महोत्सव

पूज्य प्रवर्तक श्री फूलचंद जी महाराज 'श्रमण' के स्वर्गारोहण के पश्चात् जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्द ऋषि जी महाराज ने अध्यात्म योगी श्री शांतिस्वरूप जी महाराज को 'प्रवर्तक' पद पर नियुक्त किया। एक समर्थ मुनीश्वर की योग्य पद पर नियुक्ति का सर्वत्र स्वागत हुआ। मेरठ श्रीसंघ ने पूज्य प्रवर्तक श्री जी के अभिनन्दन के लिए प्रवर्तक पद की प्रतीक पवित्र चादर समर्पण महोत्सव का आयोजन किया। उत्तर भारत के लगभग सभी महामहिम मुनिराजों और साध्वियों को इस प्रसंग पर आमंत्रित किया गया। लगभग दो सौ साधु-साध्वियां इस पुण्य प्रसंग पर मेरठ नगर में पधारे। अभूतपूर्व आनन्द-उल्लासमय क्षणों में यह समारोह आयोजित और संपन्न हुआ।

पूज्य मनीषी मुनि प्रवर डॉ. श्री शिव मुनि जी भी इस पुनीत प्रसंग के अभिन्न अंग रहे। चादर समर्पण के प्रसंग पर पूज्य मुनि प्रवर ने अपने उद्बोधन में फरमाया-

'जब आप किसी प्रभावी व्यक्तित्व को सम्मानित करते हैं तो उसके

सम्मान में हार पहनाकर अथवा पगड़ी बांधकर उसका सम्मान करते हैं। पर साधु समाज में जब किसी महामहिम मुनिवर का अभिनंदन किया जाता है तो उसे सम्मान की प्रतीक चादर समर्पित की जाती है। यह चादर संघ में संगठन और ज्ञान, दर्शन, चारित्र में अभिवृद्धि की प्रतीक होती है। पूज्यवर्य प्रवर्तक श्री के कुशल नेतृत्व में श्रमण संघ गुणात्मक एकता के स्वर्ण शिखरों का स्पर्श करेगा ऐसा मेरा सुदृढ़ विश्वास है।'

अपूर्व उत्साह के साथ यह समारोह सम्पन्न हुआ।

बारहवां वर्षायोग

जैन नगर मेरठ में प्रवर्तक पद चादर समारोह की सम्पन्नता के पश्चात् ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए पूज्य मुनिवर श्री शिव मुनि जी दिल्ली पधारे। आपका विमल-सुयश चारों ओर वृद्धि पा रहा था। वीरनगर, दिल्ली सहित कई क्षेत्र आपके वर्षावास के लिए प्रार्थना-पंक्ति में थे। आखिर यह पुण्य अवसर वीरनगर श्रीसंघ को प्राप्त हुआ।

दिल्ली के विभिन्न नगरों एवं उपनगरों में आपश्री ने विचरण किया। आपश्री जहां भी पधारे आपके चुम्बकीय व्यक्तित्व से लोग अतिशय रूप से प्रभावित हुए। यथासमय आपश्री वीरनगर में वर्षावास हेतु पदार्पित हुए। वीरनगर जैन श्रीसंघ एक परिपक्व संघ है। यहां के निवासी जहां आर्थिक रूप से काफी समृद्ध हैं वहीं धार्मिक रुचि में भी किसी से पीछे नहीं हैं। वीर नगर का सकल प्रांगण जैन संस्कारों में रचा-बसा है। उसका प्रमुख कारण यही है कि पूरी कॉलोनी में जैन परिवार ही रहते हैं। पूरी कॉलोनी एक विशाल परिवार की भांति मिल-जुल कर पारिवारिक, सामाजिक और धार्मिक कार्यक्रम संपन्न करती है। जैन दृष्टि से यदि चिंतन किया जाए तो वीर नगर समग्र दिल्ली संघ के लिए एक आदर्श जैन स्थल है।

परम श्रद्धेय युवा मुनीश्वर डॉ. श्री शिव मुनि जी महाराज का स्वागत सकल वीरनगर संघ ने पलक-पांवड़े बिछाकर किया। एक विद्वान मुनिराज के वर्षावास से वीरनगर श्रीसंघ में अपूर्व उत्साह देखने को मिल रहा था। पूज्यश्री के ओजस्वी प्रवचनों में वीरनगर सहित राणा प्रताप बाग, रूपनगर, कमला नगर, शक्ति नगर आदि क्षेत्रों के श्रावक-श्राविकाएं विशाल संख्या में उपस्थित होकर धर्म-लाभ लेने लगे। समय-समय पर दिल्ली महानगर के अन्यान्य क्षेत्रों और पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश व हिमाचल प्रदेश तक के

दर्शनार्थी उपस्थित होते रहे। निरंतर चार मास तक वीरनगर साधर्मी बन्धुओं के लिए तीर्थस्थल बना रहा।

अहिंसा का उद्घोष

वीरनगर जैन कॉलोनी अहिंसा के पूर्णावतार तीर्थंकर महावीर के उपासकों की नगरी है। यहां के प्रत्येक व्यक्ति के संस्कारों में अहिंसा धर्म घुला-मिला है। परन्तु जैन कॉलोनी स्थित जैन स्थानक के सामने रोड के पार कुछ अनार्य लोग बस गए थे। अपने व्यवसाय के लिए वे वहां पर प्रतिदिन सुबह सुअरों की हत्या करते थे। यह क्रम काफी समय से चल रहा था। वीर नगर निवासियों ने हिंसा के उस ताण्डव को रुकवाने के लिए कई बार प्रयास भी किया था। पर उक्त अनार्य व्यवसायी ने अपनी पहुंच का फायदा उठाते हुए अपने हिंसामय कार्य को बन्द नहीं किया था।

श्रद्धेय मुनिवर ने एक दिन हिंसा के उस ताण्डव को अपनी आंखों से देखा। मुनिवर की आत्मा कांप उठी। समष्टि के प्रत्येक प्राणी में आत्मवत् भाव का दर्शन करने वाले मुनिवर को लगा कि खंजर स्वयं उनकी गर्दन पर चल रहा है। पूज्य श्री ने उसी क्षण शीर्षस्थ श्रावकों को बुलाया और कहा–अहिंसा नगरी के समक्ष हिंसा के इस ताण्डव को शीघ्र रुकवाइए!

श्रावकों ने कहा, महाराज! इसके लिए हम पूर्व में भी कई प्रयत्न कर चुके हैं, पर हमें सफलता नहीं मिली। अगर कोई प्रभावशाली नेता हस्तक्षेप करे तो इस हिंसा के ताण्डव को रुकवाना संभव होगा।

मुनिवर ने श्रावक समुदाय की बात को सुना। संभव-असंभव संभावनाओं को नकारते हुए मुनि प्रवर ने दिल्ली के गवर्नर श्री जगमोहन जी को आमंत्रित किया। जगमोहन जी से मुनिवर ने वार्तालाप किया और कहा--महाशय! अहिंसा के मंदिर के समक्ष हिंसा का यह ताण्डव असह्य है, इसे तत्काल प्रभाव से प्रतिबंधित किया जाए।

मुनिवर का एक-एक शब्द गवर्नर महोदय की आत्मा को छू गया। मुनिवर के भव्य व्यक्तित्व और चमत्कारी वक्तृत्व से वे इतना प्रभावित हुए कि उसी क्षण उन्होंने आदेश जारी कर दिया कि आज के बाद वीर नगर के बाहर और आस-पास के क्षेत्र में हिंसा पर पूर्णतः प्रतिबन्ध लगाया जाता है।

उसी दिन से हिंसा का ताण्डव रुक गया। हिंसा पर अहिंसा को विजय

मिली। अहिंसा के उपासकों के हृत्कमल खिल उठे। मुनि प्रवर का प्रभा क्षेत्र स्वतः ही विस्तृत बनता चला गया।

प्रज्ञापुरुष से प्रज्ञापुत्र की भेंट

'उपाध्याय श्री अमर मुनि जी' विगत शती के जैन इतिहास का अक्षर और अव्यय हस्ताक्षर है यह नाम। स्थानकवासी जैन समाज में विगत शती के अर्ध शती के काल में जितने भी रचनात्मक कार्य संपन्न हुए उनमें उपाध्याय श्री जी का सबल योगदान रहा। उपाध्याय श्री भारतीय मनीषा के मेरुतुंग थे। विगत अढ़ाई हजार वर्ष के कालखण्ड में उन जैसे दार्शनिक मनीषी मुनीश्वर कम ही हुए हैं।

वीरनगर वर्षावास की सम्पन्नता के पश्चात् श्रद्धेय साधुरत्न डॉ. श्री शिव मुनि जी महाराज ने दिल्ली के उपनगरीय क्षेत्रों में विचरण किया। उसी अवधि में उपाध्याय श्री अमर मुनि जी महाराज सकारण दिल्ली पधारे। उस समय युवामनीषी मुनिवर ने उपाध्याय श्री से भेंट की। यह भेंट तो संक्षिप्त रही पर इस संक्षिप्त भेंट में ही मुनिवर ने पूज्य उपाध्याय श्री से कई साधनात्मक सत्य-तथ्य प्राप्त किए। एक प्रश्न के समाधान में पूज्य उपाध्याय श्री ने लोगस्स के अंतिम पद– 'चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहीयं पयासयरा सागर वर गंभीरा, सिद्धा सिद्धी मम दिसंतु' के ध्यानस्थ जप की प्रेरणा मुनिवर को दी।

'सार-सार को गही रहे' सिद्धान्त को आत्मभाव में साकार रूप देने वाले साधुरत्न मुनि प्रवर डा. श्री शिव मुनि जी महाराज तपस्वी रत्न श्री अजय मुनि जी के सुदीर्घ तपानुष्ठान के पारणक महोत्सव में सम्मिलित हुए। तदनन्तर कुछ समय तक दिल्ली महानगर में विचरण कर आपश्री ने आगरा की दिशा में विहार किया।

ग्रामों और नगरों में जिन-संदेशों का अमृत वर्षण करते हुए श्रद्धेय मुनि श्रेष्ठ श्री शिव मुनि जी महाराज आगरा पधारे। आगरा में विराजित विद्वद्रत्न श्री विजय मुनि जी शास्त्री के दर्शन किए। पूज्य श्री विजय मुनि जी शास्त्री पूज्य उपाध्याय श्री अमर मुनि जी के विद्वान शिष्य थे। साधना एवं स्वाध्याय के संदर्भ में पूज्य श्री से बहुआयामी विचारणा हुई।

आगरा में कुछ दिनों के प्रवास के पश्चात् मुनि प्रवर ने जयपुर की दिशा में विहार किया। इस लम्बी विहार यात्रा में कई अजान-अपरिचित क्षेत्रों

में यात्रा हुई। मुनि मर्यादानुकूल आहारादि की अप्राप्ति के कई प्रसंग बने। कई बार विजन-वनों में वृक्षों के नीचे रात्रि-विश्राम किया। प्रत्येक विकट परीषह का महामुनि ने प्रसन्न हृदय के साथ स्वागत किया।

विजन-वनों में यात्रा करते हुए मुनिवर ने ध्यान के प्रयोग किए। तीर्थंकर महावीर की साढ़े बारह वर्षीय साधना का अधिकांश समय विजन-वनों में ही व्यतीत हुआ था। 'महावीर विजन-वनों में कैसे ध्यान करते थे' उक्त अनुभव को मुनिप्रवर ने आत्म-अनुभव में महसूस किया। परीषह पूर्ण विहार-यात्रा को भी साधना के अतिशयी अनुभव के रूप में आपने जीया।

जयपुर के निकटस्थ दोसा ग्राम में अध्यात्म योगी उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी महाराज के दर्शनों का सौभाग्य आपको प्राप्त हुआ। वहां से आपश्री जयपुर पधारे।

❖❖❖

रणबांकुरों के देश में

राजस्थान शक्ति और भक्ति का प्रदेश है। यहा भक्तिमती मीरा ने श्यामसुदर के गीत गाए तो राणा प्रताप की तलवार ने शौर्य का सगीत गाया। राजस्थान रणबांकुरों का प्रदेश है, धर्मधुरधरो का देश है, राजस्थान सही अर्थो मे अपने आप मे एक सदेश है। पजाब के एक क्रातदर्शी सत श्री शिव मुनि जी जब राजस्थान की धरती पर पधारे तो यहा का हर द्वार महक गया, हर आगन चहक गया।

रणबांकुरों के देश में

तेरहवां वर्षायोग

राजस्थान शक्ति और भक्ति का प्रदेश है। यहां भक्तिमती मीरा ने श्यामसुंदर के गीत गाए तो राणा प्रताप की तलवार ने शौर्य का संगीत गाया। राजस्थान रणबांकुरों का प्रदेश है, धर्मधुरंधरों का देश है, राजस्थान सही अर्थों में अपने आप में एक संदेश है। पंजाब के एक क्रांतदर्शी संत श्री शिव मुनि जी जब राजस्थान की धरती पर पधारे तो यहां का हर द्वार महक गया, हर आंगन चहक गया।

राजस्थान की राजधानी गुलाबी नगर जयपुर के प्रबुद्ध श्रावकों ने मनस्वी मुनिवर का हार्दिक स्वागत किया।

संक्षिप्त प्रवास में ही जयपुर के श्रावक आपके तेजस्वी व्यक्तित्व से आत्यन्तिक रूप से प्रभावित हुए और वर्षावास हेतु प्रार्थना प्रस्तुत की। आपश्री का भाव माउण्ट आबू तक विचरण का था। पर सहवर्ती मुनि की अस्वस्थता तथा श्रीसंघ की प्रार्थना को दृष्टिपथ में रखते हुए आपश्री ने वर्षावास की स्वीकृति जयपुर श्रीसंघ को प्रदान की।

वर्षावास से पूर्व शेषकाल में आपश्री ने जयपुर के उपनगरों में विचरण किया। उसी अवधि में श्री कुशलचंद जी वढ़ेर एवं हरकचंद जी वढ़ेर आदि बन्धु आपके परिचय में आए। वढ़ेर बन्धुओं में साधना-रुचि देखकर आपको अच्छा लगा। उनसे ध्यान और साधना की चर्चा हुई। उन्होंने आपको विपश्यना ध्यान की जानकारी दी और स्वयं की साधना के सुंदर अनुभव बताए। कल्याणमित्र सत्यनारायण गोयंका जी के बारे में उनसे जानकारी मिली।

ध्यान की उक्त बहुचर्चित और बहु-अनुमोदित विधि की जानकारी प्राप्त कर परम श्रद्धेय गुरुदेव मुनीश्वर श्री शिव मुनि जी महाराज के हृदय

में स्वाभाविक आकर्षण जागृत हुआ। परन्तु आपके समक्ष एक यक्षप्रश्न था कि क्या एक जैन मुनि के लिए यह उचित होगा कि वह किसी अन्य धर्म की साधना पद्धति का प्रयोग करे। इस विषय में आपश्री ने गंभीरतापूर्वक चिंतन किया। आगमीय अध्ययन में पर्यटन-मनन किया। आगम के एक वाक्य पर आपका चिंतन स्थिर हुआ– **'कंखे गुणे जाव सरीर भेउं।'** अर्थात् जब तक जीवन है तब तक साधक को सद्गुणों के संग्रह के लिए अप्रमत्त साधनाशील रहना चाहिए।

आपके चिंतन ने कहा–सद्गुणों का संग्रह प्रमुख है। महावीर ने कहा है–साधक भ्रमरवृत्ति से मधुकरी करे। स्पष्ट है कि एक छोटे से तिर्यच जीव से भी कुछ सीखने के लिए महावीर अपने साधकों को निर्देश दे रहे हैं। महावीर ने मुनि की भिक्षाचरी को 'गोचरी' शब्द दिया। इस शब्द से स्पष्ट ध्वनित है कि मुनि गाय के समान भिक्षा ग्रहण करे। गाय में रहे हुए गुण को भी उपमान रूप में तीर्थंकर महावीर ने ग्रहण कर लिया है। ऐसे में एक साधक से साधना का अनुभव प्राप्त करना क्या अनुचित होगा?

सुदीर्घ चिन्तन-मनन के पश्चात् आपके हृदय ने गवाही दी कि विपश्यना ध्यान विधि का अनुभव करना अनुचित नहीं है। अपने हृदय की अनुमति प्राप्त करने के बाद भी मुनि-मर्यादा तथा शिष्य-धर्म के अनुसार आपश्री ने अपने गुरुदेव से इस सम्बन्ध में अनुज्ञा प्राप्त की। उसके बाद श्रीसंघ के समक्ष इस संबंध में आपने अपनी बात रखी। आपकी बात का श्रीसंघ के अधिकांश सदस्यों ने अनुमोदन किया। कई परम्परावादियों ने दबे स्वर से इसका विरोध भी किया और निर्बल तर्क प्रस्तुत किए।

श्रद्धेय मुनिवर ने मुनि-मर्यादाओं के प्रति पूर्ण अप्रमत्त रहते हुए विपश्यना ध्यान शिविर का प्रायोगिक अनुभव प्राप्त किया। उक्त शिविर से प्राप्त अनुभव आपकी ध्यान साधना के लिए सहयोगी सिद्ध हुए।

यथासमय आपश्री वर्षावास हेतु लाल भवन में पधारे। वर्षावास की अवधि में आपश्री ने विभिन्न आगमीय विषयों पर प्रभावशाली ढंग से ओजस्वी प्रवचन प्रारंभ किए। सरल, सरस और सुबोध भाषा शैली में दिए गए आपके प्रवचन श्रोताओं को विशेष आकर्षित करने लगे। आपकी असाम्प्रदायिक मानसिकता से सभी सम्प्रदायों के श्रावक विशेष प्रभावित हुए। फलत: सभी सम्प्रदायों के श्रावकों ने आपको निरपेक्ष भाव से अपना माना। परिणाम यह रहा कि लाल भवन का विशाल हाल भी श्रोताओं के

लिए छोटा पड़ने लगा। विशाल उपस्थिति को देखते हुए ध्वनि-वर्धक यंत्र की व्यवस्था संघ को करनी पड़ी।

आदरणीया महासती श्री यशकुंवर जी महाराज का वर्षावास भी जयपुर में ही हुआ। आदरणीया महासाध्वी जी का रचनात्मक सहयोग आपश्री को निरंतर प्राप्त होता रहा।

लाल भवन वर्षावास की ऐतिहासिक सफलता की सूचनाएं पूरे भारतवर्ष में फैल गईं। आपका विमल-धवल सुयश भारत के कोने-कोने में प्रसृत हुआ। परिणामत: संघ में ये चर्चाएं भी बल पकड़ने लगीं कि युवाचार्य पद हेतु सर्वथा योग्य मुनि श्री शिवमुनि जी महाराज ही हैं।

लाल भवन से आपका विदाई महोत्सव ऐतिहासिक रहा। हजारों की संख्या में श्रावक और श्राविकाएं आपको विदा देने के लिए एकत्रित हुए थे। आज भी यह बात सुनी जाती है कि विदाई महोत्सव पर वैसी जनमेदिनी न पूर्व में कभी देखी गई थी और न ही बाद में देखी गई।

जयपुर के वर्षावास तथा प्रवास में सकल संघ का सहयोग आपको प्राप्त हुआ। साधना और साहित्यिक दृष्टि से श्रीमती विमला ठकार, दौलत सिंह जी कोठारी, डॉ. नरेन्द्र भानावत, डॉ. भागचंद जी जैन आदि का विशेष सहयोग रहा। डॉ. भागचंद जी ने आपके शोध प्रबन्ध का हिन्दी अनुवाद किया। इस हिन्दी अनुवाद का प्रकाशन प्राकृत भारती द्वारा किया गया। शोध ग्रन्थ के मूल अंग्रेजी स्वरूप का प्रकाशन मुंशीलाल मनोहरलाल दिल्ली वालों की ओर से सम्पन्न हुआ। इस शोध ग्रन्थ ने देश-विदेश में पर्याप्त सुयश अर्जित किया।

परम श्रद्धेय मुनिवर डॉ. श्री शिव मुनि जी महाराज जयपुर से विहार करके मध्यवर्ती गांवों और नगरों में धर्म जागरण करते हुए मदनगंज किशनगढ़ पधारे। वहां पर कुछ दिन का प्रवास रहा। आपके व्यक्तित्व और विद्वत्ता से जनमानस पर विशेष प्रभाव पड़ा।

किशनगढ़ से श्रद्धेय मुनिवर अजमेर पधारे। आपके प्रभावशाली प्रवचनों से अजमेर निवासी भी विशेष प्रभावित हुए। अजमेर के ऐतिहासिक स्थलों का आपश्री ने अवलोकन किया।

अजमेर से आप ब्यावर पधारे। धर्म के रंग में रंगी हुई ब्यावर नगरी में आपके सार्वजनिक व्याख्यान हुए। व्याख्यानों में जैन-अजैन सभी लोगों ने भारी संख्या में उपस्थित होकर धर्म लाभ लिया।

प्रतिबोध : एक सुश्रावक का

उसी अवधि में श्रद्धेय मुनि प्रवर श्री शिव मुनि जी महाराज के परिचय में एक श्रावक आए जिनका नाम श्री अमरचंद जी विनायका था। वे एक सच्चे श्रावक थे, अम्मा-पिउरो के साक्षात् प्रतीक थे। श्रद्धेय मुनिवर के व्यक्तित्व और साधना रुचि से वे विशेष प्रभावित हुए। श्रद्धेय मुनिवर की साधना में विशेष चमत्कार उत्पन्न हो, इसके लिए श्रावक जी ने मुनिवर से निवेदन किया—'मुनिवर! आपश्री नियमित रूप से लोगस्स के पाठ का जप एवं एकांतर तप करें तो यह आपकी साधना के लिए अति उत्तम होगा।'

जैसा कि पूर्व में भी उल्लेख किया जा चुका है और मुनिवर के प्रत्येक प्रसंग में हम अनुभव करते रहे हैं कि मुनिवर एक हंस दृष्टि सम्पन्न साधक रहे हैं। गुण-ग्राहकता आपका जन्मना स्वभाव है। अपने उसी स्वभाव के कारण आपने पूरे भाव से श्रावक जी की बात को न केवल सुना ही, बल्कि वैसा करने के लिए अपने मन में संकल्प भी संजो लिया। आप नियमित रूप से लोगस्स का जाप और एकान्तर तपस्या करने लगे।

जप, तप, ध्यान और जन-जागरण अभियान के साथ महामुनि निरन्तर साधना पथ पर बढ़ते रहे। निरंतर रूप में तप का अभ्यास न होने से उग्र विहारों में देह क्लांत हो गई। फलत: एकांतर तप साधना को आपको स्थगित करना पड़ा। परन्तु जप और ध्यान की साधना निरंतर चलती रही।

प्रवर्तक श्री रूपचंद जी म. से मधुर भेंट

स्वनाम धन्य लोकमान्य संत प्रवर्तक श्री रूपचंद जी महाराज जैन क्षितिज के एक प्रभावशाली महामुनि हैं। श्रद्धास्पद गुरुदेव मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल जी म. का वरदहस्त उनके सिर पर रहा है। आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म. और पूज्य श्री मरुधर केसरी जी म. के पारस्परिक साधनात्मक और आत्मीय संबंध अत्यंत मधुर थे। श्रद्धेय गुरुदेव का संबंध-माधुर्य उनके शिष्यों में भी यथारूप जीवंत रहा। श्रद्धेय गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज एवं पूज्य प्रवर्तक श्री रूपचंद जी म. के मैत्री संबंध सर्वविदित रहे हैं। इन दोनों मित्र मुनीश्वरों ने संघीय संगठन और कई रचनात्मक कार्यों को पारस्परिक समर्पित सहयोग से संपन्न किया है। दोनों मित्र मुनीश्वरों की मैत्री सांझ की छायावत् अनवरत वर्धमान रही।

मैत्री का यही अनुबंध मुनिवर श्री शिवकुमार जी पर स्नेह का सावन

बनकर बरसा। पूज्य प्रवर्तक श्री रूपचंद जी महाराज अपने मित्र के अतिजात शिष्य के राजस्थान पदार्पण पर गद्‌गद थे। पूज्य प्रवर श्री मरुधर केसरी जी म. की कृपा भी आप पर रही। पूज्य श्री आपके व्यक्तित्व और विद्वत्ता की सूचना-सुगंध से आल्हादित थे। एक बार पूज्य श्री ने अपने भाव अभिव्यक्त करते हुए अपने शिष्य श्री रूपचंद जी म. से कहा था—तुम्हारे मित्र ज्ञान मुनि जी के शिष्य शिव मुनि जी उच्च कुल के तथा विद्वान मुनि हैं, युवाचार्य पद के लिए वे सर्वथा योग्य हैं। इस पर उनकी नियुक्ति सकल संघ के लिए उत्तम होगी।

श्रद्धेय साधुरत्न डॉ. श्री शिव मुनि जी महाराज जब ब्यावर में थे, उस समय पूज्य प्रवर्तक श्री रूपचन्द जी महाराज, पूज्य उप.प्र. श्री सुकन मुनि जी म. आदि ठाणा जैतारण में विराजित थे। पूज्य प्रवर्तक श्री जी ने पूज्य मुनिवर को साग्रह आमंत्रित किया। श्रद्धेय गुरुदेव के मित्र श्रद्धेय मुनीश्वर के स्नेह आमंत्रण में बंधे पूज्यवर्य ने ब्यावर से विहार किया। सोजत सिटी होते हुए आपश्री जैतारण पधारे।

पूज्य प्रवर्तक श्री जी ने अपने अजीज मुनिवर का बांहें फैलाकर स्वागत किया। अभूतपूर्व आशीषप्रद और स्नेहिल वातावरण का निर्माण हुआ। पूज्य प्रवर्तक श्री जी ने अनुभव किया कि उनका अपना शिष्य साधना और सुयश के नील-नक्षत्रों का स्पर्श कर रहा है। मुनिवर श्री शिव कुमार जी ने अनुभव किया कि सुदूर प्रदेश में भी उनके अपने सद्‌गुरु का स्नेहाशीष उनके सिर पर है।

जैतारण में ही पूज्य मरुधर केसरी जी महाराज की प्रथम पुण्य तिथि मनाई गई। उक्त अवसर पर पूज्य मुनिवर ने अपने हृदयोद्‌गार प्रकट करते हुए फरमाया—परम श्रद्धेय मरुधर केसरी जी महाराज तीर्थंकर महावीर की मुनि परम्परा के एक महान मुनि थे। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन सिंहवृत्ति साधक बनकर जीया। उनकी सिंह-गर्जना संगठन और अनुशासन का मूल स्रोत रही। उन्होंने अपनी सर्वजन कल्याणकारी साधना से असंख्य लोगों का उद्धार किया। उनके दर से कभी भी कोई खाली नहीं लौटा। अपनी साधना और संघीय अनुशासन में वे जहां वज्र से भी कठोर थे वहीं दुखित, पीड़ित और त्रसित प्राणियों के लिए उनका हृदय शिरीष कुसुम-सा कोमल था। आज वे हमारे मध्य में नहीं हैं, पर उनके आदर्श सदैव प्रेरणा-स्तंभ बनकर साधु और श्रावक संघ का पथ प्रशस्त करते रहेंगे।

पूज्य मुनिवर के भावपूर्ण उद्‌बोधन से पूज्य प्रवर्तक श्री जी एवं विशाल जनमेदिनी गद्‌गद बन गई।

पूज्य प्रवर्तक श्री जी ने पूज्य श्री सौभाग्य मुनि जी म., अनुयोग प्रवर्तक श्री कन्हैयालाल जी म. 'कमल' प्रभृति मुनिराजों एवं संघ के प्रमुख श्रावकों के सहयोग से आचार्य श्री आनंद ऋषि जी म. के श्री चरणों में विनम्र संदेश भिजवाया कि वर्तमान सकल संघ में श्री शिव मुनि जी महाराज युवाचार्य पद के सर्वाधिक सुयोग्य उम्मीदार हैं।

संक्षिप्त शब्दावली में कहें तो कह सकते हैं कि हमारे युवा चरितनायक श्रद्धेय श्री शिव मुनि जी म. अपनी उच्च साधना और मधु-मिष्ठ स्वभाव के कारण जिससे भी मिले उसी के हृदय में उतर गए। जहां भी आप विचरे वहीं प्रत्येक व्यक्ति के श्रद्धा और प्रेम के केन्द्र बन गए। आपके संयम और साधना में कठोरता और कड़वाहट के लिए किंचित् मात्र भी स्थान नहीं रहा है। आपके संयम में प्रत्येक के लिए स्नेह की सुगंध है, साधना में प्रेम और अपनत्व का अमृत है। इसी के परिणामस्वरूप सभी ज्येष्ठ मुनियों से आपको स्नेहाशीषों की झड़ी मिली, हम-उम्र और लघु मुनियों से प्रेम और सम्मान मिला, संघ से अपार आस्था प्राप्त हुई।

पूज्य प्रवर्तक श्री रूपचंद जी महाराज की हार्दिक इच्छा थी कि श्री शिव मुनि जी महाराज जोधपुर में एक चातुर्मास करें। पूज्य प्रवर्तक श्री जी की इच्छा का मुनिवर ने सिर झुकाकर सम्मान किया। वर्षावास की प्रार्थनाओं के साथ उपस्थित कई श्रीसंघों में से आपने जोधपुर श्रीसंघ की प्रार्थना को साधु वचनानुरूप स्वीकृति प्रदान की।

आचार्य श्री हस्तीमल जी म. से भेंट

जैतारण से आपश्री शेषकाल में जोधपुर पधारे। वहां पर आचार्य श्री हस्तीमल जी म. विराजमान थे। पूज्य आचार्य देव ने आपको स्वप्न में देखा। इससे आचार्य देव मुनि प्रवर से भेंट को उत्सुक हुए। उन्होंने एक श्रावक को आमंत्रण के लिए आपके पास भेजा। उत्साहित मन से आपश्री पूज्य आचार्यश्री की सेवा में पहुंचे। पूज्य आचार्य श्री से साधना और स्वाध्याय पर विशेष चर्चाएं हुई। पूज्य आचार्य श्री आपके शालीन व्यक्तित्व और साधना रुचि से आत्यंतिक रूप से प्रभावित हुए। दो महामुनीश्वरों की यह भेंट अत्यंत आत्मीयतापूर्ण और सुमधुर रही।

आबू पर्वत पर अध्यात्म योग

साधना से ही साधु साधु होता है। जिस साधु के जीवन में साधना की सुगंध नहीं वह नाम मात्र का साधु है। श्रद्धेय महामुनि पूज्य श्री शिव मुनि जी म. की साधना की उत्कट अभिरुचि उनकी श्रेष्ठ साधुता का प्रमाणपत्र है। पूज्य मुनि प्रवर अहर्निश साधना में संलग्न रहते हैं। साधना के लिए उपयुक्त स्थान और वातावरण महामुनि को सदैव आकर्षित करते रहे हैं।

साधना की साध को अंतर्मन में संजोए हुए मुनि प्रवर ने दिल्ली से माउण्ट आबू को लक्ष्य में रखकर प्रस्थान किया था। पर साथी मुनि की अस्वस्थता और जयपुर श्रीसंघ के अत्याग्रह वश आपश्री को वहां वर्षावास करना पड़ा। माउण्ट आबू की ध्यान गुफाएं आपको सतत आमंत्रित कर रही थीं। उसी आमंत्रण में बंधे आपश्री माउण्ट आबू पधारे। अनुयोग प्रवर्तक पूज्य श्री कन्हैयालाल जी म. 'कमल' का पारस सान्निध्य प्राप्त किया। पूज्य प्रवर्तक श्री जी की साधना और स्वाध्याय की श्रेष्ठता सर्वविदित है। पूज्य प्रवर्तक श्री जी के सान्निध्य में आपश्री काफी समय रहे। आगमों के अगम्य अनुभव आपने प्राप्त किए और साधना के असुलझे पहलुओं के सूत्र पूज्य प्रवर्तक श्री जी से सीखे। पूज्य प्रवर्तक श्री जी के साथ ही विनयमूर्त्ति श्री विनय मुनि जी म. 'वागीश' आदि मुनिवृंद का भी विशेष सहयोग रहा।

साधना के लिए श्रद्धेय मुनिप्रवर काफी समय तक माउण्ट आबू पर विराजित रहे। उस अवधि में पूज्य मुनीश्वर ने ध्यान और मौन की विशेष साधना की। नक्की झील के ऊपर गुफा में पूज्य मुनीश्वर निरंतर एक मास तक मौन ध्यान में लीन रहे। वहां पर स्वामी मीठालाल जी (संत अमिताभ जी) एवं विमला ठकार से भी मिलन हुआ और साधना पर अनुभवों का आदान-प्रदान हुआ।

माउण्ट आबू प्रवास में श्रद्धेय मुनीश्वर ने विश्व प्रसिद्ध जैन मंदिर देलवाड़ा का भी अवलोकन किया। माउण्ट आबू और अचलगढ़ की गुफाओं में आपश्री ध्यान-साधना हेतु पधारते रहे।

चौदहवां वर्षायोग

माउण्ट आबू से परम श्रद्धेय महामनीषी श्री शिव मुनि जी म. वर्षावास हेतु जोधपुर पधारे। जोधपुर राजस्थान प्रांत का एक सुविशाल श्रीसंघ है। वहां पर हजारों की संख्या में जैन परिवार रहते हैं। विशाल क्षेत्र होने से यहां सभी

सम्प्रदायों को मानने वाले श्रावक हैं। परन्तु हमारे श्रद्धेय मुनिवर तो सम्प्रदाय निरपेक्ष मुनि रहे हैं। उनकी तो एक ही सम्प्रदाय रही है वह है तीर्थंकर महावीर की सम्प्रदाय। जिनत्व को जीना और उसकी प्रभावना करना ही पूज्य श्री का मिशन रहा है। पूज्य श्री के हृदय में कभी भी पंजाब संप्रदाय से अपनत्व अथवा अन्य सम्प्रदायों से परत्व का भाव नहीं देखा गया। पूज्य मुनिवर की इसी सम्प्रदाय निरपेक्षता ने उनको समग्र जैन जगत का पूज्य मुनि बनाया है।

जोधपुर में पूज्य मुनिवर के लिए प्रत्येक श्रावक उनका अपना श्रावक था, प्रत्येक संप्रदाय उनका अपना संप्रदाय था। उनके लिए कोई भी पराया न था। महामुनि ने प्रत्येक जिनोपासक को आमंत्रित किया। परिणामस्वरूप पूरे जोधपुर में धर्म का अपूर्व उत्साह देखने को मिला। पूज्य श्री के प्रवचनों में आशातीत उपस्थिति होने लगी।

पूज्य महामुनि की साधना और ध्यान रुचि को सभी ने पसंद किया। जब भी किसी ने मुनिवर के दर्शन किए, मुनिवर को दो ही अवस्थाओं में पाया–या तो आत्मसाधना में संलग्न अथवा धर्मचर्चा में व्यस्त।

महामनीषी महामुनिवर ने कभी किसी की निन्दा नहीं की, कभी किसी पर आक्षेप नहीं किया। परन्तु सामाजिक कुरीतियों का अवश्य विरोध किया। उस समय तपस्वियों के अभिनन्दन के लिए काफी आडम्बर किया जाता था। बैण्ड-बाजे बजते थे, लेन-देन होते थे। मुनिवर ने इन आडम्बरों के निरसन का आह्वान किया। मुनिवर ने स्पष्ट उद्घोषणा की–तप जीवन के परिष्कार की साधना है। तप आत्मशुद्धि का आध्यात्मिक उपक्रम है। तप प्रदर्शन का नहीं, आत्मदर्शन का साधन है। प्रदर्शन और प्रशंसा तप के रस को पी जाते हैं। इसलिए मैं आपको मित्रवत् प्रेरणा दूंगा कि तप भले ही छोटा हो, पर वह विशुद्ध हो।

पूज्य महामुनि की इस प्ररूपणा का चामत्कारिक प्रभाव हुआ। आडम्बर विदा हुआ और सम्यक् विधि से तपाराधनाएं हुईं। महामुनि के उपरोक्त विचारों से कुछ लोग शंकित थे कि इस वर्षावास में संवत्सरी पर्व पर तपस्या कम होगी। परन्तु सांवत्सर पर्व पर जिस उत्साह से तपाराधनाएं हुईं वह जोधपुर के इतिहास का रिकॉर्ड बन गईं। पूज्य श्री के वर्षावास में जितनी तपस्या हुई उतनी तपस्या पहले कभी नहीं हुई थी और बाद में भी वैसी तपस्याएं नहीं सुनी गई।

वर्षीतप प्रारंभ

श्रावक रत्न श्री अमरचंद जी विनायका पूज्य मुनिवर के दर्शनों के लिए जोधपुर पधारे। आप श्री विनायका जी का हृदय से आदर करते थे। विनायका जी ने एक बार पुन: आप श्री को वर्षीतप के लिए संप्रेरित किया। उन्होंने कहा--महाराज! तप की निरंतर साधना से आपकी ध्यान साधना में महान चमत्कार उत्पन्न होगा। इससे तीर्थंकर महावीर की तप और ध्यान रूपी साधना वर्तमान में साकार हो उठेगी और समाज का महान कल्याण होगा।

विनायका जी की प्रेरणा को आपश्री ने आत्मस्थ किया। आपश्री ने अनुभव किया कि निश्चय ही तप के बिना ध्यान अधूरा है और ध्यान के बिना तप भी अधूरा है। साधना के इन दोनों अंगों को आराध्य देव महावीर ने साथ-साथ जीया था। मुझे भी अपने आराध्य का अनुगमन करना चाहिए।

अन्तरात्मा में संकल्प जगा। सुदृढ़ निश्चय किया कि प्रवास हो या उग्रविहार, स्वास्थ्य साथ दे अथवा न दे, मैं एकांतर तप अवश्य करूंगा। विजयदशमी के पवित्र दिन से कर्म शत्रुओं के दलन के लिए महामुनि ने एकांतर तप प्रारंभ किया। तब से आज तक महामुनि निरंतर एकांतर तप की आराधना कर रहे हैं। कहना चाहिए कि विगत बीस वर्षो में दस वर्ष की अवधि महामुनीश्वर ने तप की आराधना में व्यतीत की है।

कई कठिन प्रसंग भी आए जब डॉक्टरों ने राय दी कि आपको दवा के लिए उपवास को विराम देना चाहिए। परन्तु स्वास्थ्य पर तप को ही आपने प्रमुखता दी और अपनी साधना को बाधित नहीं बनने दिया।

शनै:-शनै: तप आपका स्वभाव बन गया। आज आप उपवास में हैं या पारणे में हैं इसका भेद पूछकर ही ज्ञात किया जाता है। सच तो यह है कि उपवास के दिन आपश्री की स्फूर्ति और कार्यक्षमता अधिक होती है। आज पैंसठ वर्ष की अवस्था में भी आपश्री में नवयुवकों जैसा उत्साह और बालकों जैसी सरलता है। तेजस्वी आनन पर प्रतिपल मुस्कान तैरती रहती है। क्या ध्यान और तप की आराधना के बिना यह संभव है? विशाल संघ का दायित्व पूरी ऊर्जा से वहन करते हुए भी प्रतिक्षण सहज स्फूर्ति और उत्साह से संपन्न रहना आपकी साधना की गहनता का ही प्रतीक है।

साधना साकार बनती है। उसे छिपाया नहीं जा सकता है। साधना का सहज स्फूर्त स्वरूप यदि देखना है तो पूज्यश्री को देखना चाहिए। आज के

युग में आध्यात्मिक साधना का ऐसा साधक अन्य दिखाई नहीं देता। साधना के नाम पर बासे और कुम्हलाए चेहरे तो बहुत देखे जा सकते हैं पर साधना से स्फूर्त, विकसित और कुसुमित ऐसा आनन अन्यत्र दुर्लभ है।

श्रमण संघ के सचिव

परम श्रद्धेय डॉ. श्री शिव मुनि जी म. के साधना, स्वाध्याय और समन्वयात्मक सद्गुणों की सुगंध समग्र संघ में व्याप्त हो चुकी थी। आचार्य सम्राट् श्री आनन्द ऋषि जी म. भी आपकी साधना और मिलनसारिता आदि सद्गुणों को सुन रहे थे। आचार्य देव पूज्य श्री आनन्द ऋषि जी महाराज स्वयं एक उच्चकोटि के साधक और कुशल संघशास्ता थे। संघ की एकता और उन्नति के लिए पूज्यश्री ने सदैव सुयोग्य सहयोगियों का सम्मान किया और सहयोग लिया। आचार्य श्री संघ में एक ऐसे सहयोगी साधक की आवश्यकता अनुभव कर रहे थे जो अखिल भारतीय स्तर पर संघ में सम्पर्क का कार्य करे। इसके लिए आचार्यश्री के चिन्तन-पथ पर जिस मुनि का नाम स्थिर हुआ वे मुनि थे–पूज्य श्री शिव मुनि जी महाराज। पूज्य आचार्य देव ने अनुभव किया–श्री शिवमुनि जी एक समर्थ और सुयोग्य सहयोगी हैं। संघ के सभी मुनिराजों से उनके आत्मीय संबंध हैं। संघ की सुदृढ़ता और पारस्परिक सहयोग के आदान-प्रदान में उनसे कुशल अन्य उम्मीदवार नहीं है। इस प्रकार सघन चिंतन-मनन करने के पश्चात् श्रद्धेय आचार्य देव ने आपको 'संघ संपर्क सचिव' पद पर नियुक्त किया।

आचार्य देव की इस उद्घोषणा का समग्र संघ में भारी स्वागत हुआ। सभी ने इस बात को स्वीकार किया कि एक सुयोग्य व्यक्तित्व को सुयोग्य पदभार प्राप्त हुआ है।

परम पूज्य मुनिवर की रुचि प्रारंभ से ही आत्मसाधना में रही है। परन्तु आचार्य देव द्वारा प्रदत्त दायित्व को भी आपने संघ सेवा के एक पुण्य प्रसंग के रूप में स्वीकार किया। आपकी अप्रमत्तता का ही यह लक्षण था कि पद प्राप्त कर आप हाथ पर हाथ रख कर नहीं बैठ गए। अपितु त्वरित गति से आपने समग्र संघ के महामहिम मुनिराजों, पूज्या महासाध्वियों और संघ के अग्रगण्य श्रावकों तथा कर्मठ कार्यकत्ताओं से संघ के विकास हेतु विचार-विमर्श प्रारंभ कर दिया। सभी प्रमुख मुनिराजों, साध्वियों, श्रावकों और कार्यकर्त्ताओं के इस हेतु विचार आमंत्रित किए। सभी ने आपको पूर्ण सहयोग प्रदान किया और अपने-अपने विचार संप्रेषित किए। संघ में साधना, स्वाध्याय और

संगठन के सुचारू विकास हेतु संप्राप्त सैकड़ों सुझावों को व्यवस्थित रूप प्रदान कर आपश्री ने आचार्यश्री की सेवा में सम्प्रेषित किया।

आपश्री की त्वरित और सम्यक् कार्यप्रणाली को देखकर आचार्य श्री आनन्द ऋषि जी महाराज आनन्दित बन गए। उन्होंने कहा–मुनिवर! आपने अल्प समय में अपने दायित्व के अनुरूप जो महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित किया है उससे आपकी योग्यता और प्रतिभा का परिचय मिला एवं मुझे गौरवानुभूति हुई।

तपस्वीराज श्री चंपालाल जी म. से भेंट

भारतीय साहित्य की एक अमर सूक्ति है– **'उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।'** उदार हृदय व्यक्तियों के लिए संपूर्ण वसुधा उनका अपना परिवार होता है। सृष्टि के समस्त जन उनके अपने परिजन होते हैं, समस्त प्राणी उनके प्रियजन होते हैं। उदार हृदय मानव सब पर अपना प्रेम लुटाता है, सब को गले लगाता है। अपनत्व-परत्व जैसी शब्दावलियां उसके हृदय-कोश में नहीं होती हैं।

परम श्रद्धेय डॉ. श्री शिव मुनि जी म. जन्म से ही परम उदार हृदय लेकर जन्मे थे। अपने यात्रा-पथ पर आने वाले प्रत्येक व्यक्ति से आपने प्रेम किया, प्रत्येक गुणवान का आदर किया। प्रत्येक से ऐसे मिले जैसे वह आपका सर्वाधिक प्रिय व्यक्ति है। आपके इसी स्वभाव-सद्गुण ने आपको प्रत्येक का प्रिय और प्रत्येक का श्रद्धेय बनाया है।

आपके जोधपुर वर्षावास के समय परम पूज्य तपस्विराज ज्ञान-गच्छाधिपति श्री चम्पालाल जी म. का वर्षावास भी जोधपुर में ही था। एक बार पूज्य तपस्विराज अक्षवेदना से पीड़ित हो गए। ऐसे में हमारे श्रद्धाधार श्री शिव मुनि जी महाराज पूज्य तपस्विराज की साता-पृच्छा के लिए उनके पास पधारे। पूज्य तपस्विराज आपकी हृदय विशालता को देखकर गद्गद हो गए। हृदय-द्वार खोलकर उन्होंने आपका स्वागत किया।

श्रद्धेय तपस्विराज की संगीति में कुछ समय तक आप रहे। साधना सम्बन्धी चर्चाएं भी हुई। सब से बड़ी बात जो हुई वह थी आपकी विनम्रता, उदारता और असाम्प्रदायिक चेतना की सर्वत्र प्रशस्तियां कही गईं।

महामहिम मुनिराजों से मिलन

जोधपुर का ऐतिहासिक वर्षावास सोत्साह सम्पन्न हुआ। पूज्य प्रवर्तक

श्री रूपचंद जी महाराज के आमंत्रण पर पूज्य मरुधर केसरी जी महाराज की द्वितीय पुण्यतिथि पर आपश्री जोधपुर से जैतारण पधारे। उस अवसर पर परम पूज्य श्री मूलमुनि जी म., परम पूज्य प्रवर्तक श्री अम्बालाल जी म., पूज्य श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद', पूज्य श्री मगन मुनि जी म., पूज्य श्री मदन मुनि जी म. प्रभृति अनेक मुनिराज जैतारण पधारे थे। इस प्रकार एक ही स्थान पर कई महामहिम मुनिराजों के दर्शन कर आपका हृत्कमल खिल उठा। महा समारोह के साथ पूज्य मरुधर केसरी जी महाराज की पुण्यतिथि आयोजित की गई।

पूज्य श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद' महाराष्ट्र प्रान्त का विचरण कर राजस्थान लौटे थे। पूज्य श्री आपके व्यक्तित्व से अत्यधिक प्रभावित हुए और उन्होंने आपको महाराष्ट्र में विचरण की प्रेरणा दी।

श्रद्धेय मुनिवर की ख्याति दिग् दिगन्तों में व्याप्त हो चुकी थी। पूना श्री-संघ आपके वर्षावास की प्रार्थना के साथ उपस्थित हुआ और वर्षावास की प्रार्थना प्रस्तुत की।

जैतारण से आपश्री परम पूज्य श्री मूल मुनि जी महाराज के साथ विहार करके पाली पधारे।

आचार्य श्री तुलसी से मिलन

पाली प्रवास में परम श्रद्धेय श्री शिव मुनि जी म. के साधनास्नात क्रांतिकारी प्रवचनों से जैन धर्म की महती प्रभावना हुई। आपके प्रवचनों में भारी संख्या में जन समूह उमड़ने लगा। ध्यान और तपस्विता से पुष्पित-पल्लवित आपके व्यक्तित्व से सभी लोग प्रभावित हुए।

उसी अवधि में तेरापंथ धर्मसंघ के अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी एवं युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ जी पाली में ही विराजित थे। आपकी साधना और सुयश की सुगंध आचार्य श्री तक पूर्व में ही पहुंच चुकी थी। आपश्री भी आचार्य श्री के अनुशासन और विकास के प्रशंसक रहे हैं। ऐसे में पारस्परिक भेंट को समय के सुयोग की ही प्रतीक्षा थी। सुयोग बना और साधना के शिखर दो अध्यात्मयोगियों की परस्पर भेंट हुई। यह मिलन अत्यन्त मधुर पलों में हुआ। आचार्य श्री एवं युवाचार्य श्री से ध्यान, योग, कायोत्सर्गादि आध्यात्मिक विषयों पर आपकी चर्चा हुई। केशी-गौतम का सा यह मिलन पाली के इतिहास का एक स्मरणीय क्षण बन गया।

आचार्य श्री तुलसी ने आपकी शालीनता, जिज्ञासिता की मुक्त मन से प्रशंसा की। वहीं आप भी आचार्य श्री के आत्मीयता पूर्ण व्यवहार पर मंत्रमुग्ध बन गए। युवाचार्य महाप्रज्ञ जी की विनम्रता से आपश्री विशेष प्रभावित हुए।

पाली के प्रभावशाली प्रवास के पश्चात् आपश्री मध्यवर्ती गांवों और नगरों में धर्म जागरण करते हुए रणकपुर पधारे। प्रकृति की गोद में निर्मित स्थापत्य कला के अद्भुत प्रतीक जैन मंदिरों का आपश्री ने अवलोकन किया। कुछ समय वहां रहकर आपश्री ने मौन और ध्यान की साधना की।

रणकपुर के जैन मंदिरों की कलात्मकता से आप विशेष प्रभावित हुए। अक्सर आपश्री कहा करते हैं–रणकपुर के जैन मंदिर कला और संस्कृति के प्रतीक हैं, कला के क्षेत्र में अद्भुत हैं। ताजमहल उनके सामने फीका है।

रणकपुर से आपश्री सुप्रसिद्ध जैन तीर्थ मुछाला महावीर पधारे। आपने जाना कि उस क्षेत्र के लोग महावीर को अपना आराध्य देवता मानते हैं। वहां जैन अजैन का भेद नहीं है। आदिवासी लोग भी महावीर को अपना आदि देव मानकर पूजा करते हैं।

ऐसा क्यों है यह एक शोध का विषय है। इस तथ्य पर पूज्य श्री का चिन्तन कहता है–संभव है यह स्थल कभी जैन संस्कृति का केन्द्र रहा हो, किसी प्राकृतिक आघात ने यहां की तस्वीर बदल दी हो। तस्वीर बदल जाने पर आस्थाएं तो जीवित रहती ही हैं। वही आस्थाएं आज वहां सहज देखी जा सकती हैं।

व्याख्यान वाचस्पति श्री विजय मुनि जी म. से मिलन

मुछाला महावीर से आपश्री देवगढ़ मदारिया पधारे। वहां पर व्याख्यान वाचस्पति श्री विजय मुनि जी म. से आपका मिलन हुआ। श्री विजय मुनि जी म. उत्तर भारत के एक प्रभावशाली मुनि हैं। राजस्थान में कई चातुर्मास करके उन्होंने पंजाब का नाम रोशन किया। आपश्री के उनसे काफी पुराने मैत्री संबंध थे। मित्र मुनिवरों का संक्षिप्त प्रवास काफी स्मरणीय रहा।

उत्तर भारतीय श्रमण संघ का एकनिष्ठ समर्थन

श्रद्धेय महामनीषी मुनिवर आत्मसाधना में अप्रमत्त संलग्न रहकर धर्म प्रभावना करते हुए अपने यात्रापथ पर सतत गतिमान थे। उसी समय सकल

संघ में युवाचार्य पद हेतु सघन चिंतन चल रहा था। सर्वत्र यही चर्चा प्रमुख थी कि श्रमणसंघ का भावी अनुशास्ता कौन हो। जिन कुछेक नामों पर सर्वाधिक चर्चा होती थी उनमें श्रद्धेय श्री शिव मुनि जी महाराज का नाम सर्वोपरि था। यह एक आश्चर्यजनक तथ्य भी था कि मात्र तेरह वर्ष की दीक्षा पर्याय में आपश्री सकल संघ के चिंतन के केन्द्र बन गए थे। निःसंदेह इसमें आपकी साधना निष्ठा और दिव्य व्यक्तित्व ही प्रमुख कारण थे।

उसी अवधि में अम्बाला (हरियाणा) में उत्तर भारत के सैकड़ों साधु-साध्वियां और लाखों श्रावक-श्राविकाएं उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचंद जी म. को प्रवर्तक पद की पवित्र चादर समर्पित करने हेतु एकत्रित हुए थे। उस समय पंजाब केसरी गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज एवं उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचंद जी म. के निर्देशन में सकल उत्तर भारतीय साधु-साध्वी मंडल ने युवाचार्य पद हेतु श्रद्धेय महामनीषी मुनीश्वर डॉ. श्री शिव मुनि जी महाराज के नाम की अनुमोदना की और इस आशय का सर्वसम्मत सर्वहस्ताक्षर संयुक्त एक पत्र आचार्य सम्राट् श्री आनंद ऋषि जी महाराज की सेवा में प्रेषित किया।

हल्दीघाटी की माटी पे

परम पूज्य श्रद्धेय डॉ. श्री शिव मुनि जी म. देवगढ़ मदारिया से आमेट, कांकरोली होते हुए राजनगर पधारे। वहां पर तेरापंथ संघ द्वारा निर्मित प्रेक्षा ध्यान केन्द्र का आपश्री ने अवलोकन किया। वहां से आपश्री नाथद्वारा पधारे। नाथद्वारा से हल्दीघाटी पधारे।

'हल्दीघाटी' यह एक ऐसा नाम है जिसे सुनकर अथवा पढ़कर भारत माता के वीर सपूत मेवाड़-अधिपति महाराणा प्रताप के शौर्य की गाथाएं श्रोता/पाठक के मस्तिष्क में गूंज उठती हैं। यह उस स्थान का नाम है जहां 18 जून सन् 1576 के दिन महाराणा प्रताप ने विशाल और शक्तिशाली मुगल सेना से लोहा लिया था। एक ही दिन चले इस युद्ध में भारतमाता के वीर सपूत इक्कीस हजार राजपूतों ने स्वतंत्रता की वेदी पर अपने प्राणों की आहुति दे दी थी। विगत सवा चार सौ वर्षों से यह स्थान भारत की अस्मिता का प्रतीक रहा है।

श्रद्धेय मुनिवर शौर्य की प्रतीक स्थली हल्दीघाटी में पधारे। उस मिट्टी के कण-कण से उठ रही शौर्य की सुगंध को महामुनि ने अनुभव किया।

खमणोर निवासी श्रावक श्री कालूलाल जी लोढ़ा का हल्दीघाटी दिखाने में विशेष सहयोग रहा।

हल्दीघाटी से ईश्वाल होते हुए आपश्री श्रुति सिन्थेटिक पधारे। वहां पर आपश्री के संसार पक्षीय बुआजी के सुपुत्र श्री बी.डी. जैन एवं उनके मित्र श्री एन.के. छाजेड़ ने सेवा का विशेष लाभ लिया। वहां से आपश्री झीलों की नगरी उदयपुर पधारे।

झीलों की नगरी में

उदयपुर निवासियों ने श्रद्धेय मुनिवर का पूरे भक्ति भाव से स्वागत किया। इस प्रवास में पूज्य श्री मूल मुनि जी म. आपश्री के साथ थे। उदयपुर में सप्त दिवसीय प्रवास रहा। इस छोटी-सी अवधि में ही आपके ओजस्वी प्रवचनों से उदयपुर निवासी विशेष प्रभावित हुए।

उसी अवधि में उदयपुर में तेरापंथ धर्मसंघ का मर्यादा महोत्सव चल रहा था। तेरापंथ संघ के आचार्य श्री तुलसी की ओर से आपश्री को विशेष आमंत्रण प्राप्त हुआ। आचार्य श्री के आमंत्रण पर आपश्री कुछ मुनियों और प्रमुख श्रावकों के साथ उनके पास गए। आचार्य श्री ने आपका हार्दिक स्वागत किया। महामुनिवरों का यह मिलन पर्व अत्यंत मधुर रहा। पारस्परिक प्रेम में अभिवृद्धि हुई। सम्प्रदायवादियों के चित्त से साम्प्रदायिक जकड़न में शिथिलता आई।

उदयपुर प्रवास में पूज्यश्री की संसार पक्षीय बुआजी श्रीमती विद्यावती जैन एवं उनके परिवार ने पूर्ण रूप से सेवा का लाभ लिया। पूज्य बुआजी का आपश्री पर बचपन से ही अपूर्व स्नेह रहा है। आपश्री के वैराग्यकाल से लेकर दीक्षा लेने तक उनका विशेष सहयोग आपश्री को प्राप्त हुआ।

उदयपुर से विहार कर पूज्य श्री शिव मुनि जी महाराज खैरोदा ग्राम में पधारे। यहां पर पूना श्रीसंघ के प्रमुख श्री कचरदास जी पोरवाल, श्री कनकमल जी मुणोत आदि प्रमुख श्रावक पूज्यश्री की सेवा में उपस्थित हुए एवं वर्षावास की प्रार्थना की।

पूना श्रीसंघ की वर्षावास की प्रार्थना निरंतर चल रही थी। पर आपश्री ने अभी तक संघ को आश्वासन नहीं दिया था। पूना श्रीसंघ ने विशेष आग्रह किया तो आपश्री ने फरमाया-आचार्यदेव के दर्शनों के भाव लेकर मैं महाराष्ट्र आ रहा हूं। आचार्य श्री के आदेशानुसार ही मेरा वर्षावास हो ऐसे मेरे भाव हैं।

आपश्री के युक्तियुक्त उत्तर से पूना श्रीसंघ संतुष्ट हो गया।

खैरोदा से आपश्री बड़ी सादड़ी को संस्पर्शित करते हुए रतलाम पधारे। वहां पर परम पूज्य प्रवर्तक श्री उमेश मुनि जी महाराज, परम श्रद्धेय श्री जीवन मुनि जी महाराज आदि ठाणा से सम्मिलन हुआ। यह सांभोगिक सहवास अत्यंत मधुर रहा।

अहिल्या नगरी में उपाध्यायपद पर्व पर

रतलाम से श्रद्धेय मुनिवर ने इन्दौर की दिशा में विहार किया। मध्यवर्ती गांवों और नगरों में अर्हत् धर्म का उद्‌घोष करते हुए, जन-जन में जागरण की प्रेरणा जगाते हुए महामनीषी मुनिवर इन्दौर पधारे।

इन्दौर नगर का नाम जुबान पर आते ही जैन समाज के प्रत्येक व्यक्ति की स्मृति में एक श्रावक का नाम अनायास ही उभर आता है। वे श्रावक हैं-श्री नेमनाथ जी जैन। श्री नेमनाथ जी केवल इन्दौर नगर के ही नहीं, बल्कि अखिल भारतीय जैन जगत के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। उन्होंने पहली सीढ़ी से अपने व्यावसायिक जीवन की शुरुआत की। अपनी सत्यनिष्ठा, अथक श्रम और अदम्य उत्साह के बल पर वे राष्ट्रीय स्तर के उद्योगपति बने। सफल उद्यमी के रूप में भारत के राष्ट्रपति ने उन्हें सम्मानित किया।

श्री नेमनाथ जी का परिचय इतने से ही पूर्ण नहीं होता है। उनका वास्तविक परिचय यह है कि वे बचपन से ही अपनी जड़ों से जुड़े रहे हैं। जैन धर्म के प्रति उनकी सुदृढ़ आस्था उन्हें दृढ़धर्मी श्रावक सिद्ध करती है। उन्होंने अम्मा पिउरो के आदर्श श्रावक स्वरूप में सदैव एकनिष्ठ अचल भक्तिभाव से प्रत्येक श्रमण और श्रमणी की सेवा का लाभ लिया। सामायिक, संवर, जप, जप, स्वाध्याय आदि की आराधना उनके दैनंदिन से कभी भी विलुप्त नहीं हुए। वस्तुतः ऐसे श्रावक ही संघ के गौरव होते हैं।

अस्तु! श्रद्धेय मुनि श्री इन्दौर पधारे। इन्दौर में परमादरणीय पूज्य श्री केवल मुनि जी महाराज का उपाध्याय पद चादर समर्पण महोत्सव सम्पन्न हुआ। उस अवसर पर कई विद्वान मुनि वहां उपस्थित थे, जिनमें प्रमुख मुनि थे-पूज्य प्रवर्तक श्री रमेश मुनि जी म., पूज्य श्री मूल मुनि जी म. आदि। परमपूज्य गुरुदेव डॉ. श्री शिव मुनि जी म. का सुमधुर सम्मिलन उक्त मुनिराजों से हुआ। आदरणीय महासती श्री उमराव कुंवर जी म. 'अर्चना' भी इन्दौर में विराजित थीं। श्रद्धेय मुनिवर की महासती जी से साधना और ध्यान सम्बन्धी चर्चाएं हुईं।

श्रावकरत्न श्री नेमनाथ जी के नेतृत्व में इन्दौर श्रीसंघ ने परमपूज्य डॉ. श्री शिव मुनि जी महाराज के चरणों में भावी वर्षावास की प्रार्थना प्रस्तुत की। इस पर आपश्री ने फरमाया—मैं आचार्य भगवन् के दर्शनों के लक्ष्य के साथ महाराष्ट्र जा रहा हूं, इसलिए वर्षावास की स्वीकृति प्रदान करना संभव नहीं है। श्री नेमनाथ जी जैन एवं इन्दौर श्रीसंघ ने आपश्री के हार्दिक भावों का सम्मान किया।

इन्दौर से विहार कर आपश्री धुलिया पधारे। धुलिया परम पूज्य आचार्य श्री अमोलक ऋषि जी म. की तपोभूमि है। यहां के श्रावकों में गजब का धर्म समर्पण और श्रद्धा भाव है। धुलिया से आपश्री मालेगांव, मनमाड़ आदि क्षेत्रों में धर्मोद्योत करते हुए अनकाई पधारे। अनकाई में विराजित पूज्य श्री हंसमुख मुनि जी महाराज ने आपश्री का स्वागत किया। पूज्यश्री के आत्मीय व्यवहार से आपश्री अभिभूत बन गए।

अनकाई से विहार कर श्रद्धेय मुनीश्वर बसंत पिंपलगांव पधारे। जैन संस्कारों में रचे-बसे इस गांव में कुछ समय देकर आपश्री नासिक पधारे। नासिक में जैन समाज का प्रभुत्व है। यहां के उत्साही श्रावकों में जैन धर्म के प्रति पूर्ण समर्पण भाव है। सेवामूर्ति श्री शांतिलाल जी दुग्गड़, श्री मोहनलाल जी सांखला, श्री मंगलचंद जी सांखला, श्री मोहनलाल जी चोपड़ा आदि श्रावकों ने परम पूज्य डॉ. श्री शिव मुनि जी म. की अविस्मरणीय सेवा की। यहीं पर आदरणीया महासती श्री आदर्शज्योति जी महाराज से आपश्री का परिचय हुआ। नासिक का संक्षिप्त प्रवास स्मरणीय एवं प्रभावशाली रहा।

पूना नगर के साधना सदन का श्रावक संघ लम्बे समय से परम पूज्य डॉ. श्री शिव मुनि जी म. के वर्षावास की प्रार्थना के साथ उपस्थित होता रहा। प्रत्येक बार आपश्री ने साधना सदन श्रीसंघ से यही फरमाया कि मैं मेरे आराध्य देव आचार्य श्री के दर्शनों के लिए आ रहा हूं। आचार्य श्री स्वयं निर्णय देंगे कि मुझे कहां वर्षावास करना है।

उसी अवधि में सूचना आई कि परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् श्री आनंद ऋषि जी म. एवं आदरणीया महासती श्री प्रीतिसुधा जी म. ने आदिनाथ सोसायटी पूना में वर्षावास स्वीकार किया है। इस सुसमाचार से श्रद्धेय मुनीश्वर डॉ. श्री शिव मुनि जी म. को हार्दिक हर्ष हुआ। आपश्री का चिन्तन यही रहा कि—ऐसे में पूना श्रीसंघ की भावना भी पूर्ण होगी और आचार्य देव का सत्सान्निध्य भी प्राप्त होगा।

उस समय कुछ कौतूहलप्रिय लोगों ने ऐसी वार्ताओं को भी जन्म दिया कि एक ही नगर में आचार्य श्री और मुनि श्री दो भिन्न स्थानों पर वर्षावास करने जा रहे हैं। स्नेह, श्रद्धा और समर्पण में दरार उत्पन्न करने के प्रयास हुए। उस समय पूज्य प्रवर मुनि श्रेष्ठ ने श्रीसंघ को संदेश दिया–आचार्य श्री हमारी सर्वोच्च सत्ता हैं। उनका आदेश हमारा संविधान है। आचार्य श्री का आदेश मेरे लिए भगवान का आदेश है। जैसा मेरे आराध्य देव फरमाएंगे वही मेरे लिए सर्वतोभावेन मान्य होगा।

श्रद्धेय मुनीश्वर के इस संदेश से कौतूहलप्रिय सज्जनों के हौंसलें पस्त हो गए। आपके संदेश का सर्वत्र स्वागत हुआ। स्वयं आचार्य देव ने आपकी समझ और विनयवृत्ति की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

❖ ❖ ❖

संस्कारधानी
में उतर आया
सूरज

आचार्य सम्राट् श्री आनंद ऋषि जी म. ने घोषणा की—श्रमण सघ की गौरवमयी परम्परा के अनुसार तथा सघ की सुचारू व्यवस्था के लिए मैं साहित्य मनीषी श्री देवेन्द्र मुनि जी म. एव साधना स्नात मुनिरत्न श्री शिव मुनि जी महाराज को क्रमशः उपाचार्य और युवाचार्य पद पर नियुक्त करता हूं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि ये मुनिराज श्रमण संघीय गौरव गरिमा की अभिवृद्धि करते हुए जिनशासन और जिनधर्म की महान प्रभावना करेंगे।

संस्कारधानी में उतर आया सूरज

पूना प्रवास

महाराष्ट्र की संस्कारधानी पूना शिक्षा, संस्कृति, शक्ति-भक्ति, आनंद और अध्यात्म का शहर है। श्रद्धेय श्री शिव मुनि जी म. ने यहां अपने चरण रखे। आपके सदाचरण से शहर का हर आमो-खास प्रभावित हुआ। आखिर शिव सोना है तो यह शहर भी किसी कसौटी से कम नहीं। पुण्य नगरी पूना में आपका स्वागत हुआ, आपकी साधुता का स्वागत हुआ।

विशाल जनसमूह के साथ परमादरणीय शान्तात्मा श्री कुन्दन ऋषि जी महाराज, युवा मनीषी श्री आदर्श ऋषि जी म., परमविचक्षण श्री प्रवीण ऋषि जी म. आदि मुनिवृन्द एवं जिनधर्म की कीर्ति की सफल संवाहिका महासती श्री प्रीतिसुधा जी महाराज आदि साध्वी वृन्द ने आपश्री का हार्दिक स्वागत किया। साधना सदन श्रीसंघ के स्थानक में आपश्री का मंगल प्रवेश हुआ। प्रवचन हुए। अपूर्व उत्साह और उल्लास का वातावरण निर्मित हुआ।

आनंदाचार्य के सान्निध्य में

परम पूज्य श्रद्धेय डॉ. श्री शिवमुनि जी म. ने श्रद्धालोक के देवता आचार्य सम्राट् श्री आनंद ऋषि जी म. के दर्शनों के लिए साधना सदन भवन से आदिनाथ सोसायटी के लिए प्रस्थान किया।

पिपासा से प्रज्ज्वलित कण्ठ वाला व्यक्ति प्रलम्ब यात्रा कर कूप के निकट पहुंचकर जैसे जलपान के लिए विशेष व्यग्रता अनुभव करता है कुछ वैसी ही भावदशा में हमारे श्रद्धेय महामुनिवर भी थे। पंजाब से हजारों मील की पदयात्रा कर आपश्री अपने आराध्य देव के दर्शनार्थ पूना पधारे। आराध्य देव के दर्शनों की उत्कृष्ट उमंग में आपश्री प्राण-प्राण में पुलक अनुभव कर रहे थे। भक्ति में भीगा आपका हृदय उल्लास और उमंग के सुमेरु-शृंगों पर विहार कर रहा था।

कदम बढ़ते रहे, मंजिल निकट आती गई, हृदय पनघट का हर्ष जल छलकता रहा। आदिनाथ सोसायटी की श्राविकाएं श्रद्धा और स्वागत के प्रतीक मंगल कलश सिर पर धारण किए आपके स्वागत में उपस्थित हुईं। उन श्राविकाओं के पीछे साधु-साध्वी मंडल था और साधु-साध्वी मंडल के पीछे 'जय आनंद जय शिव' के जयनादों से दशों दिशाओं को अनुगुंजित करता श्रावक-श्राविकाओं का अपार समूह था।

प्रत्येक व्यक्ति में रोमांचित कर देने वाला उत्साह था। आस्था के सुमेरु-शैल के पादमूल को श्रद्धा का क्षीरसागर प्रक्षालित करने को उर्मंगित-तरंगति था। उस क्षण के सच को मेरी स्वल्प-क्षम कलम कहां बांध पाएगी! परम पूज्य गुरुदेव के शब्दों को ही यथारूप उद्‌धृत कर रहा हूं–

"मैं जब उग्र विहार करके आचार्यश्री की सेवा में पहुंचा तो अपने आराध्य देव के दर्शन करते ही भाव-विभोर हो उठा। ज्यों ही मैंने अपना सिर आचार्य श्री के चरणों पर रखा तो उन्होंने वात्सल्य पूर्ण कर-स्पर्श से मेरे मस्तक का स्पर्श किया। मैं गद्‌गद हो उठा। उनके परम मंगल रूप स्पर्श मात्र से मेरी सारी थकान दूर हो गई। भावों के अतिरेक से जो हम कहना चाह रहे थे, वह आंखों से हर्ष के अश्रुओं के रूप में प्रवाहित हो चला। जैसे एक नन्हा-सा शिशु वर्षों से दूर रही अपनी जननी से मिलकर प्रसन्नता का अनुभव करता है वैसा अनुभव मैंने भी किया।

आचार्यश्री ने मुझे पास ही चौंकी पर बैठाया। अपने शिष्य से आचार्य श्री ने थोड़ा सा गुड़ मंगवाया और मंगल के प्रतीक के रूप में अपने करकमलों द्वारा मुझे प्रदान किया। उसके बाद आचार्यश्री ने फरमाया–शिव मुनि जी! तुम आ गए! लंबे समय से मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था। ऐसा कहते हुए पूज्य आराध्य देव ने अपने करकमल का मृदुल स्पर्श मेरे सिर पर किया। उनकी वात्सल्यपूर्ण आंखें, उनका देदीप्यमान मुखकमल और उनके हृदय से बरसती हुई करुणा........सब कुछ दिव्य था। उनकी कृपा-वर्षा में बैठा मैं अपने अंतःकरण में असीम आत्मिक आनंद का अनुभव कर रहा था। आज भी वह दृश्य मेरे हृदय पटल पर अंकित है।"

परमादरणीय परमपूज्य डॉ. श्री शिव मुनि जी म. अपने आराध्य देव के श्रीचरणों में कई दिनों तक रहे। पूज्य आराध्य देव से साधना, स्वाध्याय और ध्यान के सम्बन्ध में समाधान प्राप्त किए। आपकी जम्बू-जिज्ञासाओं से आराध्य देव आनंदित थे। आपकी विनय वृत्ति ने पूज्य श्री को सम्मोहित बना

दिया था। साधना-स्वाध्याय से लेकर आहार-व्यवहार तक की प्रत्येक क्रिया को आपश्री आचार्य श्री को पूछ कर और उनकी आज्ञा प्राप्त कर सम्पन्न करते थे। आपश्री के इसी सद्गुण से आनंदातिरेक में भीगे हृदय से आराध्य देव आनंदाचार्य ने अपने प्रवचन में कहा–विनम्रता साधना का प्राणतत्व है और विनम्रता को देखना अथवा सीखना हो तो श्री शिव मुनि को देख लो। मुनिवर विनय धर्म के साक्षात् स्वरूप हैं।

पन्द्रहवां वर्षायोग

परम पूज्य महामनीषी मुनिवर की हार्दिक भावना थी कि मैं आचार्य देव के सान्निध्य में ही वर्षावास करूं। आपश्री ने अपनी भावना आचार्यश्री के समक्ष प्रकट भी की। परन्तु आचार्य श्री विशाल दृष्टि सम्पन्न महामुनि थे। वे कोई भी निर्णय करने से पूर्व वस्तुस्थिति पर सघन चिंतन करते थे। आपश्री के वर्षावास सम्बन्धी समस्त पहलुओं पर सूक्ष्म चिंतन करने के पश्चात् आचार्यश्री ने प्रवचन पाट से उद्घोषणा की–शिवमुनि जी मेरे अपने मुनि हैं और साधना सदन का भवन मुझसे दूर नहीं है। साधना सदन श्रीसंघ एक बड़ा श्रीसंघ है। इसलिए मैं अपने अजीज मुनिवर श्री शिव कुमार जी का वर्षावास साधना सदन पूना को प्रदान करता हूं और आशा करता हूं कि मेरे अजीज मुनिवर की ख्याति के अनुरूप ही श्रीसंघ समस्त व्यवस्थाएं संपादित करेगा।

आराध्य स्वरूप आचार्य देव की उक्त घोषणा से सर्वत्र प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। साधना सदन श्रीसंघ की खुशी का पारावार नहीं रहा। एक सुदीर्घ प्रार्थना का फल उसे प्राप्त हुआ था।

मंगलमय वर्षावास हेतु प्रवेश के दिन मूसलाधार बरसात हुई। वर्षा स्वयं मंगल की प्रतीक है। समूचे संघ के साथ प्रकृति ने भी अपना हर्ष प्रगट कर श्रद्धाधार महामनीषी मुनिवर का स्वागत किया।

वर्षावास के प्रथम दिन से ही श्रद्धास्पद श्रद्धेय मुनिवर ने अपने ओजस्वी प्रवचनों का क्रम प्रारंभ किया। साधना की सुगंध से सुवासित आपके प्रवचन-पुष्पों के लिए भ्रमर रूप श्रोता समूह साधना-सदन के प्रांगणोद्यान में उमड़-उमड़कर आने लगे। आपके प्रवचनों की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि उनका सीधा सम्बन्ध जीवन से जुड़ा होता है। आपके प्रवचनों में आदर्श के साथ जीवन का सच अनुस्यूत होता है। आप जो भी बोलते हैं उसमें आपका अनुभव जीवंत रहता है। आपका प्रत्येक वचन किताबों का

लिखा नहीं, हृदय से उपजा संगीत होता है। ऐसा हृदयगान जो बरबस ही श्रोता को बांध लेता है।

पूना के लोगों ने इस बात को पुन:-पुन: दोहराया कि पूना के इतिहास में धर्म प्रभावना की ऐसी लहर पहले कभी नहीं देखी गई। प्रवचनों में ऐसी उपस्थिति पहले कभी नहीं हुई। विशाल उपस्थिति का यह क्रम केवल वर्षावास में ही नहीं रहा, बल्कि वर्षावास के पश्चात् भी चलता रहा। आपके तेजस्वी व्यक्तित्व और वर्चस्वी वक्तृत्व के लोग दीवाने बन गए थे। वर्षावास की अवधि में विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम यथासमय सम्पन्न होते रहे। आराध्य स्वरूप आचार्य देव के सान्निध्य में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में भी आपश्री उपस्थित होते रहे। कार्यक्रमों के बिना भी, जब भी अवसर लगा आपश्री पूज्यश्री के दर्शनों के लिए-अपने आराध्य देव की चरणरज लेने के लिए आदिनाथ सोसायटी में उपस्थित होते रहे। पूज्य आचार्य देव के श्री चरणों में आपश्री को वही संबल और कृपा-आशीष प्राप्त होता रहा जो आत्मगुरु के अदृष्ट और ज्ञान गुरु के साक्षात् सान्निध्य में प्राप्त होता रहा था। अध्यात्म के अतल तल पर खिला-खिला आशीष और समर्पण का यह क्रम सतत चलता ही रहा।

आगमन आनंद का

परम पूज्य महामनीषी गुरुदेव डॉ. श्री शिव मुनि जी म. के सान्निध्य में श्रमण संघ के प्रथम पट्टधर आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी महाराज की जन्म जयंति समारोह आयोजित करने का साधना सदन श्रीसंघ ने निश्चय किया। उक्त अवसर पर आराध्य स्वरूप आचार्य श्री का आशीर्वाद और मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए पूज्य मुनिवर आदिनाथ सोसायटी पधारे। परम पूज्य आचार्य श्री ने गद्गद मन से मुनिवर को आशीर्वाद और समुचित मार्गदर्शन प्रदान किया। कृतकृत्य मन से मुनिवर ने अनुनय निवेदन किया-भगवन्! उक्त पावन प्रसंग पर मैं आपश्री के शिष्यों और साध्वी मंडल को आमंत्रित करता हूं। उक्त प्रसंग पर पधार कर वे समारोह की गरिमा में अभिवृद्धि करें।

आराध्य स्वरूप आचार्य देव ने फरमाया-शिव मुनि! श्रमण संघ के सरताज महापुरुष की जन्म जयंती के प्रसंग पर मैं स्वयं साधना सदन आऊंगा।

आचार्य देव के वचन सुनकर पूज्य मुनिवर भावातिरेक से स्तंभित बन

गए। आपश्री ने अनुनय-निवेदन किया—भगवन्! आप तो प्रतिक्षण मेरे हृदय में बसे हैं। आपका असीम आशीष क्षण-प्रतिक्षण मुझ पर बरस रहा है। लेकिन भगवन्! आपश्री का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं है। आपश्री अन्य मुनिराजों को भेज दीजिए!

आचार्य देव ने कहा—शिव मुनि! श्रद्धा के समक्ष स्वास्थ्य का प्रश्न गौण है। मैं अपने आचार्य भगवन् के जन्मदिवस समारोह पर अवश्य उपस्थित होऊंगा।

आचार्य देव के स्नेहादेश पर मनीषी मुनिवर अवनत बन गए। परम पूज्य आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म. के जन्मदिवस समारोह पर आचार्य देव अपने शिष्य समुदाय और साध्वी मंडल के साथ उपस्थित हुए। आचार्य देव के सान्निध्य में पूज्य आचार्य श्री का जन्मदिवस समारोह अपूर्व उत्साहपूर्वक आयोजित हुआ। कई सहस्र श्रावक-श्राविकाओं ने उपस्थित होकर श्रमण संघ के प्रथम सरताज का अभिनंदन किया। उक्त अवसर पर कई सांस्कृतिक और धार्मिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

मदर टेरेसा से भेंट

मानव का सर्वप्रथम धर्म मानव-सेवा है। मानव-सेवा से मानव की मानवता धन्य बनती है। सेवा से मानव महान बनता है, सभी का पूज्य और प्रिय बनता है।

मानव-सेवा में अपना सर्वस्व समर्पित कर देने वाली वात्सल्य मूर्ति मातृ हृदया मदर टेरेसा के नाम से सभी भारतवासी सुपरिचित हैं। उन्होंने हजारों लोगों के दुःख-दर्द को सुना, समझा और उसे दूर करने का प्रयास किया। उनके सेवा-सहयोग से हजारों लोगों ने सुखी जीवन प्राप्त किया। मानव-सेवा के क्षेत्र में उस सन्नारी को नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ।

एक बार मदर टेरेसा किसी कार्यक्रम में भाग लेने के लिए पूना आईं। जैन बन्धुओं ने मदर टेरेसा और श्रद्धेय महामुनिवर की भेंट की व्यवस्था सम्पन्न की। श्रद्धेय मुनिवर शुरू से ही मदर टेरसा की सेवा के प्रशंसक रहे हैं।

निर्धारित समय पर मंदर टेरेसा साधना सदन भवन में पधारीं। खादी की सीधी-सादी साड़ी में वह एक साधारण-सी वृद्ध महिला दिखाई दे रही थीं। उनके हाथ में माला थी। उन्होंने सिर पर वस्त्र बांधा हुआ था। उस समय पूज्य श्री प्रवचन कर रहे थे। पूज्य मुनिवर ने मदर टेरेसा के बैठने की समुचित

व्यवस्था कराई और उनकी मानवीय सेवा की भाव-पूर्ण शब्दों में प्रशस्ति की।

मदर टेरेसा ने मुनिश्री से पूछा–इतने सारे लोग यहां क्यों इकट्ठा हुए हैं?

श्रद्धेय मुनिश्री ने कहा–ये लोग सत्संग श्रवण के लिए यहां आए हैं।

लोगों का धर्म-उत्साह और श्रद्धेय मुनिवर का प्रवचन देख-सुन कर मदर टेरेसा को हार्दिक प्रसन्नता हुई। उन्होंने मुनिश्री से कहा–मैं आपके लिए प्रार्थना करूंगी और आप मेरे लिए प्रार्थना करें।

इस संक्षिप्त-सी भेंट में दोनों महापुरुष एक-दूसरे से विशेष प्रभावित हुए। वर्षावास की अवधि में प्रान्तीय और राष्ट्रीय स्तर के कई धार्मिक और राजनैतिक नेता मुनिश्री की सेवा में उपस्थित होकर मार्गदर्शन लेते रहे।

वर्षावास की परिसमाप्ति पर भी लोगों का उत्साह यथावत् बना रहा। पूज्य मुनिवर के प्रवचनों में भारी जनसमूह उमड़ता रहा। श्रीसंघ एवं डॉ. मधुबाला जैन की प्रार्थना पर तिलक स्मारक मंदिर में पूज्य श्री के सार्वजनिक प्रवचन हुए। 'बढ़ती हुई हिंसा और उन्माद में धर्मगुरुओं का दायित्व' इस विषय पर पूज्यश्री ने अपनी ओजस्वी शैली में धर्मगुरुओं के उत्तरदायित्व को प्रभावशाली ढंग से उजागर किया।

वर्षावास की परिसमाप्ति के पश्चात् परम पूज्य मुनिवर विहार करके आराध्य देव आचार्य भगवंत के श्रीचरणों में पधारे। आपश्री प्रलम्ब समय तक आचार्यश्री की सेवा में रहे। आचार्य श्री के सान्निध्य में रहते हुए आप अपना अधिकांश समय उनकी सेवा में ही बिताते थे। साधना सम्बन्धी अपनी जिज्ञासाओं का समाधान आचार्यश्री से प्राप्त करते थे। आगम के अगम्य रहस्यों को समझते थे। आचार्य श्री आपका हाथ पकड़कर प्रवचन स्थल पर पधारते। समय-समय पर अमूल्य शिक्षाकण आपको प्रदान करते रहते। एक बार जब आपके हाथ का सहारा थामे पूज्य आचार्य देव प्रवचन पाट की ओर बढ़ रहे थे, तब उन्होंने अंग्रेजी भाषा की एक कोटेशन कही–When duty call, we must obey. अर्थात् जब कर्त्तव्य पुकारे तब हम अवश्य जागरूक रहें। ऐसी अनेक शिक्षाएं पूज्य आचार्यश्री देते रहते थे।

आचार्यश्री की सेवा, आत्मसाधना, धर्मप्रभावना आदि कार्यों के साथ-साथ आपश्री संघ संपर्क सचिव के बृहद् दायित्व का संवहन भी कर रहे थे। संघ के मुनियों, साध्वियों और श्रावकों से निरन्तर आपश्री संपर्क रख रहे थे। संघ

से प्राप्त समुचित सुझावों को आप आचार्य श्री की सेवा में प्रस्तुत करते और आचार्यश्री समुचित समाधान प्रदान करते।

शंखनाद : साधु सम्मेलन का

जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्द ऋषि जी म. संघीय सुदृढ़ता और भावी नेतृत्व व्यवस्था हेतु विगत कुछ वर्षों से श्रमण सम्मेलन के विषय में सघन चिन्तन-मनन कर रहे थे। आचार्य श्री चाहते थे कि संघ के सभी मुनि परस्पर मिल-बैठकर संघ के विकास हेतु चिन्तन करें। साथ ही सर्वसम्मत निर्णय के आधार पर भावी संघशास्ता-युवाचार्य की नियुक्ति का प्रश्न भी अत्यन्त महत्वपूर्ण था। सर्वाधिकार सम्पन्न होते हुए भी आचार्य श्री समस्त मुनियों की राय जानना चाहते थे। इन्हीं मौलिक तथ्यों को दृष्टि पथ में रखते हुए आचार्य देव ने पूना नगर के प्रांगण में बृहद् साधु-सम्मलेन का आह्वान किया।

आचार्यश्री का आह्वान अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कांफ्रेंस के सहयोग से संघ के प्रत्येक साधु-साध्वी तक पहुंचाया गया। आचार्यश्री का आह्वान प्राप्त कर सकल साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका संघ में अपूर्व उत्साह फैल गया। भारतवर्ष के सुदूर अंचलों में विचरणशील मुनिराजों और साध्वी-मंडलों ने पूना को लक्ष्य बनाकर विहार यात्राएं प्रारंभ कर दीं।

पूना में बृहद् साधु-सम्मेलन

सन् 1987, एक से तेरह मई तक का समय मुनि सम्मेलन के लिए सुनिश्चित किया गया। भारत के सुदूर अंचलों से लगभग 400 साधु-साध्वियां और लाखों श्रावक-श्राविकाएं पूना पधारे। पूना के श्रद्धानिष्ठ श्रावकों ने पधारने वाले सभी मुनिमण्डलों का ऐतिहासिक स्वागत-अभिनन्दन किया। उक्त अवधि में पूरा नगर जैन धर्म के रंग में रंग गया था।

एक मई से सम्मेलन प्रारंभ हुआ। आराध्य आचार्य देव के सान्निध्य में सभी साधु-साध्वियों की बैठकें हुईं। शांतिरक्षक का दायित्व श्री सुमन मुनि जी म. ने वहन किया। संघीय समाचारी का पर्यवेक्षण किया गया। सर्वसम्मति से समाचारी का संशोधन-परिवर्द्धन किया गया। प्रत्येक आचार-प्रणाली पर सूक्ष्मता से विचार कर एक राय से स्वीकृति ली गई।

भावी संघशास्ता के लिए आचार्य श्री ने उपस्थित समस्त प्रतिनिधि

मुनिराजों से सघन विचार-विमर्श किया। अंततः दो नामों पर सर्वसम्मत निर्णय हुआ। तदनुसार श्रमण संस्कृति के सारस्वत पुरुष परम पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म. को उपाचार्य एवं तप और ध्यान के शिखर साधक पूज्य श्री शिव मुनि जी म. को युवाचार्य पद पर नियुक्त किया गया।

13 मई 1987 के दिन लाखों श्रावकों और सैकड़ों साधु-साध्वियों की उपस्थिति में जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् श्री आनंद ऋषि जी म. ने घोषणा की—श्रमण संघ की गौरवमयी परम्परा के अनुसार तथा संघ की सुचारू व्यवस्था के लिए मैं साहित्य मनीषी श्री देवेन्द्र मुनि जी म. एवं साधना स्नात मुनिरत्न श्री शिव मुनि जी महाराज को क्रमशः उपाचार्य और युवाचार्य पद पर नियुक्त करता हूं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि ये मुनिराज श्रमण संघीय गौरव गरिमा की अभिवृद्धि करते हुए जिनशासन और जिनधर्म की महान प्रभावना करेंगे।

आचार्य श्री की इस उद्घोषणा से सकल संघ में हर्ष की लहर दौड़ गई। लाखों श्रावकों ने जय आत्म, जय आनंद, जय देवेन्द्र, जय शिव के उद्घोषों से नभ-मण्डल को गुंजा दिया।

उसी अवसर पर परम पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म. को उपाचार्य पद की प्रतीक तथा श्रद्धेय श्री शिव मुनि जी म. को युवाचार्य पद की प्रतीक केसर रंजित चादरें समर्पित की गईं। इसी पुनीत प्रसंग पर परम पूज्य श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद' को श्रमणसंघीय महामंत्री पद पर नियुक्त किया गया।

ऐतिहासिक सफलता के साथ यह सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन से संघ सुदृढ़ बना और पारस्परिक स्नेह और सद्भाव में अभिवृद्धि हुई।

मात्र पन्द्रह वर्ष की दीक्षा पर्याय में विशाल संघ के सर्वोच्च पद पर मुनि श्रेष्ठ की नियुक्ति सांयोगिक नहीं थी। उसके पीछे आपकी गहन साधना और उत्कृष्ट चारित्राराधना का संबल था। मुनि जीवन में प्रवेश के क्षण से ही आपश्री ने—'समयं गोयम! मा पमायए!' की महावीर-शिक्षा को अपने जीवन की शिक्षा बनाया था। एक क्षण का भी प्रमाद किए बिना आपश्री साधना और स्वाध्याय में आगे बढ़ते रहे। उसी का यह सुपरिणाम रहा कि आपश्री समग्र संघ के चश्मेनूर और सरताज बन गए।

सोलहवां वर्षायोग

पूना वर्षावास के समय से ही खार-मुंबई श्रीसंघ की वर्षावास की

विनती चल रही थी। कालांतर में परम पूज्य युवाचार्य भगवन् डॉ. श्री शिव मुनि जी म. ने खार संघ को साधु-भाषा में वर्षावास की स्वीकृति प्रदान की।

पूना मुनि सम्मेलन के पश्चात् आराध्य देव आचार्य भगवन् की आज्ञा प्राप्त कर श्रद्धेय युवाचार्य श्री ने मुंबई की दिशा में विहार किया। आपश्री के विशेष आग्रह पर आपके मित्रवर्य पंजाब केसरी श्री विजय मुनि जी म. ठाणे-3 ने आपके साथ ही वर्षावास की स्वीकृति प्रदान की। मित्र मुनिवर के साथ श्रद्धेय युवाचार्य श्री चिंचवड़, कामसेठ, लोणावला, पनवेल होते हुए मुंबई के उपनगर घाटकोपर पधारे। इस विहार यात्रा में किंचित अंतराल से श्रमण संघीय महामंत्री श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद', पूज्य श्री मूल मुनि जी म., महासती डॉ. श्री सरोजश्री जी म., महासती श्री पुनीत ज्योति जी म. आदि साधु-साध्वीवृंद भी मुंबई पधारे। मुंबई महासंघ ने श्रद्धेय युवाचार्य श्री जी के नेतृत्व में साधु-साध्वी संघ का भव्य स्वागत किया।

घाटकोपर मुंबई से श्रद्धेय युवाचार्य श्री ठाणे पांच मुंबई के विभिन्न उपनगरों में विचरते हुए खार में वर्षावासार्थ पधारे। पंजाब भ्रातृ सभा के तत्वावधान में सकल श्रीसंघ ने पूज्य युवाचार्य श्री का भावभीना स्वागत किया।

खार मुंबई के 'अहिंसा भवन' में दो दिग्गज महामहिम मुनिराजों-युवाचार्य श्री जी एवं पंजाब केसरी श्री विजय मुनि जी म. के आगम आधृत सामयिक विषयों पर प्रवचनों से पूरे मुम्बई महानगर में अपूर्व धर्म जागृति की लहर फैल गई। मुंबई महानगर के लिए यह कहावत है कि वहां लोगों के पास शेष सब कुछ है पर समय नहीं है। संतों के प्रवचनों में वहां नाम मात्र की उपस्थिति होती है। परन्तु अहिंसा भवन इसका अपवाद रहा। पूरे वर्षावास में श्रोता उमड़-उमड़कर अपने श्रद्धाधार को सुनने के लिए उपस्थित होते रहे।

वर्षावास की संपूर्ण अवधि में समय-समय पर विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक समारोह और कार्यक्रम सम्पन्न होते रहे। परम पूज्य युवाचार्य श्री जी ध्यान और जप रूप साधना में सतत संलग्न रहे। आपकी ध्यान साधना से यहां के लोग विशेष रूप से जिज्ञासित हुए। अपने प्रवचनों में भी आपश्री ध्यान साधना की अनिवार्यता पर जोर देते रहे। लोगों की जिज्ञासा बढ़ी तो आपश्री ने प्रातःकालीन और सायंकालीन ध्यान-साधना के प्रयोग प्रारंभ किए। पूना मुनि सम्मेलन में ध्यान साधना को सम्पूर्ण भारत में प्रचारित करने

के लिए एक समिति का गठन किया गया था। उस समिति के अध्यक्ष के रूप में आपश्री जी को नियुक्त किया गया था। अपने उसी दायित्व के निर्वाह के लिए आपश्री ने ध्यान के सामूहिक प्रयोग प्रारंभ किए।

प्रात: और सांय एक-एक घण्टे के लिए आपश्री ने ध्यान का प्रशिक्षण प्रारंभ कया। नियमित रूप से ध्यानपिपासु भाई और बहनें उपस्थित होने लगे एक-एक घण्टे के अभ्यास से ही लोगों में ध्यान का आर्कषण बढ़ने लगा। एक घण्टे की आत्मसाधना से लोगों को विशेष लाभ हुआ, आत्मशान्ति प्राप्त हुई। शताधिक भाई-बहनें इससे लाभान्वित हुए।

ध्यान शिविर में खिला शिरीष

ध्यान साधना में लोगों की बढ़ती रुचि को देखते हुए आपश्री ने दस दिवसीय ध्यान शिविर का आयोजन किया। इस शिविर में 19 साधकों ने भाग लिया। आपश्री द्वारा आयोजित यह प्रथम ध्यान शिविर क्रांतिकारी परिणाम लेकर आया। मैंने (शिरीष मुनि) भी उस ध्यान शिविर में भाग लिया था। प्रस्तुत संदर्भ में स्वयं के बारे में आलेखन आवश्यक प्रतीत हो रहा है। मेरा जन्म उदयपुर के निकटवर्ती नाई ग्राम में ओसवाल कोठारी कुल में हुआ। गांव में पढ़ाई पूर्ण करने के पश्चात् मैं मुम्बई व्यापार के लिए आया था। मन में उमंग थी कि वस्त्र व्यापार में यश और धन अर्जित करूं। मैंने वस्त्र सप्लायर के रूप में कार्य शुरू किया। माता-पिता के आशीर्वाद के चमत्कार स्वरूप तथा अपने अथक श्रम के बल पर अल्प समय में ही मैंने पारिवारिक उम्मीदों से अधिक सफलता अर्जित की। ठीक उसी अवधि में जब मैं व्यापारिक पायदानों पर कदम बढ़ा रहा था–जैन संस्कारवश एक दिन युवाचार्य श्री के संपर्क में आया। पूज्यश्री के दर्शन कर मुझे अव्यक्त आत्मतोष की अनुभूति हुई। पूज्य प्रवर युवाचार्य श्री ने फरमाया–अशोक! (मातृ-पितृ प्रदत्त मेरा नाम अशोक था) यह ठीक है कि तुम व्यापार के लिए मुंबई आए हो। तुम व्यापार भी करो और समय निकाल कर ध्यान-योग का अभ्यास भी करो।

परम पूज्य युवाचार्य श्री का एक-एक शब्द मेरे मानस पर अंकित हो गया। परम पूज्य युवाचार्य श्री के निष्काम प्रेम ने मेरे मन को आन्दोलित बना दिया। मैंने सोचा–मुझसे बिना किसी प्रतिदान की आशा किए यह महापुरुष मेरे सुख और उन्नति के लिए उत्सुक है। मेरे भीतर आस्था का प्रदीप जल उठा। मुझे लगा कि–मुझे सद्‌गुरु मिल गए हैं।

परम पूज्य युवाचार्य श्री के परामर्शानुसार मैंने प्रारंभ में प्रातः और संध्याकालीन ध्यान शिविरों में जाना शुरू किया। ध्यान की उन छोटी-छोटी अवधियों में मुझे चमत्कारी अनुभव हुए। ध्यान के प्रति आकर्षण के साथ-साथ परम पूज्य युवाचार्य श्री के प्रति भी मेरी श्रद्धा प्रगाढ़ बनती गयी। फिर दश-दिवसीय ध्यान शिविर में मैंने भाग लिया। उस दस दिवसीय ध्यान शिविर ने मेरे मानस में क्रांति जगा दी। मेरे जीवन के लक्ष्य बदल गए। धन और यश अर्जन के मेरे स्वप्न ध्वस्त हो गए। मेरे अन्तर्जगत में नवीन संकल्प सृजित हुआ कि जीवन को भौतिक आकांक्षाओं को पूरा करने में नहीं गंवाऊंगा। आध्यात्मिक साधना में गहरे पैठ कर स्व-पर कल्याण के लिए अपने जीवन को समर्पित करूंगा। मुझे सुदृढ़ विश्वास हो चला था कि सोने-चांदी के सिक्कों को इकट्ठा कर लेना ही जीवन की सफलता नहीं है, जीवन की सफलता तो आत्म साधना से प्रतिफलित होती है। मैंने भौतिक व्यापार का परिहार कर आध्यात्मिक व्यापार में उतरने का संकल्प कर लिया।

युवाचार्य श्री से मैंने आत्मनिवेदन किया। युवाचार्य श्री ने फरमाया--तुम्हारा संकल्प अत्यंत शुभ है। अपने परम शुभ उद्देश्य के लिए बिना प्रमाद किए आगे बढ़ो। परंतु पारिवारिक अनुज्ञा अपरिहार्य होगी। जिन माता-पिता ने तुम्हें जन्म दिया है उनका महान उपकार और प्रथम अधिकार है तुम पर। उनकी संतुष्टि और अनुज्ञा प्राप्ति तुम्हारा प्रथम धर्म है। तुम्हारे प्रथम धर्म की सफलता पर जिनशासन का द्वार तुम्हारे लिए खुला है।

परमादरणीय गुरुदेव युवाचार्य श्री के सम्यक् निर्देशन में मुझे कहीं भी शिष्य-मोह की गंध नहीं दिखाई पड़ी। पूज्य आराध्य देव के प्रत्येक निर्देशन में मेरी आस्था विस्तृत बनती गई। फिर पारिवारिक आज्ञा के लिए मुझे काफी प्रतीक्षा करनी पड़ी। आखिर मई 1990 में मेरे परमोपकारी माता और परिजनों ने मुझे सहर्ष दीक्षार्थ अनुमति प्रदान की। यादगिरि (कर्नाटक) में 7 मई 1990 के दिन मुझे जिनशासन में दीक्षित होने का परम पुण्यमयी अवसर मिला।

अस्तु! श्रद्धाधार परम पुण्य पुंज सद्गुरु युवाचार्य श्री द्वारा समायोजित प्रथम ध्यान शिविर क्रांतिकारी सिद्ध हुआ। शिविर में भाग लेने वाले सभी सदस्य परम कृतज्ञता से भरे हुए थे। सभी ने यही कहा--जीवन का यह श्रेष्ठतम अनुभव है।

युवाचार्य होने के नाते परम पूज्य गुरुदेव के संघीय दायित्व भी काफी

बढ़ गए थे। परम पुरुषार्थी पूज्य युवाचार्य श्री जी अबाधित रूप से अपने दायित्वों की पूर्ति भी करते रहे। संघ के साधु-साध्वियों से संघ विकास हेतु आपश्री का निरंतर संपर्क चलता रहा। मुनिराजों के सुझावों और विकास कार्यों से आपश्री परम पूज्य आचार्य भगवन् को अवगत कराते रहे।

निकटस्थ क्षेत्रों में चातुर्मासार्थ विराजित आदरणीया साध्वी श्री पुनीत ज्योति जी म. एवं आदरणीया साध्वी श्री सरोजश्री जी महाराज का भी आपश्री को रचनात्मक कार्यों में पूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहा।

डॉ. श्री नरेन्द्र भानावत, न्यायाधीश श्री जसराज जी चोपड़ा, स्वामी आशानंद जी आदि भी वर्षावास की अवधि में आपश्री के सत्संग से लाभान्वित हुए। भारतवर्ष के सुदूर अंचलों से सहस्रों श्रावक-श्राविकाएं आपके दर्शनों के लिए पहुंचे। स्थानीय संघ के अध्यक्ष सर्वश्री नृपराज जी जैन, श्री जगतभूषण जी जैन, श्री जितेन्द्रनाथ जी जैन, श्री हरीशचंद्र जी जैन (जयसंस हाऊस), डॉ. मोहनलाल जी, श्रीमती ताराबेन आदि ने वर्षावास में भरपूर सेवा लाभ प्राप्त किया।

वर्षावास की परिसमाप्ति पर परम पूज्य युवाचार्य श्री के सान्निध्य में महासाध्वी श्री सरोजश्री जी म. की वैरागन बहन की दीक्षा सम्पन्न हुई। दीक्षार्थिनी बहन को कौमुदीश्री नाम प्रदान किया गया।

परम पूज्य युवाचार्य श्री जी वर्षावास की परिसमाप्ति पर मुंबई के उपनगरों में विचरते हुए इगतपुरी पधारे। इगतपुरी में ध्यान साधना का अंतर्राष्ट्रीय स्थल है। पहाड़ों की वादियों में स्थापित ध्यान केन्द्र में आपश्री ने निरंतर तीन माह तक मौन और ध्यान की साधना की। इस प्रलम्ब साधना से आपकी आत्म साधना में विशेष गहराई आई। आपश्री निरंतर नियमित रूप से प्रातः, दोपहर और रात्रि में ध्यान करते थे। अन्तर में आपश्री की साधना परिपक्व बनती रही और बाहर में आपका विमल सुयश वर्धमान बनता रहा।

इगतपुरी से पूज्य युवाचार्य श्री जी घोटी होते हुए नासिक पधारे। नासिक से वसंत पिंपलगांव पधारे। वहां पर साधिका बहन सज्जनबाई चोपड़ा से साधना सम्बन्धी अनुभवों का आदान-प्रदान हुआ। वसंत पिंपलगांव से लासलगांव, अनकाई आदि क्षेत्रों में धर्मोद्योत करते हुए आपश्री नगरसूल पधारे।

इंगियागार संपण्णे

निरंतर विहारों के कारण परमपूज्य युवाचार्य भगवन् के घुटने में दर्द हो

गया था। डॉक्टरों ने पूज्यश्री को विश्राम का परामर्श दिया।

उसी अवधि में आपश्री को आराध्य स्वरूप आचार्य देव का संदेश प्राप्त हुआ कि आप अहमदनगर पधारें। आचार्यश्री का आमंत्रण पाकर आपका हृदय पुलकित हो उठा। परन्तु डॉक्टरों की सलाह थी कि कुछ दिन विश्राम किया जाए। युवाचार्य श्री ने उसी समय मुझे (तत्कालीन वैरागी अशोक कोठारी) आचार्य श्री की सेवा में भेजा। मैं आचार्य श्री की सेवा में पहुंचा। आराध्य स्वरूप आचार्य देव के दर्शन कर मैंने धन्यता का अनुभव किया। परम पूज्य आचार्य देव का वात्सल्य प्राप्त कर मैं नखशिखान्त भाव-विभोर हो उठा। युवाचार्य श्री के समस्त समाचारों से मैंने पूज्य आचार्यश्री को अवगत कराया।

तब आचार्यदेव ने फरमाया–भाई! शिव मुनि जी से मिलना हो जाए तो अच्छा हो। दूर निकल जाने पर तो मिलना हो या न भी हो।

आचार्य भगवन् के इन सरल शब्दों में उनके हृदय के भावों को अनुभव कर मेरी यही धारणा बनी कि पूज्य युवाचार्य श्री को तत्काल आचार्य देव के दर्शनों के लिए उपस्थित होना चाहिए। पूज्य गुरुदेव युवाचार्य श्री के पास पहुंचकर मैंने आचार्य श्री के भावों से उन्हें परिचित कराया।

युवाचार्य श्री ने तत्क्षण फरमाया–कल ही अहमदनगर की दिशा में विहार होगा।

परम पूज्य युवाचार्य श्री सिकंदराबाद श्रीसंघ को भावी वर्षावास की स्वीकृति प्रदान कर चुके थे। आपको अल्प समय में प्रलम्ब विहार करना था। घुटने में दर्द भी था और डॉक्टरों का परामर्श विश्राम के लिए था। अहमदनगर होकर जाने में 200 कि.मी. विहार ज्यादा होना था। अपने श्रद्धाधार के प्रति श्रद्धा में किंचित् भी न्यूनता होती तो पर्याप्त कारण मौजूद थे। पर परम पूज्य युवाचार्य श्री के हृदय में आचार्य श्री के प्रति अपार आस्था थी। स्वयं की समस्त बाधाओं को गौण कर हृदय में आस्था का प्रदीप जलाए श्रद्धेय युवाचार्य श्री अपने आराध्य देव आचार्य भगवंत के दर्शनों के लिए यात्रायित बन गए।

बैजापुर में अक्षय तृतीया के सामूहिक पारणे आपके सान्निध्य में सम्पन्न हुए। वहां पर परम पूज्य प्रवर्तक श्री उमेश मुनि जी महाराज, परम पूज्य श्री रूपेन्द्र मुनि जी म. के दर्शन किए। वहां से श्रीरामपुर होते हुए आपश्री अहमदनगर पधारे। अपने आराध्य देव के दर्शन कर आपका हृदय

पुलकित बन गया। आपश्री से मिलकर पूज्य आचार्य देव ने हार्दिक प्रसन्नता अनुभव की।

परम पूज्य आचार्य देव से ध्यान सम्बन्धी विस्तृत चर्चाएं हुईं। ध्यान के नवीन अनुभव आपश्री ने आचार्यश्री के समक्ष प्रस्तुत किए। आचार्यश्री के निर्देश पर आपश्री ने चालीस आर्याओं को ध्यान के प्रयोग कराए। ध्यानानुभव से गुजरकर साध्वियों ने आपकी ध्यान विधि की भूरि-भूरि अनुशंसा की। आचार्य भगवन् ने भी अपना पूर्ण समर्थन आपको प्रदान किया। परम पूज्य युवाचार्य श्री जी अपने आराध्य देव आचार्य भगवन् के सान्निध्य में सप्ताह भर रहे। इस स्वर्णावधि में आचार्य देव ने आपश्री को आचार्य पद के कुछ रहस्यमय साधना-सूत्र विशिष्ट जप के रूप में प्रदान किए।

सप्त दिवसीय प्रवास के पश्चात् श्रद्धाधार आचार्य देव ने युवाचार्य श्री को मंगल पाठ प्रदान कर दक्षिण भारत के प्रस्थान के लिए भावपूर्ण विदाई दी।

❖❖❖

दक्षिण की धर्म धरा पर

ठहर जाना महावीर के मुनि का धर्म नही है, फिर भले ही स्थान साधनानुकूल ही क्यों न हो। महावीर का स्पष्ट उपदेश है— साधना न नगर मे होती है और न ही वन में। साधना नगर मे भी हो सकती है और वन मे भी हो सकती है। क्योंकि साधना का सम्बंध न नगर से है और न ही वन से। साधना का सम्बंध साधक के हृदय से है। साधना अतरात्मा मे होती है। स्थान सहयोगी हो सकता है परन्तु सहयोगी तत्त्व को साध्य नहीं बनाया जा सकता है।

दक्षिण की धर्मधरा पर

सतरहवां वर्षायोग

अहमदनगर से विहार कर परम पूज्य युवाचार्य श्री जी जामखेड, वार्शी, शोलापुर होते हुए सिकन्दराबाद पधारे। सिकन्दराबाद के श्रद्धालु श्रावकों ने भारी उत्साह से आपका अभिनंदन किया। प्रवचनों में अभूतपूर्व उपस्थिति रही। समय-समय पर धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न होते रहे। महापर्व पर्युषण के दिनों में तप और जप द्वारा विशेष धर्माराधना हुई।

वर्षावास की अवधि में ध्यान साधना पर एक सेमिनार का आयोजन हुआ जिसमें देश भर से आए प्रमुख विद्वानों ने भाग लिया। आपकी तप और ध्यान रूपी साधना सतत जारी रही। कई साधकों से समय-समय पर आपश्री की भेंट होती रही। साधनात्मक अनुभवों के आदान-प्रदान से साधना में विशेष गहराई आई।

सिकन्दराबाद वर्षावास में सुप्रसिद्ध जैन श्रावक श्री हस्तीमल जी मुणोत, श्री संपतलाल जी डुंगरवाल, श्री सज्जनराज जी कटारिया, श्री संपतराज जी कोठारी, श्री शेरमल जी जैन, श्री मांगीलाल जी सुराणा प्रभृति श्रावकों का विशेष सेवा-सहयोग रहा।

वर्षावास की परिसमाप्ति पर आपश्री 'कुलपाक जी' जैन तीर्थ पधारे। वहां के साधनानुकूल सुरम्य वातावरण में आपश्री ने कुछ समय रहकर साधना की। ध्यान और मौन में पर्यटन किया।

अठारहवां वर्षायोग

वर्ष 1989 वर्षावास की स्वीकृति पूज्य युवाचार्य श्री ने बोलारम श्रीसंघ को प्रदान की। शेषकाल में आस-पास के क्षेत्रों में विचरने के पश्चात् यथासमय आपश्री बोलारम पधारे। आपश्री के पदार्पण से श्रीसंघ में विशेष उत्साह का संचार हुआ। प्रवचन कार्यक्रम प्रारंभ हुए। आपश्री के साधना-स्नात

प्रवचनों से संघ में साधना की विशेष रुचि जागृत हुई। संघ की रुचि को देखते हुए आपश्री ने ध्यान शिविरों का अनुक्रम से समायोजन प्रारंभ किया। ध्यान-अभिप्सुओं ने पूरे उत्साह से शिविरों में भाग लिया। शिविरों की मांग निरंतर बढ़ती गई। वर्षावास की सम्पूर्ण अवधि में ध्यान शिविरों का आयोजन होता रहा। सहस्त्रों लोगों ने ध्यान को जाना और अनुभव किया। ध्यान साधना के प्रचार-प्रसार के रूप में यह वर्षावास अभूतपूर्व रहा। हैदराबाद में वर्षावासरत परम पूज्य श्री सुमन मुनि जी म. का पारस्परिक सहयोग स्मरणीय रहा।

यादगिरी पदार्पण

बोलारम का वर्षावास सम्पन्न कर श्रद्धास्पद युवाचार्य श्री जी अपने मुनिमण्डल के साथ यादगिरी पधारे। वहां पर साथी मुनि के अध्ययन हेतु तथा ध्यान साधना हेतु तीन मास तक विराजित रहे।

परम पूज्य श्रद्धेय गुरुदेव युवाचार्य श्री के सान्निध्य में मेरा (शिरीष मुनि–अशोक कोठारी) भी अध्ययन सुचारू रूप से चल रहा था। विगत तीन वर्षीय अवधि में गुरुदेव के सान्निध्य में रहकर मैं अध्ययन और साधना कर रहा था। शनैः-शनैः मेरे परिजनों का मन तैयार हुआ। मेरे वैराग्य की परिपक्वता को अनुभव करते हुए आखिर मेरे परिजनों ने मुझे दीक्षा की अनुमति प्रदान कर दी। मेरे जीवन के वे सर्वाधिक सुखद क्षण थे। मेरे परिजनों की अनुमति की सूचना से यादगिरी श्रीसंघ भी सुपरिचित बना। संघ में सर्वत्र हर्ष व्याप्त हो गया। श्रीसंघ ने परम पूज्य युवाचार्य श्री से दीक्षा महोत्सव के आयोजन की प्रार्थना की। श्रीसंघ के विशेष उत्साह को देखते हुए पूज्य युवाचार्य श्री ने अनुमति प्रदान कर दी।

रायचूर में होली चातुर्मास

रायचूर श्रीसंघ की होली चातुर्मास की भावभीनी प्रार्थना स्वीकार कर महामहिम युवाचार्य श्री रायचूर पधारे। वहां परम पूज्य श्री सुमन मुनि जी महाराज विराजमान थे। होली चातुर्मास समारोह सानन्द सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर रायचूर श्रीसंघ की उत्कृष्ट आग्रह सम्पन्न वर्षावास की विनती को आपश्री ने साधु-भाषा में स्वीकृति प्रदान की।

गुरुचरण में मन-भ्रमर

मेरी दीक्षा की तिथि 7 मई 1990 सुनिश्चित की गई थी। यादगिरी श्रीसंघ में अपूर्व उत्साह जगा था। दीक्षा महोत्सव को विशेष रूप से स्मरणीय

और सुशोभित बनाने के लिए यादगिरी श्रीसंघ ने पूज्य प्रवर्तक श्री रूपचंद जी म., उपप्रवर्तक श्री सुकन मुनि जी म., परम पूज्य मंत्री श्री सुमन मुनि जी म. प्रभृति मुनिराजों को भी आमंत्रित किया। यथासमय परम पूज्य युवाचार्य श्री एवं शेष मुनिसत्तम यादगिरी पधारे। उक्त अवसर पर बीस मुनिराजों की उपस्थिति हुई।

यथानुक्रम दीक्षा के कार्यक्रम सम्पन्न होने लगे। सकल श्रीसंघ के निर्देशन में शाहश्री बादलचंद जी, श्री मीठालाल जी धोका परिवार ने दीक्षा का विशेष लाभ लिया।

दीक्षा महोत्सव पर भारतवर्ष के कोने-कोने से श्रावक-श्राविकाएं पहुंचे। संपूर्ण नगर में भारी उत्साह देखा गया। इस धर्म-उत्साह में प्रकृति ने भी जलकण बरसा कर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। यादगिरी के इतिहास में यह दीक्षा महामहोत्सव स्वर्णाक्षरों में अंकित हुआ।

परम पूज्य गुरुदेव युवाचार्य भगवन् ने मुझे 'शिरीष मुनि' नाम प्रदान कर सांकेतिक प्रथम शिक्षा प्रदान की—मुनि! शिरीष-कुसुम से खिलो! शिरीष कुसुम से कोमल बनो! अपनी साधना सुगंध से समाज और समग्र संसार को महकाओ!

उन्नीसवां वर्षायोग

परमादरणीय पूज्य गुरुदेव युवाचार्य श्री यादगिरी से मध्यवर्ती ग्रामों-नगरों में जिनत्व के प्रदीप प्रज्ज्वलित करते हुए रायचूर पधारे। वर्षावास प्रवेश पर रायचूर निवासियों ने आपश्री का भव्य नागरिक अभिनंदन किया।

रायचूर वर्षावास स्वाध्याय, साधना, सेवा और धर्मप्रभावना की दृष्टि से ऐतिहासिक वर्षावास रहा। प्रतिदिन युवाचार्य श्री जी के सान्निध्य में आचारांग सूत्र का स्वाध्याय होता था। वहां के स्वाध्याय संघ के प्रमुख श्री मदनलाल जी धोका, श्री चमनलाल जी मुथा आदि का हार्दिक सहयोग अनुमोदनीय रहा।

वस्तुतः स्वाध्याय ही साधना का मूल आधार है। स्वाध्याय से ही स्व-अध्ययन की यात्रा प्रारंभ होती है। स्व के अध्ययन, चिन्तन-मनन से ही साधक आत्मसाक्षात्कार करता है। आत्मसाक्षात्कार ही अंततः आत्म-परिष्कार और परम निर्वाण का द्वार बनता है।

परम पूज्य युवाचार्य भगवन् ने अपने जीवन में सदैव स्वाध्याय को

प्रमुखता प्रदान की। अपने शिष्यों के लिए भी आपश्री ने स्वाध्याय की प्राथमिकता रखी। परिणामत: आपश्री ने सामूहिक स्वाध्याय को प्रोत्साहित किया जिसका सुंदर रूप रायचूर वर्षावास में देखने को मिला। इसी वर्षावास से पूज्य श्री ने विशेष रूप से बाल-संस्कार शिविरों और स्वाध्याय शिविरों का भी प्रारंभ किया। बाल-संस्कार शिविरों में बालकों को संस्कारित करने का विशेष अभियान शुरू हुआ।

इस वर्षावास में जनसेवा के लिए भी कई उपक्रम किए गए। आई कैम्प एवं ब्लड डोनेशन कैम्प लगाए गए। रक्तदान कैम्प में युवाओं और युवतियों ने उत्साहपूर्वक रक्तदान के रूप में जनसेवा की। तपस्या के क्षेत्र में भी रायचूर के भाई-बहनों ने विशेष उत्साह प्रदर्शित किया। कई मासखमण, कई अठाइयां और सैकड़ों उपवासों की आराधना हुई।

प्राय: प्रत्येक दृष्टि से रायचूर वर्षावास ऐतिहासिक रहा। आपश्री के तेजस्वी व्यक्तित्व से आबालवृद्ध प्रभावित हुआ। आपके ओजस्वी व्याख्यानों से जनता ने प्रभूत धर्म लाभ लिया।

ऐतिहासिक वर्षावास की परिसमाप्ति पर परम पूज्य युवाचार्य श्री जी ने कर्नाटक के विभिन्न नगरों और गांवों में विचरण किया। आपश्री सिन्धनूर पधारे। वहां पर महासती श्री शीतलकुंवर जी म. ठाणे-11 ने आपश्री के दर्शनों का लाभ लिया। पूज्य महासती जी से साधना सम्बन्धी चर्चाएं हुईं। सिंधनूर से आपश्री गजेन्द्रगढ़ पधारे। वहां पर सर्वधर्म सम्मेलन का भव्य आयोजन हुआ जिसमें प्राय: सभी धर्मों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस सम्मेलन से पारस्परिक सौहार्द में अभिवृद्धि हुई। इस महनीय कार्यक्रम को सफल बनाने में श्रीयुत सुखलाल जी बाघमार, श्री अशोक जी बाघमार, श्री धनराज जी बाघमार आदि बन्धुओं का सेवा-सहयोग सराहनीय रहा।

गजेन्द्रगढ़ से आपश्री गदग पधारे। वहां पर परम पूज्य आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म. की पुण्यतिथि समारोह सोत्साह आयोजित किया गया। आपश्री ने श्रमण-संघ के प्रथम पट्टधर आचार्य देव के जीवन और उनके महनीय सद्गुणों पर प्रकाश डाला। गदग श्रीसंघ ने अपूर्व सेवा का लाभ लिया।

गदग से आपश्री कुनूर पधारे। वहां पर आपश्री के प्रवचनों के साथ ही जनसेवा के विशेष कार्यक्रम सम्पन्न हुए जिनमें निर्धनों और जरूरतमंदों में अन्न वितरण उल्लेखनीय रहा।

इस प्रकार ग्रामानुग्राम विचरते हुए परम पूज्य युवाचार्य भगवन् कोप्पल नगर पधारे। वहां पर आपश्री के पुनीत सान्निध्य में कर्नाटक गज केसरी श्री गणेशलाल जी महाराज की पुण्यतिथि विविध धार्मिक कार्यक्रमों के साथ समायोजित की गई। आपश्री ने परमपूज्य श्री गणेशलाल जी महाराज के जीवन पर प्रकाश डालते हुए फरमाया—परम पूज्य महामुनि वास्तव में एक ऐसे संन्यासी थे जिनका हृदय प्राणीमात्र के लिए धड़कता था। मूक पशुओं की खातिर उन्होंने अपना समग्र जीवन अर्पित कर दिया था। उनकी प्राणवंत प्रेरणा से हजारों-हजारों गौओं का जीवन संरक्षित-सुरक्षित हुआ।

कोप्पल के सेवानिष्ठ सक्रिय कार्यकर्त्ता श्री चंपालाल जी मेहता, श्री अभयकुमार जी मेहता आदि बन्धुओं की सेवा विशेष रूप से सराहनीय रही।

हम्पी में पदार्पण

कोप्पल से विहार कर श्रद्धेय महामुनिवर पूज्य युवाचार्य श्री जी हम्पी पधारे। यह वही स्थान है जहां योगिराज सहजानंद जी ने वर्षों रहकर आध्यात्मिक साधना की थी। यहीं पर आत्मज्ञानी माता जी से आपका मिलन हुआ। पूज्या माता जी से साधना सम्बन्धी विविध चर्चाएं आपश्री ने कीं। यहां पर ध्यान और साधना के लिए उपयुक्त गुफाएं हैं जहां कुछ समय रहकर आपश्री ने ध्यान के प्रयोग किए। यहां पर ध्यान साधक श्री अनिल भूरट जी से आपका संपर्क हुआ। उनसे ध्यान संबंधी विशेष मंत्रणाएं हुईं एवं पारस्परिक अनुभवों का आदान-प्रदान हुआ। यहां के ऐतिहासिक स्थलों का भी आपश्री ने अवलोकन किया। यहीं पर गुजराती महासंघ की महासती भारती बाई जी से भी मिलन हुआ। तप और साधना में विकासमान आपके जीवन से महासती जी विशेष प्रभावित हुईं।

'नदी नाव संजोग' का लोकार्पण

श्रद्धेय युवाचार्य श्री जी हम्पी से गंगावती पधारे। यहां पर होली चातुर्मास का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ के आचार्य भी उक्त अवसर पर उपस्थित थे। इसी अवसर पर आपश्री के प्रवचनों का संग्रह 'नदी नाव संजोग' नामक पुस्तक का लोकार्पण किया गया। इस सुंदर पुस्तक का संपादन श्री तेजराज जी जैन (हैदराबाद) ने किया था और प्रकाशन रायचूर श्रीसंघ द्वारा किया गया था।

शिमोगा में महावीर जयंती

परम श्रद्धेय गुरुदेव युवाचार्य श्री जी गंगावती से विहार कर बल्लारी पधारे। वहां से शिमोगा पधारे। शिमोगा में आपश्री के पावन सान्निध्य में शासन नायक भगवान महावीर स्वामी की जयंती मनाई गई। कार्यक्रम अत्यंत सुंदर रहा। अपने उद्बोधन में आपश्री ने तीर्थंकर महावीर के उपदेशों पर प्रकाश डाला और बताया कि महावीर के उपदेशों को जीवन में उतारकर ही मानव सच्चे सुख को प्राप्त कर सकता है।

सेवा व सर्वोदय के तीर्थ में

ग्राम दर ग्राम एवं नगर दर नगर तीर्थंकर महावीर की धर्मदेशनाओं का उद्घोष करते हुए श्रद्धेय युवाचार्य श्री जी भद्रावती, अरसीकेश, बाणावाट, मुड़बद्री होते हुए धर्मस्थल पधारे। साम्प्रदायिक सद्भाव का यह एक अनुपम तीर्थस्थल है। यहां शिव का एक मंदिर है जिसमें पुजारी वैष्णव है एवं व्यवस्था संचालन जैन समुदाय के पास है। शिवालय के व्यवस्थापक श्री वीरेन्द्र हेगड़े हैं जो दिगम्बर जैन हैं। उन्होंने परम पूज्य युवाचार्य श्री जी का हार्दिक स्वागत किया। वहां की व्यवस्था देखकर आपश्री अतीव प्रसन्न हुए।

आपश्री ने देखा वहां अनेक धर्मशालाएं एवं कॉलेज बने हुए हैं। वहां शिक्षा और सेवा बिना किसी साम्प्रदायिक भेदभाव के प्रदान की जाती है। आर्थिक रूप से कमजोर युवक-युवतियों के सामूहिक विवाह किए जाते हैं। उसी अवधि में वहां पर 417 सामूहिक विवाह किए गए जिनका आर्थिक वहन मंदिर की संचालक समिति द्वारा किया गया। समाज सेवा के ऐसे कार्यक्रम वहां पर नियमित रूप से चलते रहते हैं।

वहां पर एक भव्य जैन मंदिर भी है जिसमें बाहुबली जी की विशाल प्रतिमा है। वहां पर प्रतिदिन हजारों दर्शनार्थी आते हैं जिनके भोजन और आवास की निशुल्क व्यवस्था संस्था की ओर से की जाती है।

सेवा, सद्भाव और सद्धर्म रूप पावन तीर्थ को देखकर युवाचार्य श्री अत्यंत संतुष्ट हुए। आपश्री ने उस संस्था के कार्यकर्त्ताओं और अधिकारियों को मंगल आशीष प्रदान किए, उनके महनीय कार्यों की अनुशंसा की और भविष्य में उक्त मिशन पर बढ़ते रहने की प्रेरणा प्रदान की।

श्रवण बेलगोला की तीर्थ धरा पर

परमादरणीय परम पूज्य गुरुदेव युवाचार्य श्री कर्नाटक के सुप्रसिद्ध तीर्थ

स्थल श्रवण बेलगोला पधारे। वहां पर गोम्मटेश्वर श्री बाहुबली जी की 57 फीट ऊंची प्रतिमा है जो एक विशाल पर्वत को तराशकर निर्मित की गई है। यह विशाल प्रस्तर प्रतिमा मूर्त्ति विज्ञान की अप्रतिम और अद्वितीय कलाकृति है।

जैन इतिहास का अध्ययन करते हुए हमें ज्ञात होता है कि ईसा की प्रथम सहस्राब्दि का कालखण्ड कर्नाटक राज्य में जैन इतिहास का स्वर्णिम काल रहा। उस अवधि में गंग नरेशों के शासनकाल में जैन संस्कृति का महान उत्कर्ष हुआ। गंग नरेशों के शासन के अंतिम वर्षों में अर्थात् दसवीं सदी के अंतिम वर्षों में राचमल्ल सत्यवाक्य चतुर्थ नामक राजा हुआ। उसका मंत्री एवं सेनापति चामुण्डराय नामक एक बुद्धिमान, शूरवीर और विद्वान पुरुष था। उसकी बड़ी विशेषता यह थी कि वह परम जिनेन्द्र भक्त था। जहां उसने कई युद्धों में कर्नाटक राज्य को विजयश्री दिलाई वहीं उसने अनेक भव्य जिनालयों का निर्माण और प्रतिष्ठाएं कराईं। उसी परम जिनेन्द्र भक्त चामुण्डराय ने ई. सन् 978 में बाहुबली जी की उक्त विश्व-प्रसिद्ध प्रतिमा का निर्माण कराया था। यह प्रतिमा अपने अद्भुत स्वरूप, विशालता, प्राचीनता और असामान्य विशेषताओं के कारण विश्व के कुछेक आश्चर्यों में परिगणित होती है।

परम पूज्य युवाचार्य श्री ने इस विश्व प्रसिद्ध प्रतिमा का अवलोकन किया। यहां स्थित अनेक अन्य जिनालयों का भी आपश्री ने अवलोकन किया एवं अपने गौरवशाली इतिहास को स्मरण किया।

श्रवण बेलगोल में विराजित भट्टारक श्री चारूकीर्ति ने आपश्री का स्वागत किया और वहां के इतिहास की बारीकियों से आपश्री को परिचित कराया। भट्टारक जी से आपकी साधना सम्बन्धी सघन चर्चाएं हुईं। वहां पर स्थित आचार्य श्री भद्रबाहु स्वामी की गुफा में आपश्री ने ध्यान के प्रयोग भी किए एवं श्रमण परंपरा के महान आचार्य श्री भद्रबाहु स्वामी की साधना सुगंध को अपनी अनुभूति में अनुभव भी किया।

वैदिक मंत्रों से सम्मान

श्रमण संस्कृति के ध्वजारोही परम पूज्य युवाचार्य श्री जी श्रवण बेलगोल की गुफाओं में की गई साधना-सुगंध के साथ यात्रायित बने। क्योंकि ठहर जाना महावीर के मुनि का धर्म नहीं है, फिर भले ही स्थान साधनानुकूल ही क्यों न हो। महावीर का स्पष्ट उपदेश है– साधना न नगर में होती है और

न ही वन में। साधना नगर में भी हो सकती है और वन में भी हो सकती है। क्योंकि साधना का सम्बंध न नगर से है और न ही वन से। साधना का सम्बंध साधक के हृदय से है। साधना अंतरात्मा में होती है। स्थान सहयोगी हो सकता है परन्तु सहयोगी तत्त्व को साध्य नहीं बनाया जा सकता है।

तीर्थंकर महावीर की देशनाओं को अपनी साधना में प्राणवंत बनाने वाले श्रद्धानिधि मुनिश्रेष्ठ साधना के लिए सुरम्य श्रवण बेलगोला से आगे के लिए प्रस्थित हुए। मध्यवर्ती ग्रामों और नगरों का स्पर्श करते हुए आपश्री मैसूर पधारे। मैसूर श्रीसंघ ने अपने हृदय की धड़कनों को बिछाकर आपश्री का स्वागत अभिनंदन किया। अपने प्रवचनों द्वारा आपश्री ने मैसूर में जिन-धर्म की प्रभावना की। मैसूर के ऐतिहासिक स्थलों का आपश्री ने अवलोकन किया।

मैसूर में स्थित वैदिक आश्रम के गणपति स्वामी श्री सच्चिदानंद जी ने आपश्री को अपने आश्रम में आमंत्रित किया। 'सबसे हिल-मिल चालिए' के सिद्धांतदर्शी परम पूज्य युवाचार्य श्री ने गणपति जी के आमंत्रण को सहर्ष स्वीकृति प्रदान की। यथासमय आपश्री आश्रम में पहुंचे। आश्रम के द्वार पर आश्रम में स्वाध्यायशील छात्रों ने वैदिक मंत्रोच्चार के द्वारा आपश्री का स्वागत और अभिनंदन किया। जैन और वैदिक भारत की इन दो प्राचीन संस्कृतियों की परस्पर भेंट हुई। स्वामी श्री सच्चिदानंद जी से साधना सम्बन्धी आपश्री की चर्चा हुई। आपश्री ने उनसे ऊँकार ध्यान विधि की जानकारी प्राप्त की।

मैसूर प्रवास में महावीर इंटरनेशनल के अध्यक्ष श्री कैलाश जी जैन का विशेष सेवा-सहयोग रहा। वहां पर कई अन्य कार्यक्रम भी सम्पन्न हुए।

मैसूर से मण्ड्या होते हुए आपश्री का बैंगलोर पदार्पण हुआ।

बीसवां वर्षायोग

होली चातुर्मास के अवसर पर ही परम पूज्य युवाचार्य श्री जी बैंगलोर श्रीसंघ को वर्षावास की स्वीकृति प्रदान कर चुके थे। बैंगलोर पदार्पण पर सकल श्रीसंघ की ओर से चामराज पेठ में आपश्री का नागरिक स्वागत किया गया जिसमें हजारों श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। यहां पर शांतिलाल जी वनमाली सेठ से आपश्री की विभिन्न विषयों पर चर्चाएं हुईं।

कुछ समय आपश्री ने बैंगलोर के उपनगरों में विचरण किया। यथासमय वर्षावास हेतु आपश्री शिवाजीनगर स्थित जैन स्थानक गणेश बाग में पधारे।

आपश्री का यह वर्षावास तप, जप, स्वाध्याय, साधना और धर्मप्रभावना आदि समस्त दृष्टियों से अत्यंत सफल रहा। तप के क्षेत्र में भाइयों और बहनों ने काफी उत्साह प्रदर्शित किया। श्रीमती विमला बाई शांतिलाल जी कांकरिया ने सुदीर्घ तपस्या की। उन्होंने कुल 71 दिन की तपस्या की। उनकी तपस्या की विशेषता यह रही कि उन्होंने प्रथम 34 दिनों तक तो निर्जल उपवास किया। आगे की तपस्या में गर्म जल ग्रहण किया। अन्य अनेक तपस्वियों ने भी उत्साहपूर्वक 61, 41, 31 और मासखमण तक की तपस्याएं कीं।

तपस्या के इस आलेख में स्वयं के संबंध में भी लिखना प्रासंगिक अनुभव कर रहा हूं। परम पूज्य गुरुदेव की प्रभावशाली प्रेरणाओं से मैंने भी तप के क्षेत्र में प्रवेश किया। पहले एकासन तप प्रारंभ किया जिसकी अवधि छह मास की रही। बाद में षणमासीय एकासन तप मंदिर के कलशारोहण के रूप में सोलह उपवास किए। तप में अल्प सत्त्व होने पर भी यह संभव हुआ, इसका श्रेय पूज्य युवाचार्य श्री जी को ही है।

तप के साथ-साथ जप में भी भाई-बहनों ने पर्याप्त उत्साह दिखाया। महामंत्र नवकार का इक्यावन दिवसीय सामूहिक अखण्ड जाप किया गया। सेवा के क्षेत्र में समय-समय पर आई कैम्प, रक्तदान कैंपों का भी सफल आयोजन हुआ। बाल-संस्कार शिविर और स्वाध्याय शिविर भी पूरे वर्षावास की अवधि में सम्पन्न होते रहे।

वर्षावास की परिसमाप्ति पर बैंगलोर के उपनगरों में विहार हुआ। तदनंतर आगे के लिए विहार प्रारंभ हुआ।

होली चातुर्मास श्रीरामपुर में

परमादरणीय परम पूज्य युवाचार्य श्री जी आचार, विचार और सुसंस्कारों के बीजारोपण करते हुए, ग्रामानुग्राम विचरते हुए श्रीरामपुर पधारे। यहां पर होली चातुर्मास संपन्न हुआ। श्रमण संघीय सलाहकार परम पूज्य श्री सुमन मुनि जी म. भी इस अवसर पर आपके साथ थे। कई नगरों के श्रीसंघ आगामी वर्षावास हेतु प्रार्थना-पंक्ति में थे। आपश्री ने धोबी पेठ मद्रास श्रीसंघ को वर्षावास की साधु-भाषिक स्वीकृति प्रदान कर उपकृत किया।

श्रीरामपुर से आपश्री दोंड बालापुर पधारे।

आनंदाचार्य का महाप्रयाण

जिस समय आपश्री दोंड बालापुर में विराजित थे उस समय दिनांक 28

मार्च 1992 को आपश्री को समाचार प्राप्त हुआ कि जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् श्री आनंद ऋषि जी म. ने मारणांतिक संलेखना के साथ संथारा ग्रहण किया है। इस समाचार से आपश्री रोमांचित बन गए। जिनशासन के पुरोधा साधक को आपश्री ने अपने शिष्य वृंद के साथ भाव-वंदन किया।

ठीक उसी दिन पुन: समाचार प्राप्त हुआ कि जिनशासन नायक आचार्य देव महाप्रयाण कर गए हैं। इस त्वरित समाचार से सकल संघ वज्राहत हो उठा। आपश्री भी कुछ क्षण के लिए सघन शोक सागर में पैठ गए। आचार्य देव का वात्सल्य-वारिधि स्वरूप आपके नयनों में साक्षात् हो उठा। परंतु अपने साधना संबल से आपश्री ने सहजता को धारण किया। मुनि संघ और श्रावक संघ को आपश्री ने सांत्वना प्रदान की। त्वरित आलेख लिख कर आचार्य देव के शिष्य परिवार से संवेदना-संबंध स्थापित किया। अपने दायित्व के अनुरूप परमपूज्य उपाचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज से संपर्क स्थापित कर उनसे सानुरोध प्रार्थना की कि–परम पूज्य महामुनिवर! संघ-नायक आचार्य देव के स्वर्गारोहण से रिक्त हुए जिनशासन के आचार्य पाट को अपने सबल नेतृत्व का आधार प्रदान कीजिए। सकल श्रीसंघ आपका अनुगामी है। आचार्य पाट पर आपका हार्दिक स्वागत और अभिनंदन है।

श्रद्धांजलि सभा

दिनांक 2 अप्रैल 1992 को परमादरणीय आचार्य देव के सद्गुणों के श्रद्धार्चन के लिए श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। उक्त अवसर पर नवदीक्षित मुनि के रूप में सर्वप्रथम मुझे ही बोलने के लिए कहा गया। अपने भावों को मैंने अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया–बन्धुओ! हमारे संघनेता आचार्य प्रवर एक ज्योतिर्धर आचार्य थे। उन्होंने जिनशासन की प्रभावना में जो अभिवृद्धि की वह युगों-युगों तक स्मरणीय रहेगी।

तदनंतर श्रमणसंघीय सलाहकार मंत्री मुनीश्वर श्री सुमन मुनि जी म. ने पूज्य आचार्य देव के चरणों में श्रद्धार्चन करते हुए फरमाया–मुझे अपने जीवन काल में आचार्य देव के दर्शनों का कई बार पुण्य लाभ प्राप्त हुआ। पूज्य आचार्य देव विलक्षण विशेषताओं के धनी महापुरुष थे। उनके स्वर्गारोहण से जिनशासन का एक प्रभास्वर रत्न हमारे मध्य से विलुप्त हो गया है। उनका ज्योतिपुंज व्यक्तित्व जन-जन के लिए प्रेरणास्पद रहेगा।

उसके बाद परम श्रद्धेय गुरुदेव महामहिम युवाचार्य श्री ने आचार्यश्री के कई प्रेरणास्पद जीवन-प्रसंगों पर प्रकाश डाला। आपश्री ने फरमाया–परम

श्रद्धेय आचार्य देव का विरह जैन जगत के लिए तो एक बहुत बड़ा आघात है ही, मैं स्वयं अपने लिए इस घटना को एक असह्य क्षति अनुभव कर रहा हूं। आचार्य देव ने मुझ पर जो वात्सल्य वर्षा की, वह मेरे जीवन की सर्वोच्च संपदा है। वे मुझे अपने शिष्य की तरह प्रेम करते थे। परम पूज्य आचार्य देव का व्यक्तित्व एवं कृतित्व अद्वितीय था। उन्होंने अपने जीवनकाल में संघ के अभ्युदय में जो योगदान दिया वह वर्णनातीत है। उन जैसा सच्चा साधक और संघशास्ता आज के युग में दुर्लभ है। वे जैन जगत के ही नहीं, बल्कि समग्र विश्व की विरल विभूति थे। वस्तुतः वे कल्पवृक्ष थे, चिंतामणि रत्न थे। उनके ये आदर्श गुण ही संघ के लिए प्रकाश स्तंभ बनकर संघ को मार्गदर्शन देते रहेंगे। हमें परम पूज्य आचार्य देव के उच्च आदर्शों को अपने जीवन में ढालकर श्रमण संघ को सुदृढ़ करना होगा।

इक्कीसवां वर्षायोग

दोंड बालापुर से विहार कर परम पूज्य युवाचार्य श्री जी के.जी.एफ., तिरुपति बालाजी, आरकोणम होते हुए मद्रास पधारे। टी.नगर में भव्य प्रवेश समारोह आयोजित हुआ। उक्त नागरिक अभिनंदन के प्रसंग पर मद्रास के सभी संघों के भाई-बहन उपस्थित हुए। यहां पर महासती श्री अजित कुंवर जी महाराज आदि साध्वी मंडल से मिलन हुआ। यहीं पर आपश्री के सान्निध्य में दीक्षा महोत्सव का समायोजन हुआ।

मद्रास के उपनगरों में विचरण करते हुए परम पूज्य युवाचार्य श्री निर्धारित समय पर वर्षावास के लिए धोबीपेठ पधारे। संघ ने आपश्री का भव्य स्वागत किया।

वर्षावास में अच्छी धर्मप्रभावना हुई। जप, तप, साधना, स्वाध्याय और सेवा के कार्यक्रम सतत प्रगतिमान रहे।

इस वर्षावास में आपश्री का स्वास्थ्य प्रायः प्रतिकूल ही रहा। वर्षीतप के साथ सुदीर्घ विहारों के कारण आपश्री देह से काफी दुर्बल हो गए। चिकित्सकों ने वर्षीतप को स्थगति कर देने के लिए कहा। परन्तु आपश्री देह से ही अस्वस्थ हुए थे, मन से नहीं। आपश्री ने वर्षीतप को स्थगित नहीं किया। धीरे-धीरे आपश्री स्वस्थ हो गए। आपका तप:संकल्प अविजित रहा।

धोबीपेठ वर्षावास में श्री सज्जनराज जी तालेड़ा आदि कार्यकर्ताओं का विशेष सेवा सहयोग रहा।

वर्षावास की परिसमाप्ति के पश्चात् आपश्री ने मद्रास के उपनगरों में विचरण किया। उस समय आपके शिष्यों का एम.ए. का अध्ययन चल रहा था। अध्ययन के कारण सुदीर्घ विहारों को विराम दिया गया।

दस दिवसीय ध्यान शिविर

ध्यान आपकी दैनंदिन साधना का अनन्य अंग रहा है। समय-समय पर आपश्री ध्यान की सामूहिक साधना भी करते रहे हैं। मद्रास में भी आपश्री ने दस दिवसीय ध्यान शिविर का आयोजन किया जिसमें शताधिक साधक-साधिकाओं ने भाग लिया। तत्र विराजित महासती जी ने भी ध्यान शिविर में भाग लिया।

आगामी वर्षावास की साधु-स्वीकृति वेपेरी श्रीसंघ को प्रदान की गई।

बाईसवां वर्षायोग

मद्रास के उपनगरीय क्षेत्रों में विचरण करते हुए परम पूज्य गुरुदेव महामहिम युवाचार्य श्री शिव मुनि जी म. वर्षावासार्थ वेपेरी पधारे। इस वर्षावास में अनेकानेक रचनात्मक कार्य हुए। समय-समय पर विद्वद् गोष्ठियां और ध्यान शिविरों के आयोजन हुए। मद्रास विश्वविद्यालय में ध्यान योग साधना पर एक विशेष सेमिनार का आयोजन हुआ जिसमें आपश्री ने भगवान महावीर की साधना पर एक विशेष परिपत्र पढ़ा। इसी अवसर पर डॉ. सागरमल जी जैन से भगवान महावीर की ध्यान-साधना विषय पर गहन चर्चा हुई। इस सेमिनार के सफल समायोजन में श्री दुलीचंद जी जैन एवं श्री कृष्ण चन्द जी चौरड़िया का विशेष सहयोग रहा। लंदन जैन श्रीसंघ के प्रमुख भी इस सेमिनार के उद्घाटन पर उपस्थित थे।

सर्वोच्च अकादमिक सम्मान : डी.लिट की उपाधि

साधना, स्वाध्याय और धर्मप्रभावना के कार्यों में सदैव संलग्न रहते हुए ही साहित्य साधना के लिए भी आपश्री समय निकालते रहे हैं। विगत वर्षों के अध्ययन और अनुभव के आधार पर आपश्री ने एक ग्रन्थ की रचना की जिसका नाम है–'ध्यान : एक दिव्य साधना'। ध्यान सम्बन्धी अध्ययन और अनुभवों का यह एक श्रेष्ठ ग्रन्थ है। ध्यान साधकों और विद्वद् वर्ग में इस ग्रन्थ को भरपूर प्रशंसा मिली। इस ग्रन्थ का प्रकाशन बैंगलोर वर्षावास में हुआ। इसी ग्रन्थ के आधार पर वेपेरी वर्षावास की अवधि में आपश्री को डी. लिट. की उपाधि प्राप्त हुई।

आचार्य श्री तुलसी का आमंत्रण

जैसा कि मैं पुन: पुन: लिखता रहा हूं कि परम श्रद्धेय युवाचार्य श्री जी बाल्यावस्था से ही असाम्प्रदायिक मानसिकता के स्वामी रहे हैं। पूज्यश्री का यह एक अद्भुत गुण रहा है। आपने सदैव समस्त सम्प्रदायों का सम्मान किया है। कभी किसी का विरोध नहीं किया। जहां अच्छाई दिखाई दी उसे पूर्ण प्रेम और सम्मान प्रदान किया। आपके इस सद्गुण ने जहां आपश्री के जीवन को सद्गुणों का सागर बनाया है वहीं आपश्री को सर्वप्रिय भी बनाया है।

आपश्री के वेपेरी वर्षावास के समानांतर ही तेरापंथ धर्मसंघ के विद्वान मुनि श्री राजकरण जी का वर्षावास भी था। मुनिश्री से आपका निरंतर मिलन होता रहा। साधना और स्वाध्याय संबंधी चर्चाएं और अनुभवों का आदान-प्रदान होता रहा।

वर्षावास के अंतिम दिनों में आचार्य श्री तुलसी का संदेश आपश्री को प्राप्त हुआ, जिसमें आचार्यश्री ने आपश्री के ध्यान-साधना सम्बन्धी कार्यक्रमों की भूरि-भूरि प्रशंसा की एवं वर्षावास के पश्चात् दिल्ली पधारने का आपसे अनुरोध किया।

आचार्य श्री तुलसी की जन्म जयंती समारोह में आपश्री ने भाग लिया। उस अवसर पर तत्कालीन भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री वेंकटरमण से शाकाहार के प्रचार-प्रसार हेतु आपश्री की चर्चा हुई।

इसी वर्षावास की एक अन्य उपलब्धि रही—'भगवान महावीर मेडिटेशन एण्ड रिसर्च सेंटर ट्रस्ट दिल्ली' की स्थापना। इस ट्रस्ट के लिए दिल्ली के निकट ही गुड़गांव में भूखण्ड खरीदा गया। एतदर्थ ट्रस्ट के स्थानीय सदस्यों ने उदारता पूर्वक सहयोग प्रदान किया।

इस वर्षावास में श्री किशनचंद जी बेताला, श्री जी. एल. सुराणा, श्री डी. एस. लोढ़ा आदि का सेवा-सहयोग स्मरणीय रहा। मद्रास प्रवास में डी. आई.जी. श्री श्रीपाल जी जैन की समय-समय पर कार्यक्रमों में उपस्थिति रही। उनसे विविध विषयों पर चर्चा होती रही।

ध्यान साधना शिविर

वर्षावास की परिसमाप्ति पर एक और ध्यान शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में शताधिक भाई-बहनों ने भाग लिया। महासती

श्री आदर्श ज्योति जी म. ने भी ध्यान शिविर में भाग लिया। दस दिवसीय इस शिविर के अति सुंदर परिणाम रहे। शिविरार्थियों ने कृतज्ञ मन से युवाचार्य श्री का अभिनंदन किया। साधकों ने कहा–उक्त दस दिवसीय अवधि उनके जीवन का सर्वाधिक सुखद अनुभव है।

शिविर की परिसमाप्ति पर महासती श्री आदर्श ज्योति जी म. के सान्निध्य में साधनारत वैराग्यशीला बहन आत्मज्योति जी की दीक्षा हुई। परम पूज्य युवाचार्य श्री जी ने दीक्षा पाठ प्रदान किया।

द्वि वर्षावासीय मद्रास प्रवास के पश्चात् परम पूज्य युवाचार्य श्री ने विहार का कार्यक्रम उद्घोषित किया। मद्रास श्रीसंघ आपश्री की विदाई हेतु एकत्रित हुआ। उक्त अवसर पर श्रमण संघीय सलाहकार मंत्री मुनिवर श्री सुमन मुनि जी म. एवं खंभात सम्प्रदाय के श्री कमलेश मुनि जी भी उपस्थित हुए। श्रीसंघ और मुनि संघ से भावभीनी विदाई प्राप्त कर परम पूज्य युवाचार्य श्री जी ने मद्रास से प्रस्थान किया।

बैंगलोर में होली चातुर्मास

मद्रास से विहार कर परम पूज्य गुरुदेव युवाचार्य श्री जी ग्राम और नगरों में धर्मोद्योत करते हुए बैंगलोर पधारे। वहां पर होली चातुर्मास का आयोजन हुआ। भावी वर्षावास के लिए कई श्रीसंघ प्रार्थना-पंक्ति में थे। पूना श्रीसंघ की प्रबल प्रार्थना को आपश्री ने स्वीकृति प्रदान की।

इसी अवसर पर उपाध्याय प्रवर श्री केवलमुनि जी म. के दर्शनों का पुण्य लाभ प्राप्त हुआ। मुनिजनों का पारस्परिक मिलन अत्यंत प्रेमपूर्ण एवं स्नेहपूर्ण रहा।

हुबली में अक्षय तृतीया

परमादरणीय परम पूज्य युवाचार्य श्री जी बैंगलोर से विहार कर दोंड बालापुर होते हुए हुबली नगर में पधारे। हुबली में अक्षय तृतीया के पारणक सम्पन्न हुए। वहां पर श्री सौरभ मुनि जी म. एवं श्री हर्षवर्धन मुनि जी म. ने आपश्री के दर्शनों का लाभ लिया।

❖❖❖

महाराष्ट्र
में
धर्म प्रचार

विरोधों के प्रस्तर–पथों और प्रेम के प्रसून–पथों पर निराबाध आपकी यात्रा चलती रही। विजन–वनो से गुजरते हुए, गिरि कंदराओं को लाघते हुए ध्यान का दीप आपके अन्तर में प्रज्ज्वलित रहा। विजन वन आपके लिए परीषहों का नहीं, ध्यान का आराम बने। वन की प्रकृति में रम कर आप ध्यान करते रहे। गिरि–गुफाओं में कई–कई दिनों तक निराहार रहकर आपने ध्यान के अतल मे डुबकियां लगाई। श्रवण बेलगोल स्थित भद्रबाहु जी की ध्यान गुफाओं में बैठकर आपने ध्यान किया।

ध्यान मे पुष्पित आपकी साधना निखरती गई। गहरे और गहरे आपश्री पैठते गए। आपने गृहत्याग के आत्मलक्ष्य में पूर्ण सफलता हस्तगत की।

महाराष्ट्र में धर्म प्रचार

तेईसवां वर्षायोग

बेलगांव, कोल्हापुर, इचलकरंजी, सांगली, माधोपुर, तासगांव आदि ग्रामों और नगरों में धर्म देशना से जनमानस को उपकृत करते हुए श्रद्धानिधि युवाचार्य श्री जी वर्षावास हेतु पूना पधारे।

साधना सदन पूना श्रीसंघ ने भव्य समारोह पूर्वक आपश्री का चातुर्मासिक प्रवेश कराया। चातुर्मास का कार्यक्रम 'शिव शंकर मंगल कार्यालय' में रखा गया। वर्षावास के प्रथम दिन से ही प्रवचन में श्रोताओं की विशाल उपस्थिति रही। पूरा पूना नगर जैन धर्ममय हो गया।

वर्षावास की अवधि में विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न होते रहे। इस वर्षावास में युवाचार्य श्री जी ने ध्यान साधना से समाज को जोड़ने पर विशेष रूप से अपना ध्यान केन्द्रित किया। पूज्यश्री ध्यान साधना के अपने मधुर अनुभवों में समाज को सम्मिलित करने के लिए उत्सुक थे। इसीलिए पूज्य श्री प्रवचनों में भी ध्यान साधना पर ही अधिक से अधिक प्रकाश डालते रहे। नियमित रूप से ध्यान-शिविरों के आयोजन किए गए। श्रावक-श्राविकाओं ने भी आपकी प्रेरणाओं से प्रेरित बनकर अधिकाधिक संख्या में ध्यान-शिविरों में भाग लिया। आपश्री द्वारा विकसित वैज्ञानिक ध्यान विधि के सुंदरतम परिणाम रहे। जिसने भी शिविर में भाग लिया, उसने दस अन्य लोगों को शिविर में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। दीप से दीप जलते गए। समग्र पूना नगर ध्यानमय बन गया। प्रत्येक शिविरार्थी ने अनुपम आनंद का अनुभव किया।

ध्यान के प्रति पूना निवासियों में ऐसा उत्साह जगा कि स्थायी ध्यान केन्द्र की स्थापना के लिए लोग उत्सुक हो गए। इसी हेतु झमकुबाई सिंघवी परिवार ने पूना के निकट ही पांच एकड़ का भूखण्ड प्रदान किया। इसी

भूखण्ड पर आत्म-आनंद ध्यान केन्द्र की स्थापना की गई। संघ के समस्त सदस्यों ने इस केन्द्र के विकास के लिए भरपूर सहयोग प्रदान किया।

वाजपेयी जी से चर्चा

आपश्री के सान्निध्य में समायोजित एक समारोह में भाजपा नेता अटल बिहारी वाजपेयी उपस्थित हुए। आपश्री जी ने अपने उद्‌बोधन में गोवंश की हत्या पर प्रतिबंध लगाने हेतु प्रभावशाली और हृदयस्पर्शी वक्तव्य दिया। आपश्री के वक्तव्य से प्रभावित होकर वाजपेयी जी ने कहा–मुनि जी का वक्तव्य भारतीय संस्कृति का प्राण है। मैं मुनिश्री से शत-प्रतिशत सहमत हूं। जहां-जहां भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी है वहां हमने गोवध के विरोध में कानून बनाए हैं। आप हमें आशीर्वाद प्रदान करें, ताकि हम केन्द्र में पहुंच सकें और पूरे देश में अहिंसात्मक वातावरण का निर्माण कर सकें।

अष्ट दिवसीय प्रवचन माला

पर्युषण की अवधि में संध्या में अष्ट दिवसीय प्रवचन माला का आयोजन किया गया। शिवाजी राव भोसले प्रमुख विद्वानों ने इसमें भाग लिया। इस प्रवचन माला में विभिन्न धार्मिक विषयों पर संगोष्ठियां हुईं।

आराध्य स्वरूप आचार्य सम्राट् श्री आनंद ऋषि जी म. के शिष्य पूज्य प्रवर श्री कुंदन ऋषि जी म., श्री प्रवीण ऋषि जी म. आदि मुनिवृंद जो आदिनाथ सोसायटी में विराजित थे, उनसे भी समय-समय पर मैत्रीपूर्ण संपर्क होता रहा।

वर्षावास के अंत में आपश्री ने 'सिद्ध समाधियोग' के ध्यान शिविर का भी प्रयोग किया। रेकी साधना का कोर्स भी साधकों को कराया।

वर्षावास की समाप्ति के पश्चात् भी ध्यान शिविरों के कार्यक्रम सम्पन्न होते रहे। उस समय आपश्री जी तालेडा फार्म पर तीन माह तक एकान्त मौन ध्यान में रहे। वे अनुभव अपने आप में अनूठे रहे। श्री कन्हैयालाल जी तालेडा परिवार की सेवाएं सराहनीय रहीं। मानव कल्याण ट्रस्ट में टीचर ट्रेनिंग कार्यक्रम का भी आपश्री ने सूक्ष्मता से अवलोकन किया। ट्रस्ट के प्रमुख श्री ऋषि प्रभाकर जी से भी आपकी साधना सम्बन्धी सघन चर्चाएं समय-समय पर होती रहीं।

पूना में ही तपस्विराज श्री सहज मुनि जी महाराज एवं श्री राम मुनि जी म. ठाणा दो से सुमधुर मिलन हुआ।

पूना के सुप्रसिद्ध डॉ. के. एच. संचेती, डॉ. कल्याण गंगवाल एवं अन्य कई विद्वान निरंतर आपके सम्पर्क में रहकर सेवा लाभ लेते रहे। पूना के मेयर भी आपके दर्शनों एवं प्रवचनों का लाभ प्राप्त करते रहे।

अहमदनगर श्रीसंघ विगत कई वर्षों से आपश्री के वर्षावास के लिए प्रयत्नशील था। आगामी वर्षावास हेतु भी अहमदनगर श्रीसंघ ने तीव्र प्रयास किए। श्रीसंघ की उत्कृष्ट भावना को देखते हुए आपश्री ने साधु-भाषा में स्वीकृति प्रदान की।

पूना से विहार कर आपश्री महाराष्ट्र के तेजस्वी संत ज्ञानेश्वर की तपोभूमि आलंदी पधारे। आलंदी से सिद्धाचलम पधारे। वहां पर महासती श्री सुशील कुंवर जी, महासती श्री सन्मति कुंवर जी आदि ठाणा ने आपके दर्शनों का लाभ प्राप्त किया। प्रवचन, सत्संग के साथ ही बाल-संस्कार का विशेष कार्यक्रम यहां संपन्न हुआ।

सिद्धाचलम से आपश्री मध्यवर्ती ग्रामों का स्पर्श करते हुए राजनगांव पधारे जो अष्टविनायक में से एक विनायक जी का स्थान है। यहां पर पण्डितरत्न श्री आशीष मुनि जी महाराज आदि मुनिवृन्द से मधुर मिलन हुआ। यहां पर आपश्री ने स्कूल में बाल-शिक्षा का कार्यक्रम रखा। बच्चों को सम्यक् संस्कार प्रदान किए एवं शाकाहार का महत्व समझाया। सभी बच्चों को सामूहिक रूप से शाकाहार का संकल्प प्रदान किया।

इस प्रकार कदम-दर-कदम सद्धर्म के शिक्षा कण बिखेरते हुए परम पूज्य युवाचार्य श्री जी घोड़नदी पधारे। घोड़नदी का प्रवास भी प्रभावशाली रहा। वहां से अम्बिका नगर पधारे जहां पूज्य श्री आदर्श ऋषि जी म., श्री अक्षय ऋषि जी म., श्री महेन्द्र ऋषि जी म., श्री प्रशांत ऋषि जी म. आदि मुनिवृंद ने आपश्री का स्वागत किया। मुनिवरों का संगम अत्यंत मधुर रहा। साधना और स्वाध्याय सम्बन्धी चर्चाएं हुईं। मुनिवरों की ध्यान सम्बन्धी कई जिज्ञासाओं का आपश्री ने समाधान किया एवं ध्यान के प्रयोग भी कराए।

चौबीसवां वर्षायोग

परमादरणीय परम पूज्य युवाचार्य श्री जी निर्धारित कार्यक्रमानुसार अहमदनगर पधारे। अहमदनगर श्रीसंघ ने माणिकनगर में आपश्री का भव्य स्वागत किया। माणिकनगर से आपश्री धार्मिक परीक्षा बोर्ड के भवन में पधारे।

अहमदनगर परमादरणीय आराध्य स्वरूप आचार्य देव श्री आनंद ऋषि जी म. की तपोभूमि रही है। इसी हेतु इस नगर से आपश्री का विशेष लगाव रहा। यहां पर आचार्य श्री ने अपनी साधना के कई वर्ष पूरे किए। इतना ही नहीं, अपनी अंतिम साधना भी पूज्यश्री ने यहीं सम्पन्न की। अहमदनगर की मिट्टी के कण-कण में आनंदाचार्य की साधना की सुवास बसी हुई है। नगर के प्रत्येक नागरिक के हृदय में आनंदाचार्य आराध्य देव के रूप में बसे हुए हैं। आनंदमूर्ति आनंदाचार्य ने यहां कई रचनात्मक कार्यक्रमों को पूर्ण किया। इस नगर पर उनके अगणित उपकार हैं।

आनंदाचार्य की तपोभूमि में परमपूज्य युवाचार्य श्री का संघ की ओर से हार्दिक अभिनंदन हुआ। वहां विराजित तपस्विराज श्री मगन मुनि जी म., तपस्वी श्री सुंदरलाल जी म., पंडित रत्न श्री नेमीचंद जी म. आदि मुनिवृन्द ने आपश्री का स्वागत किया। उक्त मुनिवृंद के अतिरिक्त श्री चन्द्र ऋषि जी म. (भगत जी म.), श्री सज्जन ऋषि जी म., श्री अक्षय ऋषि जी म., श्री प्रशांत ऋषि जी म. आदि मुनिवृन्द ने भी परम पूज्य युवाचार्य श्री जी की सन्निधि में वर्षावास किया।

परम पूज्य युवाचार्य श्री जी के प्रवचनों में जनता उमड़-उमड़कर आने लगी। आपके साधना-स्नात प्रवचनों से जनता में विशेष जागरूकता आई। ध्यान शिविरों के आयोजन भी नियमित होते रहे। लोगों ने बढ़-चढ़कर ध्यान शिविरों में भाग लिया।

आपश्री के प्रवचनों में साधारणतः जनसेवा और जीवोमंगलम् आदि विषयों की प्रधानता रहती है। फलतः जनसेवा के रूप में हॉस्पिटल निर्माण का संकल्प श्रीसंघ ने लिया। गौशालाओं के लिए राशियां एकत्रित की जाती रहीं। रक्तदान शिविर का आयोजन भी किया गया।

बाल-संस्कार और स्वाध्याय शिविर भी ध्यान शिविरों के समानांतर चलाए गए। इन शिविरों में बालकों, युवाओं और वृद्धों ने पूरे उत्साह से भाग लिया।

वर्षावास की परिसमाप्ति पर साध्वियों की प्रार्थना पर आपश्री जी ने एक ध्यान शिविर का आयोजन किया, जिसमें महासती श्री सुशील कुंवर जी म., महासती श्री आदर्शज्योति जी म., महासती श्री अर्चनाश्री जी म., महासती श्री विमलकुंवर जी म., महासती श्री सुमन कुंवर जी म. आदि महासाध्वियों ने भाग लिया।

आपश्री के निर्देशन में पण्डित प्रवर श्री नेमीचंद जी म. एवं विराजित मुनिवृन्द के मध्य सामयिक विषयों पर विचार गोष्ठी हुई। उपरोक्त समस्त कार्यक्रम सुन्दर और रचनात्मक रहे।

अहमदनगर के अष्टमासीय प्रवास में श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री हस्तीमल मुणोत, मंत्री श्री सुरेश कोटेचा, मंत्री श्री कोठारी जी, श्री किशोर मुणोत प्रभृति सकल संघ का समर्पित सहयोग रहा।

अहमदनगर से विहार कर परम पूज्य युवाचार्य श्री जी सावेड़ी पधारे जहां पर पंडित श्री नेमिचंद जी महाराज के साथ आगमों का विहंगमावलोकन किया। यहीं पर उपाध्याय श्री केवल मुनि जी म. के शिष्य श्री सुरेश मुनि जी म. आपके सान्निध्य में आए। अकेले होने के कारण आपश्री ने उन्हें अपने साथ रखा। उन्होंने एक वर्षावास आपके सान्निध्य में पूरा किया।

साईं की शिरडी में

सावेड़ी से विहार कर आपश्री राहुरी, कोल्हार, लोणी, राहत होते हुए शिरडी पधारे। शिरडी भारत का सुप्रसिद्ध स्थल है। साईं बाबा की तपोभूमि के रूप में यह स्थल विख्यात है। 'सबका मालिक एक' के अमर उद्‌गाता बाबा जी ने इसी भूमि पर रहकर मानवता को प्रेम, मैत्री, सौहार्द और भ्रातृ-भाव का अमर संदेश दिया था। बाबा जी के संदेशों की सुगंध आज भी यहां अनुभव की जा सकती है। बाबा जी के उच्चादर्शों के कारण आज यह स्थान तीर्थ का गौरव पा चुका है। बाबा जी के अदृष्ट आशीर्वाद के पिपासु लाखों श्रद्धालु यहां प्रतिवर्ष आते हैं।

शिरडी में होली चातुर्मास के प्रसंग पर कई श्रीसंघ वर्षावास की प्रार्थनाओं के साथ उपस्थित हुए। मुंबई खार श्रीसंघ के अत्याग्रह को आपश्री ने साधु भाषा में स्वीकृति प्रदान की। नासिक श्रीसंघ को महावीर जयंती की स्वीकृति दी।

शिरडी के युवकों ने सुंदर व्यवस्था की। सभी जातियों और धर्मों के लोगों ने आपका अभिनंदन किया एवं प्रवचन सुना। यहां असाम्प्रदायिक मानसिकता का दर्शन कर आपश्री अत्यंत प्रसन्न हुए।

समन्वय के सूत्रधार

शिरडी से परम पूज्य युवाचार्य श्री जी लक्ष्मीवाड़ी, कोपरगांव, येवला, अनकाई आदि क्षेत्रों में धर्मोद्योत करते हुए मनमाड़ पधारे। विगत कुछ वर्षों

से मनमाड़ में साम्प्रदायिकता का स्वर बुलन्द हो रहा था। समाज खण्ड-खण्ड में बंटा हुआ था। आपश्री ने अपनी समन्वय स्नात वाणी से लोगों के हृदयों से पारस्परिक विद्वेष मल को धोकर सभी को प्रेम और संगठन का पाठ पढ़ाया। आपश्री की वाणी का अचूक असर हुआ। संघ में प्रेम और समन्वय का सूत्रपात हुआ।

मनमाड़ से आपश्री लासलगांव पधारे। वहां पर भी मनमाड़ जैसी ही स्थिति थी। परन्तु आपश्री के सार्थक प्रयासों से वहां भी प्रेम और मैत्री का वातावरण बन गया।

नासिक में ऐतिहासिक वीर जयंती

'मित्ती में सव्व भूवेसु' का शंखनाद करते हुए श्रमण संघ अनुशास्ता युवाचार्य श्री जी लासलगांव से नासिक पधारे। पूज्य युवाचार्य श्री जी ने संघ को आमंत्रित कर अपने भाव रखे—बन्धुओ! नासिक में जैन धर्म की विभिन्न परम्पराओं को मानने वाले श्रावक हैं। आप लोगों की परम्पराएं भिन्न होते हुए भी आप सभी के आराध्य देव तो भगवान महावीर ही हैं। अपने आराध्य देव के जन्मोत्सव को आप सभी को एक साथ मिलकर आयोजित करना चाहिए।

आपश्री के विचारों का संघ ने पूर्ण अनुमोदन किया। सभी परम्परा प्रमुखों से मिलकर निर्णय लिया गया कि वीर जयंती का आयोजन सामूहिक रूप से किया जाएगा। वैसा ही किया गया। समग्र नासिक जैन संघ ने एक साथ मिलकर वीर जयंती का आयोजन किया। खण्ड-खण्ड में विभाजित शक्ति के एक हो जाने से यह समारोह ऐतिहासिक बन गया।

तब से आज तक नासिक में यही परम्परा चल रही है। वीर जयंती के प्रत्येक प्रसंग पर लोग आपश्री को स्मरण करते हैं।

पच्चीसवां वर्षायोग

साधना से विशेष ऊर्जा प्राप्त कर नवीन उत्साह के साथ परम श्रद्धेय युवाचार्य श्री जी ने देवलाली कैम्प से मुंबई की दिशा में विहार किया। गोठी, इगतपुरी, भिवंडी, ठाणा आदि क्षेत्रों का स्पर्श करते हुए आपश्री भाण्डुप साधना सदन में पधारे। वहां से चातुर्मासार्थ भव्य प्रवेश मुंबई खार के अहिंसा हॉल में हुआ। समग्र संघ ने पलक-पांवड़े बिछाकर आपश्री का स्वागत-अभिनंदन किया।

इस वर्षावास में ध्यान-साधना के माध्यम से आपश्री ने जनकल्याण का

विशेष अभियान चलाया। नियमित रूप से ध्यान शिविरों का आयोजन होता रहा। रेकी साधना के भी प्रयोग हुए। साथ ही आपश्री ने अमेरिकन पद्धति 'सील्वा माइण्ड कंट्रोल' की साधना भी संपूर्ण की। इस प्रकार खार मुंबई का वर्षावास साधना एवं धर्मप्रभावना की दृष्टि से पूर्णतः सफल रहा।

सरस्वती विद्या केन्द्र की स्थापना

विगत कुछ वर्षों से एक ऐसे साधना केन्द्र की स्थापना के लिए विचार-विमर्श चल रहा था जहां से स्थायी रूप से ध्यान सम्बंधी गतिविधियों का संचालन किया जा सके। इस दिशा में नासिक श्रीसंघ एवं श्रावकरत्न श्री शान्तिलाल जी दुग्गड़ के प्रयास सराहनीय रहे। उन्हीं प्रयासों को अंततः मूर्त्त रूप मिला एवं नासिक की देवभूमि में गजपंथा तीर्थ की तलहटी में साढ़े ग्यारह एकड़ का भूखण्ड प्राप्त किया गया। इस भूखण्ड पर सर्वश्री नृपराज जी जैन अध्यक्ष जैन महामण्डल, श्री शान्तिलाल जी दुग्गड़, श्री रोहित मेहता, श्री जशवंत कोठारी एवं अन्य अनेक उदारमना सज्जनों के सहयोग से केन्द्र की स्थापना की गई। उक्त केन्द्र का निर्माण कार्य नासिक में प्रारंभ किया गया।

छब्बीसवां वर्षायोग

मुंबई से विहार कर परम श्रद्धेय युवाचार्य श्री जी अनेक ग्रामों और नगरों में परिभ्रमण करते हुए नासिक की देवभूमि गजपंथा तीर्थ में स्थापित श्री सरस्वती विद्या केन्द्र में पधारे। वहां पर कुछ दिनों के लिए आपश्री विराजमान रहे। वहां पर एक दिवसीय ध्यान शिविर का आयोजन किया गया। बालकों के लिए भी एक शिविर रखा गया।

नासिक श्रीसंघ कई वर्षों से आपश्री के वर्षावास के लिए उत्सुक था। फलतः इस वर्ष के वर्षावास का सौभाग्य श्रीसंघ को प्राप्त हुआ। नासिक के आस-पास के क्षेत्रों को धर्मजल से सिंचित करते हुए यथासमय वर्षावासार्थ नासिक में भव्य प्रवेश हुआ। वर्षावास में प्रवचनों का नित्य क्रम प्रारंभ हुआ। नासिक के श्रद्धालु श्रावकों ने नियमित भारी उपस्थिति के साथ आपकी वाणी श्रवण का पुण्य लाभ प्राप्त किया। वर्षावास की संपूर्ण अवधि में ध्यान शिविर, स्वाध्याय शिविर एवं बाल संस्कार शिविरों का आयोजन होता रहा। इन शिविरों में आबालवृद्ध ने पूरे उत्साह से भाग लिया।

शासन प्रभावना की दृष्टि से यह वर्षावास अत्युत्तम रहा। लोगों में ध्यान

साधना की रुचि का विकास हुआ।

वर्षावास के पश्चात् कुछ समय तक आपश्री ने नासिक के उपनगरों में विचरण किया। बाद में आपश्री श्री सरस्वती विद्या केन्द्र में पधारे।

ध्यान दीप

मुनि जीवन में प्रवेश के समय से ही परम पूज्य युवाचार्य श्री जी के हृदय में ध्यान के प्रति विशेष आकर्षण रहा है। मुनि जीवन में प्रवेश से पूर्व भी आपश्री ने 'ध्यान' विषय पर पर्याप्त अध्ययन किया। ध्यान साधकों से आप मिलते रहे और ध्यान के बारे में जानने की कोशिश करते रहे। समय-समय पर ध्यान के प्रयोग भी आप करते रहे। भगवान महावीर की ध्यान मुद्रा से आप आकर्षित हुए। भगवान महावीर की ध्यान मुद्रा ने ही आपश्री के अन्तर्मन में जैन दीक्षा के संकल्प को अंतिम रूप दिया। मुनि जीवन की भूमिका में प्रवेश कर आपश्री ध्यान साधना में संलग्न हुए। आगमों में उपलब्ध ध्यान और कायोत्सर्ग की विधियों से आपश्री ध्यान साधना का नियमित अभ्यास करने लगे। इस अभ्यास से आपश्री के अन्तर में आनंद की फुहारें झरने लगीं। पर प्यास बढ़ती ही गई। प्यास की उसी तड़प के साथ आपश्री ने ध्यान की अन्यान्य विधियों के भी प्रयोग किए। सूत्र से सूत्र जुड़ते रहे। आपश्री ध्यान साधना के अतल तल में डुबकी लगाते रहे। अपनी ध्यान यात्रा में आपश्री ने इतर ध्यान परम्पराओं के प्रयोग भी किए। विश्व प्रसिद्ध ध्यानयोगी कल्याणमित्र गोयंका जी की ध्यान विधि का अनुभव भी आपने प्राप्त किया। कई प्रसंगों पर परंपरावादी लोगों के विरोध और आक्रोश का गरलपान भी शिवशंकर बनकर आपश्री ने किया। पर प्यासा ही प्यास की तड़प को जान सकता है। आपश्री का आत्मविश्वास सुदृढ़ था कि मैं उन्मार्ग पर नहीं हूं। आप इस विषय में भी संबुद्ध थे कि सत्य का सत्कार प्रथम पत्थरों से ही होता है।

विरोधों के प्रस्तर-पथों और प्रेम के प्रसून-पथों पर निराबाध आपकी यात्रा चलती रही। विजन-वनों से गुजरते हुए, गिरि-कंदराओं को लांघते हुए ध्यान का दीप आपके अन्तर में प्रज्ज्वलित रहा। विजन वन आपके लिए परीषहों का नहीं, ध्यान का आराम बने। वन की प्रकृति में रम कर आप ध्यान करते रहे। गिरि-गुफाओं में कई-कई दिनों तक निराहार रहकर आपने ध्यान के अतल में डुबकियां लगाईं। श्रवण बेलगोल स्थित भद्रबाहु जी की ध्यान गुफाओं में बैठकर आपने ध्यान किया।

ध्यान में पुष्पित आपकी साधना निखरती गई। गहरे और गहरे आपश्री पैठते गए। आपने गृहत्याग के आत्मलक्ष्य में पूर्ण सफलता हस्तगत की।

साधक की साधना जब परिपक्व बनती है तो उसका अन्तर्जगत आनंद से व्याप्त हो जाता है। उसके भीतर आनंद के झरने बहने लगते हैं। साधक की करुणा उसे प्रेरित करती है कि वह अपने आनंद में सभी को सहभागी बनाए। साधक की यही करुणा उसे समाज से जोड़ती है। वह समाज को उन विधियों और सूत्रों का संदेश देता है जिनसे वह भी आनंद को भोग सके। प्रत्येक महापुरुष ने, प्रत्येक साधक ने अनंत अतीत से ऐसा किया है। ऐसा करना उसकी करुणा की विवशता है। वह अपने आनंद को समेट कर नहीं बैठ सकता। वह बह जाना चाहता है, बंट जाने के लिए उमंगित बन जाता है। परम आदरणीय श्रद्धेय युवाचार्य श्री जी भी अपने आनंद को लोगों में बांटते रहे हैं। ऐसा वे इसलिए नहीं करते हैं कि उनके अनुयायिओं की संख्या में वृद्धि हो। ऐसा वे करुणा से प्रेरित बन कर करते हैं। उनका सांस-सांस करुणा और प्रेम का पर्याय है।

जन-साधारण ध्यान के आनंद में सुविधापूर्वक पैठ सके इसके लिए करुणा सागर परम पूज्य युवाचार्य श्री जी ने ध्यान की सार-संक्षिप्त विधि का शोध किया। उस विधि के अनुसार कोई भी व्यक्ति मात्र त्रिदिवसीय अवधि में ध्यान के आनंद से सुपरिचित बन सकता है। उसी विधि के साथ पूज्यश्री ने एक अभियान चलाया। ध्यान शिविरों की एकाएक चहुं ओर से मांग उठने लगी। वस्तुतः जिस भी व्यक्ति ने शिविर में भाग लिया वह मंत्रमुग्ध बन गया। उसने अपने अनुभव अन्यों को बताए। आकर्षण बढ़ता गया और समग्र संघ में ध्यान सर्वाधिक प्रिय विषय बन गया।

श्री सरस्वती विद्या केन्द्र में ध्यान शिविर

4 दिसम्बर 1997 को श्री सरस्वती विद्या केन्द्र के निसर्गीय प्रांगण में प्रथम त्रिदिवसीय ध्यान शिविर शुरू हुआ। इस शिविर में कई मुमुक्षुओं ने भाग लिया। इस ध्यान शिविर में भाग लेने वाले साधकों को अपूर्व आनंदानुभव प्राप्त हुआ। साधकों के चामत्कारिक अनुभवों को श्रवण कर लोगों में शिविरों में भाग लेने की होड़-सी लग गई। फिर यह क्रम चलता ही रहा। चरण बढ़ते रहे और ध्यान दीप प्रज्ज्वलित होते रहे।

पग-पग दीप जले

परम पूज्य युवाचार्य श्री जी नासिक से औरंगाबाद के लिए यात्राशील

हुए। आगामी वर्षावास के लिए आपश्री औरंगाबाद श्रीसंघ को वर्षावास की साधु-स्वीकृति प्रदान कर चुके थे। विहार क्रम में आपश्री दिंडोरी पधारे। वहां पर ध्यान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 28 साधकों ने भाग लिया। यहीं पर आपश्री ने जिले के सभी अध्यापकों को सम्बोधित किया। अपने उद्‌बोधन में आपश्री जी ने अध्यात्म, ध्यान एवं योग पर प्रकाश डाला एवं सद्‌गुरु के स्वरूप और दायित्वों का सुंदर विश्लेषण किया। विद्यार्थियों के जीवन निर्माण में शिक्षकों के दायित्वों पर विशेष प्रकाश डाला।

दिंडोरी से आपश्री बसंत पिंपलगांव पधारे। वहां पर भी तीन दिन का शिविर रखा गया जिसमें 40 साधकों ने भाग लिया। सभी शिविरार्थियों ने ध्यान का शुद्ध अनुभव प्राप्त किया। वहां पर साधिका श्रीमती सज्जनबाई नाथीबाई आदि बहनों का धर्म-ध्यान के कार्यक्रमों में सराहनीय सहयोग रहा। वहां से तलेगांव, अनकाई, येवला आदि क्षेत्रों में धर्मोद्योत करते हुए आप वैजापुर पधारे जहां ध्यान शिविर का आयोजन हुआ। यहां पर 'श्रावक धर्म एवं जीवन जीने की कला' पर आपश्री ने प्रशिक्षण दिया। वहां से आपश्री खण्डाला पधारे। यहां पर भी एक दिवसीय शिविर रखा गया। वहां से आपश्री औरंगाबाद पधारे। औरंगाबाद में भी ध्यान शिविरों के आयोजन हुए। वर्षावास से पूर्व ही वहां पर ध्यान साधना के प्रति लोगों में विशेष जिज्ञासा का जन्म हुआ।

एलोरा यात्रा

परम पूज्य युवाचार्य श्री जी वर्षावास पूर्व के शेषकाल में एलोरा पधारे। आपश्री ने एलोरा की विश्व प्रसिद्ध गुफाओं का अवलोकन किया। एलोरा गुफाएं इस तथ्य का साक्ष्य हैं कि अत्यंत प्राचीन काल से ही भारत ने कला के क्षेत्र में बुलन्दियों का स्पर्श कर लिया था। ऐतिहासिक सांस्कृतिक धरोहर का सूक्ष्म अवलोकन कर आपश्री वहां पर स्थित दिगम्बर परम्परा द्वारा संचालित छात्रावास में पधारे। वहां के ट्रस्टियों ने आपका भावभीना स्वागत किया। वहां पर आपश्री जी ने नैतिकता, धार्मिकता एवं जीवन जीने की कला का प्रशिक्षण छात्रों को दिया।

वहां से विहार करके परम पूज्य युवाचार्य श्री जी औरंगाबाद के प्रवेश द्वार छावनी में पधारे जहां श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री चम्पालाल जी देसर्डा, कार्याध्यक्ष श्री सुवालाल जी छल्लाणी, महामंत्री श्री प्रकाश जी बाफणा, श्री प्रेमचंद जी फूलफगर आदि संघ के गण्यमान्य सदस्यों ने आपश्री का स्वागत

किया। वहां पर प्रवचन सभा का आयोजन हुआ। आपश्री का प्रवचन जितना जीवन-स्पर्शी रहा उतना ही आत्मस्पर्शी भी रहा।

नियति लेख

गुरु गणेशनगर में विराजित श्री सम्पत मुनि जी परम पूज्य युवाचार्य श्री के दर्शनों के लिए उपस्थित हुए। मुनिश्री ने आपसे आग्रह किया कि आपश्री शीघ्र ही गुरु गणेश नगर पधारें एवं ध्यान शिविर का लाभ प्रदान करें। आपश्री ने फरमाया–मुनिश्री! आज आप यहीं विराजें, कल हम सभी गुरु गणेश नगर चलेंगे। परन्तु मुनि जी शीघ्रता में थे। उन्होंने आपश्री के वचनों पर ध्यान नहीं दिया।

नियति को कुछ और ही मंजूर था। श्री संपत मुनि जी ने जैसे ही प्रस्थान किया, वैसे ही मूसलाधार वर्षा होने लगी। पास के मकान में मुनि जी रुक गए। घण्टा भर बाद वर्षा रुकी तो मुनि जी गुरु गणेश नगर पहुंच गए। परंतु रात्रि में ही किसी विद्वेषी व्यक्ति ने मुनि जी की हत्या कर दी।

उपरोक्त घटना से जैन समाज सन्न रह गया। सर्वत्र शोक छा गया। पूर्वनिर्धारित कार्यक्रमानुसार उस दिन आपश्री को भी गुरु गणेश नगर पधारना था, परन्तु शासन देव की अदृष्ट कृपा से आपश्री ने आत्मसाधना हेतु पूर्व निर्धारित कार्यक्रम को एक दिन के लिए स्थगित कर दिया था।

मुनि जी की हत्या से समाज में उथल-पुथल होना स्वाभाविक था। परन्तु आप जैसे समर्थ धर्मनेता ने इस दुश्चक्र से समाज को निकाल लिया।

सत्ताईसवां वर्षायोग

शुभ तिथि और शुभ मुहूर्त में परम पूज्य युवाचार्य श्री जी का चातुर्मासिक भव्य प्रवेश महावीर भवन में हुआ। साधना और स्वाध्याय के कार्यक्रम गतिशील बने। प्रवचन में विशाल जन समुदाय उपस्थित होने लगा। समय-समय पर ध्यान शिविरों का आयोजन होता रहा। सकल श्रीसंघ में अपूर्व उत्साह और उल्लास था।

यहां के वर्षावास में जैन धर्म की सभी सम्प्रदायों पर आपश्री का प्रभाव रहा। दिगम्बर जैन मंदिर में आपश्री ने सप्त दिवसीय ध्यान शिविर की स्वीकृति प्रदान की। इस हेतु दिगम्बर बन्धुओं के साथ-साथ वहां पर वर्षावासार्थ विराजित गणधराचार्य श्री कुंथुसागर जी महाराज, आचार्य श्री देवनंदी जी महाराज का भी प्रेमपूर्ण आग्रह रहा। परम पूज्य मुनीश्वरों का सह मिलन

अत्यन्त माधुर्य पूर्ण रहा। समस्त जैनों में इससे पारस्परिक सद्भाव में अभिवृद्धि हुई। उसके पश्चात् उनके साथ कई सामूहिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

वर्षावास के अंतिम दिनों में सर्वश्री नेमनाथ जी जैन (इन्दौर) परमपूज्य आचार्य सम्राट् श्री देवेन्द्र मुनि जी म. के समाचार लेकर आपश्री के चरणों में पहुंचे। आचार्यश्री ने आपश्री से भावाभिव्यक्ति की थी कि वर्षावास की परिसमाप्ति पर महाराष्ट्र के सभी संतों का किसी एक स्थान पर सम्मिलन होना चाहिए। परम पूज्य आचार्य देव के भावों का आपश्री ने विनम्र स्वागत किया। आखिर परम पूज्य आचार्य श्री एवं आपने पारस्परिक मनोमंथन कर सम्मिलन के लिए नासिक नगर को निर्धारित किया।

वर्षावास संपूर्ण हुआ। भारी जनसमूह ने आपश्री को विदाई दी। महावीर भवन से आपश्री गुरु गणेश नगर पधारे। वहां पर त्रिदिवसीय ध्यान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें 150 मुमुक्षुओं ने सहभागिता की।

औरंगाबाद से आपश्री पैठण पधारे। वहां पर फार्म हाऊस पर ध्यान शिविर लगाया गया। वहां से आपश्री शेवगांव पधारे। वहां भी ध्यान शिविर का आयोजन हुआ। वहां के लोगों ने सेवा का विशेष लाभ लिया। जम्मू के श्री अशोक जी जैन, श्रीमती आशा जैन भी दर्शनार्थ उपस्थित हुए। उन्होंने भी ध्यान और सेवा से आत्मलाभ प्राप्त किया।

विहार यात्रा आगे बढ़ी। नेवासा, श्रीरामपुर होते हुए आपश्री संगमनेर पधारे जहां ऋषिकुल के संतरत्न पूज्य श्री प्रशांत ऋषि जी महाराज, श्री महेन्द्र ऋषि जी महाराज, श्री पदम ऋषि जी महाराज आदि मुनिवृन्द ने आपश्री के दर्शन किए।

संगमनेर से सिन्नर होते हुए आपश्री नासिक रोड़ पधारे। वहां पर श्रमण संघीय महामंत्री श्री सौभाग्य मुनि जी महाराज 'कुमुद' से मिलन हुआ। महामुनियों का यह मिलन अत्यंत प्रेमपूर्ण रहा।

शिखर सम्मिलन

नासिक की पावन भूमि पर महामुनिराजों का ऐतिहासिक सम्मिलन हुआ। परम पूज्य श्रमण संघ नायक आचार्य सम्राट् श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज एवं परम पूज्य युवाचार्य डॉ. श्री शिव मुनि जी महाराज के सान्निध्य में साधुओं और साध्वियों की संगीति सभा हुई। उस पुनीत प्रसंग पर श्रमणसंघीय महामंत्री श्री सौभाग्य मुनि जी महाराज कुमुद, उपाध्याय प्रवर श्री विशाल

मुनि जी म., सलाहकार श्री सुमति प्रकाश जी म., श्री कमल मुनि जी म. 'कमलेश', श्री प्रशान्त ऋषि जी म. आदि मुनिवृन्द एवं महासती श्री चारित्र प्रभा जी महाराज, महासती श्री अर्चना जी महाराज, महासती श्री सुशील कुंवर जी महाराज आदि साध्वी वृन्द कुल ठाणा 72 साधु-साध्वी उपस्थित थे।

पूना श्रमण सम्मेलन के पश्चात् युवाचार्य श्री जी दक्षिण भारत की यात्रा पर निकल गए थे एवं पूज्य आचार्य श्री उत्तर भारत में पधार गए थे। पूना के पश्चात् संघ के शीर्षस्थ महामुनीश्वरों का यह प्रथम मिलन था। इससे पूर्व इसी पावन भूमि पर आचार्य सम्राट् श्री आनन्द ऋषि जी महाराज एवं परमपूज्य युवाचार्य श्री मधुकर मुनि जी महाराज का मधुर सम्मिलन हुआ था। इतिहास का वही स्वर्णिम क्षण पुनः नासिक में जीवंत हो उठा। मुनिसंघ और श्रावक संघ एक बार पुनः देवेन्द्राचार्य और युवाचार्य शिव का मधुर मिलन देख कर आनंदमग्न बन गए। संघ के चंद्र-सूर्य का यह मिलन देखकर जनमानस आनंद विभोर हो उठा।

परमपूज्य आचार्य देव ने अपने स्वास्थ्य को देखते हुए आपश्री जी को तथा अन्य पदाधिकारी मुनिराजों को कई अधिकार प्रदान किए। पूना सम्मेलन में पूज्य युवाचार्य श्री जी को ध्यान के प्रचार-प्रसार के निदेशक का दायित्व प्रदान किया गया था। आपश्री द्वारा अपने कार्य को सुदंरता से वहन किए जाने पर आचार्य श्री ने हार्दिक संतोष और आनंद प्रगट किया। इतना ही नहीं, बल्कि पूज्य आचार्य श्री ने उस वर्ष को **'ध्यान वर्ष'** के रूप में घोषित किया। अपने ऐतिहासिक उद्बोधन में आचार्य श्री ने फरमाया—हमारे युवाचार्य श्री जी स्फटिकमणि के समान निर्मल हृदय के धनी हैं। ये मेरे उत्तराधिकारी हैं। इन्होंने ध्यान साधना के द्वारा श्रमणसंघ में एक अभिनव चेतना का संचार किया है। इनकी कार्यशैली और साधना शैली से मैं सन्तुष्ट हूँ।

ऐसा फरमाते हुए गद्गद-हृदय आचार्य देव ने आपश्री को आदर की चादर ओढ़ाकर आपश्री के महनीय कार्यों का स्वागत किया। अपूर्व प्रेम, सौहार्द और आत्मीयता पूर्ण वातावरण में यह सम्मिलन सम्पन्न हुआ।

सर्वश्री नेमनाथ जी जैन, श्री हस्तीमल जी मुणोत, श्री बंकटलाल जी कोठारी, श्री माणकचंद जी कोठारी. श्री आर. डी. जैन एवं श्री शांतिलाल जी दुग्गड़ का समर्पित सहयोग विशेष सराहनीय रहा।

अपूर्व मिलन... अपूर्व विदाई

नासिक सिटी से परम पूज्य आचार्य देव नासिक रोड़ पधारे। परमपूज्य युवाचार्य श्री भी आचार्य श्री के साथ थे। यहां पर श्रीसंघ ने विदाई महोत्सव का कार्यक्रम रखा। परमपूज्य आचार्य देव का विहार मुंबई के लिए पूर्व में ही निर्धारित हो चुका था। सुनिश्चित मंगल वेला में आचार्य देव ने विहार किया। पूज्य युवाचार्य श्री जी आचार्य देव की विदाई के लिए दूर तक गए। दोनों महापुरुष जब विलग होने लगे तो काफी भावनात्मक दृश्य उपस्थित हुआ। आपश्री ने आराध्य आचार्य देव के चरणों पर मस्तक रखा। पूज्य आचार्य देव ने आपको कण्ठ से लगाया। प्रेम की पराकाष्ठा थी। सजल हो गए दोनों महामुनीश्वरों के नयन कोर। आचार्य देव ने कहा–शिव मुनि! फिर कब मिलेंगे। इस पर गद्‌गद कण्ठ से आपश्री ने कहा-भगवन्! आप मेरे हृदय में बसे हैं। हम दूर ही कहां हैं?

इस भावभीने विदाई प्रसंग पर श्रद्धापूर्ण अन्य हजारों नेत्र भी आर्द्र बन गए। पर इस आर्द्रता में मोह का कीच न था। श्रद्धा, समर्पण और आशीष से उपजे कमलपत्रस्थ मुक्ता–कण थे।

ध्यान शिविरों के समायोजन

परम पूज्य युवाचार्य श्री जी नासिक रोड़ से 'श्री सरस्वती विद्या केन्द्र' पधारे। वहां पर तीन दिन के ध्यान साधना के माध्यम से साधकों ने आत्म-साक्षात्कार किया।

शिविर की परिसमाप्ति पर परम पूज्य युवाचार्य श्री जी नासिक रोड़ पधारे। वहां पर होली चातुर्मास समारोह रखा गया। अनेक श्रीसंघ भावी वर्षावास की प्रार्थनाओं के साथ आपश्री की सेवा में उपस्थित हुए। आखिर जालना श्रीसंघ भावी वर्षावास प्राप्त करने में सफल रहा। उसी अवधि में वहां पर एक ध्यान शिविर का भी आयोजन किया गया।

नासिक रोड़ से आपश्री गोठी पधारे। वहां पर महासती श्री प्रमोद सुधा जी महाराज के सान्निध्य में दीक्षा का कार्यक्रम सम्पन्न होने जा रहा था। उक्त दीक्षा महोत्सव में सम्मिलित होने के लिए अहमदनगर से श्री अक्षय ऋषि जी महाराज, श्री महेन्द्र ऋषि जी महाराज, श्री पद्‌मऋषि जी महाराज भी पधारे। उक्त अवसर पर वैराग्यवती बहन को परम पूज्य युवाचार्य श्री जी ने अपने मुखारविन्द से दीक्षा पाठ पढ़ाया। नवदीक्षिता साध्वी जी को नवीन

नाम–'तन्मय दर्शना जी' प्रदान किया गया।

दीक्षा के इस पावन प्रसंग पर दूर-दूर के श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित हुए थे। जलगांव के विधायक श्री ईश्वर बाबू ललवानी, अध्यक्ष श्री दलुभाऊ जी जैन, श्री रतनलाल जी बाफणा आदि उक्त अवसर पर उपस्थित थे। उक्त प्रमुख गण्यमान्य व्यक्तियों से आपश्री की चर्चा हुई। जलगांव पदार्पण की प्रार्थना प्रस्तुत की।

इसी अवसर पर घोड़नदी निवासी श्री भंवरलाल जी फूलफगर ने ज्योतिष के आधार पर भविष्य के कुछ संकेत दिए। भविष्य के संकेत स्पष्ट थे कि परम पूज्य युवाचार्य श्री जी पर संघ के कई भारी दायित्व आने वाले हैं। परन्तु उस समय उक्त कथन पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया।

गोठी से परमपूज्य युवाचार्य श्री जी इगतपुरी पधारे। इगतपुरी के सेवानिष्ठ श्रावकों ने आपश्री का भावभीना स्वागत किया। संक्षिप्त प्रवास में अच्छी धर्मप्रभावना देखी गई। इगतपुरी से आपश्री सिडको पधारे।

देवेन्द्राचार्य का महाप्रयाण

परम पूज्य आचार्य सम्राट् श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज मुंबई में स्वास्थ्य लाभ ले रहे थे। उचित दिशा में इलाज चल रहा था। परम पूज्य युवाचार्य श्री जी संघनायक के स्वास्थ्य की सूचनाएं सतत प्राप्त कर रहे थे। विगत दिन तक के समाचारों के अनुसार पूज्य आचार्य देव का स्वास्थ्य सामान्यत: ठीक चल रहा था।

परन्तु 26 अप्रैल 1999 को प्रभात में जो समाचार आया उसने सकल संघ को शोक-सागर में निमग्न कर दिया। आचार्य देव भौतिक देह का विसर्जन कर देवलोकों के लिए प्रयाण कर गए थे। इस समाचार से समग्र संघ हिल उठा।

स्वयं युवाचार्य श्री जी इस वज्रपाती समाचार से हत्प्रभ रह गए। इस प्रकार की संभावना की किंचित् कल्पना नहीं थी। सुदृढ़ आशाएं थीं कि आचार्य श्री शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएंगे। परन्तु नियति के लिखे को पढ़ा न जा सका। कुछ ही दिन पूर्व के भविष्य संकेत सच सिद्ध हुए थे। विशाल संघ का समग्र दायित्व आपश्री के कंधों पर आ गया था। संघीय विधानानुसार आचार्य देव के समस्त दायित्वों के संवहन का भार आपश्री को ग्रहण करना था।

आपश्री की आध्यात्मिक साधना का ही यह चमत्कार था कि आपश्री

ने अपने मनोभावों को शीघ्र ही नियंत्रित कर लिया। संघ के अग्रगण्य श्रावक एवं साधु-साध्वियां आपश्री के पास एकत्रित होने लगे। आपश्री ने सकल संघ को सान्त्वना प्रदान की। अपने समस्त कार्यक्रमों को स्थगित करके आपश्री वापिस नासिक लौट आए। जैन स्थानक में शांतिजाप शुरू कराया गया। आचार्य श्री के शिष्य परिवार के लिए आपश्री ने सांत्वना संदेश प्रेषित किया एवं वहां की वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त कर संघहित को लक्ष्य में रखते हुए आवश्यक निर्देश जारी किए।

श्रद्धांजलि सभा

परमपूज्य आचार्य देव की स्मृति में नासिक में एक श्रद्धांजलि सभा रखी गई। परम पूज्य युवाचार्य श्री जी जो आचार्य देव के स्वर्गारोहण के पश्चात् जिन शासन और श्रमणसंघ के विधानानुसार आचार्य पाट पर अधिष्ठित हो गए थे, उनके सान्निध्य में इस श्रद्धांजलि सभा का आयोजन होने से इसे स्वत: ही अखिल भारतीय स्तर प्राप्त हो गया। इस अवसर पर कई साधु-साध्वियों और अखिल भारतीय स्थानकवासी जैन कांफ्रेंस के कई वरिष्ठ पदाधिकारी उपस्थित हुए। उपस्थित कांफ्रेंस के अधिकारियों में प्रमुख थे–अध्यक्ष श्री हस्तीमल जी मुणोत, उपाध्यक्ष श्री नेमनाथ जी जैन, श्री हीरालाल जी जैन, श्री शांतिलाल जी छाजेड़, श्री नृपराज जी जैन, श्री माणकचंद जी कोठारी, श्री बंकटलाल जी कोठारी आदि-आदि। इन सभी गण्यमान्य श्रावकों ने परमपूज्य देवेन्द्राचार्य के महान जीवन और उनकी साधना को स्मरण किया और श्रद्धांजलि अर्पित की। साथ ही समवेत स्वर से आपश्री से प्रार्थना की-भगवन्! इस संघरथ की बागडोर अब आपके हाथों में है। आज से आप श्रमण संघ के सरताज एवं सारथि हैं। इस विशाल दायित्व के संवहन में समग्र संघ आपका सहयोगी और अनुगामी होगा।

उसके बाद परमपूज्य युवाचार्य श्री–श्रमणसंघीय चतुर्थ पट्टधर आचार्य श्री शिव मुनि जी महाराज ने अपने आराध्य देव आचार्य सम्राट् श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज के चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित की। आपश्री जी ने फरमाया–आचार्य श्री का आकस्मिक गमन जहां सकल संघ के लिए भारी वज्रपात के समान है, वहीं मेरे स्वयं के लिए भी अपूर्णीय क्षति है। उन वात्सल्यवारिधि का वात्सल्य हम सब पर शत-सहस्र धाराओं में बरस रहा था। उनके नेतृत्व में हम सानंद आगे बढ़ रहे थे। पर अकस्मात् वे हमसे विदा ले गए। सकल संघ के लिए यह महा-शोक का क्षण है। पर शोक में डूबे

रहना संघ के हित में नहीं है। इस शोक के सागर से बाहर निकल कर हमें आराध्य स्वरूप आचार्य देव के सृजनात्मक कार्यों को आगे बढ़ाना है। पूज्य श्री ने अपने महान व्यक्तित्व और विशाल कृतित्व से संघ को जो गरिमा प्रदान की है उसे अक्षुण्ण रखते हुए हमें संघ को आगे ले जाना है। मैं चतुर्विध संघ को विश्वास दिलाता हूं कि हम साधना और सर्जना में संघ को निरंतर आगे और आगे ले जाएंगे। मैं अहर्निश अप्रमत्त भाव से संघ के सम्यक् विकास के लिए एक प्रहरी की तरह अपने समस्त दायित्व निभाता रहूंगा। श्रमण संघ के आचार्य त्रय का अदृष्ट आशीष हमारे साथ है। उनके आशीष का प्रकाश हमारे पथ को प्रशस्त करता रहेगा।

आपश्री के इस गरिमामय सार-संक्षिप्त उद्‌बोधन से सकल संघ को आश्रय और श्रद्धा का आधार प्राप्त हुआ। शोक क्षीण हो गया। नवीन क्षितिज पर संघ की दृष्टि स्थिर हो गई।

संघ के वरिष्ठ अधिकारियों को आपश्री ने उचित निर्देश प्रदान कर श्रद्धांजलि सभा को संपन्न किया।

आत्मप्रिय पाठक गण! इस आलेख के पिछले पृष्ठों में हमने अपने चरितनायक को पूज्य श्री, मुनि श्री, युवाचार्य श्री आदि शब्दों में पढ़ा-लिखा है। आगे के आलेख में हम पूज्य प्रवर युवाचार्य श्री जी को एक नवीन संबोधन-आचार्य श्री-आचार्य भगवन् आदि शब्दों में ग्रहण करेंगे।

सरस्वती विद्या केन्द्र में

पदमादरणीय आचार्य प्रवर श्री शिव मुनि जी महाराज महावीर भवन से श्री सरस्वती विद्या केन्द्र पर पधारे जहां मुमुक्षु श्रावकों ने ध्यान शिविर का आयोजन किया। आचार्य पद पर आने के पश्चात् यह प्रथम त्रिदिवसीय ध्यान शिविर आपके निर्देशन में सम्पन्न हुआ। देश के कोने-कोने से आए हुए मुमुक्षुओं ने इस शिविर में भाग लिया और आध्यात्मिक आनंद का अनुभव किया।

विहार और धर्मप्रचार

शिविर की परिसमाप्ति पर परम पूज्य आचार्य श्री ने विहार यात्रा को आगे बढ़ाया। नासिक से आपश्री ओझर पधारे। वहां पर सिकंदराबाद श्री संघ के अध्यक्ष श्री संपतराज जी डूंगरवाल, श्री सज्जनराज जी कटारिया, कांफ्रेंस के अध्यक्ष श्री हस्तीमल जी मुणोत आदि श्रावकों ने आपश्री के दर्शनों का

लाभ लिया एवं मार्गदर्शन प्राप्त किया।

ओझर से आपश्री सुखेना पधारे। श्रीसंघ ने भारी उत्साह के साथ श्रमण संघ के नायक आचार्य श्री का स्वागत किया। वहां से आपश्री कुंदेवाड़ी पधारे। वहां पर औरंगाबाद श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री चंपालाल जी देसर्डा, श्री सुवालाल जी छल्लाणी प्रभृति श्रावकों ने आपके दर्शनों का लाभ लिया। वहीं पर श्री सौरभ मुनि जी महाराज ठाणे दो आपश्री के दर्शनों के लिए पधारे एवं कुछ समय आपश्री का सेवा-सान्निध्य प्राप्त किया।

परम पूज्य आचार्य श्री जी कुंदेवाड़ी से निफाड़ पधारे। श्रीसंघ ने भावभीना स्वागत किया। यहां पर आपश्री जी ने अपने ओजस्वी प्रवचनों से श्रावक समुदाय में जागरूकता का संचार किया। आपश्री ने फरमाया—श्रावक समुदाय को अब पहले से अधिक श्रमण संघ के प्रति जागरूकता बनाए रखने की आवश्यकता है। सम्प्रदाय का जो विष जनमानस में डाला जा रहा है उसे महत्त्व न देकर श्रमण संघ के प्रति निष्ठावान बनना होगा। यह भूमि द्वितीय पट्टधर आचार्य सम्राट् की विचरण भूमि रही है और उस महापुरुष ने स्नेह सद्भावना की जो महागंगा प्रवाहित की थी उसमें सम्प्रदायवाद का जहर नहीं मिलने देना है। इस प्रकार आचार्य श्री जी ने अपने दायित्व के अनुरूप श्रमण संघीय भावनाओं को जन-जन में संचरित करने का विशेष लक्ष्य बनाया।

निफाड़ से आपश्री नान्दुर्डी पधारे। आपश्री के पदार्पण से संघ में एकता प्रबल बनी और जन-जन में अपूर्व उत्साह का वातावरण निर्मित हुआ। वहां से विहार कर आपश्री जी अंकाई, येवला, कोपरगांव, लक्ष्मीवाड़ी होते हुए शिरड़ी पधारे। सभी जगह संघ की उन्नति तथा आत्मोन्नति हेतु विशेष प्रवचन एवं साधना शिविरों के कार्यक्रम होते रहे। जनसंपर्क में भी आपश्री अपना समय अर्पित करते रहे। इसी मध्य श्री चंपालाल जी सांकलेचा, जालना ने आपश्री के दर्शन किए एवं अपनी सेवाएं अर्पित करने की भावना व्यक्त की।

संत का सेवा-समर्पण

परम पूज्य श्री तारक ऋषि जी महाराज ऋषि सम्प्रदाय के तेजस्वी मुनि रत्न हैं। संघ के आचार्य के प्रति उनकी विशेष भक्ति रही है। वर्ष 1999 के वर्षावास के लिए उन्होंने अहमदाबाद श्रीसंघ की प्रार्थना स्वीकार की थी। परन्तु अकस्मात् देवेन्द्राचार्य के देवलोक हो जाने तथा नए आचार्य के

पदारोहण होने से उन्होंने अहमदाबाद वर्षावास का कार्यक्रम स्थगित कर दिया। आपश्री के दर्शनों तथा सेवा में पहुंचने के समाचार प्रेषित किए। आपश्री ने मुनिवर के समर्पण की अनुशंसा की और उन्हें आमंत्रित किया।

अहमदाबाद श्रीसंघ परम पूज्य आचार्य श्री की सेवा में उपस्थित हुआ एवं अपने भाव प्रगट किए। आपश्री ने अहमदाबाद श्रीसंघ को संतुष्ट किया। आपश्री के समाधान से श्रीसंघ ने अपना स्वार्थ त्याग कर श्रमण संघ के प्रति निष्ठा व्यक्त कर सहयोग की भावना प्रदर्शित की।

ध्यान यज्ञ

जन जागरण के अभियान के साथ परमपूज्य आचार्य भगवन् राहता पधारे। वहां पर महासती श्री कंचन कुंवर जी महाराज आदि ठाणे एवं महासती श्री प्रवीणा जी महाराज आदि साध्वी वृंद ने आपश्री के दर्शनों का लाभ लिया एवं धन्यता अनुभव की। वहां पर प्रवचन हुए। जन मानस में साधना रुचि वर्धमान बनी। फलस्वरूप 'साध्वी प्रीतिसुधा इंग्लिश मिडियम स्कूल' में तीन दिवसीय ध्यान साधना शिविर का समायोजन किया गया। शिविर में 175 मुमुक्षुओं ने भाग लिया जिसमें सात महासतियों ने भी विशेष रूप से भाग लिया। यह शिविर अपने आप में एक विशेष छटा लिए हुए था। इस शिविर के आयोजन में श्री रमेश जी सांड, श्री बाबूलाल जी पिपाड़ा, श्री प्रफुल्ल जी पिपाड़ा का विशेष सहयोग रहा।

दर्शनार्थियों का आवागमन चलता रहा। अहमदनगर श्रीसंघ के अध्यक्ष एवं अधिकारी गण नियमित रूप से आपकी सेवा में पहुंचकर मार्गदर्शन लेते रहे।

श्रमण संघीय वरिष्ठ श्रावकों, कांफ्रेंस पदाधिकारियों आदि ने मिलकर यह निर्णय किया कि परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री शिव मुनि जी महाराज का आचार्य पद अभिनंदन समारोह का आयोजन किया जाए। एतदर्थ अहमदनगर में यह कार्यक्रम रखा गया और इसके लिए 9 जून 1999 का दिन सुनिश्चित किया गया। इस संदर्भ की समस्त सूचनाएं अहमदनगर श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री हस्तीमल जी मुणोत ने परम पूज्य आचार्य श्री जी के चरणों में रखी एवं प्रार्थना की कि आपश्री यथाशीघ्र अहमदनगर पधारें।

संघीय भावनाओं को मान देते हुए परम पूज्य आचार्य देव ने अहमदनगर की दिशा में विहार किया। राहता से विहार करके आपश्री बाभलेश्वर, कोल्हार, राहुरी होते हुए सावेड़ी पधारे। आपके स्वागत के लिए पूज्य श्री

विनोद मुनि जी, श्री अक्षय ऋषि जी, श्री प्रशांत ऋषि जी, श्री महेन्द्र ऋषि जी आदि मुनिवृंद एवं साध्वीवृंद पधारे। यहीं पर पंजाब केसरी प्रवर्तक श्री प्रेमचंद जी महाराज के पौत्र शिष्य तपोकेसरी श्री अजयमुनि जी महाराज माउण्ट आबू से उग्र विहार कर आपश्री की सेवा में उपस्थित हुए। कांफ्रेंस के वरिष्ठ पदाधिकारी भी आपश्री की सेवा में उपस्थित हुए एवं आप से आशीर्वाद व मार्गदर्शन प्राप्त किया।

अहमदनगर में पदार्पण

परमादरणीय परम पूज्य आचार्य भगवन् के अहमदनगर प्रवेश पर श्री-संघ एवं मुनिसंघ द्वारा अभूतपूर्व स्वागत किया गया। संपूर्ण नगर में स्थान-स्थान पर मंगल द्वार निर्मित किए गए थे। विशाल जन समुदाय के साथ आगम मर्मज्ञ श्री नेमीचंद जी महाराज, श्री विनोद मुनि जी महाराज, श्री आदर्श ऋषि जी महाराज आदि मुनि वृंद एवं महासती श्री अर्चना जी महाराज 'मीरा' आदि साध्वी वृंद आपके स्वागत समारोह में सम्मिलित हुए।

जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड की दिशा में आचार्य श्री यात्रायित थे। आपश्री के पीछे मुनिसंघ चल रहा था। मुनिसंघ के पीछे साध्वी समुदाय चल रहा था। साध्वी समुदाय के पीछे विशाल जनसमुदाय धरती और गगन को जयनादों से गुंजायमान करता हुआ चल रहा था। जय आत्म, जय आनन्द, जय देवेन्द्र, जय शिव, और जय श्रमण संघ के जयनादों से पूरा नगर गूंज रहा था। पूरा वातावरण जैनमय और शिवमय बन गया था। अपूर्व हर्ष, अपूर्व चहल-पहल और अपूर्व उत्साह सर्वत्र दृश्यमान हो रहा था। नगर का आबालवृद्ध आपके तेजस्वी व्यक्तित्व के प्रति चुम्बकीय आकर्षण अनुभव कर रहा था।

नवी पेठ में विराजित तपस्वी श्री मगन मुनि जी महाराज एवं स्वामी श्री सुंदरलाल जी महाराज ने भी आपश्री का स्वागत किया। इस प्रकार अपूर्व स्वागत का अपूर्व समारोह पाथर्डी बोर्ड स्थानक भवन पर सुसम्पन्न हुआ।

❖ ❖ ❖

अभिनंदन
वंदन

यह अभिनंदन शिव मुनि का अभिनदन नहीं है। यह जिनशासन और आचार्य पाट का अभिनंदन है। आचार्य पाट की गौरव–गरिमा का अभिनदन है। यह अभिनदन उस महती महनीया धर्म परम्परा का अभिनदन है जिसका प्रवर्तन तीर्थकर महावीर ने किया और व्यवस्थापन हमारे पूर्वज मुनीश्वरो ने किया। आप सबके साथ मिलकर मैं भी इस जिन शासक की धर्म परम्परा का शत–शत अभिनदन करता हूँ।

आचार्य पद अभिनंदन समारोह

अभिनंदन उनका जिन्होंने अंधियारे को दिया उजाला।
अभिनंदन उनका जिन्होंने तोड़ दिया बंधन का ताला॥

अहमदनगर में आचार्य श्री शिव मुनि जी म. का अभिनंदन हुआ। यह अभिनंदन एक आचार्य के साध्वाचार का था। संत का सम्मान संस्कृति का सम्मान है, यह संदेश इस अभिनंदन समारोह ने दिया। संत अभिनंदन के फूल नहीं लेता। संत तो संकटों के कांटों को फूल बनाने में विश्वास करता है। यह संदेश था संघ के अनुशास्ता आचार्य श्री शिव मुनि जी का।

9 जून 1999 का पवित्र दिन जैन इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ बन गया। इस दिन विशाल मुनि समुदाय और अपार जनसमूह ने मिलकर श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर आचार्य सम्राट् श्री शिव मुनि जी महाराज का आचार्य पद अभिनंदन महामहोत्सव आयोजित किया। उपस्थित मुनिराजों, महासाध्वियों, कांफ्रेंस पदाधिकारियों और भारतवर्ष के कोने-कोने से पधारे श्रावकों ने आपश्री के आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होने का हार्दिक स्वागत, अनुमोदन और अभिनंदन किया। श्रमण संघीय महामंत्री श्री सौभाग्य मुनि जी महाराज 'कुमुद' ने अपने दायित्व के अनुरूप इस महान पद पर आपश्री का अभिनंदन और अनुमोदन किया। महामंत्री मुनिवर का तत्संबंधी पत्र लेकर कांफ्रेंस के अधिकारी आपकी सेवा में उपस्थित हुए थे। इस अवसर पर उक्त अनुमोदना पत्र का सार्वजनिक रूप से वांचन किया गया। इसके बाद श्रमणसंघ के अन्य पदाधिकारी महामुनियों के अभिनंदन एवं अनुमोदन परिपत्रों को पढ़कर सुनाया गया।

आचार्य पदाभिनंदन समारोह में कांफ्रेंस के अध्यक्ष श्री हस्तीमल जी मुणोत, महामंत्री श्री माणकचंद जी कोठारी, उपाध्यक्ष श्री हीरालाल जैन आदि उपस्थित हुए। सभी ने भावभीने शब्दों में आचार्य श्री का अभिनंदन किया एवं विश्वास व्यक्त किया कि आपश्री के निर्देशन में सकल संघ विकास के नए क्षितिजों का स्पर्श करेगा।

उक्त अवसर पर प्रमुख मुनिराजों एवं साध्वी जी महाराज ने भी अपने-अपने प्रभावशाली वक्तव्यों द्वारा आपका अभिनंदन किया। महासती अर्चना जी महाराज 'मीरा' ने एक भक्ति प्रधान गीतिका प्रस्तुत कर पूरे वातावरण को भक्तिमय एवं शिवमय बना दिया।

अंत में श्रमण संघ नायक पूज्य आचार्य देव ने सकल संघ को सम्बोधित किया। अपनी सार-संक्षिप्त देशना में आचार्य श्री ने फरमाया—मैं उपस्थित चतुर्विध संघ का सादर स्वागत करता हूँ। आप लोगों के हृदय में जिनशासन के प्रति अगाध आस्था को देखकर मैं हार्दिक हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। आप सब लोग यहां पर श्रमण संघ की सुदृढ़ता और जिनशासन के अभिनंदन के लिए एकत्रित हुए हैं। यह अभिनंदन शिव मुनि का अभिनंदन नहीं है। यह जिनशासन और आचार्य पाट का अभिनंदन है। आचार्य पाट की गौरव गरिमा का अभिनंदन है। यह अभिनंदन उस महती महनीया धर्म परम्परा का अभिनंदन है जिसका प्रवर्तन तीर्थकर महावीर ने किया और व्यवस्थापन हमारे पूर्वज मुनीश्वरों ने किया। आप सबके साथ मिलकर मैं भी इस जिन शासक की धर्म परम्परा का शत-शत अभिनंदन करता हूँ।

आचार्य पाट के इस अभिनंदन पर्व की पावन बेला में मैं चतुर्विध श्री-संघ का आह्वान करता हूँ कि संघ का प्रत्येक व्यक्ति मिलकर संघ के उत्थान के लिए अपना हार्दिक सहयोग प्रदान करे। जो भी गिले-शिकवे हैं, मेरी झोली में डाल दीजिए। आपश्री ने संघ के समक्ष अपनी झोली फैलाई और गंभीर स्वर में उद्घोषणा की— बन्धुओ! मेरा जीवन ही मेरा दर्शन और मेरी सामाचारी है। आप जब चाहें उसे पढ़ सकते हैं।

आपश्री के उद्बोधन से सकल मानव-मेदिनी गद्गद बन गई। 'जय शिव' 'जय श्रमण संघ' के जयगानों से गगन मण्डल अनुगुंजित बन गया।

ध्यान शिविर

आचार्य पद अभिनंदन समारोह के पश्चात् कांफ्रेंस के वरिष्ठ अधिकारियों और भारत वर्ष के सुदूर अंचलों से आए हुए श्रावकों की प्रार्थना पर परमपूज्य आचार्य प्रवर श्री शिव मुनि जी महाराज ने 10 जून से 17 जून के मध्य दो त्रिदिवसीय ध्यान शिविरों का आयोजन किया जिनमें कांफ्रेंस के वरिष्ठ अधिकारियों सहित 200 से अधिक मुमुक्षुओं ने अध्यात्म साधना की। सभी शिविरार्थी अद्भुत आत्मिक आनंद को अनुभव कर गद्गद बन गए। आपकी ध्यान साधना एवं शिविरों का सभी ने एक स्वर से पुरजोर समर्थन किया।

मुनि मिलन

परमादरणीय आचार्य सम्राट् श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज के स्वर्गारोहण के पश्चात् उनके शिष्य संयम के शिखर पुरुष श्री रमेश मुनि जी महाराज, परमादरणीय श्री राजेन्द्र मुनि जी महाराज, कर्मठ अध्यवसायी श्री दिनेश मुनि जी महाराज, पंडित रत्न श्री नरेश मुनि जी महाराज आदि ठाणा मुंबई से पूना होते हुए पूज्य आचार्य श्री के अभिनंदन के लिए अहमदनगर पधारे। परम पूज्य आचार्य श्री ने मुनिराजों का स्वागत किया। मुनिराजों से हार्दिक संवेदना व्यक्त की एवं साधनात्मक संपूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। आपका वात्सल्य प्राप्त कर मुनिजनों को हार्दिक संतोष हुआ।

इसके अतिरिक्त तपस्वी श्री अभय मुनि जी महाराज, श्री गौतम मुनि जी महाराज आदि ठाणा भी आपश्री के अभिनंदन के लिए अहमदनगर पधारे। मुनिराजों का यह मिलन अत्यंत मधुर रहा।

आंगन औरंगाबाद का

परमादरणीय अध्यात्म सूर्य आचार्य श्री शिव मुनि जी महाराज अहमदनगर से विहार करके बाम्बोरी, सोनई, घोड़ेगांव, नेवासा आदि क्षेत्रों में अध्यात्म का प्रकाश बांटते हुए औरंगाबाद पधारे। श्रीसंघ ने जिन शासन नायक आचार्य देव का उत्साहपूर्ण वातावरण में स्वागत किया। आपश्री की धर्म देशनाओं से सर्वत्र धर्मलहर व्याप्त हो गई। आपश्री की प्रेरणा से संघ ने कारगिल के शहीदों के सहयोग हेतु पर्याप्त सहायता सामग्री प्रेषित की।

सेवाकाश का तारक

संघ और संघनायक की सेवा में अपने जीवन को धन्य मानने वाले मुनिवर श्री तारक ऋषि जी महाराज अपने शिष्य परिवार के साथ सुदूर राजस्थान से उग्र विहार करके संघनायक आचार्य देव की सेवा में पहुंचे। स्वयं आचार्य देव ने आगे पधार कर मुनिवर का स्वागत किया। आपश्री और मुनि श्री का संमिलन वर्षों के बाद हुआ था। आत्मीय वार्ताएं हुईं। संयम और साधना सम्बन्धी अनुभवों का आदान-प्रदान हुआ। संघनायक के चरणों में मुनिवर ने अपने भावों को अभिव्यक्त किया–भगवन्! मेरी और मेरे मुनि परिवार की सेवाएं आपश्री के लिए समर्पित हैं। आचार्य देव ने कहा–पूज्य मुनिवर! आपके सेवा सहयोग का मैं हार्दिक स्वागत करता हूँ। हम सब मिलकर जिनशासन की प्रभावना करेंगे।

गुरु गणेश नगर में ध्यान शिविर

परमादरणीय आचार्य भगवन् महावीर भवन से गुरु गणेश नगर में पधारे जहां विशाल ध्यान शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में उप प्रवर्तक डा. श्री राजेन्द्र मुनि जी महाराज आदि ठाणा, तपोकेसरी श्री अजय मुनि जी महाराज, पंडित रत्न श्री तारक ऋषि जी महाराज आदि ठाणा, महासती श्री रत्नज्योति जी महाराज आदि ठाणा के अतिरिक्त शताधिक मुमुक्षु श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। शिविर के मधुर अनुभवों से सभी आनंदित बने। गुरु गणेश नगर से परमादरणीय आचार्य श्री जी गौशाला पधारे। वहां पर भी भव्य कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

औरंगाबाद के संक्षिप्त प्रभावक प्रवास के पश्चात् जैन धर्म दिवाकर आचार्य प्रवर श्री शिव मुनि जी महाराज, पंडित रत्न श्री तारक ऋषि जी महाराज आदि मुनिवृंद ने जालना वर्षावास हेतु प्रस्थान किया।

अट्ठाईसवां वर्षायोग

यथासमय मंगल मुहूर्त्त में जैन धर्म दिवाकर आचार्य श्री जी ने वर्षावास हेतु जालना में प्रवेश किया। कर्नाटक गज केसरी गुरु गणेश की तपोभूमि जालना में श्रीसंघ ने उत्कृष्ट भक्ति और उत्साह के साथ आचार्य श्री का स्वागत किया। हजारों की संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उस अवसर पर उपस्थित हुए। पूरे नगर में सभी धर्मों के लोगों ने विभिन्न द्वार सजाकर आपका अभिनंदन किया। इस प्रकार नागरिक अभिनंदन के साथ परम पूज्य आचार्य श्री ने गुरु गणेश बाग में वर्षावास हेतु प्रवेश किया।

वर्षावास की अवधि में निरंतर धार्मिक और सांस्कृतिक समारोह सम्पन्न हुए। विशाल प्रवचन पांडाल की संरचना की गई थी जहां प्रतिदिन आचार्य श्री की देशनाओं से जनता धर्म लाभ एवं प्रवचन लाभ प्राप्त करती थी। वर्षावास की पूरी अवधि में ध्यान शिविरों के आयोजन चलते रहे। परमपूज्य आचार्य भगवन् के निर्देशन में प्रशिक्षित ध्यान साधकों द्वारा ध्यान शिविरों के कार्यक्रम चलाए गए जिनके परिणाम अति सुन्दर रहे। वर्षावास में हजारों की संख्या में मुमुक्षु साधकों ने ध्यान के माध्यम से विशुद्ध धर्म का अनुभव किया एवं आत्मिक आनंद में डुबकियां लगाई।

भारत वर्ष के सुदूर अंचलों से दर्शनार्थी आचार्य श्री के चरणों में पहुंचते रहे। कांफ्रेंस के अधिकारी भी नियमित रूप से आचार्य श्री के दर्शनों का लाभ एवं मार्गदर्शन प्राप्त करते रहे। श्रमण संघ के विकास हेतु अनेक

योजनाएं आचार्य श्री जी ने तैयार कीं। श्रावक सम्मेलन एवं कार्यकर्त्ताओं के प्रशिक्षण हेतु अनेक कार्यक्रम हुए।

साधना, धर्म प्रचार, संघीय विकास आदि समस्त दृष्टियों से जालना वर्षावास पूर्ण सफल रहा। एक आचार्य के रूप में यह आपश्री का प्रथम वर्षावास था। परिणामतः पूर्व की अपेक्षा आपश्री की व्यस्तताएं काफी बढ़ गई थीं। पर आपकी साधना का ही यह चमत्कार रहा कि अत्यंत व्यस्त रहते हुए भी आप सदैव सुप्रसन्न रहे। जब भी आपको देखा फूलों की सुगंध झरती हुई अनुभव हुई। आपका दिव्य आनन प्रतिक्षण सहज मुस्कान बिखेरता रहा। आपका हृदय प्रतिपल प्रत्येक पर आशीष और प्रेम बरसाता रहा। इसे हम आपकी साधना के चमत्कार के रूप में ही देखते हैं। साधना से ही यह सब संभव हो सकता है। अन्य कोई उपाय नहीं है।

परम पूज्य पंडित श्री तारक ऋषि जी महाराज, उनके शिष्य रत्न श्री सुयोग ऋषि जी महाराज आदि ठाणा का समर्पित सेवा सहयोग निरंतर आपश्री को प्राप्त होता रहा। मुनिप्रवर की सेवा आराधना से आपकी व्यस्तताएं कम हुई।

वर्षावास की अवधि में जालना श्रीसंघ के आबाल वृद्ध ने अपनी श्रद्धा लुटायी, अपना समग्र सहयोग अर्पित किया। श्रीसंघ के माननीय अध्यक्ष श्री पारसमल जी लुणिया, मंत्रीवर्य सर्व श्री अभय कुमार जी आबड़, श्री सुखलाल जी आदि शीर्ष श्रावकों का सेवा-समर्पण विशेष रूप से स्मरणीय रहा।

विहार-विवरण

वर्षावास की परिसमाप्ति पर परम पूज्य आचार्य श्री धर्मप्रचार करते हुए सिल्लोड़ पधारे। सिल्लोड़ श्रीसंघ ने श्रावक सम्मेलन का आयोजन किया। आपश्री ने श्रावकों को श्रावक धर्म की व्यवस्थित शिक्षा प्रदान की एवं संघ विकास हेतु श्रावकों के कर्त्तव्यों के प्रति जागरूकता का संदेश दिया।

परम पूज्य आचार्य श्री जी सिल्लोड़ से विहार कर अजन्ता के पार्श्व भागों को चरण रज से धन्य करते हुए जामनेर पधारे।

जामनेर में पदार्पण

जामनेर श्रीसंघ ने परम पूज्य आचार्य श्री जी का भव्य स्वागत किया। वहां पर विराजित महासती श्री ज्ञान प्रभा जी म. आदि ठाणा ने आपश्री के दर्शनों का लाभ प्राप्त किया। वहां पर शासन प्रभावना की दृष्टि से अनेकानेक कार्यक्रम संपन्न हुए। त्रिदिवसीय साधना शिविर का आयोजन किया गया

जिसमें बड़ी संख्या में मुमुक्षु बन्धुओं ने भाग लिया। कांफ्रेंस के अधिकारियों ने वहां पर आपश्री के दर्शनों का लाभ लिया एवं संघीय विकास हेतु मार्गदर्शन प्राप्त किया।

नववर्ष का मंगलपाठ

जैन धर्म दिवाकर परम पूज्य आचार्य श्री के नेतृत्व में पूज्य श्री तारक ऋषि जी महाराज आदि मुनिवृन्द जामनेर से विहार कर बोदवड़, मलकापुर आदि मध्यवर्ती क्षेत्रों में धर्मप्रचार करते हुए भुसावल पधारे। वहां पर नववर्ष में प्रवेश की बेला पर आपश्री ने महामंगल पाठ प्रदान किया। नववर्ष के मंगलपाठ श्रवण के लिए सुदूर क्षेत्रों से हजारों की संख्या में श्रावक-श्राविकाएं एकत्रित हुए थे। स्थानीय श्रीसंघ ने साधर्मी सेवा का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत किया।

अपूर्व धर्म जागरणा

भुसावल से विहार करके नसीराबाद आदि क्षेत्रों का संस्पर्श करते हुए परम पूज्य आचार्य भगवन् जलगांव पधारे। जलगांव महाराष्ट्र का एक सुविख्यात क्षेत्र है। यहां के श्रावकों में जैन धर्म के प्रति सुदृढ़ अनुराग भाव है। जलगांव की धर्मधरा पर परम पूज्य आचार्य देव का वहां की जनता ने भव्य स्वागत किया। आप के पदार्पण से जलगांव की फिजाओं में महान उत्सव उतर आया। आबालवृद्ध में नवीन ताजगी और उत्साह का संचार हुआ।

जलगांव के अध्यक्ष श्री दलीचंद जी चौरड़िया, कार्याध्यक्ष श्री रतनलाल सी. बाफणा, महाराष्ट्र सरकार के पूर्व गृहमंत्री श्री सुरेश दादा जैन, श्रीयुत भंवरलाल जी जैन आदि वरिष्ठ श्रावकों के नेतृत्व में सकल श्रीसंघ ने पलक पांवड़े-बिछाकर आपश्री का स्वागत-अभिनंदन किया।

जलगांव के संक्षिप्त प्रवास में वर्षावास जैसा माहौल बन गया। आपश्री के साधना-स्नात प्रवचनों को सुनकर जनता धन्य बन गई। ध्यान साधना के लिए आपकी प्रेरणा को जनता ने उत्साह से स्वीकार किया। जलगांव में एक शिविर आयोजित करने का आपश्री का विचार था। परन्तु लोगों के भारी उत्साह को देखते हुए अनुक्रम से तीन शिविर लगाए गए।

ध्यान शिविर जैन हिल्स पर आयोजित हुए। पूरे जिला की जनता ने इन शिविरों में भाग लिया।

जैन हिल्स के मालिक सर्वश्री भंवरलाल जी जैन ने ध्यान शिविरों की सुंदरतम व्यवस्था की। इतना ही नहीं, वे आपश्री की ध्यान साधना से इतने

प्रभावित हुए कि उन्होंने प्रत्येक वर्ष बारह ध्यान शिविर जैन हिल्स पर आयोजित करने का निर्णय लिया और इस संबंध में अपनी प्रार्थना आपश्री के चरणों में रखी। उनकी उत्तम भावना को आपश्री ने स्वीकार किया।

जैन हिल्स से आपश्री पुनः जलगांव पधारे। वहां पर परमपूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज की पुण्य तिथि तप-त्याग पूर्वक मनाई। जलगांव के श्रावक रत्न श्री भंवरलाल जी जैन, श्री दलुभाऊ जैन, सर्वश्री सुरेश दादा जैन, श्री रतनलाल जी बाफणा आदि महानुभावों का सेवा-सहयोग विशेष स्मरणीय रहा।

जलगांव के ऐतिहासिक प्रवास के पश्चात् जैन धर्म दिवाकर ध्यान योगी आचार्य प्रवर श्री शिव मुनि जी महाराज चालीस गांव पधारे। वहां पर एक दिवसीय श्रावकाचार एवं ध्यान शिविर का आयोजन हुआ। वहां के अध्यक्ष श्री शांतिलाल जी 'बापू शा' एवं स्थानीय कार्यकर्त्ताओं ने सेवा का लाभ लिया। यह संपूर्ण यात्रा श्रमण संघ के संगठन की दृष्टि से अतीव महत्त्वपूर्ण रही।

ऋषीश्वर अमोलक की तपोभूमि में

चालीसगांव से विहार करके परमपूज्य आचार्य भगवंत धुलिया (वर्तमान धुले) पधारे। धुलिया जैन नगरी है। इसे जैन नगरी का गौरव प्रदान किया परमपूज्य आचार्य श्री अमोलक ऋषि जी महाराज प्रभृति महामुनीश्वरों ने। यहां के श्रावक जैन धर्म के प्रति तन, मन, धन से समर्पित हैं। यहां के प्रबुद्ध श्रावक श्री प्रेमसुख जी छाजेड़ की देख-रेख में अमोल जैन ज्ञानालय संस्था प्रगतिमान है जो जैनागमों के प्रचार-प्रसार और प्रकाशन में समर्पित है।

धुलिया के प्रबुद्ध श्रावकों ने जिनशासन नायक आराध्य आचार्य देव का भावभीना स्वागत किया। वहां पर परमपूज्य प्रवर्तक श्री कल्याण ऋषि जी महाराज की पुण्यतिथि धर्मध्यान और जप-तप पूर्वक मनाई गई। वहां पर विराजित स्थविरा महासती श्री पानकुंवर जी महाराज को दर्शन देकर उनकी भावनाओं को पूर्ण किया। श्वेताम्बर मूर्त्तिपूजक सम्प्रदाय की महासती श्री मणिप्रभा जी ने भी आपश्री के दर्शनों का लाभ लिया एवं साधना सम्बन्धी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त किया।

धुलिया के सेवा-समर्पित श्रावकों ने प्रभूत सेवा का लाभ लिया।

धुलिया से आपश्री मालेगांव पधारे। आपश्री का मालेगांव का यह प्रवास श्रमण संघ के संगठन की दृष्टि से काफी महत्त्वपूर्ण रहा। वहां पर आपश्री

के प्रभावक प्रवचन हुए जिससे साम्प्रदायिक मानसिकताएं शिथिल हुईं तथा संगठन एवं मैत्री भाव का विकास हुआ।

मालेगांव से आपश्री मनमाड़ पधारे। मनमाड़ श्रीसंघ ने आपश्री का भव्य स्वागत किया। आपश्री के सर्वधर्म समन्वय प्रधान प्रवचनों एवं प्रेरणाओं से प्रेरित होकर स्थानीय संघ के युवा कार्यकर्त्ताओं एवं भारतीय जैन संघटना द्वारा 'शांति यात्रा' का आयोजन किया गया। इस शांति यात्रा में वैदिक, इसाई, सिक्ख आदि सभी धर्मों के धर्मगुरुओं एवं नेताओं ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। इस आयोजन के सूत्रधार आचार्य श्री का सभी ने स्वागत अभिनंदन किया। उक्त आयोजन से संपूर्ण नगर में पारस्परिक प्रेम और भ्रातृभाव का प्रभूत प्रसार हुआ।

मनमाड़ श्रीसंघ ने आपके वर्षावास के लिए पुरजोर विनती की। अन्य अनेक श्रीसंघों की वर्षावास की प्रार्थनाएं भी चल रही थीं। होली चातुर्मास पर ही भावी वर्षावास को प्रदान करने की बात आपश्री ने कही। मनमाड़ के प्रभावशाली प्रवास के पश्चात् परम पूज्य आचार्य देव अंकाई पधारे। वहां पर पूज्य श्री हंसमुख मुनि जी महाराज ने आपश्री का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया। अंकाई से आपश्री येवला पधारे जहां अहमदनगर श्रीसंघ आपकी सेवा में उपस्थित हुआ एवं होली चातुर्मास की प्रार्थना प्रस्तुत की।

येवला से आपश्री कोपरगांव पधारे। वहां पर महासती श्री सन्मति कुंवर जी महाराज, महासती श्री प्रवीणा जी महाराज ने आपके दर्शनों का लाभ लिया। वहां से आपश्री शिर्डी पधारे जहां युवकों को विशेष धर्म प्रेरणा प्रदान की। शिर्डी से राहता पधारे। वहां पर महासती श्री प्रीतिसुधा जी महाराज की शिष्याओं ने दर्शन लाभ प्राप्त किया। वहां पर 'प्रीतिसुधा इंग्लिश मिडियम स्कूल' में आपश्री ने बाल संस्कार पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को संस्कारों का अमृतपान कराया। राहता से आपश्री कोल्हार, राहुरी, वाम्बोरी आदि क्षेत्रों में श्रमण संस्कृति का अमृतवर्षण करते हुए अहमदनगर पधारे।

अहमदनगर में होली चातुर्मास

अहमदनगर के श्रद्धालु श्रावकों ने श्रमण संघ नायक आचार्य प्रवर का भावभीना स्वागत किया। अनेक साधु-साध्वी गण आपश्री का सान्निध्य प्राप्त करने हेतु पहले ही अहमदनगर पधार चुके थे। होली चातुर्मास के प्रसंग पर अनेक श्रीसंघ अहमदनगर में उपस्थित हुए। परम पूज्य आचार्य देव के भावी वर्षावास के लिए प्रार्थी संघों में जलगांव, अहमदनगर, पूना, सूरत, मनमाड़

आदि संघ प्रमुख थे। आपश्री ने समस्त संघों की प्रार्थनाओं का स्वागत किया एवं संघीय दृष्टि से सघन चिंतन-मनन करके सूरत श्रीसंघ को भावी वर्षावास की साधु-स्वीकृति प्रदान की। सूरत श्रीसंघ श्रमणसंघ नायक का वर्षावास प्राप्त कर आल्हादित बन गया। वहां विराजित कई साधु-साध्वी मंडलों के भावी वर्षावासों की घोषणा भी आपश्री ने की।

स्मृति पर्व और सेवा यज्ञ

28 मार्च के दिन परमपूज्य आचार्य श्री के सान्निध्य में श्रमणसंघ के द्वितीय पट्टधर ज्योतिर्धर आचार्य सम्राट् श्री आनंद ऋषि जी महाराज की पुण्य तिथि का आयोजन किया गया। उस अवसर पर 70 साधु-साध्वियां पदार्पित थे। सभी मुख्य साधु-साध्वियों ने आराध्य स्वरूप आनंदाचार्य को स्मरण किया एवं अपने श्रद्धा पुष्प पूज्य श्री के चरणों में अर्पित किए। परमादरणीय आचार्य श्री ने भी भावपूर्ण शब्दों में अपने आराध्य देव को स्मरण किया। पूज्य श्री के जीवन की कुछ विशेष घटनाओं पर आपश्री ने प्रकाश डाला एवं संघ से आह्वान किया कि हम सभी को--चतुर्विध संघ को एकजुट होकर आनंदाचार्य के सपनों को साकार करना है एवं उन द्वारा स्थापित संचालित रचनात्मक कार्यक्रमों को समर्पित श्रम के साथ गति प्रदान करनी है।

इसी पुनीत प्रसंग पर पूज्य श्री आदर्श ऋषि जी महाराज के निर्देशन में संकल्पित आनंद हॉस्पिटल के वास्तुपूजन का भव्य कार्यक्रम भी संपन्न हुआ। आनंद जन्म शताब्दी वर्ष में आनंद हॉस्पिटल की आधारशिला को सकल संघ का भारी समर्थन प्राप्त हुआ। आनंदाचार्य के भक्तों ने हृदय-पट खोलकर सहयोग प्रदान किया, जिसके फलस्वरूप एक बड़ी धनराशि एकत्रित हुई। इस अवसर पर देश के कोने-कोने से श्रावक-श्राविका समुदाय तथा कांफ्रेंस के मान्य अधिकारी एवं समर्पित कार्यकर्त्ता उपस्थित हुए। पूना श्री-संघ की प्रार्थना पर महावीर जयंती की प्रार्थना आपश्री ने स्वीकार की।

महावीर जयंती

अहमदनगर से परम पूज्य आचार्य देव पूना पधारे। पूना महाराष्ट्र का प्रमुख नगर है। इसे 'दक्षिण की काशी' का विरुद भी प्राप्त है। आपश्री के लिए यह नगर विशेष भाग्यशाली सिद्ध होता रहा है। पूना के प्रथम वर्षावास में आपश्री का विमल धवल यश भारत वर्ष के कोने-कोने में प्रसृत हुआ। उसके बाद पूना मुनि सम्मेलन में आपश्री को युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। पूना के द्वितीय वर्षावास में आपश्री ने ध्यान शिविरों के माध्यम से

देशव्यापी ध्यान का अभियान चलाया। इससे सकल संघ में ध्यान के प्रति जागरूकता में अभिवृद्धि हुई और लाखों लोगों ने धर्म के विशुद्ध स्वरूप से साक्षात्कार साधा। ऐसे आपश्री की स्वपर कल्याणकारिणी साधना में पूना नगर के समर्पित श्रावकों का संपूर्ण योगदान रहा है।

आचार्यद्वय का मिलन

पूना पदार्पण पर पूना वासियों ने अपने आराध्य देव का पलक-पांवड़े बिछा कर स्वागत किया। इस भव्य प्रवेश की विशेषता यह रही कि स्वागत अभिनंदन समारोह में श्वेताम्बर मूर्तिपूजक परम्परा के महामनीषी आचार्य प्रवर श्री पद्मसागर जी महाराज भी पधारे। दो युग प्रधान आचार्यों का मंगलमय मिलन पूना की पावन धरा पर हुआ। अपने स्वागत अभिनंदन समारोह में आपश्री ने अपने उद्बोधन में फरमाया–हमें भगवान महावीर के सिद्धान्तों को अपने जीवन में चरितार्थ करना चाहिए। हमारे चरित्र से सिद्धान्तों की सुगन्ध फूटनी चाहिए। आओ हम सब मिलकर अपने उच्चादर्शों के साथ जन-जन में मैत्री भाव का वातावरण निर्मित करें।

परम पूज्य आचार्य द्वय के मध्य साधना सम्बन्धी वार्ताएं हुईं। ध्यान के सम्बन्ध में सघन चिन्तन-मनन एवं अनुभवों का आदान-प्रदान हुआ। परमपूज्य आचार्य श्री पद्मसागर जी महाराज ने आपश्री द्वारा विकसित ध्यान प्रणाली की अनुशंसा और अनुमोदना की।

जैन धर्म की दो परम्पराओं के आचार्यों के इस आदर्श मिलन ने पूना जैन समाज में प्रेम और सौहार्द भाव की प्रभूत अभिवृद्धि की। साम्प्रदायिकता शिथिल हुई और विशुद्ध धर्म में आस्थाएं सुदृढ़ बनीं।

महावीर जयंती का उत्सव विशेष समारोह पूर्वक आयोजित हुआ। त्याग-तपस्या द्वारा विशेष रूप से धर्म प्रभावना हुई। आपश्री ने तीर्थंकर महावीर के जीवन और साधना पर विशेष प्रकाश डाला। आपश्री ने फरमाया–तीर्थंकर महावीर के उपदेश विश्व के लिए परम मंगलमय हैं। महावीर के अपरिग्रह के उपदेश को विश्व किंचित् मात्र भी अपने जीवन में ढाल ले तो पृथ्वी से असमानता का विष और भुखमरी तत्काल विदा हो जाएगी। अनेकांत के अर्थ को धर्मनेता हृदयंगम कर लें तो धरती पर से अलगाववाद, आतंकवाद और वैमनस्य विनष्ट हो जाएगा। महावीर की अहिंसा को विश्व अपना ले तो इस धरा पर ही मोक्ष उतर आएगा।

आपश्री के तात्विक उद्बोधन की गूंज सर्वत्र सुनाई दी। प्रांतीय और राष्ट्रीय अखबारों में भी आपके उद्बोधन को विशेष सुर्खियां प्राप्त हुईं।

अक्षय तृतीया पर्व

परमादरणीय परमपूज्य महामहिम आचार्य श्री जी ने पूना के प्रभावशाली प्रवास के पश्चात् नासिक की दिशा में विहार किया। नासिक रोड श्रीसंघ अक्षय तृतीया पर्व पर आपश्री के पदार्पण की स्वीकृति पूर्व में ही ले चुका था। पूना से भोसरी, राजगुरु नगर, मन्चर, खेड़, नारायण गांव, संगमनेर आदि क्षेत्रों को अपने पावस प्रवचनों की पीयूष से सींचते हुए सिन्नर पधारे। यहां पर आपश्री को एक वैरागी स्वप्निल पिपाड़ा की प्राप्ति हुई।

सिन्नर से आपश्री नासिक रोड़ पधारे। अक्षय तृतीया के पावन प्रसंग पर श्रीसंघ ने भव्य कार्यक्रम आयोजित किया। 70 के आसपास सामूहिक पारणे हुए। महासती श्री आदर्श ज्योति जी महाराज आदि ठाणे, एवं गोंडल सम्प्रदाय की महासती श्री ललिताबाई जी महाराज आपश्री के दर्शनों के लिए पधारीं। यहीं पर आपश्री की मातुश्री विद्या देवी जी भी आपके दर्शनों के लिए पधारीं।

नासिक रोड़ से परमादरणीय आचार्य श्री सिडको पधारे जहां पर जैन स्थानक का उद्घाटन हुआ। वहां पर श्री क्रांति मुनि जी आपश्री के दर्शनों के लिए पधारे। मुनि श्री अस्वस्थ थे। आपश्री का मैत्री सद्भाव प्राप्त कर उन्होंने हार्ट का ओप्रेशन कराया जो पूर्णतः सफल रहा। सिडको से आपश्री नासिक सिटी जैन स्थानक में पधारे।

आचार्य श्री को शिष्य द्वय का लाभ

परम पूज्य आचार्य श्री के चरणों में विगत कुछ समय से दो वैरागी बन्धु स्वाध्याय-साधना का अभ्यास कर रहे थे। वैरागी बन्धुओं की स्वाध्याय और वैराग्य में परिपक्वता देख कर आपश्री ने उनकी दीक्षा का मन बनाया। इस हेतु नासिक श्रीसंघ ने अपनी प्रार्थना प्रस्तुत की। वैरागी स्वप्निल पीपाड़ा, सांवल विहार का तथा वैरागी संजय मुणोत नासिक का ही रहने वाला था। विरक्त मुमुक्षुओं के परिजनों तथा स्थानीय संघ के विनम्र आग्रह को दृष्टि में रखते हुए पूज्य आचार्य श्री ने दीक्षा की स्वीकृति नासिक संघ को प्रदान की। उसी पावन प्रसंग पर पूज्य श्री तारक ऋषि जी महाराज के सान्निध्य में स्वाध्यायशील वैरागी ने भी दीक्षा के भाव प्रस्तुत किए। यह वैरागी पूज्य श्री तारक ऋषि जी म. का संसार पक्षीय भांजा था।

18 मई सन् 2000 का दिन दीक्षोत्सव के लिए सुनिश्चित किया गया। नासिक में दीक्षा महोत्सव की बहार आ गई। दीक्षा पूर्व के मंगल कार्यक्रम

भारी उत्साह के साथ सम्पन्न होने लगे। 17 मई के दिन परम पूज्य आचार्य श्री जी का दीक्षोत्सव उत्साह पूर्वक मनाया गया। उसी दिन वैरागी बन्धुओं का केसर का कार्यक्रम भी संपन्न हुआ।

18 मई की प्रभात में प्रकृति ने जलकण बरसा कर वैरागी बन्धुओं के संकल्प का अनुमोदन एवं अभिनंदन किया। सुहावने शीतल वातावरण में वैरागी बन्धुओं की शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा के पश्चात् गुरु वंदन, मुंडन, वेश परिवर्तन आदि उपक्रम संपन्न हुए। मुनि वेश में तीनों बन्धु परम पूज्य आचार्य श्री जी के समक्ष उपस्थित हुए। परम पूज्य आचार्य भगवंत ने पूरे विधान के अनुसार दीक्षापाठ, शिखा लुंचन आदि अनुष्ठानों को सम्पन्न किया। नवदीक्षित मुनियों को क्रमशः नवीन नाम प्रदान किए गए–श्री शुभम मुनि जी, श्री श्रीयश मुनि जी एवं श्री सुशांत ऋषि जी।

उत्कृष्ट उत्साह और उत्सव पूर्वक दीक्षा समारोह सम्पन्न हुआ। श्री जवरीमलजी भण्डारी, श्री शांतिलाल जी दुग्गड़, श्री सूरजमल जी सांखला, श्री मंगलचंद जी सांखला, श्री राजेन्द्र जी गोठी एवं मामा जी श्री लालचंद जी पिपाड़ा आदि महानुभाव श्रावकों का इस भागवती दीक्षा की सफल सम्पन्नता में स्मरणीय सहयोग रहा।

दीक्षा से पूर्व और पश्चात् श्री सरस्वती विद्या केन्द्र में ध्यान शिविरों के सुंदर आयोजन हुए जिनमें शताधिक मुमुक्षुओं ने भाग लिया। इस अवसर पर जलगांव के श्रावक रत्न श्री सुरेशदादा जैन, श्री भंवरलाल जी जैन, श्री दलीचंद जी चौरड़िया आदि गण्यमान्य श्रावक पधारे एवं केन्द्र के विकास के लिए आचार्य श्री से मंत्रणाएं कीं तथा समुचित मार्गदर्शन प्राप्त किया।

नासिक में दीक्षा के मंगलमय कार्यक्रम के पश्चात् परम पूज्य आचार्य भगवन् अपने शिष्य वृन्द एवं परमपूज्य श्री तारक ऋषि जी महाराज आदि सहयोगी मुनि वृन्द के साथ डिण्डोरी होते हुए वणी पधारे जहां पर बड़ी दीक्षा का भव्य कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। उक्त अवसर पर दिल्ली महासंघ एवं वर्धमान युवा महामंडल के अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता भी उपस्थित हुए।

वणी से विहार कर आपश्री जी सुखाना, वासदा, धर्मपुर होते हुए बलसाड़ पधारे। वहां पर सुप्रसिद्ध संत बंधु त्रिपुटी जी ने शांति वन आश्रम में आपश्री का स्वागत किया। मुनिजनों से साधना और ध्यान सम्बन्धी चर्चाएं हुईं। मुनिराजों का सेवा-सहयोग स्मरणीय रहा। वहां से आपश्री जी नवसारी, बारडोली होते हुए उधना पधारे।

❖ ❖ ❖

गुरुराज
गुजरात में

आचार्य शिव गुजरात क्या आए गुजरात का सोया भाग्य जाग उठा। एक उत्साह, एक उमंग, एक नव-नव तरंग ने संघ के शास्ता के प्रति आस्था प्रकट की।

गुरुराज गुजरात में

अट्ठाईसवां वर्षायोग

गुजरात श्रीमद् रायचंद की अध्यात्म भूमि है।

गुजरात गांधी की जन्मभूमि है।

गुजरात पटेल की कर्मभूमि है।

गुजरात भारत का गौरव है। यहां के कण-कण में ज्ञान की गंगा बहती है। यहां की भक्तिधारा में मीरा की वीणा बजती है।

आचार्य शिव गुजरात क्या आए गुजरात का सोया भाग्य जाग उठा। एक उत्साह, एक उमंग, एक नव-नव तरंग ने संघ के शास्ता के प्रति आस्था प्रकट की।

नासिक से सूरत तक के मार्ग में सूरत श्रीसंघ के अधिकारी एवं उत्साही कार्यकर्त्ता नियमित रूप से आचार्य श्री की सेवा में पहुंचते रहे। श्री-संघ के समर्पित सेवा-सहयोग से प्रलम्ब और कठिन विहार यात्रा भी सरलता पूर्वक संपन्न हुई। सूरत श्रीसंघ ने परम पूज्य आचार्य देव के नगर प्रवेश कार्यक्रम को ऐतिहासिक बना दिया। पूरे नगर में महोत्सव जैसा वातावरण निर्मित हो गया। नगर के सभी धर्मों के प्रतिनिधियों ने स्थान-स्थान पर विशाल द्वारों की संरचना कर आचार्य श्री का अभिनंदन किया। अपार जनसमूह आपकी अगवानी के लिए उमड़ पड़ा। प्रतीत होता था मानो सूरत का बच्चा-बच्चा आपके स्वागत के लिए आ गया हो। गगनभेदी जयकारों के मध्य आचार्य श्री का स्वागत और नगर अभिनंदन समारोह सम्पन्न हुआ।

तेरापंथ धर्म संघ की महासती श्री सुमनश्री जी महाराज भी आपके अभिनंदन समारोह में उपस्थित हुई। उन्होंने पूज्य आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की जन्मजयंती समारोह के लिए आपश्री को सादर आमंत्रित किया। उक्त समारोह में आपश्री पधारे। वहां पर आपश्री के समन्वय प्रधान उद्बोधन से एकता का सुंदर वातावरण निर्मित हुआ।

गुजरात की धरा पर परम पूज्य आचार्य भगवन् का प्रथम बार आगमन हुआ था। यहां के लोगों के प्रेम, समर्पण और श्रद्धा ने आपश्री का हृदय जीत लिया। आपश्री का पुण्य प्रताप भी इसमें विशेष हेतु रहा। लोगों ने कहा सूरत की धरती पर ऐसा स्वागत आज तक न किसी धर्मनेता का हुआ और न किसी राजनेता का ही हुआ।

यथासमय वर्षावास प्रारंभ हुआ। विशाल और भव्य प्रवचन मण्डप की स्थापना की गई थी। शिविरों के आयोजन के लिए विशाल हॉल की व्यवस्था श्रीसंघ ने की थी। ऐसे ही भोजनशाला, अतिथिगृहों आदि का सुंदर प्रबंध किया गया था।

श्रीसंघ की शक्ति को एक सूत्र में पिरोने के लिए सूरत जैन महासंघ का गठन किया गया। साथ ही युवक संघ का भी गठन हुआ। अखिल भारतीय स्तर पर कांफ्रेंस की गुजरात शाखा और महिला शाखा का भी गठन किया गया। इन समस्त उपक्रमों से सूरत जैन संघ की शक्ति में अपूर्व वृद्धि हुई। प्रत्येक व्यक्ति ने संघ में अपने अस्तित्व को अनुभव किया और प्रत्येक ने तन, मन, धन से वर्षावास की सफलता के लिए स्वयं को समर्पित किया।

सूरत वर्षावास की संपूर्ण अवधि में रचनात्मक और साधनात्मक अनुष्ठान संपन्न होते रहे। विशाल प्रवचन मण्डप में श्रोताओं की भारी भीड़ प्रतिदिन धर्मश्रवण का लाभ लेती थी। वर्षावास भर ध्यान शिविरों का आयोजन होता रहा। हजारों लोगों ने ध्यान साधना द्वारा विशुद्ध धर्म के स्वरूप को हृदयंगम किया। संघ के विकास हेतु समय-समय पर श्रावक सम्मेलन, युवा सम्मेलन, महिला सम्मेलन के कार्यक्रम सम्पन्न होते रहे। नियमित रूप से स्वाध्याय शिविर और बालसंस्कार शिविरों का आयोजन होता रहा। संक्षेप में कह सकते हैं कि वर्षावास की संपूर्ण अवधि ही एक वि[illegible]ल उत्सव बन गई थी जिसमें सूरत के आबालवृद्ध सहित भारत के सुदूर अंचलों तक के श्रावक-श्राविकाओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

परमादरणीय परमपूज्य आचार्य श्री जी ने अपने प्रवचनों का मूल विषय स्वाध्याय, साधना और सद्संस्कारों पर केन्द्रित रखा। इससे संघ में एक वातावरण निर्मित हुआ जिसके फलस्वरूप महासंघ सूरत ने एक गुरुकुल की स्थापना की योजना बनाई। एक ऐसे गुरुकुल की रूपरेखा तैयार की गई जिसमें सांस्कृतिक अध्ययन के साथ-साथ विशाल ध्यान केन्द्र एवं सेवा सदन भी हो।

चातुर्मास की अवधि में 'आचार्य पद चादर महोत्सव' विषय पर अखिल भारतीय स्तर पर विचार विमर्श चलता रहा। इसके लिए कई बड़े संघ उत्सुक थे। राजधानी दिल्ली में भी इस महामहोत्सव के आयोजन के लिए काफी उत्सुकता देखी जा रही थी। इस सम्बंध में कांफ्रेंस के अधिकारी और कार्यकर्त्ता नियमित रूप से परम पूज्य आचार्य श्री के दर्शनों के लिए तथा मार्गदर्शन के लिए सूरत आते रहे।

एक आचार्य के रूप में अपने सपूत के दर्शन-वन्दन-अभिनंदन के लिए पूरा उत्तर भारत उत्सुक था। उत्तर भारत के श्रीसंघ निरंतर आचार्य श्री की सेवा में उपस्थित होकर प्रार्थनाएं प्रस्तुत कर रहे थे। अखिल भारतीय जैन कांफ्रेंस के स्तर पर भी उत्तर भारत में पदार्पण की प्रार्थनाएं की गईं। इसके लिए कांफ्रेंस के तत्कालीन अध्यक्ष श्री जे. डी. जैन, महामंत्री श्री जोगीराम जी जैन, उपाध्यक्ष सर्वश्री हीरालाल जैन, श्री आर. डी. जैन, श्री मनोहर लाल जी जैन, श्री सुखबीर जैन, मंत्री श्री शेरसिंह जैन आदि गण्यमान्य व्यक्ति आपकी सेवा में उपस्थित होते रहे। उत्तर भारत के उत्कृष्ट उत्साह, श्रद्धा और समर्पण में बंधकर आखिर आचार्य श्री ने उधर पधारने का कार्यक्रम तय किया।

दीपावली के प्रसंग पर परम पूज्य आचार्य श्री जी ने सप्तदिवसीय विशेष साधना की एवं तीन दिवसीय मौन, ध्यान एवं तप की साधना में लीन रहे। ऐसा आपश्री विगत कई वर्षों से करते रहे हैं। यह आपकी विशेष साधना का अंग है।

वर्षावास की अवधि में अनेकानेक रचनात्मक कार्य हुए। इस वर्षावास में साहित्य की दृष्टि से भी स्मरणीय कार्य हुए। आपश्री द्वारा रचित ध्यान 'एक दिव्य साधना' एवं 'नदी नाव संजोग' नामक पुस्तकों का पुनर्प्रकाशन हुआ तथा 'जिनशासनम्' नामक नई कृति का मुद्रण हुआ।

श्री प्रकाश जी सिंघवी, श्री लहरीलाल जी सिंघवी, श्री शांतिलाल जी तलेसरा, श्री हुक्मीचंद जी कोठारी, श्री गजेन्द्र जी चण्डालिया, श्री बंशीलाल जी सिंघवी, श्री अशोक जी कानूगो, श्री गोविंद जी परमार, श्री चांदमल जी मण्डोत, श्री शांतिलाल जी मण्डोत आदि श्रावकों का इस वर्षावास में स्मरणीय सहयोग रहा।

दिल्ली की दिशा में विहार यात्रा

सूरत का ऐतिहासिक वर्षावास सम्पन्न कर परमादरणीय परम पूज्य

आचार्य श्री ने दिल्ली को लक्ष्य पथ पर रखते हुए विहार यात्रा प्रारंभ की। मध्यवर्ती क्षेत्रों को स्पर्शते हुए आपश्री बड़ौदा पधारे। बड़ौदा श्रीसंघ ने आपश्री का भव्य स्वागत किया। प्रवचनों के माध्यम से जिनधर्म की सुंदर प्रभावना हुई।

बड़ौदा से विहार कर ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए एवं जन-जन के मन में सम्बोधि के दीप प्रज्ज्वलित करते हुए जिनशासन के शिखर पुरुष पूज्य आचार्य श्री जी अहमदाबाद पधारे। अहमदाबाद गुजरात का प्रमुख नगर है। यह व्यापार का प्रमुख केन्द्र है। यहां का जैन इतिहास अत्यंत प्राचीन रहा है। यहां पर हजारों की संख्या में जैन परिवार रहते हैं।

अहमदाबाद श्रीसंघ ने पूज्य आचार्य देव का भावभीना स्वागत किया। श्रीसंघ एवं युवक संघ ने मिलकर आपश्री के सार्वजनिक प्रवचनों का आयोजन किया। आपश्री के सार्वजनिक प्रवचनों में हजारों की संख्या में श्रोताओं ने धर्म श्रवण का लाभ लिया। आपश्री की साधना और विद्वत्ता की यहां की जनता पर अपूर्व छाप पड़ी। वर्ष 2002 के वर्षावास के लिए श्रीसंघ ने पुरजोर प्रार्थना प्रस्तुत की।

अहमदाबाद में एक दिवसीय एवं त्रिदिवसीय ध्यान साधना शिविरों के आयोजन किए गए जिनमें सैकड़ों मुमुक्षुओं ने ध्यान साधना का रसास्वादन किया।

परम पूज्य पंडित रत्न श्री रमेश मुनि जी महाराज, उप प्रवर्तक डा. श्री राजेन्द्र मुनि जी महाराज आदि मुनिवृन्द माउण्ट आबू से विहार कर पूज्य आचार्य श्री के दर्शनों के लिए अहमदाबाद पधारे। पूज्य मुनिवृन्द का समर्पण-सहयोग सुंदर रहा और दिल्ली तक की प्रलम्ब विहार यात्रा आपके साथ ही चली। अहमदाबाद में विराजित महासती श्री सोहन कुंवर जी महाराज आदि ठाणा ने भी आपश्री के दर्शनों का लाभ प्राप्त किया।

अहमदाबाद के उपनगरों में जिन प्रभावना की अलख जगाते हुए परम श्रद्धेय आचार्य श्री तपोवन पधारे जहां पर पन्यास श्री चंद्रशेखर विजय जी महाराज आदि ठाणा 25 ने आपका हार्दिक स्वागत किया। पूज्य मुनिवृन्द से आत्मीयता पूर्ण वातावरण में चर्चाएं हुईं। मुनिवर ने तपोवन की गतिविधियां बताईं।

अहमदाबाद प्रवास में ही ऋषि सम्प्रदाय के श्री जितेन्द्र मुनि जी महाराज आदि ठाणा ने आपश्री के दर्शनों का लाभ लिया। गुजरात सम्प्रदाय

की साध्वीवृंद ने भी आपश्री के दर्शन कर स्वयं को धन्य माना।

वहां से आचार्य श्री जी कोबा स्थित महावीर साधना केन्द्र में पधारे। उक्त साधना केन्द्र का निर्माण आचार्य श्री पद्मसागर जी महाराज की प्रेरणा से हुआ है। यह केन्द्र मनोहारी एवं साधना-आराधना का सुंदर स्थल है। वहां के ज्ञान भण्डार एवं म्यूजियम का आपश्री ने अवलोकन किया।

वहां से आपश्री कोबा में ही स्थित 'प्रेक्षा विश्व भारती' पधारे जहां पर तेरापंथ धर्म संघ के विख्यात मुनिवर श्री लोक प्रकाश जी 'लोकेश' आदि मुनिवृन्द ने आपश्री का भावभीना स्वागत-अभिनंदन किया। मुनि श्री से ध्यान और स्वाध्याय सम्बन्धी आपश्री की चर्चाएं हुईं। ध्यान पर अनुभवों का आदान-प्रदान हुआ। मुनि श्री के निवेदन पर वहां पर त्रिदिवसीय ध्यान शिविर का आयोजन किया गया। उस शिविर में 165 मुमुक्षुओं ने भाग लिया। शिविरार्थियों में अहमदाबाद संघ के श्रावक, तेरापंथी समाज के युवक एवं स्थानीय पटेल जाति के सदस्य प्रमुख थे।

कोबा से विहार कर परम पूज्य आचार्य देव गांधी नगर स्थित श्री जिनेन्द्र कुमार जी जैन 'यंगलीडर' वालों के भवन पर पधारे। यंगलीडर भवन पर आपश्री का भव्य स्वागत किया गया। यंगलीडर के मालिक श्री जिनेन्द्र जी जैन ने आपके पदार्पण को अपना अहोभाग्य माना एवं सेवा आराधना का भरपूर लाभ लिया।

आचार्यों से मिलन

परम श्रद्धेय जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् श्री शिव मुनि जी महाराज का जीवन अनंत सद्गुणों का मनोरम उद्यान है। आपके महनीय गुणों में एक महान सद्गुण है मिलनसारिता। 'सबसे हिल-मिल चालिए' का सिद्धान्त आपश्री का सहज स्वभाव है। मार्ग पर मिलने वाले प्रत्येक व्यक्ति से आपश्री पूरे प्रेम भाव से मिलते हैं। सद्गुणों के पुंज पुरुषों से आपश्री लीक से हटकर भी मिलते हैं। आपके इस सद्गुण ने आपश्री को लाखों का प्रिय और पूज्य बनाया है।

आपश्री के सद्गुण कोष में एक अन्य महनीय सद्गुण है– ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थलों के प्रति आकर्षण। ऐसे स्थलों का अवलोकन आपश्री पूरे भाव से करते हैं। इसके लिए चाहे आपको प्रलम्ब मार्ग ही क्यों न चुनना पड़े। आपश्री के उपरोक्त सद्गुण-स्वभाव का दर्शन हम इस

आलेख के प्रत्येक पृष्ठ पर करते रहे हैं और आगे के पृष्ठों पर भी करते रहेंगे।

परमादरणीय परमपूज्य आचार्य भगवन् गांधीनगर से विहार करके महुड़ी पधारे। महुड़ी जैन तीर्थ स्थल है जहां पर भव्य जिनालय बने हुए हैं। वहां पर श्वेताम्बर मंदिर मार्गीय आचार्य प्रवर श्री रत्नसुंदर विजय जी से आपश्री की भेंट हुई। दो जैनाचार्यो का यह मिलन अत्यंत आत्मीयता पूर्ण रहा। दोनों मुनिसत्तमों के मध्य साहित्य और साधना पर गंभीर चर्चाएं हुई। साहित्य का आदान-प्रदान हुआ। महुड़ी के भव्य जिनालयों का आपश्री ने सूक्ष्म दृष्टि से अवलोकन किया। यहीं पर अनुयोग प्रवर्तक उपाध्याय प्रवर श्री कन्हैयालाल जी महाराज 'कमल' के शिष्य रत्न श्री विनय मुनि जी महाराज 'वागीश' एवं श्री गौतम मुनि जी महाराज आपश्री के दर्शनों के लिए पधारे।

महुड़ी से आपश्री आगलोड़ जी होते हुए बिजापुर पधारे जहां उत्तर गुजरात का सम्मेलन आयोजित हुआ। वहां विराजित श्री सुबोध सागर जी महाराज से आपश्री की मधुर भेंट हुई। मुनि श्री से साधना सम्बन्धी चर्चाएं हुई।

बिजापुर से ग्रामानुग्राम विचरते हुए मेहसाणा पदार्पण हुआ। वहां से आपश्री शंखेश्वर तीर्थ पर पधारे। वर्तमान में शासन प्रभावना की दृष्टि से यह तीर्थ पूरे भारत में विशेष प्रभावक तीर्थ माना जाता है। वहां पर विराजित आचार्य श्री गुणरत्न सूरीश्वर जी महाराज, आचार्य श्री लब्धि सूरीश्वर जी महाराज, श्री शीलरत्न सूरीश्वर जी महाराज आदि मुनीश्वरों से आपश्री का मिलन हुआ। मुनिराजों से मिलन पर्याप्त आत्मीयता पूर्ण रहा। जैन धर्म के विकास और जिन प्रभावना आदि विषयों पर चर्चाएं हुईं।

आचार्यों एवं मुनिवरों से आपश्री के निरंतर मिलन से जैन एकता को पर्याप्त संबल मिला। साम्प्रदायिक भावनाएं गौण हुईं। पारस्परिक प्रेम का प्रसार हुआ। जिनशासन की प्रभावना में अभिवृद्धि हुई। जिनत्व की महिमा एकस्वर से स्वीकृत हुई।

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ महातीर्थ पर 108 श्री पार्श्वनाथ भक्ति विहार ट्रस्ट द्वारा निर्मित धर्मशाला में आपश्री विराजे। शंखेश्वर तीर्थ पर स्थित कलात्मक जिनालयों का आपश्री ने अवलोकन किया। यहां पर कच्छ क्षेत्र के साध्वी मण्डल ने आपश्री के दर्शनों का लाभ लिया।

आबू पर्वत पर

परमादरणीय परम पूज्य आचार्य श्री जी शंखेश्वर तीर्थ से विहार कर ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए पालनपुर पधारे। वहां के श्रीसंघ ने सेवा का लाभ लिया। प्रवचनादि के कार्यक्रम हुए। पालनपुर से अम्बा जी के लिए विहार यात्रा प्रारंभ हुई। विहार यात्रा के दौरान एकाएक पृथ्वी कंपायमान होने लगी। भयानक भूकंप से पूरा गुजरात दहल उठा। मार्ग पर एक किनारे खड़े होकर आपश्री ने मुनि मण्डल को निर्देश दिया–आप सभी लोग विश्व मंगल के लिए अरिहंत देव का ध्यान करो। स्वयं आचार्य देव भी आंखें मूंद कर अरिहंत देव का स्मरण करने लगे।

कुछ क्षण बाद भूकंप शान्त हुआ। विहार यात्रा आगे बढ़ी। अम्बा जी नगर में पदार्पण हुआ। वहां पर किसी प्रकार की जनहानि नहीं हुई थी। परन्तु उक्त भूकम्प से गुजरात के कई नगर और गांव पूरी तरह नष्ट हो गए थे। इसे जिनशासन का प्रभाव कहें अथवा आचार्य देव का पुण्य प्रताप कहें, जिन क्षेत्रों में आपश्री का चरण-स्पर्श हुआ था वहां किसी प्रकार की हानि नहीं हुई।

उक्त अवसर पर आचार्य देव ने अपने समस्त श्रावकों के लिए आदेश प्रेषित किए–श्रावको! प्राकृतिक आपदा के इस क्षण में प्रभावित लोगों की सेवा के लिए तन-मन और धन से सहयोग प्रदान करो। आचार्य श्री की प्रेरणा से सूरत आदि क्षेत्रों के लोगों ने भूकंप प्रभावित लोगों के सहयोग के लिए विशाल राशियां एकत्रित कीं। स्थान-स्थान से राहत सामग्री के ट्रक भेजे गए। अम्बाजी नगर के श्रावकों ने भी भूकंप पीड़ितों की सहायता के लिए पर्याप्त सहयोग समर्पित किया।

गुजरात की धरती को अलविदा कहकर परमपूज्य आचार्य श्री जी ने वीर वसुंधरा राजस्थान की धरा पर चरणन्यास किया। आबू रोड़, रीको कॉलोनी जैन स्थानक होते हुए आपश्री सम्बोधि वन पधारे। वहां पर संत अमिताभ जी (श्री मीठालाल जी स्वामी) ने आप का स्वागत किया। संत अमिताभ जी एक अध्यात्मयोगी मुनि हैं। मुनिवर से आपश्री की आध्यात्मिक चर्चाएं हुईं और ध्यान-साधना संबंधी अनुभवों का आदान-प्रदान हुआ। पंडित श्री नरेश मुनि जी महाराज एवं महासती श्री मुक्तिप्रभा जी महाराज राजस्थान से उग्र विहार कर आपश्री का राजस्थान की धरा पर स्वागत करने के लिए पधारे।

वर्धमान महावीर केन्द्र पर अनुयोग प्रवर्तक उपाध्याय श्री कन्हैयालाल जी महाराज 'कमल' के शिष्य उप प्रवर्तक श्री विनय मुनि जी महाराज 'वागीश' आदि ठाणा ने आपश्री का भावभरा स्वागत किया। मुनिवरों का मिलन आत्मीयता पूर्ण रहा। आपश्री ने उपाध्याय श्री जी को स्मरण किया, उनकी अनुयोग संदर्भित महान आगमीय साधना की भूरि-भूरि अनुशंसा की एवं फरमाया कि हमें पूज्य श्री की साधना का अनुगमन करना चाहिए।

प्रव्रज्या पर्व

राजस्थान की पुण्यधरा पर परम पूज्य आचार्य श्री के सन्निध्य में प्रथम दीक्षा महोत्सव का आयोजन माउण्ट आबू पर हुआ। महासती श्री मुक्तिप्रभा जी के नेश्राय में स्वाध्यायशीला वैरागन लता बहन की दीक्षा सम्पन्न हुई। उक्त पावन प्रसंग पर गुजरात भूकंप पीड़ितों के लिए विशाल धनराशि भी एकत्रित की गई। माउण्ट आबू प्रवास में सुदूर अंचलों के श्रावक गण आचार्य श्री की सेवा में उपस्थित होते रहे एवं अपने-अपने प्रदेशों-नगरों में पधारने की प्रार्थनाएं प्रस्तुत करते रहे। कांफ्रेंस के अधिकारी भी उपस्थित हुए एवं भावी योजनाओं हेतु आपश्री का आशीर्वाद एवं दिशानिर्देश प्राप्त किया।

माउण्ट आबू पर एक त्रिदिवसीय ध्यान शिविर का भी समायोजन किया गया जिसमें अनेक मुमुक्षु भाई-बहनों के साथ-साथ महासती श्री मुक्ति प्रभा जी महाराज, महासती श्री दिव्य प्रभा जी महाराज ने भी सहभागिता की।

मेवाड़ की माटी पर

परमादरणीय परम पूज्य आचार्य श्री जी माउण्ट आबू से विहार कर अंजारी होते हुए घटा माता पधारे जहां सेरा प्रांत की ओर से राष्ट्रसंत श्री गणेश मुनि जी महाराज, श्री जिनेन्द्र मुनि जी महाराज एवं महासती श्री कंचन कुंवर जी महाराज आदि ठाणे तीन ने विशाल जनसमुदाय के साथ आपश्री का स्वागत-अभिनंदन किया। वहां से आपश्री तिरपाल पधारे। पूरे सेरा प्रांत के भक्तगण जिन्होंने सूरत चातुर्मास में सेवा-भक्ति का लाभ लिया था वे सभी विशेष रूप से अपने-अपने ग्राम में आचार्य श्री जी को ले जाने हेतु एकत्रित हुए एवं आचार्य श्री से उनके ग्रामों को स्पर्शने की प्रार्थना की। उनकी भावनाओं को ध्यान में रखकर पूज्य आचार्य श्री ने सभी ग्रामों का विचरण किया। सायरा, सिंघाड़ा, सेमड़, पदराड़ा, कमोल, ढ़ोल, नांदेसमा, सुवावतो

होते हुए पूज्य श्री जशवंतगढ़ पधारे। उपरोक्त सभी गांवों में भक्ति भावना की गंगा-यमुना प्रवाहित हुई। संक्षिप्त प्रवासों में भी जिन धर्म की सुंदर प्रभावना हुई।

जशवंतगढ़ में आचार्य सम्राट् श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज के सुशिष्य कर्मठ अध्यवसायी श्री दिनेश मुनि जी महाराज, श्री द्वीपेन्द्र मुनि जी महाराज, ठाणे-2 एवं महासती श्री चारित्र प्रभा जी महाराज, महासती श्री दर्शनप्रभा जी महाराज, दक्षिणज्योति महासती श्री आदर्शज्योति जी महाराज आदि साधु-साध्वी वृन्द आचार्य श्री के स्वागत-अभिनंदन के लिए पहुंचे।

ध्यान शिविर

परमादरणीय परमपूज्य आचार्य श्री जी ने सेरा प्रांत के सभी भक्तों की भावना को ध्यान में रखते हुए ढ़ोल में त्रिदिवसीय ध्यान साधना शिविर का आयोजन किया। उक्त शिविर में विशाल संख्या में श्रावक-श्राविकाओं के साथ-साथ महासती वृन्द ने भी भाग लिया।

ढ़ोल से विहार कर पूज्य आचार्य श्री सेमटार, गुरुपुष्कर नगर कॉलेज होते हुए गोगुंदा पधारे। गोगुंदा से बड़गुंदा पधारे। बड़गुंदा महासती श्री चारित्र प्रभा जी महाराज एवं महासती श्री राजश्री जी महाराज की जन्मभूमि है। वहां पर प्रवचन आदि के सुन्दर कार्यक्रम हुए।

परमादरणीय परम पूज्य आचार्य भगवन् अपने शिष्य वृन्द के साथ बडगुंदा से विहार कर अरावली की पहाड़ियों के मध्य से होते हुए कठिन मार्ग से गोपीनाथ जी की मदार ग्राम में पधारे। प्रसंगवश यह संकेत करना आवश्यक समझ रहा हूँ कि मदार मेरा (शिरीष मुनि) ननिहाल ग्राम है। सांसारिक ननिहाल पक्ष के परिजनों एवं पुरजनों के विनम्र अनुरोध को परम पूज्य आचार्य श्री ने पूरा मान प्रदान किया और इस छोटे से ग्राम को अपने चरण रज से पवित्र किया। संयोग से उसी दिन मेरा जन्म दिन भी था। परिजनों के लिए यह एक और भावुक कारण था।

मदार ग्राम के आबालवृद्ध ने परम पूज्य आचार्य देव का भावभरा स्वागत किया। दोपहर में प्रवचन सभा का समायोजन किया गया। उक्त अवसर पर सेरा प्रांत, मगरा प्रांत, उदयपुर एवं नाई ग्राम के श्रावक गण विपुल संख्या में उपस्थित हुए। अल्प प्रवास में सुंदर धर्माराधना एवं जिन प्रभावना हुई। ग्राम के लोगों ने आचार्य देव के आगमन को भगवान के आगमन के तुल्य माना।

उतर आया उत्सव

मदार से विहार कर परम पूज्य आचार्य देव नाई ग्राम पधारे। पुन: यह उल्लेख आवश्यक प्रतीत हो रहा है कि नाई ग्राम मेरी (शिरीष मुनि) जन्मभूमि है। अपने जीवन के प्रारंभिक अठारह वर्ष मैंने इसी गांव में व्यतीत किए।

अस्तु! परमपूज्य श्रमण संघ नायक आचार्य देव के नाई ग्राम पदार्पण के संदेश से ग्राम के कण-कण में श्रद्धा, भक्ति और हर्ष का उल्लास उमड़ आया। गांव का आबालवृद्ध अपने धर्मदेव के दर्शनों के लिए, अगवानी और अभिनन्दन के लिए मार्ग पर उमड़ पड़ा। ग्राम से पांच कि. मी. की दूरी पर ही पूरा गांव एकत्रित हो गया। ग्राम के प्रवेश द्वार पर कन्याएं सिर पर मंगल कलश लिए अपने आराध्य के स्वागत के लिए उपस्थित थीं। बच्चे-बच्चे के मन में अपूर्व उत्साह एवं जिनेश्वर देवों के प्रति श्रद्धा का भाव गगनस्पर्शी जयकारों के रूप में गुंजायमान हो रहा था। हर्ष का यह उत्सव केवल जैन परिवारों में ही नहीं था, बल्कि छत्तीस कौम के लोग इसमें पूरे भाव से सम्मिलित हुए थे।

नाई ग्राम में विराजित घोर तपस्वी श्री केशुलाल जी महाराज जो विगत 50 वर्षों से बेले-बेले की तपस्या कर रहे थे, उनके पुण्य दर्शनों का लाभ आपश्री ने प्राप्त किया।

इस उत्सव में महोत्सव का महात्म्य जगाने के लिए परम पूज्य प्रवर्तक श्री रूपचन्द जी महाराज, उपप्रवर्तक श्री सुकन मुनि जी महाराज, उप प्रवर्तक श्री विनय मुनि जी महाराज 'वागीश', उप प्रवर्तक डा. श्री राजेन्द्र मुनि जी महाराज, उप प्रवर्तक श्री तारक ऋषि जी महाराज, श्री विनय मुनि जी महाराज 'भीम' आदि ठाणे 38, एवं महासती श्री चारित्र प्रभा जी महाराज, महासती श्री दर्शन प्रभा जी महाराज, महासती श्री आदर्शज्योति जी महाराज आदि ठाणे 18, साधु-साध्वी गण भी नाई ग्राम पधारे।

इतना ही नहीं, भारतवर्ष के गण्यमान्य श्रावक भी उक्त अवसर पर नाई ग्राम में पधारे। आगन्तुक श्रावकों में कुछ प्रमुख नाम इस प्रकार हैं—अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कांफ्रेंस के अध्यक्ष श्री जे. डी. जैन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री हीरालाल जी जैन, श्री बंकटलाल जी कोठारी, श्री रामकुमार जी जैन श्रमण शाल लुधियाना, श्री टी. आर. जैन, श्री शांतिलाल जी छाजेड़, श्री वीरेन्द्र जी डांगी, श्री भंवर सेठ, श्री एन. के छाजेड़, युवाध्यक्ष

श्री निर्मल पोखरणा, श्री संजय जैन, श्री दिलीप माण्डोत आदि। महामण्डलेश्वर श्री मुरली मनोहर शरण, जिला प्रमुख श्री छगनलाल जी जैन भी उक्त अवसर पर उपस्थित हुए।

उदयपुर आदि आस-पास के कई क्षेत्रों के श्रीसंघ भी उक्त अवसर पर मुनि दर्शन के लिए उपस्थित हुए।

नाई ग्राम के इतिहास का यह प्रथम अवसर था जब चतुर्विध श्रीसंघ का ऐसा महामिलन महोत्सव हुआ।

सायंकालीन प्रवचन में पूरा गांव सम्मिलित हुआ। दूसरे दिन प्रभात में प्रवचन हुआ जिसमें गांव के अतिरिक्त अनेक श्रीसंघ भी सम्मिलित हुए। उक्त अवसर पर भूकम्प पीड़ितों के प्रति संवेदना हेतु सवा नौ लाख महामंत्र का जाप किया गया एवं विशाल धन राशि एकत्रित की गई। इसी अवसर पर नव निर्मित महावीर भवन के लिए भी पर्याप्त दान राशि एकत्रित हुई।

दूर-सुदूर और पास-पड़ोस के क्षेत्रों से उपस्थित हुए सहस्रों भाई-बहनों का आतिथ्य मातुश्री सोहनबाई ख्यालीलाल जी कोठारी[१] एवं उनके सुपुत्रों श्री नानालाल जी कोठारी, श्री जशवंत लाल जी कोठारी, श्री विनोद कुमार जी कोठारी, श्री दिनेश कुमार जी कोठारी[२] की ओर से किया गया। श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री भंवर लाल जी दलाल, मंत्री श्री हीरालाल जी कोठारी एवं शेष समस्त कार्यकर्त्ताओं का भी विशेष सहयोग रहा।

नाई ग्राम के संक्षिप्त परन्तु ऐतिहासिक प्रवास के पश्चात् वहां से विहार करके परमपूज्य आचार्य देव दूधिया गणेश जी में स्थित 'पुष्कर ध्यान केन्द्र' में पधारे। वहां पर ध्यान साधना पर विद्वद् गोष्ठी आयोजित की गई।

झीलों के शहर में

दुधिया गणेश जी से परम पूज्य आचार्य श्री जी एवं पूज्य प्रवर्तक श्री रूपचंद जी महाराज आदि मुनिवृंद उदयपुर पधारे। उदयपुर श्रीसंघ ने आपका भव्य स्वागत किया। उदयपुर में प्रवचनों के माध्यम से प्रभूत रूप में धर्म प्रभावना हुई।

इसी मध्य दिल्ली में आचार्य पद चादर समर्पण महामहोत्सव के आयोजन के लिए तैयारियां हो चुकी थीं। जैन कांफ्रेंस के निर्देशन में तथा दिल्ली

---

१. परमपूज्य श्री शिरीष मुनि जी की जननी
२. मुनिवर के सहोदर — संपादक

महानगर के सहयोग से ऋषभ विहार के तत्वावधान में चादर महोत्सव कार्यक्रम की पूरी रूपरेखा तैयार हो चुकी थी। श्रमण संघ के वरिष्ठ मुनिराजों एवं शीर्षस्थ श्रावकों ने मिलकर इसके लिए 7 मई 2001 का दिन सुनिश्चित किया था।

दिल्ली के प्रमुख श्रावक एवं ऋषभ विहार के उत्साही कार्यकर्त्ता तथा जैन कांफ्रेंस के अधिकारी सभी साधु-साध्वियों की सेवा में पहुंचकर चादर महोत्सव में पदार्पण हेतु प्रार्थनाएं प्रस्तुत कर रहे थे। समग्र भारत वर्ष में चादर महोत्सव के प्रसंग को लेकर विशेष उत्साह फैल गया था। अनेक साधु-साध्वी मंडलों ने चादर महोत्सव में सम्मिलित होने के लिए दिल्ली की दिशा में विहार यात्राएं प्रारंभ कर दी थीं।

इसी कड़ी में जैन कांफ्रेंस के प्रमुख पदाधिकारी श्री हीरालाल जी जैन के नेतृत्व में उदयपुर आए। परमपूज्य प्रवर्तक श्री रूपचंद जी महाराज से चादर महोत्सव पर पधारने की पुरजोर प्रार्थना की गई। पूज्य प्रवर्तक श्री जी का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं था, परन्तु हृदय में अपार उत्साह था। उसी उत्साह के फलस्वरूप पूज्य प्रवर्तक श्री जी ने स्वयं सहित राजस्थान के 75 साधु-साध्वियों के पदार्पण की साधु-भाषा में स्वीकृति प्रदान की। इससे सकल संघ में भारी उत्साह का संचार हुआ।

उदयपुर प्रवास में वैरागी श्री कर्णकुमार की दीक्षा सम्पन्न हुई। दीक्षा पाठ परम पूज्य आचार्य श्री जी ने अपने श्रीमुख से प्रदान किया। उक्त अवसर पर पूज्य प्रवर्तक श्री इन्द्रमुनि जी महाराज, उप प्रवर्तक श्री मदन मुनि जी महाराज, श्री भगवती मुनि जी महाराज, श्री वृद्धिचंद जी महाराज, महासती डा. श्री सुशील जी महाराज, महासती श्री दिव्य प्रभा जी महाराज आदि श्रमण-श्रमणी वृंद ने आपश्री के दर्शनों का पुण्य लाभ प्राप्त किया।

उदयपुर श्रीसंघ की प्रार्थना पर आपश्री ने त्रिदिवसीय ध्यान शिविर का आयोजन किया जिसमें शताधिक मुमुक्ष साधकों ने भाग लिया एवं धर्म के विशुद्ध स्वरूप से साक्षात्कार साधा।

उदयपुर से विहार करके परमपूज्य आचार्य भगवन् ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए देलवाड़ा पधारे। वहां के विधायक श्री गुलाबचंद जी कटारिया के नेतृत्व में सकल संघ ने आपश्री का भव्य स्वागत किया। देलवाड़ा से नाथद्वारा होते हुए आपश्री कांकरोली पधारे। मार्गवर्ती सभी ग्रामों में प्रवचन सभाओं द्वारा जिनवाणी का संदेश दिया गया।

कांकरोली से आपश्री कोशीथल पधारे। वहां पर मेवाड़ संभाग की ओर से धर्मज्योति परिषद् द्वारा महासती श्री प्रेम कुंवर जी महाराज की स्मृति में एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें पूरे मेवाड़ संभाग के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं एवं श्रावक संघों की उपस्थिति सराहनीय रही। वहां पर महासती श्री प्रेमवती जी महाराज की शिष्याओं ने पूज्य आचार्य देव के दर्शनों का लाभ लिया। श्री पुखराज जी सूर्या परिवार की सेवा सराहनीय रही।

कोशीथल से परम पूज्य आचार्य भगवन् गंगापुर पधारे। वहां पर भी प्रवचनादि के सुंदर कार्यक्रम समायोजित हुए। वहां पर श्री शोभालाल जी, श्री बंशीलाल जी, श्री प्रकाश चंद जी सिंघवी परिवार की विशेष सेवाएं रहीं। वहां से सहाड़ा, लाखोला आदि क्षेत्रों में धर्म प्रचार करते हुए आपश्री भीलवाड़ा पधारे।

होली चातुर्मास

परम पूज्य आचार्य श्री जी का भीलवाड़ा श्रीसंघ ने भोपालगंज में उत्साह जनक स्वागत-अभिनंदन किया। वहां विराजित महासती श्री यशकुंवर जी महाराज आदि ठाणा एवं महासती श्री चंदनबाला जी महाराज आदि ठाणा ने परम पूज्य आचार्य देव के दर्शनों का लाभ लिया।

होली चातुर्मास के प्रसंग पर परम पूज्य आचार्य देव ने सुनिश्चित हो चुके कुछ चातुर्मासों की घोषणा अपने श्रीमुख से की। वहां पर एक दिवसीय ध्यान शिविर का भी समायोजन किया गया। उसी प्रसंग पर भोपालगंज में नवनिर्मित भवन का उद्घाटन भी आचार्य श्री के सान्निध्य में संपन्न हुआ।

भोपाल गंज से पूज्य आचार्य देव भीलवाड़ा शहर में पधारे। वहां पर महासती श्री चारित्रप्रभा जी महाराज की वैरागन चंदना जी की दीक्षा आपश्री के सान्निध्य में संपन्न हुई। भीलवाड़ा प्रवास के समस्त कार्यक्रम अत्यंत सुंदर रहे। श्रीसंघ ने उत्साह पूर्वक पूज्य आचार्य देव की सेवा का भरपूर लाभ प्राप्त किया।

भीलवाड़ा से विहार कर परम पूज्य आचार्य श्री जी माण्डल, भगवान-पुरा, गुलाबपुरा, विजयपुरा, राताकोट, जामोला, नसीराबाद, श्रीनगर आदि क्षेत्रों में धर्मदीप प्रज्वलित करते हुए किशनगढ़ मदनगंज पधारे। वहां पर महासती श्री जयमाला जी महाराज, महासती श्री बसंताकुंवर जी महाराज आदि ठाणा ने आपश्री के दर्शनों का पुण्य लाभ प्राप्त किया।

किशनगढ़ से विहार कर के आपश्री दुदू पधारे। उप प्रवर्तक डा. श्री

राजेन्द्र मुनि जी महाराज, उप प्रवर्तक श्री तारक ऋषि जी महाराज मुनिवृन्द भी आपश्री के साथ ही वहां पधारे। वहां पर परमादरणीय आचार्य सम्राट् श्री आनंद ऋषि जी महाराज का पुण्य स्मृति दिवस आयोजित किया गया। आपश्री ने आराध्य आचार्य देव के जीवन संस्मरणों पर प्रकाश डालते हुए फरमाया कि आचार्य श्री का समग्र जीवन एक आगम के समान था। जैन समाज के वे सच्चे रहबर और पथ-प्रदर्शक थे। उनके जीवनादर्शों को अपने जीवन में उतारकर हम स्व-पर कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। पूज्य डा. श्री राजेन्द्र मुनि जी महाराज, पूज्य श्री तारक ऋषि जी महाराज ने भी पूज्य आचार्य श्री जी के जीवन पर प्रकाश डाला एवं श्रद्धांजलि अर्पित की।

गुलाबी नगर में

परमादरणीय जैन धर्म दिवाकर आचार्य प्रवर पूज्य श्री शिव मुनि जी महाराज अपने विशाल मुनिसंघ के साथ ग्रामानुग्राम विचरते हुए राजस्थान प्रदेश की राजधानी गुलाबी नगर जयपुर पधारे। जयपुर के सकल श्रीसंघ ने महामहोत्सव पूर्वक आपश्री का स्वागत एवं अभिनंदन किया।

भगवान महावीर स्वामी के 2600वें जन्म कल्याणक महोत्सव पर जयपुर में राज्य स्तरीय कार्यक्रम रखा गया। जैन धर्म की चारों परम्पराओं के मनीषी मुनिराजों की उपस्थिति में यह कार्यक्रम आयोजित हुआ। उक्त अवसर पर राजस्थान के राज्यपाल श्री अंशुमान सिंह, मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत आदि राजनेता भी उपस्थित हुए।

उक्त पुण्य प्रसंग पर आचार्य भगवन् ने अपना प्रभावशाली उद्बोधन दिया। आपश्री ने फरमाया—अहिंसा के अग्रदूत तीर्थंकर महावीर ने प्राणीमात्र के कल्याण और रक्षण के लिए उग्र तप किया। महावीर के समग्र उपदेशों का सारसूत्र अहिंसा है। अहिंसा धर्म का अंग या उपांग नहीं है, अहिंसा स्वत: ही परमधर्म है। आज हिंसा का ताण्डव फैल रहा है। महावीर के जन्मोत्सव पर उनके प्रत्येक उपासक को हिंसा की रोकथाम के लिए कृत्संकल्प होना चाहिए। हमारे राजनेताओं का दायित्व बनता है कि वे गोवध और मांस के आयात-निर्यात पर अंकुश लगाएं।

परम पूज्य आचार्य देव ने गोवंश की रक्षा हेतु आह्वान किया एवं गोशाला हेतु दान-दाताओं को उत्साहित किया।

महावीर जयंती का उक्त समारोह अत्यंत सफल रहा। साम्प्रदायिक सौहार्द में वृद्धि हुई।

लाल भवन से विहार कर परम पूज्य आचार्य देव जयपुर के उपनगर आदर्श नगर में पधारे। वहां पर ध्यान साधना शिविर का समायोजन किया गया जिसमें 68 साधकों ने आध्यात्मिक आनंद से साक्षात्कार किया। जैन कांफ्रेंस के सहयोग से जयपुर में कई सुंदर कार्यक्रम आयोजित हुए।

परमादरणीय प्रवर्तक श्री रूपचंद जी म. आदि मुनिवृंद भी उग्र विहार करके जयपुर पधारे। मरुधर सेवा समिति के सौजन्य से 'उम्मेद मिल' के प्रांगण में 'अहिंसा और अनेकान्त' विषय पर सुंदर कार्यक्रम हुआ। उक्त कार्यक्रम में राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री भैरोंसिंह शेखावत सहित अनेक गण्यमान्य व्यक्ति सम्मिलित हुए।

जयपुर से विहार कर परमादरणीय आचार्य भगवन् आमेर, कोटपुतली, बहरोड होते हुए गुड़गांव पधारे। आचार्य श्री जी के साथ अनेक मुनिवृन्द भी गुड़गांव पधारे। पूज्य श्री रवीन्द्र मुनि जी म. के नेतृत्व में कई साधु-साध्वी मण्डलों ने आपश्री का दिल्ली की दहलीज गुड़गांव में स्वागत-अभिनंदन किया। गुड़गांव के संक्षिप्त प्रवास में भारी उत्साह से जैन धर्म की प्रभावनाएं हुई। वहां पर आपश्री के सान्निध्य में 22 अप्रैल 2001 को भगवान महावीर मेडिटेशन एण्ड रिसर्च सेंटर ट्रस्ट का शिलान्यास समारोह बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ, जिसमें अनेक वरिष्ठ मुनिराजों एवं हजारों श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया।

जैन धर्म दिवाकर आचार्य प्रवर श्री शिव मुनि जी म. के नेतृत्व में विशाल साधु-साध्वी मंडल ने दिल्ली में प्रवेश किया। दिल्ली प्रवेश पर परम पूज्य आचार्यश्री जी का भव्य नागरिक अभिनन्दन समारोह छतरपुर स्थित अध्यात्म साधना केन्द्र के विशाल प्रांगण में रखा गया। अध्यात्म साधना केन्द्र में तेरापंथ धर्म संघ के मान्य मुनि ध्यानयोगी श्री महेन्द्र मुनि जी म. ने आचार्य प्रवर का स्वागत किया। स्वागत समारोह का आयोजन दिल्ली जैन महासंघ की ओर से किया गया था। उक्त अवसर पर अनेक साधु-साध्वी मण्डलों सहित हजारों की संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने परम पूज्य आचार्य देव का हार्दिक अभिनंदन किया। उक्त अवसर पर परम पूज्य आचार्य देव ने फरमाया-यह स्वागत मेरा स्वागत नहीं है, यह अर्हत् धर्म का स्वागत है, जिनशासन और श्रमण संघ का स्वागत है।

दिनांक 28 अप्रैल को परम पूज्य आचार्य भगवन् ग्रीन पार्क, दरियागंज आदि क्षेत्रों को स्पर्श करते हुए चांदनी चौक स्थित बारादरी जैन भवन में

पधारे। वहां पर अध्यात्मयोगी उपप्रवर्तक श्री हेमचंद्र जी म., उपप्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म. आदि महामुनीश्वरों ने परम पूज्य आचार्यश्री जी का स्वागत किया।

लालकिला की प्राचीर से

परम पूज्य आचार्य देव के दिल्ली पदार्पण पर सर्वत्र अपार उत्साह दिखाई दे रहा था। जन-जन के मन में भक्ति का उल्लास उत्सव बनकर उतर आया था। दिल्ली का कण-कण शिव-सुगंध से महक रहा था। आबालवृद्ध जिनशासन नायक को देखने के लिए, अपने मस्तक से उन चरण-सरोजों का स्पर्श करने के लिए उत्सुक था। उत्साह में उत्सव और उत्सव में महोत्सव जन्म लेता है। ऐसे में महोत्सव के लिए दिल्ली के सर्वाधिक प्रतिष्ठित स्थल लालकिला प्रांगण का चयन किया गया। 29 अप्रैल 2001 के दिन लालकिला मैदान के विशाल प्रांगण में समग्र दिल्ली के श्रद्धालु श्रावक उमड़-उमड़कर एकत्रित हुए। लगभग साढ़े तीन सौ साधु-साध्वियों के मध्य पूज्य प्रवर आचार्य देव मंच पर विराजित हुए। उपस्थित मुनिराजों में कुछेक नामों का उल्लेख कर रहा हूं—परम पूज्य अध्यात्मयोगी श्री हेमचंद्र जी म., परम पूज्य वाणीभूषण श्री अमर मुनि जी म., पूज्य प्रवर्तक श्री रूपचंद्र जी म., पूज्य मंत्री श्री सुमन मुनि जी म., उपाध्याय श्री विशाल मुनि जी म., उप.प्र. श्री रवीन्द्र मुनि जी म. आदि। महासाध्वी मण्डल में महासती श्री कौशल्या जी म., महासती श्री मोहनमाला जी म., महासती श्री रविरश्मि जी म., महासती श्री सरिता जी म. आदि प्रमुख थे।

जैन जगत के प्रतिष्ठित श्रावकों में कांफ्रेंस के अध्यक्ष श्री जे.डी. जैन, महामंत्री श्री जोगीराम जी जैन, सर्वश्री हीरालाल जी जैन, श्री आर.डी. जैन, श्री सुखबीर जी जैन, चादर समारोह के संयोजक श्री सत्यभूषण जी जैन एवं शेष सदस्य उक्त अवसर पर उपस्थित थे।

विभिन्न सम्प्रदायों के प्रतिनिधियों में जगदाचार्य श्री चंद्रस्वामी जी, जगदाचार्य श्री माधवानंद जी सरस्वती, मुस्लिम धर्म के हजरत निजामुद्दीन औलिया आदि प्रमुख व्यक्तित्व थे।

राजनेताओं में पूर्व प्रधानमंत्री श्री चंद्रशेखर जी, दिल्ली के महापौर श्री शांति देसाई एवं कई सांसद उपस्थित थे। उपरोक्त गण्यमान्य व्यक्तियों के अलावा विशाल जनसमूह उपस्थित था। उक्त भव्यातिभव्य स्वागत-अभिनंदन समारोह में मुनिराजों, आर्याओं और प्रमुख श्रावकों ने अपने आराध्य देव का

भावभीना अभिनंदन किया। गीतों, कविताओं और उद्बोधनों द्वारा परम पूज्य आचार्य देव का स्वागत किया।

उक्त अवसर पर परम पूज्य ध्यानयोगी आचार्य देव ने फरमाया– 'जीवो मंगलम्' अर्थात् प्रत्येक जीव मंगल रूप है। कोई छोटा नहीं है और कोई बड़ा नहीं है। प्रत्येक जीव के भीतर समान चैतन्य का दीया जल रहा है। प्रत्येक को प्रत्येक से प्रेम करना चाहिए। प्रत्येक जीव आपके प्रेम का पात्र बने। अपने प्रेम को संकुचित मत बनाओ। उसे इतना विराट बनाओ कि प्राणिमात्र उसमें समा जाए। जब आप विराट हो जाएंगे तो साम्प्रदायिकता जैसी छोटी बातें स्वत: अस्तित्वहीन हो जाएंगी। अपने प्रेम को विराट बनाने का उपाय है ध्यान। ध्यान के लिए स्वयं को तैयार कीजिए। आप ध्यान कीजिए। ध्यान से आपका प्रेम विस्तृत होगा, आपकी करुणा विस्तृत होगी, आपका अस्तित्व विस्तृत होगा।

30 अप्रैल को परम पूज्य आचार्य देव शास्त्री पार्क पधारे। वहां के उत्साही युवकों ने आपश्री का भव्य स्वागत किया। एक मई को गुजरात विहार पधारे जहां श्री रमेश भाई शाह के आवास पर आपश्री ने विश्राम किया। गुजरात विहार में भी आपश्री के स्वागत में सुन्दर समारोह संपन्न हुआ।

प्रवर्तक श्री का स्वर्गारोहण

जन-जन की आस्था के केन्द्र उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचंद जी म. का एक मई को दोपहर में ऋषभ विहार में आकस्मिक स्वर्गारोहण हो गया। इस वज्रपाती सूचना से सकल संघ में शोक की लहर दौड़ गई। पूज्य प्रवर्तक श्री जी के अंतिम दर्शन के लिए साधु-साध्वी मंडल एवं दिल्ली के समस्त श्रीसंघ ऋषभ विहार जैन स्थानक में उमड़ पड़े। परम पूज्य आचार्यश्री जी भी उक्त अवसर पर पधारे। पूज्य प्रवर्तक श्री जी के शिष्य वृन्द के साथ हार्दिक संवेदना पूज्य आचार्यश्री ने प्रकट की।

दो मई को पूज्य प्रवर्तक श्री जी की अंतिम शोभा यात्रा निकाली गई। निगम बोध घाट पर चंदनार्चित चिता पर पूज्यश्री का अंतिम संस्कार सम्पन्न किया गया।

3 मई को पूज्य प्रवर्तक श्री जी की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का समायोजन किया गया। लगभग तीन सौ साधु-साध्वियों एवं हजारों लोगों ने उक्त अवसर पर पूज्य श्री को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की। उक्त अवसर

पर परम पूज्य आचार्य देव ने पूज्य प्रवर्तक श्री जी के जीवन के महनीय सद्‌गुणों पर प्रकाश डालते हुए फरमाया–'भण्डारी' उपनाम से जैन जगत में चर्चित-अर्चित पूज्य प्रवर्तक श्री जी वास्तव में सद्‌गुणों के महाभण्डार थे। उनके आशीष की पद्‌म-सुवास से उत्तर भारत का जैन गुलिस्तां सदैव महकता रहा है। मुझे दीक्षा पाठ का महादान प्रदान करने वाले पूज्य प्रवर्तक श्री जी अपने करकमलों से महनीय आचार्य पद की चादर ओढ़ाने के लिए भारी उत्साहित थे। पर विधि के आलेख के समक्ष तो सर्वशक्तिमान भी नत हो जाते हैं। पूज्य प्रवर प्रवर्तक श्री जी के अदृष्ट आशीष सदैव हमारा पथ-दर्शन करते रहेंगे। इन्हीं मंगलमय भावों के साथ चतुर्विध संघ की ओर से मैं पूज्य प्रवर्तक श्री जी को श्रद्धा पुष्प अर्पित करता हूं।,

4-5 और 6 मई को ऋषभ विहार में विभिन्न आयोजन हुए। दिनांक सात मई को आचार्य पद चादर समारोह समर्पण महोत्सव सम्पन्न हुआ जिसका संक्षिप्त आलेखन आगामी पृष्ठों पर किया जाएगा।

❖ ❖ ❖

अभिषेक आचार्य का

समग्र संघ के लिए मेरा यही निर्देश और अनुरोध है कि अनुशासन और आचार के दो किनारों के मध्य श्रमणसघ रूपी पवित्र सरिता सतत प्रवाहित रहे। हम इस सकल्प को पुन. दोहराते है कि अनुशासन और आचार के किनारों का क्षरण हम कदापि नहीं होने देंगे, इसके लिए हमे चाहे जो मूल्य चुकाना पड़े।

अभिषेक आचार्य का

आचार्य धर्मसंघ का प्राणवंत प्रतीक होता है।
आचार्य अनुशासित होता है, अनुशासित करता है।
आचार्य अधिष्ठाता है धर्म की मर्यादाओं का।
सच कहें तो आचार्य मर्यादा में बंधा महासागर है।

श्रमण संघ अनुशास्ता पूज्य प्रवर श्री शिव मुनि जी म. के आचार्यत्व को अभिषिक्त करने के लिए देश की राजधानी दिल्ली ने अपना दिल खोलकर आपका और आपके धर्मसंघ का स्वागत किया। लाखों लोगों की मौजूदगी में श्रद्धा और विश्वास के साथ संघ ने आपश्री को आचार्य पद की आदर की चादर ओढ़ाई।

जैन धर्म दिवाकर श्रमण संघ के तृतीय पट्टधर आचार्य सम्राट् श्री देवेन्द्र मुनि जी म. के स्वर्गारोहण के पश्चात् श्रमणसंघीय विधानानुसार परम पूज्य युवाचार्य प्रवर श्री शिव मुनि जी महाराज युवाचार्य पद से आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए। उक्त वैधानिक प्रतिष्ठा को चतुर्विध श्रीसंघ ने अनुमोदित किया। दिनांक 9 जून 1999 के दिन समग्र संघ ने अहमदनगर में आचार्य पाट पर आपश्री का अभिनंदन किया। श्रमण संघ में आचार्य पद पर प्रतिष्ठित मुनीश्वर को आदर की चादर प्रदान करने की परम्परा रही है। उसी के लिए भारतवर्ष के सभी मूर्धन्य मनीषी मुनिराजों एवं शीर्षस्थ श्रावकों ने मिलकर चादर समर्पण समारोह का संकल्प लिया। इस संकल्प की गूंज से कई बड़े क्षेत्र उक्त समारोह के आयोजन के लिए उत्सुक बने। उक्त क्षेत्रों में इन्दौर, पूना, अहमदनगर, सूरत और दिल्ली के नाम प्रमुख हैं। अंततः यह महान सौभाग्य ऋषभ विहार दिल्ली को प्राप्त हुआ।

7 मई 2001 का दिन आचार्य पद चादर समर्पण महोत्सव के लिए सुनिश्चित किया गया। भारतवर्ष के विभिन्न अंचलों में विचरणशील महामहिम मुनिराजों और पूज्या महासाध्वियों को उक्त अवसर पर पधारने हेतु प्रार्थनाएं

की गईं। परिणामत: अप्रैल मास के अंतिम सप्ताह की परिसमाप्ति तक साढ़े तीन सौ साधु-साध्वियां दिल्ली पधार चुके थे। श्रमण संघ के इतिहास का यह प्रथम अवसर था कि किसी समारोह में इतनी बड़ी संख्या में साधु-साध्वियां पधारे। परम पूज्य आचार्य देव के चरणों से बंधी मुनि संघ की निष्ठा इसका सहज परिणाम रहा।

ऋषभ विहार एक छोटा-सा क्षेत्र है। वहां के जैन परिवारों की संख्या को अंगुलियों पर गिना जा सकता है। परन्तु यहां के जैन धर्म के प्रति समर्पित श्रावकों के उत्साह को समझा जा सकता है कि उन्होंने एक महान मिशन को हाथों में लिया और उसे अभूतपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न किया। आचार्य पद चादर समर्पण महोत्सव के मुख्य संयोजक सर्वश्री सत्यभूषण जी जैन, महामंत्री श्री देवेन्द्र कुमार जी जैन, मंत्री श्री संजय जैन, श्री राजीव जैन एवं उपाध्यक्ष श्री प्रमोद कुमार जी जैन ने अदम्य उत्साह के साथ उक्त समारोह की संपन्नता का संकल्प संजोया। इन युवाओं के उत्साह में एक-एक करके सदस्य, सभाएं और संस्थाएं जुड़ते गए। देखते ही देखते समग्र श्रमण संघ का संकल्प उनके संकल्प में अनुगुंजित हो उठा।

ऋषभ विहार जैनत्व का केन्द्र बन गया। उस छोटे से क्षेत्र को धर्मनगरी का महान गौरव प्राप्त हो गया। साढ़े तीन सौ साधु-साध्वियां वहां पर एकत्रित हुए। जैन महासंघ दिल्ली, अखिल भारतीय स्थानकवासी जैन कांफ्रेंस और दिल्ली के समग्र संघ ऋषभ विहार संघ के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आ खड़े हुए।

सुविशाल मण्डप का निर्माण किया गया जिसका नाम भगवान महावीर मण्डप रखा गया। वह मण्डप इतना कलात्मक और सुविधापूर्ण था कि वहां लक्षाधिक लोग एक साथ आराम से बैठ सकते थे। मण्डप के अंतिम छोर पर तीन सुविशाल मंचों का निर्माण किया गया था। मध्य का मंच आचार्य श्री एवं मुनि मण्डल के लिए था, बायां मंच साध्वी मंडल के लिए तथा दाहिना मंच गण्यमान्य श्रावकों के लिए था। महावीर मण्डप के समानांतर ही गौतम प्रसादी मण्डप का निर्माण किया गया था जहां जल-पान एवं भोजन की सुचारू व्यवस्था की गई थी।

4-5 और 6 मई को विभिन्न कार्यक्रम संपन्न हुए। 6 मई को ग्यारह दीक्षार्थी मुमुक्षुओं की शोभायात्रा निकाली गई। दीक्षा सम्बन्धी अन्यान्य अनुष्ठान

संपन्न हुए। दोपहर में कांफ्रेंस की महिला शाखा का एवं दोपहर बाद कांफ्रेंस की युवा शाखा का सम्मेलन आयोजित किया गया। रात्रि में श्री रवीन्द्र जैन द्वारा भजन संध्या का आयोजन हुआ। इन सभी आयोजनों में भारी जनसमूह ने भाग लिया।

दिनांक 7 मई का सूर्योदय नवीन इतिहास का साक्षीमान बनकर उदय हुआ। दिल्ली के जैन इतिहास के संदर्भ में वैसा उत्साह और उत्सव पहले कभी नहीं देखा गया था। भारतवर्ष के दूर-सुदूर अंचलों के श्रावकगण एवं दिल्ली महानगर के आबालवृद्ध धर्म नगरी ऋषभ विहार में उमड़-उमड़कर एकत्रित हुए। समारोह शुरू होने से पूर्व ही विशाल मण्डप में लक्षाधिक श्रावक-श्राविकाओं का समूह अपना-अपना स्थान ग्रहण कर चुका था। सुनिश्चित समय पर श्रमण संघ नायक परम पूज्य आचार्य देव विशाल श्रमण समुदाय के साथ मंच पर पधारे। भव्य काष्ठ कुमुदासन पर विराजित शिवाचार्य श्री समवसरण में विराजित तीर्थंकर देव की छवि तुल्य महान शोभा को उपलब्ध हो रहे थे। आचार्यश्री के इर्द-गिर्द श्रमण समुदाय शोभित हो रहा था, दाएं ओर के मंच पर आर्याओं का समूह सुशोभित था तथा सामने श्रावक-श्राविकाओं के रूप में विशाल परिषदा उपस्थित थी। प्रत्येक भव्य के नयन पथ पर शिवाचार्य थे, प्रत्येक हृदय में आराध्य शिव के लिए भक्ति का ज्वार उमड़ रहा था। उस क्षण का प्रत्येक साक्षी अपनी उपस्थिति को धन्य मान रहा था। चतुर्थ काल का श्रुत वर्तमान का सच बनकर प्रवर्तमान बन रहा था।

शिवाचार्य के सिंहासन के दाएं, बाएं और पृष्ठ भाग में श्रमण संघ के अधिकांश यशस्वी, वर्चस्वी मुनीश्वर उपस्थित थे जिनमें प्रमुख कुछेक मुनीश्वरों के नामों का उल्लेख कर रहा हूं—उत्तर भारत के यशस्वी महामुनि वाणी के जादूगर श्री अमर मुनि जी म., अध्यात्म जगत के तेजस्वी नक्षत्र पूज्य श्री हेमचंद्र जी म., पुण्य पुंज प्रवर्तक मुनीश्वर श्री रूपचंद जी म. 'रजत', उपाध्याय प्रवर श्री विशाल मुनि जी म., मंत्री मुनिवर श्री सुमन मुनि जी म., युवा श्रमण चेतना के संवाहक मुनि प्रवर श्री रवीन्द्र मुनि जी म., देवेन्द्राचार्य के शिष्यरत्न डॉ. श्री राजेन्द्र मुनि जी म., संयम और स्वाध्याय के संगम तीर्थ श्री रमेश मुनि जी म., सरलता और सत्य के साक्षीमान सत्य श्री तारक ऋषि जी म., श्रमण धर्म के प्रतिमान पूज्यश्री विनय मुनि जी म. 'वागीश', तपस्वी रत्न पूज्य श्री सुमति प्रकाश जी म., कर्मठ मुनीश्वर पूज्य

श्री विनय मुनि जी म. 'भीम' आदि मुनिवरों से पूज्य आचार्य देव परिवृत्त थे।

परम पूज्य आराध्य स्वरूप आचार्य भगवन् के दाएं दिशा के मंच पर अपने त्याग-वैराग्य और शुभ्र-धवल संयम से जिनशासन को उद्योतित करने वाला श्रमणी-समुदाय विराजमान था, जिनमें कुछ प्रमुख महाश्रमणियों के नाम इस प्रकार हैं-तप गगन की उज्ज्वल चंद्रिका महासती श्री हेमकुंवर जी म., तपाचार्या तपचक्रेश्वरी महासती श्री मोहनमाला जी म., संयम प्राण परम विदुषी महासती श्री कौशल्या जी म., परम विदुषी महासती श्री केसरा देवी जी म., परम विदुषी महासती श्री कौशल्या जी म., परम विदुषी महासती श्री सरिता जी म., परम विदुषी महासती श्री पवन कुमारी जी म., महासती श्री संतोष जी म., महासती डॉ. श्री पुनीत ज्योति जी म., महासती श्री सुशील जी म. आदि महासती वृन्द विराजमान थे।

दायीं ओर के मंच पर जैन जगत के अग्रगण्य श्रावकरत्न, श्राविकाएं, राजनेता एवं समाजसेवी व्यक्तित्व उपस्थित थे। राजनेताओं में पूर्व प्रधानमंत्री श्री चंद्रशेखर जी, केन्द्रीय मंत्री श्री सुंदरलाल पटवा, केन्द्रीय मंत्री श्री सुखदेव सिंह ढींढसा, हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री ओमप्रकाश चौटाला, मध्यप्रदेश के मंत्री श्री नरेन्द्र नाहटा, महाराष्ट्र के यशस्वी नेता श्री सुरेश दादा जैन प्रमुख थे। जैन समाज के प्रमुख श्रावकों में अखिल भारतीय जैन कांफ्रेंस के अध्यक्ष श्री जे.डी. जैन, सर्वश्री हीरालाल जैन, साहू श्री रमेश चंद जी जैन, आत्म वल्लभ शिक्षण निधि के राष्ट्रीय मंत्री श्री राजकुमार जी जैन, शांतिलाल चपलोत, श्री रामकुमार जैन 'श्रमण शाल', जगदाचार्य श्री चंद्रस्वामी जी, चादर समारोह के मुख्य संयोजक श्री सत्यभूषण जी जैन एवं उनके सहयोगी सदस्य आदि गण्यमान्य व्यक्तित्व उपस्थित थे। इसी मंच पर परम पूज्य आचार्य देव की जननी श्रीमती विद्यादेवी जैन विराजित थीं।

समाजरत्न सर्वश्री हीरालाल जी जैन ने मंच का सफल संचालन किया। स्वागतादि के कार्यक्रम के पश्चात् सुप्रसिद्ध श्रावकों और राजनेताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। श्री सुरेश दादा जैन ने आचार्य श्री का अभिनंदन करते हुए कहा-समग्र जैन जगत का यह अहोभाग्य है कि पूज्यश्री शिव मुनि जी जैसा महासाधक उसके रहनुमा पद पर प्रतिष्ठित हुए हैं। पूज्य आचार्य देव ने ध्यान का जो महामिशन प्रारंभ किया है वह मानव जाति के लिए परम

मंगल और कल्याण का सेतु सिद्ध होगा। पूज्य आचार्य देव जैन जगत के ही नहीं बल्कि अखिल विश्व की महान विभूति हैं। इस दुर्लभ अवसर पर अपनी उपस्थिति को मैं अपने जीवन का अमूल्य क्षण मानता हूं।

क्रमशः सभी वक्ताओं ने उक्त अवसर पर अपने-अपने भावों को अभिव्यक्त किया। मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला ने जैन गुरुकुल पंचकुला की अधिकृत जमीन को पुनः जैन समाज को प्रदान करने की घोषणा की। कांफ्रेंस के अध्यक्ष श्री जे.डी. जैन ने चादर महोत्सव समारोह को दिल्ली का महान सौभाग्य बताया और अखिल भारतीय कांफ्रेंस का पूर्ण सहयोग और समर्पण आचार्य श्री के प्रति अभिव्यक्त किया।

सामाजिक नेताओं और राजनेताओं के उद्बोधन के पश्चात् ग्यारह विरक्तात्माओं का दीक्षा का मंगल अनुष्ठान सम्पन्न किया गया। परम पूज्य आचार्य देव ने अपने श्रीमुख से दीक्षा पाठ पढ़ाया एवं शिखादान ग्रहण कर मुनिधर्म में प्रव्रजित किया। दीक्षार्थियों में पांच युवक एवं छह युवतियां थीं।

नवीन दीक्षित मुनियों को निम्नोक्त नवीन नाम प्रदान किए गए–1. श्री प्रदीप मुनि जी, 2. श्री वरुण मुनि जी, 3. श्री ऋषि मुनि जी, 4. श्री रक्षित मुनि जी, 5. श्री सुबोध ऋषि जी।

नवदीक्षिता साध्वियों को निम्नोक्त नवीन नाम प्रदान किए गए–1. श्री विजेता श्री जी, 2. श्री स्वाति श्री जी, 3. श्री उज्ज्वला श्री जी, 4. श्री ज्योत्स्ना श्री जी, 5. श्री वाणी श्री जी।

दीक्षा अनुष्ठान के पश्चात् प्रमुख मुनिराजों ने अपने विचार प्रस्तुत किए। परमादरणीय अध्यात्मयोगी श्री हेमचंद्र जी महाराज ने फरमाया–आचार्य पद चादर समर्पण समारोह पर जिन-प्रभावना को देखकर मैं गद्गद हूं। आचार्य प्रवर ध्यानयोगी श्री शिव मुनि जी म. के नेतृत्व में श्रमण संघ चहुंमुखी विकास करेगा ऐसा मेरा सुदृढ़ विश्वास है।

परम पूज्य वाणीभूषण श्री अमर मुनि जी म. ने इस अवसर पर फरमाया–परम पूज्य आचार्य देव को मैं बचपन से जानता हूं। बाल्यकाल से ही इनके जीवन में रही हुई विशिष्टताएं इनके भावी जीवन की महानताओं की सूचनाएं देती थीं। मेरे गुरुदेव भण्डारी जी महाराज ने ही आपश्री को दीक्षा-पाठ पढ़ाया था। आपके सुखद् नेतृत्व में श्रमण संघ दिन-दूनी रात-चौगुनी उन्नति करेगा। आपश्री के प्रति मैं अनन्त-अनन्त मंगल कामनाएं अभिव्यक्त करता हूं।

उसके बाद पूज्य मंत्री श्री सुमन मुनि जी म. एवं उपाध्याय प्रवर श्री विशाल मुनि जी म. ने अपना सम्पूर्ण समर्पण और सहयोग आचार्य श्री के प्रति अभिव्यक्त किया। तत्पश्चात् लोकमान्य संत पूज्य प्रवर्तक श्री रूपचंद जी म. ने गंभीर गर्जना करते हुए आलोचकों के हौंसले पस्त कर दिए। उन्होंने फरमाया—आनंदाचार्य के पश्चात् देवेन्द्राचार्य हमारे आचार्य हुए एवं देवेन्द्राचार्य के पश्चात् शिवाचार्य हमारे आचार्य हैं। श्रमण संघ एक है और उसके आचार्य एक हैं। श्रमण संघ के आचार्य का आदेश पूरे संघ के लिए मान्य है। ऐसा अतीत में भी होता रहा है और भविष्य में भी होता रहेगा। हमारी इस शानदार परम्परा को कोई नहीं बदल सकता है। हमारे पूज्य आचार्यश्री आज से आचार्य सम्राट् कहलाएंगे। हमारे आचार्य सम्राट् के निर्देशन में चतुर्विध श्रमण संघ आगे से आगे बढ़ता जाएगा। ऐसे तपस्वी और ध्यानयोगी आचार्य को पाकर श्रमण संघ गौरवान्वित हुआ है।

इस प्रकार समग्र संघ ने परम पूज्य आचार्य देव श्री शिव मुनि जी महाराज के नेतृत्व में पूर्ण आस्था अभिव्यक्त की।

उसके बाद सकल श्रीसंघ ने परम पूज्य आचार्य देव को आचार्य पद की प्रतीक पवित्र चादर ओढ़ाई। अखिल भारतीय श्रावक समुदाय, श्राविका समुदाय एवं सकल साध्वी मण्डल के कर स्पर्शित पवित्र चादर को मंच पर विराजित मुनि मण्डल ने आचार्य श्री को ओढ़ाया। चतुर्विध संघ के लिए रोमांचित कर देने वाला क्षण था वह। लक्षाधिक श्रावक-श्राविकाओं ने जयनादों से गगन मंडल को गुंजायमान करके अपने हर्ष और समर्पण को अभिव्यक्त किया। परम पूज्य आचार्य देव ने खड़े होकर करबद्ध रूप मुद्रा में पूर्ण विनम्रता एवं सम्मानपूर्वक चादर को स्वीकार किया एवं चतुर्विध संघ का अभिनंदन किया।

तदनंतर परम पूज्य श्री रवीन्द्र मुनि जी म., परम पूज्य डॉ श्री राजेन्द्र मुनि जी म., परम पूज्य श्री विनय मुनि जी म. 'वागीश', परम पूज्य श्री विनय मुनि जी म. 'भीम', आदि मुनिवरों ने चादर की गरिमा और महिमा पर प्रकाश डालते हुए पूज्य आचार्य देव का अभिनन्दन किया एवं अपने-अपने मुनि-मण्डलों की ओर से समर्थन, समर्पण और सहयोग का संकल्प अभिव्यक्त किया।

अन्त में परम पूज्य आचार्य सम्राट् श्री शिव मुनि जी म. ने चतुर्विध संघ के नाम अपना संदेश दिया—

'सर्वप्रथम यहां पर विराजित श्रमण संघ, श्रमणी संघ, श्रावक संघ एवं श्राविका संघ के रूप में तीर्थ-रूपा चतुर्विध संघ का मैं अभिवादन करता हूं। हम सब लोग यहां पर एकत्रित हुए हैं। किसलिए? पूज्य श्रमणवृंद एवं श्रमणीवृंद सुदूर प्रांतों से पदयात्रा करते हुए यहां पधारे हैं। किसलिए? मान्य श्रावकगण, श्राविकागण लक्षाधिक संख्या में दूर-सुदूर प्रांतों से यहां एकत्रित हुए हैं। किसलिए?

नि:संदेह आपका/हमारा एक ही उत्तर होगा–हम आए हैं जिनशासन के प्रति श्रद्धा की डोर में बंधकर। जिनशासन को नमन करने के लिए। जिनशासन के प्रति अपनी आस्था, समर्पण और समर्थन को अभिव्यक्ति देने के लिए। चादर समर्पण की परम्परा श्रद्धा और समर्पण की अभिव्यक्ति की परम्परा है। आप सभी की श्रद्धा और समर्पण अभिनंदनीय है।

आज से चौदह वर्ष पूर्व परम पूज्य आनंदाचार्य के निर्देशन में चतुर्विध संघ ने मुझे भविष्य में संघ संचालन का दायित्व प्रदान किया। मैं समझता हूं कि आज का दिन उसी दायित्व के संबोध और नवीन संकल्प को संजोकर आगे बढ़ने के प्रण को पुन: प्राणवंत बनाने का पावन पर्व है। इस पावन पर्व पर आओ हम सब मिलकर यह संकल्प करें कि हम अहर्निश अप्रमत्त रहकर अपने उच्च आचार, विचार और व्यवहार से जिनशासन को गौरवान्वित करेंगे। हमारी साधना समष्टि के लिए कल्याणकारिणी होगी, हमारे जीवन का प्रत्येक पल सर्व मंगल एवं परम मंगल के लिए समर्पित होगा।

आचार्य पद का यह अर्थ है कि उस पद को धारण करने वाला व्यक्ति स्वयं आचार का पालन करे एवं समग्र संघ को आचार के पालन के लिए प्रेमपूर्ण प्रेरित करे। यह एक बृहद् दायित्व है और इस बृहद् दायित्व को हमारे पूर्वज आचार्यों ने पूर्ण सफलता के साथ निर्वाहित किया है। मैं भी उस दायित्व के निर्वहन के लिए अपना संकल्प दोहराता हूं। संघ का प्रत्येक श्रमण, प्रत्येक श्रमणी, प्रत्येक श्रावक एवं प्रत्येक श्राविका मेरे तन, मन और जीवन का अंग हैं। संघीय अस्तित्व मेरा अस्तित्व है।

श्रमण संघ एक आदर्श संघ है। इस संघ में अनेक त्यागी, तपस्वी, ज्ञानी, ध्यानी, वक्ता, वादी मुनि रत्न हैं। इस संघ का प्रत्येक सदस्य संघ के उत्थान के लिए अपना सर्वस्व अर्पित करता है। इस संघ के प्रत्येक सदस्य के लिए संघ प्रथम है, स्वयं का व्यक्तित्व बाद में है। यही इस संघ की

गरिमा और महिमा की सर्वोच्च पहचान है।

हमारा श्रमण संघ समस्त संघीय सद्गुणों का केन्द्र है। इस संघ का निर्माण त्याग और समन्वय की सुदृढ़ नींव पर हुआ है। समन्वय श्रमण संघ का प्राणतत्व है। समन्वय के लिए ही वि.सं. 2009 वैशाख शुक्ला तृतीया, तदनुसार 27-4-1952 को हमारे पूर्वजों ने पदों और सम्प्रदायों को त्यागकर त्याग का एक आदर्श स्थापित किया था। वह आदर्श जब तक हमारे संघ की शिराओं में दौड़ता रहेगा तब तक हमारा संघ शासन प्रभावना में सबसे आगे रहेगा।

आज के इस पुनीत दिन मैं संघ की निष्ठा, सर्मपण, श्रद्धा, आशीष और अभिनंदन को गद्‌गद हृदय से स्वीकार करता हूं। समग्र संघ के लिए मेरा यही निर्देश और अनुरोध है कि अनुशासन और आचार के दो किनारों के मध्य श्रमण संघ रूपी पवित्र सरिता सतत प्रवाहित रहे। हम इस संकल्प को पुनः दोहराते हैं कि अनुशासन और आचार के किनारों का क्षरण हम कदापि नहीं होने देंगे, इसके लिए हमें चाहे जो मूल्य चुकाना पड़े।

संघीय विकास के लिए एक नवीन ऊर्जा के साथ हम आगे बढ़ेंगे। ज्ञान, ध्यान और तप हमारे संघ की पहचान होगी। हमारे श्रमणों के जीवन ही समाज, देश और विश्व के लिए जीवंत आदर्श होंगे। संघ के लिए यही मेरी परिकल्पना, संकल्प और सोच है।

पुनः चतुर्विध संघ का मैं हार्दिक अभिनंदन करता हूं।'

परम पूज्य आचार्य देव के इस सम्बोधन को चतुर्विध संघ ने प्रणत मन-वचन से स्वीकार किया और जयनादों से धरा-गगन को गुंजा कर अपना हर्ष अभिव्यक्त किया।

इस प्रकार अभूतपूर्व सफलता के साथ चादर समर्पण समारोह संपन्न हुआ।

समारोह की इस अभूतपूर्व सफलता के लिए अहर्निश श्रम करने वाले सभी सदस्यों का नाम दे पाना संभव प्रतीत नहीं होता है। इसके लिए प्रत्येक सदस्य का सम्पूर्ण सहयोग रहा। संघ के प्रत्येक सदस्य ने इस महायज्ञ की सफलता में अपना श्रम समर्पित कर कर्मों की निर्जरा की और कर्म निर्जरा ही प्रत्येक भव्य को प्रिय होता है।

❖ ❖ ❖

ध्यान का ध्रुवतारा

ध्रुव उत्तर दिशा में अविचल रहता है। अविचल मन को ध्रुव तारे की संज्ञा दी जा सकती है और मन की अविचल अवस्था ध्यान से ही प्राप्त की जा सकती है।

'ध्यान साधना' यह वर्तमान समय में धार्मिक जगत का सर्वाधिक चर्चित विषय है। प्रत्येक धर्म परम्परा में ध्यान साधना के प्रति आकर्षण वृद्धि पा रहा है।

'ध्यान साधना' ये दो शब्द हैं। दोनों का पारस्परिक जल-शैतिल्य का सम्बन्ध है। वस्तुत: ध्यान से ही साधना फलित होती है और निरंतर साधना से ही ध्यान परिपक्व बनता है। ध्यान के बिना साधना ऐसे है जैसे गंधहीन पुष्प। ऐसे ही साधना के अभाव में ध्यान ऐसे है जैसे देह रहित आत्मा। आत्म-प्रकाश देह के दीपक में ही प्रगट होता है।

साधना का अर्थ है–सम्यक् अभ्यास की सतत प्रक्रिया। इस प्रक्रिया के बिना ध्यान का वास्तविक ध्येय सिद्ध नहीं हो सकता है। क्षणिक ध्यान से भी आनंदानुभूति होती है पर आनंद शाश्वत स्वरूप में प्राप्त नहीं हो पाता है। आत्मा में शाश्वत आनंद को जगाने के लिए आवश्यक है ध्यान की साधना की जाए। साधना जितनी सघन बनती जाएगी ध्यान उतना ही परिपक्व बनता जाएगा। ध्यान साधना में जितनी गहराई आती जाएगी उसी क्रम से राग, द्वेष, भय और भूख आदि का क्षरण होता जाएगा। एक क्षण आएगा कि राग खो जाएगा, द्वेष खो जाएगा, भय खो जाएगा, भूख खो जाएगी, वे समस्त कारण खो जाएंगे जिनसे आत्मा उद्वेलित बनता है। समस्त विभाव विदा ले लेंगे। आत्मा की समभाव रूपी शुद्ध अवस्था शेष बचेगी। यह तभी होगा जब ध्यान को साधा जाए, अथवा साधना में ध्यान का प्राण उतर आए।

तीर्थंकर महावीर ने साधना की। साढ़े बारह वर्षों तक भगवान की साधना अप्रमत्त और अस्खलित रूप से चलती रही। प्रभु की साधना का प्राण ध्यान था। इस सत्य को कोई नहीं नकार सकता है। तप भगवान की साधना का प्रमुख अंग नहीं था। तप भगवान की साधना का सहयोगी साधन था। ध्यान को अधिक से अधिक समय दिया जा सके इसलिए भगवान आहार को गौण कर देते थे। इसे दूसरे पहलू से ऐसे भी देखा जा सकता है कि ध्यान की साधना से भगवान इतनी तृप्ति प्राप्त कर लेते थे कि उन्हें कई-कई दिनों

तक भोजन की आवश्यकता अनुभव नहीं होती थी। ध्यान की प्रखर साधना से साढ़े बारह वर्ष बीतने पर भगवान की आत्मा पर रहे हुए अनादिकालीन संस्कार धुल गए और उनमें परम आनंद, परम ज्ञान और परम दर्शन प्रकट हो गया। ध्यान की निरंतर साधना से और साधना में सघनता से निःसंदेह परम अवस्था का प्रकटीकरण होता है।

ध्यान की निरंतर साधना आवश्यक है, इस तथ्य को बाद में भगवान ने अपने प्रवचनों में प्रकट किया। भगवान ने साधक के लिए नियम निर्धारित किए कि साधक सोने से पूर्व तीन घण्टे ध्यान करे और निद्रा से जगने के बाद तीन घण्टे ध्यान करे। भगवान ने साधक के लिए दिन-रात के 24 घण्टों में से बारह घण्टे ध्यान में बिताने का निर्देश दिया। यह आगमीय तथ्य है जो सिद्ध करता है कि ध्यान श्रमण की साधना का प्राण है। ध्यान के बिना श्रमण की साधना क्रियाओं के भार ढ़ोने जैसा है।

ध्यान की यह आगमोक्त साधना अर्हत् संघ में सुदीर्घ काल तक चलती रही। बाद में जनसंपर्क बढ़ते जाने के कारण ध्यान साधना क्षीण बनने लगी। समय के साथ-साथ ध्यान की परम्परा विलुप्त प्रायः बन गई। क्षणिक कायोत्सर्ग आदि में ही साधक अपनी साधना की संपन्नता देखने लगे।

एक ओर जहां ध्यान साधना समाप्त प्रायः होती जा रही थी, वहीं समय-समय पर आत्मार्थी साधक ध्यान का दीप जलाए रहे। पर ऐसे साधकों की संख्या इतनी कम थी कि उसका व्यापक प्रभाव संघ पर नहीं पड़ा। ऐसे ही आत्मार्थी महामुनियों की परंपरा में आराध्य देव आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म. एक ध्यानयोगी महामुनि थे। परम पूज्य आचार्य देव की ध्यान साधना अत्यंत गहन थी। वे अपना सर्वाधिक समय ध्यान के लिए समर्पित करते थे। उनकी ध्यान साधना का ही यह चमत्कार है कि उन्होंने आगम जैसे दुरूह विषय को इस सरलता से व्याख्यायित किया है कि उसे अल्प पठित व्यक्ति भी सरलता से हृदयंगम कर लेता है।

हमारे श्रद्धाधार परम पूज्य आचार्य श्री शिवमुनि जी महाराज के हृदय में ध्यान की प्रथम प्यास परम पूज्य आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी महाराज को देखकर ही जागृत हुई। परम पूज्य आचार्य श्री कई बार उस क्षण में लौट जाते हैं और फरमाते हैं–उस समय मैं दग्ध हृदय लिए इधर-उधर भटका करता था। समस्त सामान्य साधन-सुविधाएं सहज प्राप्त होते हुए भी हृदय

अशान्त रहता था। कॉलेज को टॉप करके भी क्षणिक सुख मिला। उससे मेरे भीतर यह विश्वास सुदृढ़ बना कि दूसरों को पीछे धकेल कर आगे बढ़ने का सुख वास्तविक सुख नहीं है। वह तो अहंकार की क्षणिक स्फूर्ति है। सुख का मार्ग तो कहीं ओर है। परन्तु कहां है वह मार्ग? कौन बताए? कितने ही संत-महात्माओं से मैंने पूछा। कितनी ही किताबें पढ़ीं। पर प्रश्न अनुत्तरित ही रहा।

उस समय पूर्व पुण्य का उदय हुआ। उसी पुण्योदय के फलस्वरूप मैं आचार्य देव के दरबार में पहुंच गया। परम पूज्य आचार्य देव के दर्शनों का पुण्य लाभ मुझे प्राप्त हुआ। पूज्य आचार्य देव के दर्शन का वह क्षण मेरे जीवन का चंक्रमण का क्षण बन गया। उस क्षण आचार्य देव सामान्य रूप में खड़े थे। दृष्टि मुझ पर पड़ी व मेरी दृष्टि उनसे मिली, उसी क्षण आचार्य भगवंत ने मेरे भीतर साधना का बीज बो दिया। बस उस बीज को पानी देने की प्यास में मुमुक्षु बन ढूंढ़ता रहा।

परम पूज्य आचार्य देव से मुझे धर्मध्यान की प्रेरणा मिली। पूज्य श्री की वही प्रेरणा मेरे श्रमण जीवन में प्रवेश की जिज्ञासा का द्वार बनी। मेरे भीतर यह विश्वास सुदृढ़ बनता गया कि मुनि-साधना से ही आत्मतृप्ति प्राप्त हो सकती है।

परम पूज्य आचार्य प्रवर धर्मध्यान की उत्कृष्ट साधना के लिए ही मुनि धर्म में प्रव्रजित हुए। आपश्री ने सतत सजग रहकर धर्मध्यान को जिया। जैसे-जैसे ध्यान साधना में आपश्री प्रगति करते गए, वैसे-वैसे आत्मानुभव के नित-नूतन द्वार उद्घाटित होते चले गए। साधकों से अनुभव बांटने, पूछने, अभ्यास करने में आपश्री ने कभी प्रमाद एवं संकोच नहीं किया। आपश्री के इस सद्गुण को आलोचकों की आलोचनाएं भी झेलनी पड़ीं। परन्तु आलोचनाओं को सत्य की नियति मानकर आपश्री ने सहर्ष स्वीकार किया। आपश्री ध्यान की साधना में गहरे और गहरे पैठते रहे। अपने आनंद में दूसरों को सहभागी बनाने के लिए आपश्री ध्यान का प्रचार भी करते रहे। शिविरों के माध्यम से इस अध्यात्म विद्या का दान भी करते रहे।

परम पूज्य आचार्य सम्राट् श्री आनंद ऋषि जी म. ने आपकी ध्यान साधना की न केवल अनुमोदना की अपितु अनुशंसा भी की। देवेन्द्राचार्य ने आपकी साधना और ध्यान शिविरों के परिणामों को देखकर और अनुभव

करके वर्ष 2000 को ध्यान-वर्ष घोषित किया।

ध्यान की गहराई साधना की गहराई पर आधृत है। परम पूज्य आचार्य देव विगत तीस वर्षों से निरंतर साधनारत हैं। आपश्री का धर्मध्यान परिपक्व बन चुका है। फूल खिल चुके हैं। सब ओर सौरभ व्याप्त है। आगम के निर्देश—कि साधक को प्रतिदिन चार प्रहर ध्यान करना चाहिए आपके जीवन का साक्षात् संदेश है। आपश्री अपना अधिकांश समय ध्यान में अर्पित करते हैं। इस संदर्भ में कई बार लोगों से ऐसे शब्द भी सुने जाते हैं कि आचार्य जी पूरा दिन ध्यान में ही रहते हैं, कभी दर्शन नहीं देते। ऐसी नाराजगियां देखी जाती हैं।

पर विनम्र निवेदन हैं कि ऐसी शिकायतें वहीं से उठती हैं जिन्होंने कभी ध्यान को अनुभव नहीं किया। ध्यान को जीने वालों की ऐसी शिकायतें खो जाती हैं। ध्यान का अनुभव करने वाला इस सत्य से अवगत हो जाता है कि ध्यान ही परम साधना है और साधना ही श्रमण का प्राण है। फिर वह शिकायत नहीं करता, बल्कि प्रतीक्षा करता है। फिर क्षणिक दर्शन ही उसे पूर्ण तृप्ति देते हैं।

इस भूतल पर ऐसे मानव कम ही हैं जो आत्मकल्याण के साथ-साथ निरपेक्ष भाव से समष्टि के कल्याण के लिए अपना जीवन अर्पित कर देते हैं। अधिकांश मानव अपने हित के लिए ही अहर्निश संलग्न रहते हैं। स्वयं के स्वार्थ के लिए वे दूसरों को दुखों के गड्ढे में भी धकेलने से संकोच नहीं करते। निरपेक्ष भाव से परमार्थ और परार्थ के लिए जीवन को अर्पित करने वाले ही युगपुरुष कहलाते हैं। ऐसे मानवों से ही मानवता धन्य होती है।

परमादरणीय परमपूज्य आचार्य प्रवर श्री शिव मुनि जी म. ऐसे ही मानवरत्न हैं जिनसे मानवता का मान बढ़ा है, जिनसे मानवता धन्य हुई है। परम पूज्य आचार्य देव ने प्रलम्ब साधना में स्वयं को तपाकर साधना के अमृत को आत्मस्थ किया। साथ ही प्राप्त हुए उस अमृत को जन-जन में बांटने के लिए आपश्री श्रमशील हैं।

आचार्य पद चादर समारोह अभूतपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आपश्री ने सकल संघ को ध्यान साधना की प्रेरणा प्रदान की। आपश्री की प्रेरणा से श्रमण-श्रमणी समुदाय में ध्यान की रुचि जागृत हुई। परिणामस्वरूप विवेक विहार दिल्ली के तत्वावधान में एक विशाल ध्यान

शिविर का समायोजन हुआ, जिसमें 135 साधु-साध्वियों एवं 40 मुमुक्षु श्रावकों ने भाग लिया। इस शिविर में भाग लेने वाले कुछ साधुओं एवं साध्वियों की नामावली इस प्रकार है—उपाध्याय प्रवर श्री विशाल मुनि जी महाराज, उपप्रवर्तक श्री रवीन्द्र मुनि जी म., डॉ श्री सुव्रत मुनि जी म., पं. श्री विनय मुनि जी म., आदि मुनिवृन्द एवं उपप्रवर्तिनी महासती श्री कौशल्या जी म., महासती श्री प्रमिला जी म., महासती श्री संतोष जी म. आदि साध्वी वृन्द।

त्रिदिवसीय ध्यान शिविर में साधु-साध्वीवृन्द ने पूरे निष्ठाभाव से आचार्य-श्री के सान्निध्य में ध्यान की गहराइयों में डुबकी लगाई। साधु-साध्वीवृन्द के लिए यह शिविर अनूठे और दिव्य अनुभवों वाला रहा। शिविर की परिसमाप्ति पर विभिन्न मुनिवरों एवं साध्वियों ने अपने अनुभव व्यक्त किए। पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री विशाल मुनि जी महाराज ने फरमाया—आचार्य श्री ने ध्यान के माध्यम से हमें दुनियां में रहते हुए दुनियां से विलग रहने की कला सिखाई। बाहर से आंखें मूंदकर अंतर में आंखें खोलकर हमने आत्मानुभव किया जो निःसंदेह एक अद्भुत अनुभव रहा।

शिविर की परिसमाप्ति पर परम पूज्य प्रवर्तक श्री रूपचंद जी महाराज ने साधु-साध्वियों के मध्य अपने भावों को इस प्रकार व्यक्त किया—ज्ञान और ध्यान जैन धर्म परम्परा में प्रमुख साधनाएं हैं। साधु-साध्वियों को जब श्रावक-श्राविकाएं सुखसाता पूछते हैं तब यह भी पूछते हैं कि आपका ज्ञान-ध्यान कैसा चल रहा है। आचार्यश्री ने ज्ञान के साथ ध्यान की परम्परा को उजागर करने में कड़ा श्रम किया है और इस साधना को जन-जन तक पहुंचाने के लिए निरन्तर श्रम कर रहे हैं। पहले मैं भी इनके ध्यान का विरोधी था, परन्त जब मैंने नजदीक बैठकर ध्यान की पूरी जानकारी ली और समझा तो मैंने सभी को ध्यान के लिए प्रेरित किया एवं सभी को शिविर में बैठने के लिए उत्साहित किया। आज मनुष्य अशांत और दुखित है। ऐसे समय में ध्यान का विशेष महत्व है। धीरे-धीरे ध्यान में आगे बढ़ते हुए व्यक्ति जीवन-मुक्ति का अनुभव कर सकता है। आचार्यश्री से मेरा निवेदन है कि अब ध्यान की चर्चा न करते हुए सबको ध्यान करवाना शुरू करें।

परम पूज्य उपप्रवर्तक श्री रवीन्द्र मुनि जी म. ने फरमाया—ध्यान वर्तमान समय की परम आवश्यकता है। ध्यान साधना से शारीरिक व मानसिक

समस्याओं से निजात मिलती है। मानसिक शांति एवं आनंदमय जीवन जीने के बारे में बहुत कुछ पढ़ा था, लेकिन बहुत ढूंढ़ने पर भी प्रेक्टिकल वातावरण नहीं मिला। हमारे आचार्य श्री कितने समयज्ञ एवं कालज्ञ हैं जिन्होंने समय की नब्ज को पहचानते हुए सकारात्मक दृष्टिकोण को सामने रखकर चादर महोत्सव के निमित्त एकत्रित साधु-साध्वियों को ध्यान के अनुभव से गुजरने का अवसर प्रदान किया।

युवाप्रज्ञ डॉ. श्री सुव्रतमुनि जी महाराज शास्त्री ने फरमाया–शिविर में बैठने से ध्यान-योग का प्रयोगात्मक बोध प्राप्त हुआ। अब तक शिखर दिखते थे पर मार्ग ज्ञात नहीं था। शिविर में मार्ग का ज्ञान प्राप्त हुआ। आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म. द्वारा आचारांग सूत्र मूल और टीका में उल्लेखित सोऽहं की व्याख्या का बोध पाकर अत्यंत आनंदानुभूति हुई। जो सिद्धांत और प्रक्रिया हमारे तीर्थंकर देवों ने प्रारंभ की थी उसी को आचार्य देव पूज्य श्री शिव मुनि जी म. ने वैज्ञानिक विधि से प्रस्तुत करके समय की मांग की पूर्ति की है।

सरलमना उपप्रवर्तक श्री विनय मुनि जी म. 'वागीश' ने अपने अनुभव को निम्नोक्त शब्दावलि में अभिव्यक्ति दी–मैंने शिविर में ध्यान साधना के माध्यम से असीम आनंद का अनुभव किया है। इसके पूर्व मेरा मन ध्यान-कायोत्सर्ग में एकाग्र नहीं होता था। परंतु शिविर में बैठने के बाद मन एकाग्र होने लगा है।

परम विदुषी महासती श्री कौशल्या जी म. 'श्रमणी' ने शिविर के अनुभवों को अभिव्यक्त करते हुए फरमाया–इस साधना शिविर को करने से आत्मशांति का अनुभव हुआ। कषाय भाव विगलित हुए। मैत्री भाव की वृद्धि हुई। ध्यान शिविर प्रभु वाणी के संदर्श को पुष्ट करता है कि मौन व ध्यान की प्रक्रिया ही आपको संयोग अर्थात् संग से असंग बनाती है।

पुनीतात्मा महासती श्री पुनीतज्योति जी म. ने अपने अनुभवों को इस प्रकार प्रकट किया–ध्यान शिविर के पहले दिन जिज्ञासा थी, उत्कण्ठा थी, अतः चाव-चाव में ध्यान में मन लगा। दूसरे दिन लगा ठीक-ठीक ही है। तीसरे दिन योग के कारण मन में आया कि क्या इतने आसन प्रतिदिन की चर्या में काम आने वाले हैं? परंतु तीसरे दिन दोपहर के बाद हमें रेगिस्तान में फल उगाने की एक किसान की कथा के माध्यम से कृतज्ञता एवं

आत्मवैश्विकता की वैज्ञानिक विधि दी गई जिससे हृदय कृतज्ञता से पूर्ण बन गया। और आखिरी दिन को तो मैं कदापि भूल नहीं पाऊंगी, इसे आत्म-प्रक्षालन का पर्व कहूं तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। आचार्य भगवंत की महान कृपा है जो हमें ऐसा अवसर प्राप्त हुआ।

महासती डॉ. दिव्यप्रभा जी म. ने अपने अनुभवों को यूं प्रकट किया–ध्यान साधना की जो पृष्ठभूमि है, जिसके अंतर्गत शंख प्रक्षालन, योगासन और सात्विक आहार का ग्रहण, ये मुझे ध्यान साधना के प्रति क्रियाशील बनाए हुए हैं। इससे मुझे ऐच्छिक संस्फूर्ति, मानसिक प्रसन्नता और आत्मिक शक्तियों का प्रकटीकरण अनुभूत हुआ। जब मैं ध्यान साधना में स्थित एवं स्थिर हुई उस समय मुझ में एक शून्यता का आभास हुआ। कतिपय ऐसे पल भी आए जो पल ध्यान साधना के पूर्व मेरे जीवन में कभी घटित नहीं हुए थे।

इसी क्रम में मुनिवर श्री हितेश मुनि जी म., श्री आगम मुनि जी म. 'आकाश', श्री तरुण मुनि जी म., श्री लोकेश ऋषि जी म., श्री पुनीत मुनि जी म., श्री दर्शन मुनि जी म., महासती श्री प्रमिला जी म., महासती श्री रजत रश्मि जी म., महासती श्री रुचिका श्री जी म., महासती श्री अनुपमा जी म., परम विदुषी महासती डॉ. श्री मुक्तिप्रभा जी म., महासती श्री लक्षित साधना जी म., महासती श्री उत्तम साधना जी म., महासती श्री विराग साधना जी म., महासती श्री महिमाश्री जी म., महासती श्री रजत ज्योति जी म., महासती श्री सहज साधना जी म. आदि साधु-साध्वीवृन्द ने अपने-अपने अनुभवों को कहा। सभी मुनिराजों एवं आर्याओं के अनुभव अद्‌भुत और अपूर्व रहे। सभी ने एक स्वर से यह कहा कि ऐसे शिविर निरंतर लगाए जाने चाहिएं।

ध्यान साधना की महत्ता को समग्र संघ में एक स्वर से स्वीकृति मिली। पूर्व में जिन किन्हीं के मन में ध्यान शिविरों को लेकर भ्रांतियां थीं वे दूर हो गईं। ध्यान-साधना का सभी श्रमण-श्रमणियों ने प्रचार और अभ्यास प्रारंभ कर दिया। कहना चाहिए कि पूरा दिल्ली महानगर ध्यान के रंग में रंग गया। अनेक श्रीसंघों से ध्यान शिविरों के आयोजन की निरंतर प्रार्थनाएं आने लगीं। परिणामत: आचार्यश्री द्वारा प्रशिक्षित साधकों द्वारा 22 जून से 2 जुलाई के मध्य त्रिनगर, अशोक विहार, कोल्हापुर रोड, शक्तिनगर और शास्त्रीनगर

आदि क्षेत्रों में तीन-तीन दिन के ध्यान शिविरों का समायोजन किया गया। इन शिविरों से हजारों की संख्या में मुमुक्षु श्रावक-श्राविकाओं ने शुद्ध आत्मानंद का अनुभव किया।

❖❖❖

उत्तर भारत
में
प्रचार-प्रवास

ध्यान की प्रेरणा जन–जन में जगाते हुए परम करुणानिधि परम पूज्य आचार्य श्री ग्रामानुग्राम विचरते रहे, विचर रहे हैं और विचरते रहेंगे। परम पुरुषों की करुणा पर पत्थर भी बरसते है। यह स्वाभाविक नियति है परम पुरुष की। कांटों में फूल के लिए स्वाभाविक ईर्ष्या का होना अस्वाभाविक नहीं है। परम पूज्य आचार्य देव को भी पत्थर मिले हैं। विराट जीवनयात्रा में खोजे से कोई निंदा के योग्य बात नहीं मिली तो विदग्ध–स्वभावियो ने ध्यान जैसी विशुद्ध आध्यात्मिक साधना को ही उपहास का विषय बना लेना पड़ा। कितना करुणाजनक है यह ?

पर करुणा तो करुणा है। ऐसे लोगो के लिए भी परम पूज्य आचार्यश्री से करुणा ही बहती है। उनके पास करुणा है तो वही उनसे बहेगी। पत्थर बरसाने वालों के लिए भी वे मगल और कल्याण की कामना करते हैं। आचार्य श्री का हृदय–गीत है– सबका मंगल हो, सबका कल्याण हो।

उत्तर भारत में प्रचार-प्रवास

तीसवां वर्षायोग

परम पूज्य ध्यान योगी आचार्य सम्राट् श्री शिव मुनि जी महाराज के वर्षावास हेतु दिल्ली महानगर के कई प्रतिष्ठित श्रीसंघ प्रार्थना पंक्ति में थे। आखिर यह महान सौभाग्य एस. एस. जैन संघ, जैन कॉलोनी वीर नगर को प्राप्त हुआ। यहां यह उल्लेखनीय है कि वीरनगर श्रीसंघ दिल्ली के संघों में अपनी एक विशेष पहचान रखता है। इस नगरी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां के सभी निवासी जन्मना जैन हैं। पूरी कॉलोनी के कण-कण में जैनत्व की सुगंध को अनुभव किया जा सकता है। यहां के श्रावक आर्थिक दृष्टि से जितने संपन्न हैं धार्मिक दृष्टि से भी उतने ही समृद्ध हैं। असाम्प्रदायिकता, उदारता, सेवा, धर्मनिष्ठा आदि सद्गुण यहां के श्रावकों की पहचान है।

वर्षावास से पूर्व परम पूज्य आचार्य देव ने महानगर के उपनगरीय क्षेत्रों का विचरण किया। पश्चिम विहार, रोहिणी सै.-3, वीर अपार्टमेंट, आत्म-वल्लभ सोसायटी, अहिंसा विहार, प्रशांत विहार, शक्ति नगर एक्स., डेरावाल नगर, मॉडल टाऊन, आदर्श नगर, शालीमार बाग, पीतमपुरा, त्रिनगर, अशोक विहार, कोल्हापुर रोड, शास्त्रीनगर आदि क्षेत्रों में धर्मोद्योत करते हुए परम पूज्य आचार्यश्री ने 2 जुलाई को वर्षावास हेतु वीरनगर में प्रवेश किया।

वर्षावास प्रवेश के प्रसंग पर सैकड़ों साधु-साध्वियों और हजारों श्रावक-श्राविकाओं के साथ दिल्ली प्रदेश की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित, विपक्ष के नेता श्री मदनलाल खुराना, श्री जगदीश टाइटलर, क्षेत्रीय विधायक एवं कांग्रेस के अधिकारियों ने परम पूज्य आचार्य भगवन् का भव्य स्वागत और अभिनंदन किया। परमपूज्य उपप्रवर्तक श्री तारक ऋषि जी म. ने अपने शिष्य वृन्द सहित सेवा धर्म का आदर्श प्रस्तुत करते हुए विगत दो वर्षावासों की भांति ही यह वर्षावास भी आचार्यश्री की सेवा में ही किया। पूज्या महासती तपचक्रेश्वरी श्री हेमकुंवर जी म., परमादरणीय महासती

श्री कौशल्या जी म. 'श्रमणी', परमादरणीय महासती श्री सरिता जी म., महासती श्री प्रवीण कुमारी जी म. प्रभृति कई साध्वी मंडलों ने भी आचार्य भगवन् के सान्निध्य में वीरनगर में ही वर्षावास किए।

अपूर्व उत्साह के साथ वीरनगर वर्षावास प्रारंभ हुआ। वर्षावास की संपूर्ण अवधि में वीरनगर दीपावली के से उत्सव में उत्साहित और उमंगित बना रहा। वर्षावासिक प्रवचनों के लिए विशाल और भव्य पाण्डाल की संरचना की गई थी। वहां पर प्रतिदिन प्रवचन पीयूष प्रवाहित होता रहा। पूज्य आचार्य देव के साधना-स्नात प्रवचनों को सुनने के लिए समग्र दिल्ली और सुदूर प्रदेशों के श्रावक-श्राविकाएं प्रतिदिन उमड़ते रहे। वीरनगर चातुर्मासिक धर्म मेले में बदल गया था। महामंत्र के अखण्ड जाप, बाल-संस्कार शिविर, स्वाध्याय शिविर और ध्यान शिविर पूरे वर्षावास चलते रहे।

आलोक आगम का

किसी भी धर्म-परम्परा के लिए उसका मौलिक साहित्य उसका प्राण होता है। जैसे वैदिक परम्परा के लिए वेद, उपनिषद, पुराणादि, इस्लाम के लिए कुरान, ईसाइयों के लिए बाईबल, बौद्धों के लिए त्रिपिटक, सिखों के लिए गुरु-ग्रन्थ साहब आदि मौलिक ग्रन्थ प्राण स्वरूप हैं, वैसे ही जैन परम्परा के लिए आगम प्राण स्वरूप हैं। जैनागमों की संख्या बत्तीस है जिनमें तीर्थंकर महावीर के प्रवचन संग्रहीत हैं।

जैनागमों की भाषा अर्धमागधी है। उनमें धर्म और दर्शन की विवेचना हुई है। धर्म दर्शनादि विषयों को साधारण व्यक्ति के लिए हृदयंगम करना सरल नहीं है। विगत शती में जैनागमों को व्याख्या सहित प्रकाशित करने के लिए पर्याप्त कार्य हुआ। उस दिशा में श्रमणसंघ के प्रथम पट्टधर आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म. ने महान श्रम किया। उनका श्रम इस दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण माना गया कि वह सरल भाषा और सुबोध शैली में किया गया। आचार्य श्री द्वारा व्याख्यायित अठारह आगम विगत शती में प्रकाशित हुए। पूरे भारतवर्ष में जैन धर्म की चारों शाखाओं में उक्त आगमों को चाव से पढ़ा गया।

परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री शिव मुनि जी म. ने भारतवर्ष के विभिन्न अंचलों में विचरण करते हुए पूज्य आचार्य देव के व्याख्याकृत आगमों की मांग को सर्वत्र ही अनुभव किया। आचार्य देव के व्याख्याकृत आगमों की मांग को देखते हुए परम पूज्य आचार्य भगवन् ने उक्त आगमों के पुनर्प्रकाशन

का लक्ष्य स्थिर किया। वीर नगर वर्षावास में ही इस दिशा में कार्य प्रारंभ किया गया। अत: वीर नगर वर्षावास आगम प्रकाशन के संकल्प के लिए भी एक स्मरणीय वर्षावास रहा।

16 सितम्बर को परम पूज्य आचार्य भगवन् का जन्मोत्सव तप और जप की विशेष आराधना के साथ मनाया गया। 16 सितम्बर को सामूहिक रूप से लोगस्स का जाप किया गया। 17 सितम्बर को उवसग्गहर स्तोत्र का जाप किया गया। 18 सितम्बर को लोगस्स और भक्तामर स्तोत्र का सामूहिक पाठ हुआ। 17 से 19 सितम्बर तक 300 कष्टी तेले किए गए।

तप, जप और ध्यान परम पूज्य आचार्य देव की दैनिक साधना के अनिवार्य अंग हैं। सामयिक पर्वों पर पूज्य श्री विशेष साधना हेतु तप, जप और ध्यान की विशेष आराधना करते हैं। दीपावली के प्रसंग पर परम पूज्य आचार्य देव ने चार दिन एकांत में तप, जप, मौन और ध्यान की साधना की। बाद में महामंगल पाठ प्रदान किया, जिसका लाभ हजारों लोगों ने लिया।

दिनांक 18 नवम्बर को विश्वविख्यात योगी श्री श्री रविशंकर जी शिवाचार्य समवसरण में पधारे। श्री श्री रविशंकर जी ऑर्ट ऑफ लिविंग के संस्थापक हैं। इस विधि से विश्व में लाखों लोगों ने जीवन जीने की कला को सीखा है।

दो महान मुनियों के सत्संग-मिलन का क्षण ऐतिहासिक क्षण बन गया। श्री श्री रविशंकर जी परम पूज्य आचार्य श्री के व्यक्तित्व से अत्यंत प्रभावित हुए। उन्होंने अपने उद्बोधन में फरमाया–आचार्य श्री शिव मुनि जी श्रमण परंपरा के एक महान मुनि हैं, वे सरल हैं, आत्मज्ञानी हैं, ध्यानी और गुणग्राही हैं। वर्तमान के ऋषि मुनि आचार्य जी के जीवन का अनुकरण करें तो जगत में आध्यात्मिक क्रांति आ सकती है, शांति, सद्भाव और सर्वधर्म समन्वय के फूल खिल सकते हैं। बाद में उन्होंने उपस्थित जनसमूह को कुछ देर के लिए ध्यान भी करवाया।

28 नवम्बर को परमादरणीय परम पूज्य आचार्य देव के पारस सान्निध्य में ग्यारह मुमुक्षु आत्माओं ने जिन-दीक्षा धारण की, जिसमें सैकड़ों साधु-साध्वियों के अलावा हजारों श्रावक-श्राविकाओं ने हिस्सा लिया।

वीरनगर के ऐतिहासिक वर्षावास में श्रीसंघ के आबालवृद्ध ने पूज्य आचार्य श्री की सेवा एवं धर्मप्रभावना के प्रत्येक कार्य में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। जैन सभा के अध्यक्ष सरलमना श्री मदनलाल जी जैन, चातुर्मास

समिति के मुख्य संयोजक श्री दर्शनलाल जी जैन, मंत्री श्री राजकुमार जी जैन, संयोजक श्री जजमल जैन, श्री सुरेन्द्र मोहन जैन, श्री श्रीपाल जैन एवं आचार्य श्री के हनुमान भक्त के रूप में विख्यात श्री अनिल जैन आदि समर्पित श्रावकों ने अहर्निश अप्रमत्त सेवाएं प्रदान कीं।

वर्षावास की परिसमाप्ति पर विशाल मानव समुदाय ने आचार्य श्री को विदाई दी।

परम पूज्य आचार्य देव न्यू फ्रैंडस कॉलानी पधारे। वहां पर परम पूज्य प्रवर्तक श्री रूप मुनि जी म. एवं परम पूज्य प्रवर्तक श्री सुमन मुनि जी म. से भेंट हुई। पूज्य मुनिवरों के साथ संघीय उत्थान के कई उपायों पर चिंतन-मनन हुआ। यथासमय पूज्य प्रवर्तक श्री रूपचंद जी म. को विदाई दी गई। न्यू फ्रैंडस कॉलोनी से परम पूज्य आचार्य देव फरीदाबाद पधारे। फरीदाबाद के अल्पकालिक प्रवास में सुंदर धर्म प्रभावना हुई। फरीदाबाद से आचार्य श्री पुन: दिल्ली पधारे एवं विभिन्न उपनगरों में विचरण कर धर्मप्रभावना की।

उत्सव-महोत्सव

8 दिसम्बर को आपश्री जैन मिलन की विशेष प्रार्थना पर सिटी फोर्ट ऑडिटोरियम पधारे जहां पर भव्य समारोह आयोजित किया गया था। उक्त समारोह में जैन धर्म की चारों सम्प्रदायों के प्रतिनिधि मुनिराजों ने भाग लिया। भाग लेने वाले मुनिराजों में प्रमुख थे–आचार्य श्री विद्यानंद जी म., उपाध्याय श्री गुप्ति सागर जी म., प्रो. श्री महेन्द्र मुनि जी म., उपप्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म., महासती श्री सरिता जी म. आदि।

उक्त अवसर पर परम पूज्य आचार्य देव ने जैन धर्म की एकता और संगठन पर विशेष बल दिया। चारों सम्प्रदायों के समीचीन और प्रतीकात्मक अर्थ करते हुए आचार्यश्री ने फरमाया–जिसकी चर्या आकाश के समान सुनिर्मल है वह दिगम्बर है, तेरा अर्थात् परमात्मा की साधना में सतत संल्लीन रहने वाला तेरापंथी है, अपनी आत्मा के अंदर वास करने वाला स्थानकवासी है और शरीर रूपी मंदिर में स्थित आत्म-देव की आराधना करने वाला मंदिरवासी है।

परम पूज्य आचार्य देव की इस सुंदर परिभाषा को सुनकर श्रोतावर्ग मंत्रमुग्ध बन गया।

दिल्ली के विभिन्न उपनगरों में आचार्यश्री का विचरण हुआ। आपश्री जहां भी पधारे वहीं पर धर्मध्यान के फूल खिलते रहे। तप, जप और ध्यान में खिला आपश्री का जीवन जन-जन के लिए प्रेरणा-स्रोत रहा।

23 दिसम्बर को भाबू वंश की ओर से आपश्री का अभिनंदन किया गया। उक्त अवसर पर आचार्य श्री विजय वीरेन्द्र सूरि जी म. ने आपश्री को कंबली भेंट कर सम्मानित किया। विभिन्न वक्ताओं ने आपश्री को 'भाबू कुल सूर्य' कहा।

तपाचार्य महासती श्री मोहनमाला जी म. ने 205 उपवासों की सुदीर्घ तपस्या की। महासती जी के तपाभिनंदन के लिए करोलबाग में एक समारोह रखा गया। उक्त अवसर पर परम पूज्य आचार्य देव पधारे। आपश्री ने तप की महिमा पर प्रकाश डालते हुए महासती जी की तप:रुचि की भूरि-भूरि प्रशंसा की एवं महासती जी को 'तप रत्नेश्वरी' पद से सम्मानित किया।

वीर अपार्टमैंट रोहिणी में अध्यात्मयोगी पूज्य श्री हेमचंद्र जी महाराज की मंगल प्रेरणा से भगवान पार्श्व जयंती मनाई गई। पुरुषादानीय प्रभु पार्श्व के जीवन पर आचार्यश्री ने प्रकाश डाला। इसी पावन प्रसंग पर आचार्यश्री ने पूज्य श्री हेमचंद्र जी महाराज को 'महास्थविर' के शास्त्रीय पद से अलंकृत किया। इसी अवसर पर डॉ. नागेश जैन को 'समाजरत्न' का सम्मान प्रदान कर आचार्यश्री ने उनकी सेवाओं को सम्मानित किया।

संत सम्मिलन

जनवरी के तृतीय सप्ताह के अंत में परमपूज्य आचार्य सम्राट् पूज्य श्री शिव मुनि जी म. के सान्निध्य में शक्तिनगर में उत्तर भारत के प्राय: सभी प्रमुख महामुनि एवं प्रमुख साध्वियां एकत्रित हुए। उक्त अवसर पर एक साथ बैठकर संघ समन्वय तथा संघ के उत्थान हेतु परस्पर विचार-विमर्श किया गया। परम पूज्य आचार्यश्री ने संघ के विकास हेतु कई प्रस्ताव रखे। पर्याप्त चिंतन, अनुचिंतन हुआ और कई प्रस्ताव सर्वानुमति से पारित हुए।

विभूति त्रय का स्मृति दिवस

दिल्ली के कई क्षेत्रों में विचरण करते हुए परम पूज्य आचार्यश्री जी वीरनगर पधारे जहां पर 30 जनवरी को आत्म-मरुधर-गांधी स्मृति दिवस का आयोजन किया गया। उक्त अवसर पर पद्मश्री विभूषित श्री ज्ञानचंद जी जैन का भी सम्मान किया गया। वीरनगर दिल्ली श्रीसंघ ने श्री ज्ञानचंद जी जैन

को 'जैन विभूषण' पद से अलंकृत किया।

परमपूज्य आचार्यश्री ने अपने उद्बोधन में गांधी जी के अहिंसा एवं अपरिग्रह में खिले-विकसे जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके जीवन से प्रेरणा लेने का संदेश दिया। परम पूज्य आचार्य देव के साधना-स्नात जीवन पर प्रकाश डालते हुए आपश्री ने फरमाया–आचार्य देव विगत सदी के एक महान साधक थे। उनके दर्शन करने वाला धन्य बन जाता था। मैंने अपने जीवन में उस महापुरुष के एक ही बार दर्शन किए। उनके दर्शनों का ही यह चमत्कार है कि मुझे संयम साधना का पथ प्राप्त हुआ।

परम पूज्य श्री मरुधर केसरी जी म. के जीवन पर प्रकाश डालते हुए परम पूज्य आचार्यश्री जी ने उनके दया, करुणा, सेवा एवं संगठन के कार्यों की विशेष प्रशंसा की।

वीरनगर से विहार करके परम पूज्य आचार्यश्री जी भजनपुरा, भागीरथी विहार, शिवपुरी होते हुए लोनी पधारे। मार्ग में परम पूज्य श्री सुदर्शनलाल जी म. के सुशिष्य श्री राजेन्द्र मुनि जी म. ठाणे-3 से मिलन हुआ। अत्यंत आत्मीयता पूर्ण इस मिलन में साधना सम्बन्धी चर्चाएं हुईं।

लोनी से पूज्य आचार्यश्री बागपत पधारे। वहां पर परम पूज्य श्री सुदर्शन लाल जी म. के सुशिष्य शान्तात्मा श्री शाँति मुनि जी म., विद्वान मुनिवर श्री जयमुनि जी म. ठाणे-4 ने आपका स्वागत किया। मुनिवरों से आत्मीयतापूर्ण मिलन हुआ एवं सामूहिक प्रवचन हुआ। पूज्यश्री जय मुनि जी म. ने फरमाया–ध्यान के बिना ज्ञान अधूरा है। आचार्यश्री ने ध्यान को जोड़कर ज्ञान को पूर्ण बना दिया है।

बागपत से पूज्य आचार्यश्री बड़ोत पधारे जहां पर उत्तर प्रदेश जैन कांफ्रेंस तथा स्थानीय संघ की ओर से भावभीना स्वागत किया गया। बड़ोत का संक्षिप्त प्रवास काफी प्रभावशाली रहा। वहां पर त्रिदिवसीय ध्यान शिविर का भी समायोजन किया गया जिसमें पचास से अधिक साधकों ने भाग लिया।

बड़ोत से विहार करके परम पूज्य आचार्यश्री मेरठ पधारे। मार्ग में पूज्य श्री सुदर्शन लाल जी म. के उत्तराधिकारी संघ प्रमुख श्री पद्मचंद जी म. 'शास्त्री' से आत्मीयतापूर्ण मिलन हुआ। महामुनियों का सामूहिक प्रवचन भी हुआ एवं ध्यान साधना पर चिंतन-मनन एवं अनुभवों का आदान-प्रदान हुआ।

आचार्यश्री के मेरठ पदार्पण पर सर्वत्र हर्ष व्याप्त हो गया। मेरठ के श्रद्धानिष्ठ श्रावकों ने आपश्री का उत्कृष्ट स्वागत किया। प्रवचनों में अभूतपूर्व उपस्थिति रही। आपश्री के सान्निध्य में पांच भागवती दीक्षाएं संपन्न हुईं। त्रिदिवसीय ध्यान शिविर का भी आयोजन हुआ जिसमें मुमुक्षु साधकों ने उत्साह पूर्वक सहभागिता की।

मेरठ से विहार करके आपश्री जी हस्तिनापुर पधारे। हस्तिनापुर एक जैन तीर्थ है। यही वह स्थल है जहां राजकुमार श्रेयांस कुमार ने प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव को प्रथम आहार दान प्रदान किया था जिससे भगवान ने एक वर्ष के प्रलम्ब अनशन का पारणा किया था। वह वैशाख सुदी तृतीया का दिन था। वह दिन जैन इतिहास में अक्षय तृतीया के रूप में अंकित है। इतिहास की उस महान घटना की पावन स्मृति में आज भी प्रतिवर्ष अक्षय तृतीया के अवसर पर वर्षीतप की आराधना करने वाले अनेकों तपस्वी वहां पर तप का पारणा करते हैं।

उक्त ऐतिहासिक नगर में हस्तिनापुर श्वेताम्बर स्थानकवासी ट्रस्ट ने परम पूज्य आचार्य देव का भावभीना स्वागत किया। पूज्य पंडित प्रवर श्री रमेश मुनि जी महाराज, डॉ. श्री राजेन्द्र मुनि जी महाराज आदि ठाणे चार एवं महासती वृन्द ठाणे-21 भी उक्त अवसर पर हस्तिनापुर पधारे। सत्संग, प्रवचन और ध्यान-साधना द्वारा जनता ने धर्मलाभ प्राप्त किया।

हस्तिनापुर से पूज्य आचार्यश्री मुजफ्फरनगर पधारे। वहां पर सलाहकार श्री रवीन्द्र मुनि जी म. आदि ठाणा के साथ श्रीसंघ ने आपका स्वागत किया। संक्षिप्त प्रवास में अच्छी धर्म प्रभावना हुई।

मुजफ्फरनगर से विहार कर आचार्यश्री जी रुड़की, हरिद्वार आदि क्षेत्रों में प्रवचन-प्रभावना करते हुए ऋषिकेश पधारे। वहां पर प्रकृति की गोद में परम पूज्य आचार्यश्री जी ने कुछ दिन मौन और ध्यान की साधना की। वहीं पर पूज्य श्री श्री रविशंकर जी से मिलन हुआ। श्री श्री रविशंकर जी के हजारों देशी-विदेशी अनुयायिओं ने आचार्यश्री के सान्निध्य और सत्संग का लाभ लिया। आपके तप, त्याग और साधनामय जीवन का विदेशी लोगों पर चमत्कारी प्रभाव पड़ा।

ऋषिकेश के साधनामय प्रवास के पश्चात् आचार्यश्री देहरादून पधारे जहां पर व्याख्यान दिवाकर पूज्य श्री रमणीक मुनि जी म. एवं साध्वी मंडल ने आपश्री का हार्दिक अभिनंदन किया। वहां पर होली चातुर्मास एवं आचार्य

सम्राट् श्री आनंद ऋषि जी म. की पुण्य तिथि का सुंदर समारोह आयोजित किया गया। दूर-सुदूर के सैकड़ों श्रावकों ने देहरादून पहुंचकर आपके दर्शनों का पुण्य-लाभ प्राप्त किया।

देहरादून से हरबर्टपुर होते हुए आपश्री पोण्टा साहब पधारे। यह सिख धर्म का प्रमुख पवित्र स्थल है। यहां पर गुरुद्वारा कमेटी ने आचार्यश्री का स्वागत-अभिनंदन किया एवं गुरु गोविंद सिंह की साधना भूमि का परिचय दिया।

पोंटा साहब से आपश्री जगाधरी होते हुए यमुनानगर पधारे जहां पर दिगम्बर, श्वेताम्बर, तेरापंथी और स्थानकवासी चारों ही समाजों ने संयुक्त रूप से आपश्री का स्वागत एवं अभिनंदन किया। यमुनानगर प्रवास में धर्मध्यान की सुंदर प्रभावना हुई। त्रिदिवसीय ध्यान शिविर का आयोजन भी हुआ जिसमें बड़ी संख्या में साधकों ने ध्यान-साधना द्वारा आध्यात्मिक लाभ प्राप्त किया।

यमुनानगर से आपश्री ग्रामानुग्राम विचरते हुए बराड़ा पधारे। वहां पर युवामनीषी श्री सुभाष मुनि जी म. आदि ठाणा मुनिवृन्द के साथ स्थानीय श्रीसंघ ने आपश्री की सेवा का लाभ लिया। श्री रमणीक मुनि जी म. भी देहरादून से विहार कर बराड़ा पधारे एवं आपके दर्शनों का लाभ लिया। वहां पर स्थानीय संघ और आस-पास के श्रीसंघों ने आपके साधना-स्नात प्रवचनों का लाभ लिया।

बराड़ा से विहार कर मध्यवर्ती क्षेत्रों में धर्म प्रचार करते हुए परम पूज्य आचार्यश्री जी अंबाला पधारे। वहां पर पूज्य प्रवर्तक श्री सुमन मुनि जी म. एवं श्रीसंघ ने अपूर्व भक्ति भाव के साथ आपश्री का नागरिक अभिनंदन किया। आपश्री बीस वर्षों बाद अंबाला पधारे। आबालवृद्ध ने पलक-पांवड़े बिछाकर आपका स्वागत एवं अभिनंदन किया। पी.के.आर. स्कूल की मैनेजिंग कमेटी ने स्वागत-अभिनंदन को यादगार बनाने के लिए स्कूल में नवनिर्मित दो ब्लाकों का नामकरण 'आचार्यश्री शिवमुनि ब्लॉक' एवं 'प्रवर्तक श्री सुमनमुनि ब्लॉक' के रूप में किया।

अंबाला का साप्ताहिक प्रवास ऐतिहासिक रहा। प्रवचनों में अपार जनसमूह उमड़ता रहा। ध्यान साधना के प्रति लोगों में विशेष आकर्षण रहा। फलत: त्रिदिवसीय शिविर में सैकड़ों मुमुक्षुओं ने ध्यान साधना से आध्यात्मिक लाभ प्राप्त किया।

पंचकुला में महावीर जयंती

परमादरणीय परम पूज्य आचार्य भगवन् अम्बाला से डेराबस्सी आदि क्षेत्रों को पावन चरण रज से पवित्र करते हुए पंचकुला स्थित श्री जैनेन्द्र गुरुकुल में पधारे। वहां पर पूज्य प्रवर्तक श्री सुमन मुनि जी म., श्री आनंद मुनि जी म. एवं महासती श्री कौशल्या जी म. आदि ठाणा-35 ने आपश्री का स्वागत किया। गुरुकुल की पावन भूमि आपश्री की स्वाध्याय भूमि रही है। यहां पर मुनिजीवन में प्रवेश के प्रारंभिक वर्षों में काफी समय रहकर आपश्री ने गहन स्वाध्याय किया था।

यहां पर महावीर जयंती का समायोजन धूमधाम से किया गया। परम पूज्य आचार्य देव के संसारपक्षीय अनुज श्री विजय कुमार जी जैन ने सभा की अध्यक्षता की। उक्त अवसर पर हरियाणा के मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। इसी शुभ अवसर पर भगवान महावीर अनुसंधान एवं शोध कार्य का शिलान्यास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आपश्री ने भगवान महावीर की अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्त आदि सिद्धांतों पर प्रकाश डाला।

गुरुकुल से पंचकुला जैन स्थानक होते हुए आपश्री चण्डीगढ़ पधारे। वहां पर दिगम्बर एवं श्वेताम्बर दोनों समाजों ने आपश्री का स्वागत-अभिनंदन किया। हरियाणा महासभा के अध्यक्ष श्री राधेश्याम जी जैन, बी.डी. बंसल परिवार ने सेवा का विशेष लाभ लिया। ध्यान शिविर में 150 साधकों ने आत्मानुभव प्राप्त किया।

चण्डीगढ़ के प्रवास में वर्तमान सांसद श्री पवन कुमार बंसल एवं पूर्व सांसद श्री सतपाल बंसल ने आचार्यश्री से मार्गदर्शन प्राप्त किया। पूज्य प्रवर्तक श्री जी एवं कई साध्वी मंडल आपके साथ यहां पधारे थे।

साधना एवं सेवा में तन-मन-धन से समर्पित श्रीयुत बी.डी. बंसल के आवास पर पूज्य आचार्य श्री पधारे जहां पर प्रवचन, सत्संग और ध्यान के सुंदर कार्यक्रम संपन्न हुए।

सद्गुरु द्वारा शिष्यसत्तम का स्वागत

चण्डीगढ़ से मोहाली, खरड़, सरहंद होते हुए परम पूज्य आचार्य देव गोबिन्दगढ़ पधारे। गोबिन्दगढ़ मण्डी में परम पूज्य आचार्यश्री जी के गुरुदेव राष्ट्रसंत श्री ज्ञान मुनि जी म. विराजमान थे। श्रद्धेय गुरुदेव ने अपने अतिजात

शिष्य का स्वागत दोनों बाहें फैलाकर किया। परम पूज्य गुरुदेव ने लगभग 21 वर्ष पूर्व अपने शिष्यरत्न को भारतवर्ष में धर्मप्रभावना के लिए विदा किया था। विदा देते हुए गुरुदेव ने आशीष दिया था–शिव मुनि! भारतवर्ष के विविध अंचलों में घूमकर जिनवाणी का प्रचार-प्रसार करो और आत्म गुरु का नाम रोशन करते हुए सूर्य की तरह चमको। गुरुदेव के आशीष वचन को सर्वांगीण रूप में पूर्ण कर आपश्री गुरु सान्निध्य में लौटे। गुरु का गौरव धन्य हो उठा। अपने सुशिष्य को कण्ठ से लगाकर गुरुदेव के नेत्र सात्विक हर्ष से आर्द्र बन गए। स्फुट शब्दों में गुरुदेव ने कहा–मेरा अजीज आत्मगुरु का पट्टधर बनकर लौटा है। आज मैं अपने शिष्य में अपने गुरु और शिष्य दोनों के दर्शन कर रहा हूं।

श्रमण संघनायक आचार्य देव ने अपने सद्गुरु के चरणों को श्रद्धा के अश्रु अर्घ्य से सिंचित किया। सद्गुरु और सुशिष्य की उस भेंट को कोई लेखनी लिपिबद्ध नहीं कर सकती। उपस्थित साधु-साध्वीमंडल और श्रावक-श्राविका वृन्द गुरु-शिष्य के उस मिलन क्षण को देखकर गद्गद बन गए।

परम पूज्य पंजाब केसरी राष्ट्र संत गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी म. स्वयं भी विराट और विशाल व्यक्तित्व के स्वामी थे। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश आदि भाषाओं का उन जैसा सूक्ष्म व्याख्याता खोजना कठिन है। साधना और स्वाध्याय के क्षेत्र में वे अपनी मिसाल स्वयं थे। इन सब बातों से आगे–उन जैसा पुण्यपुंज पुरुष भी कोई ही होता है। उन्होंने अपने गुरुदेव को पहले पंजाब परंपरा का आचार्य और फिर अखिल भारतीय श्रमण संघ के आचार्य पाट पर विराजित होते देखा। बाद में अपने शिष्य को उसी महनीय पद पर विराजित देखा।

अस्तु! परम पुण्यपुंज गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी म. ने अपने अतिजात शिष्य के स्वागत के लिए अथवा श्रमण संघ नायक आचार्य सम्राट् के अभिनंदन के लिए एक विशाल समारोह आयोजित करवाया। आस-पास और दूर-सुदूर क्षेत्रों के हजारों श्रावक-श्राविकाओं ने स्वागत-अभिनंदन समारोह में भाग लिया। उक्त अवसर पर उत्तर भारत के प्राय: सभी प्रतिष्ठित श्रावक उपस्थित थे। सभी प्रमुख वक्ताओं ने परम पूज्य आचार्यश्री का स्वागत किया एवं उनके साधना-स्नात जीवन की प्रशस्तियां कीं।

उक्त अवसर पर परम पूज्य आचार्य देव ने अपनी उपलब्धियों को

अपने श्रद्धेय गुरुदेव के आशीष का सुफल बताया। आपश्री ने फरमाया–ज्ञान के गौरिशिखर मेरे गुरुदेव ने मुझे स्वाध्याय और साधना हेतु सदैव प्रोत्साहित किया। इन्हीं के प्रोत्साहन ने मुझे कदम-कदम आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। इनका आशीष मेरे लिए प्रतिक्षण मार्गदर्शन बना रहा। मैं जो भी हूं, मेरे गुरुदेव की देन हूं।

आचार्य श्री ने श्रद्धेय गुरुदेव को 'महाश्रमण' शब्द से संबोधित करते हुए कहा–श्रमण समुदाय में गुरुदेव का महान व्यक्तित्व एक महाश्रमण का व्यक्तित्व है। उनके व्यक्तित्व में विकसित महाश्रमणत्व का स्वरूप सकल विश्व के लिए वन्दनीय और अभिनंदनीय है।

श्रद्धेय गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी म. ने उक्त अवसर पर भाव-विभोर होकर कहा–एक गुरु के नाते मैं अपने शिष्य का हार्दिक स्वागत करता हूं और एक श्रमणसंघीय मुनि के नाते श्रमण संघ के सरताज एवं आत्म-आनंद-देवेन्द्राचार्य के पट्टधर शिवाचार्य का अभिनंदन करता हूं। आज मेरा हृदय इस महामुनि के प्रति आशीष और समर्पण के समन्वित भावों से भरा हुआ है। इस अवसर पर मैं स्वयं को विश्व का सर्वाधिक संतुष्ट और आनंदित व्यक्ति मानता हूं। शिवाचार्य श्रमणसंघ के विकास के लिए सदैव साधनारत रहें। इनका विमल-धवल सुयश दशों दिशाओं में परिव्याप्त होता जाए। यही मेरी मंगल-कामनाएं हैं।

परम पूज्य गुरुदेव ने अपने अतिजात शिष्य के ध्यान-योग की मुक्त मन से प्रशंसा की एवं उन्हें 'योगिराज' के अलंकरण से अलंकृत किया।

इसी अवसर पर परम पूज्य आचार्य भगवन् के निवेदन पर श्रद्धेय गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी म. ने स्वयं सहित आचार्यश्री का आगामी वर्षावास सिविल लाइन लुधियाना श्रीसंघ को प्रदान किया। गुरुदेव की उक्त घोषणा से सर्वत्र हर्ष ही लहर दौड़ गई।

हिमालय हिमाचल में

संयम और साधना के हिमालयी व्यक्तित्व परम पूज्य आचार्य भगवन् श्रद्धेय गुरुदेव के चरणों की रज को मस्तक पर धारण करके वर्षावास पूर्व के शेषकाल में हिमाचल प्रदेश पधारे। ग्रामानुग्राम धर्म और ध्यान के दीये प्रज्ज्वलित करते हुए आपश्री नालागढ़ पधारे। नालागढ़ श्रीसंघ ने आपश्री का भावभीना स्वागत किया। आपके पदार्पण से नालागढ़ में धर्मध्यान की लहर जागृत हो गई। प्रवचनों में अपूर्व उपस्थिति रही।

आचार्यश्री अक्सर फरमाते हैं–प्रकृति की तरह सरल बनो! प्रकृति की तरह प्रत्युपकार की आकांक्षा के बिना दूसरों के काम आओ! प्रकृति के दर्शन से उक्त सद्गुणों का जीवन में विकास होता है। आचार्यश्री बचपन से ही प्रकृति-प्रेमी रहे हैं। प्रकृति के दर्शन के लिए, तादात्म्य स्थापित करने के लिए दीक्षा से पूर्व और दीक्षा के बाद आपश्री ने कई यात्राएं कीं।

हिमाचल प्रदेश प्राकृतिक सौंदर्य की क्रीड़ास्थली है। प्रकृति का दर्शन करते हुए, प्रकृति के गुणधर्म को आत्मधर्म बनाने का संदेश प्रसारित करते हुए परम पूज्य आचार्य भगवन् ने ग्रामानुग्राम विचरण किया। प्रकृति की गोद में बैठकर ध्यान के माध्यम से अन्तर्यात्राएं कीं। बाहर में फैले सौन्दर्य को अपने आत्मतल पर खिलते-विकसते देखा। उस सौन्दर्य में सभी को सम्मिलित करने को सदैव आमंत्रित करते रहे।

प्रस्तुत संदर्भ में एक क्षण ठहरकर पाठक मित्रों से बतियाना चाहता हूं। मित्रो! परम श्रद्धेय आचार्यश्री विगत 30 वर्षों से ध्यान साधना कर रहे हैं। पूज्यश्री की साधना जब परिपक्व बनी तो लगभग अठारह वर्ष पूर्व उन्होंने ध्यान का प्रचार-प्रसार प्रारंभ किया। तब से आज तक लाखों लोगों ने आचार्यश्री की प्रेरणा से ध्यान के माध्यम से आदर्श जीवन जीना सीखा है। ध्यान से लाखों लोगों ने आत्मशांति प्राप्त की। कितने ही लोगों ने क्लेश, द्वेष, अहंकार और ईर्ष्यादि दुर्गुणों से मुक्ति पाई। कितने ही लोग असाध्य रोगों से मुक्त बन गए।

ध्यान का प्रचार-प्रसार आचार्यश्री का प्राकृतिक गुण है। ऐसा वे इसलिए नहीं करते हैं कि इससे शिव मुनि को यश मिले। ऐसा वे अपने स्वभाव के कारण करते हैं, अपनी करुणा के कारण करते हैं।

एक फूल खिलता है तो सौन्दर्य और सुगंध का जन्म होता है। सौन्दर्य और सुगंध फूल का स्वभाव है, उसका गुणधर्म है। उसका खिलना ही भ्रमरों के लिए मौन आमंत्रण है कि आओ और पराग पा लो। सुगंध में नहा लो। सौन्दर्य में खो जाओ। फूल का स्वभाव है–जो उसके पास है उसके साथ वह बंट जाता है, स्वयं को बांट देता है।

स्वयं को बांट देना, लुटा देना, अस्तित्व को समर्पित कर देना महापुरुषों का सहज स्वभाव होता है। परम पूज्य आचार्य देव का भी यही स्वभाव है। वे स्वयं को समष्टि के कल्याण के लिए बांट रहे हैं। उनका आमंत्रण उनकी करुणा है। उनका प्रचार उनकी स्वाभाविक विवशता है। विगत अठारह वर्षों

से वे निरंतर प्रेरणा दे रहे हैं कि आओ और ध्यान में लीन बनकर स्वयं को पा लो, स्वयं से साक्षात्कार साध लो, परम सुख, परम संपदा और परम सम्मान के स्वामी बन जाओ, क्योंकि वह तुम्हारे ही भीतर है, वह तुम ही हो स्वयं। ध्यान तो तुम्हें केवल स्वयं को जानने का मार्ग देता है। ध्यान तो एक कुंजी है, खजाना तो तुम स्वयं हो। अपने को ध्यान की कुंजी से खोल लो, और पा लो उसे जो सदा से तुम्हारे साथ है। जो कभी खोया नहीं था, पर उसके होने का बोध खो गया था। उस बोध को जगाने का नाम ही ध्यान है।

ध्यान की प्रेरणा आचार्य देव की करुणा है विश्व के लिए, मानव मात्र के लिए।

ध्यान की प्रेरणा जन-जन में जगाते हुए परम करुणानिधि परम पूज्य आचार्य श्री ग्रामानुग्राम विचरते रहे, विचर रहे हैं और विचरते रहेंगे। परम पुरुषों की करुणा पर पत्थर भी बरसते हैं। यह स्वाभाविक नियति है परम पुरुष की। कांटों में फूल के लिए स्वाभाविक ईर्ष्या का होना अस्वाभाविक नहीं है। परम पूज्य आचार्य देव को भी पत्थर मिले हैं। विराट जीवन यात्रा में खोजे से कोई निंदा के योग्य बात नहीं मिली तो विदग्ध-स्वभावियों ने ध्यान जैसी विशुद्ध आध्यात्मिक साधना को ही उपहास का विषय बना लेना पड़ा। कितना करुणाजनक है यह?

पर करुणा तो करुणा है। ऐसे लोगों के लिए भी परम पूज्य आचार्यश्री से करुणा ही बहती है। उनके पास करुणा है तो वही उनसे बहेगी। पत्थर बरसाने वालों के लिए भी वे मंगल और कल्याण की कामना करते हैं। आचार्य श्री का हृदय-गीत है-सबका मंगल हो, सबका कल्याण हो।

अस्तु! सर्वमंगल और सर्वकल्याण के उद्गाता परम पूज्य आचार्य देव देवभूमि हिमाचल के गांवों और नगरों में विचरते हुए शिमला पधारे। शिमला के श्रावकों ने आचार्यश्री का भावभीना स्वागत किया। हिल-स्टेशन के कारण दर्शनार्थियों का अत्यधिक आवागमन रहा। शिमला के श्रद्धानिष्ठ श्रावकों ने साधर्मी सेवा का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया।

परम पूज्य आचार्यश्री के सान्निध्य में पंच दिवसीय ध्यान शिविर का आयोजन भी रखा गया जिसमें सैकड़ों मुमुक्षुओं ने आत्मलाभ प्राप्त किया। शिमला के श्रद्धाशील श्रावकों ने आपके सान्निध्य में विधिवत् श्रीसंघ के गठन एवं स्थानक भवन के निर्माण का संकल्प किया। ध्यान केन्द्र की स्थापना के लिए भी उत्साह जागृत हुआ।

शिमला से शोगी, कण्डाघाट होते हुए आचार्यश्री सोलन पधारे। बलाना गांव स्थित श्री प्रेमचंद जी जैन के यहां पधारे जहां सप्तदिवसीय ध्यान साधना शिविर की स्थापना की गई।

सोलन प्रवास में हिमाचल के मुख्यमंत्री प्रो. प्रेमकुमार धूमल आचार्यश्री के दर्शनार्थ उपस्थित हुए। आपश्री के दर्शन कर मुख्यमंत्री महोदय ने अत्यंत प्रसन्नता अनुभव की। शिमला श्रीसंघ के आवेदन पर मुख्यमंत्री ने ध्यान केन्द्र के लिए इच्छित भूमि देने का वचन दिया।

सोलन से पूज्य आचार्य श्री परवाणु पधारे। वहां पर भी सुंदर रूप से धर्म-प्रभावना के कार्य सम्पन्न हुए।

परवाणु से पिंजोर एवं जैनेन्द्र गुरुकुल पंचकुला होते हुए आपश्री भवात पधारे। वहां पर वयोवृद्ध मुनिराज श्रीचंद जी म. ने आपका स्वागत किया। वहां से छतबीर होते हुए आत्मगुरु की जन्मभूमि बनूड़ पधारे। बनूड़ प्रवास में ऐतिहासिक धर्मजागरणा हुई। ध्यान के रूप में लोगों को नवीन साधना पद्धति प्राप्त हुई। दूर-दूर के श्रावकों ने बनूड़ आकर आत्मगुरु की जन्मभूमि एवं आचार्यश्री के दर्शनों का लाभ प्राप्त किया।

बनूड़ से विहार कर परम पूज्य आचार्यश्री राजपुरा, सरहिन्द, गोविन्दगढ़, खन्ना आदि क्षेत्रों को स्पर्श करते हुए लुधियाना पधारे। लुधियाना श्रीसंघ ने आपश्री का नागरिक अभिनंदन किया। परम पूज्य श्रमण संघीय वरिष्ठ सलाहकार भोले बाबा श्री रत्नमुनि जी म. के नेतृत्व में अनेक मुनि एवं साध्वीवृन्द उक्त अवसर पर उपस्थित हुए।

इकतीसवां वर्षायोग

परम पूज्य आचार्य भगवन् के लुधियाना पदार्पण से संपूर्ण नगर में हर्ष और उत्साह का वातावरण निर्मित हो गया। वर्षावास से पूर्व पूज्य आचार्य श्री ने लुधियाना के उपनगरों में विचरण किया।

दिनांक 22 जुलाई को एस.एस. जैन सभा सिविल लाईन में वर्षावास के प्रवेश का कार्यक्रम सुनिश्चित किया गया। 22 जुलाई को परम पूज्य आचार्यश्री ने अपने परम पूज्य गुरुदेव एवं शिष्यमण्डल के साथ शिवपुरी से सिविल लाईन के लिए विहार किया। सिविल लाईन श्रीसंघ के साथ मिलकर लुधियाना के सभी भाइयों और बहनों ने श्रद्धाधार परम पूज्य आचार्य देव का स्वागत किया। स्वागत समारोह में जालंधर, अमृतसर, मालेरकोटला, जगराओं,

राजस्थान, मध्यप्रदेश और मुंबई तक के सैकड़ों श्रद्धालु श्रावक उपस्थित हुए। हजारों की संख्या में स्थानीय श्रावकों ने समारोह में भाग लिया।

वर्षावासिक प्रवचनों के लिए विशाल प्रवचन मण्डप 'आत्म-दरबार' की स्थापना की गई थी। स्वागत समारोह में गण्यमान्य वक्ताओं ने परम पूज्य आचार्यश्री का अभिनंदन किया। उक्त अवसर पर परम पूज्य आचार्यश्री ने अपने उद्बोधन में फरमाया–लुधियाना की पावन धरा आत्मगुरु की साधना स्थली है। इस पावन भूमि के कण-कण में आत्मगुरु के तप की महक को मैं अनुभव कर रहा हूं। यह वही भूमि है जहां मैंने प्रथम बार आत्मगुरु के दर्शन किए थे और मेरे हृदय में साधना का संकल्प जगा था। इस पावन धरा को मैं शत-शत प्रणाम करता हूं।

बन्धुओ! वर्षावास की अवधि में हम सभी मिलकर आत्मगुरु के साधना और सिद्धान्तों को आत्मसात् करेंगे, उनका प्रचार और प्रसार करेंगे। आत्ममंगल और सर्वमंगल के इस अभियान हेतु मैं आप सभी को आमंत्रित करता हूं। अपनी संपूर्ण सामर्थ्य और शक्ति के साथ इस वर्षावासिक मंगल अनुष्ठान में भाग लीजिए। आत्मगुरु के संदेश और सिद्धान्तों को विश्व के कोने-कोने और जन-जन के मन के तल तक पहुंचाइए।

सिविल लाईन लुधियाना का यह वर्षावास अपूर्व उत्साह के साथ प्रारंभ हुआ। महासती श्री सीता जी म., महासती श्री कौशल्या जी म., महासती श्री पुनीतज्योति जी म. महासती श्री सुशीला जी म. 'बेबी', आदि कई साध्वी मंडल भी यहां पर वर्षावास हेतु विराजित थे।

वर्षावास की संपूर्ण अवधि में विभिन्न सामाजिक और धार्मिक कार्यक्रम सम्पन्न होते रहे। तप-जप और ध्यान शिविरों के माध्यम से धर्मध्यान की झड़ी लगी रही। नित्य प्रवचनों में विशाल जन समुदाय धर्म श्रवण का महान लाभ लेता रहा।

18 सितंबर को 'आत्म-शुक्ल-शिवजयंती' उत्कृष्ट समारोह के साथ आयोजित की गई। सुदूर अंचलों के हजारों दर्शनार्थियों ने इस समारोह में भाग लिया। साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविकाओं द्वारा आराध्य त्रय के जीवन प्रसंगों पर प्रकाश डाला गया। महासती श्री दर्शना जी म. एवं महासती श्री निधि ज्योति जी म. (पिंकी जी म.) ने क्रमशः 62 और 43 दिवसीय दीर्घ तपस्या द्वारा आराध्य त्रय का अभिनंदन किया।

वर्षावास की अवधि में सभी श्रावकों ने बढ-चढ़कर सेवा लाभ लिया।

गौतम प्रसादी की व्यवस्था श्री राजेन्द्र पाल जी की ओर से की गई थी। सर्वश्री हीरालाल जी जैन, श्री रामकुमार जी जैन (श्रमण शाल), मंत्री श्री प्रमोद कुमार जी जैन प्रभृति सभी अग्रगण्य मान्य श्रावकों ने अहर्निश अपनी सेवाएं प्रदान कीं। जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी महाराज के पश्चात् ऐसी सामाजिक जागृति और धार्मिक क्रांति प्रथम बार देखी गई।

निरंतर चार माह तक लुधियाना जैन धर्म का केन्द्र बना रहा।

वर्षावास की परिसमाप्ति पर आचार्यश्री के सान्निध्य में सात मुमुक्षु आत्माओं ने अणगार धर्म की दीक्षा धारण की। ज्ञान का फल त्याग है। वर्षावास में प्रवाहित ज्ञान-गंगा का फल दीक्षा के रूप में फलित हुआ जो चातुर्मासिक सफलता का सहज प्रमाण है।

भारी जन समूह ने परम पूज्य आचार्य देव को श्रद्धापूर्ण विदाई दी। सिविल लाईन से परम पूज्य आचार्य श्री आचार्य देव श्री आत्माराम जी महाराज के समाधि स्थल नौरियामल बाग में पधारे। वहां से रूपा मिस्त्री गली स्थित प्रमुख जैन स्थानक में पधारे जहां बड़ी दीक्षा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।
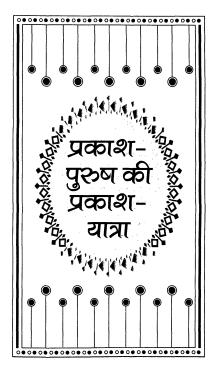
❖ ❖ ❖

प्रकाश-
पुरुष की
प्रकाश-
यात्रा

अनुशासन श्रमण सघ का प्राण है। श्रमण सघ के निरतर विकास के लिए हमें स्वयं अनुशासित रहते हुए सकल संघ मे अनुशासन को सुदृढ़ रखना होगा। सघ में साधनात्मक विकास के लिए मैं अहर्निश अपनी सेवाओं के लिए प्रस्तुत हू। परन्तु किन्हीं अनुचित दबावों के समक्ष नतमस्तक होने के लिए मेरा आत्मसम्मान अनुमति नहीं देता है। श्रमण संघ का प्रत्येक सदस्य मेरा अपना अंग है। प्रत्येक सदस्य के लिए मेरे हृदय में समान रूप से आत्मीय भाव और सम्मान भाव है। प्रत्येक सदस्य का सुझाव मुझे विनम्रतापूर्वक स्वीकार है। धर्मसघ मे धर्मनीति मुझे पूरे प्राण–पण से स्वीकार है। परन्तु धर्मसंघ मे राजनीति मुझे स्वीकार नहीं है। राजनीति के बल पर कोई भी सदस्य श्रमण संघ को दबाव में नहीं ला सकता है।

प्रकाश-पुरुष की प्रकाश-यात्रा

साधना आध्यात्मिक प्रकाश है। साधु उस प्रकाश का संवाहक है। वह जहां जाता है अपनी साधना के प्रकाश से सबको प्रकाश से भर देता है। यही साधु की साधना है। यही साधुता का चमत्कार है।

साधुता के इसी चमत्कार के संवाहक आचार्य देव अपने साधना-पथ पर बढ़ते रहे। भीतर में गहरे और गहरे आपकी यात्राएं अनवरत चलती रहीं। बाहर में मुनि मर्यादानुसार ग्रामानुग्राम विचरते रहे।

वर्षावास के पश्चात् प्रकाश पुरुष पूज्य आचार्यश्री की प्रकाश-यात्रा लुधियाना के उपनगरों को उपकृत करती हुई आगे बढ़ी। आपके कदम-कदम के साथ समारोह सजते रहे। समारोहों से निरपेक्ष आपश्री जन-जन में प्रकाश का संदेश बांटते रहे, अध्यात्म की गंगा प्रवाहित करते रहे।

लुधियाना नगर के सुप्रतिष्ठित उदारमना श्रावक रत्न श्री महेन्द्र पाल जी जैन (मिनी किंग) के सक्रिय सहयोग से यू.पी.एस.पी. जमालपुर स्कूल में ध्यान साधना का पंचदिवसीय शिविर संपन्न हुआ, जिसमें पचास से अधिक शिक्षकों ने ध्यान साधना का अनुभव प्राप्त किया।

डी.ए.वी. स्कूल में भी साधना शिविर सम्पन्न हुआ। किचलू नगर और अग्रनगर आदि में धर्मध्यान के दीप प्रज्ज्वलित करते हुए आपश्री आत्मनगर में पधारे। आत्मनगर में ध्यान शिविर समायोजित हुआ। सर्वश्री हीरालाल जी जैन के नेतृत्व में आचार्यश्री का विदाई समारोह सम्पन्न हुआ, जिसमें हजारों लोगों ने भाग लिया।

इस पुण्य प्रसंग पर आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म. द्वारा व्याख्यायित एवं परम पूज्य आचार्य सम्राट् श्री शिव मुनि जी महाराज द्वारा संपादित 'श्री उपासकदशांग सूत्र' का विमोचन संपन्न हुआ। आचार्यश्री की संपादन कला में प्रकाशित होने वाला यह प्रथम आगम था। तत्पश्चात् द्रुत गति से आगम संपादन और प्रकाशन दिशा में कार्य हुआ।

प्रकाश का संदेश देते, कदम-कदम पर प्रकाश के प्रदीप जलाते परम पूज्य आचार्यश्री लुधियाना का ऐतिहासिक और यशस्वी प्रवास संपन्न कर अहमदगढ़ मण्डी पधारे जहां पर महासती श्री शुभ जी महाराज की प्रलम्ब तपस्या का पारणक उत्सव सम्पन्न होने जा रहा था। पारणक उत्सव पर आपश्री का पदार्पण हुआ। इससे उत्सव में महोत्सव का रंग उतर आया। विशाल जनसमुदाय कदम-कदम पर आपका अनुगामी रहा है। फूल खिला है तो भ्रमरों को निमंत्रण पत्र नहीं भेजने पड़ते। विकसित पुष्प पर स्वत: ही भ्रमर दल उमड़ पडते हैं।

महोत्सव पूर्वक महासती जी का प्रलम्ब तप सम्पन्न हुआ। पारणक प्रसंग पर उपस्थित विशाल जनसमुदाय को अध्यात्म के प्रकाश पुरुष आचार्य देव ने अपने उद्बोधन में फरमाया--महासती जी का नाम 'शुभ' है। तप भी एक शुभ आध्यात्मिक अनुष्ठान है। आत्मा की शुभ्रता तपानुष्ठान से ही संभव है। महासती शुभ ने तप का शुभ अनुष्ठान किया है। महासती शुभ का शुभ-शुभ्र सौरभ सर्वत्र व्याप्त हो रहा है। इस शुभ पथ पर महासती शुभ निरंतर आगे बढ़ें। अपने शुभानुष्ठान से दिग् दिगन्त को महकाएं, यही मेरी मंगल कामनाएं हैं।

अहमदगढ़ मण्डी में स्थित गांधी विद्यालय में आचार्य श्री ने छात्रों को सम्यक् संस्कारों का अमृतपान कराया। आपश्री ने फरमाया--सादा जीवन और सात्विक भोजन गांधी जी के मूल संदेश हैं। बच्चो! गांधी जी के इन संदेशों को अपने जीवन का संदेश बनाओ। सरल बनो, सच्चे बनो और शाकाहारी बनो। शाकाहार ही मानवीय आहार है।

आचार्यश्री की प्रेरणा से स्कूल के सभी छात्रों ने आजीवन शाकाहारी रहने का संकल्प लिया।

संक्रांति पर्व पर संदेश

प्रकाश-पुरुष की प्रकाश यात्रा आगे बढ़ी।

परम पूज्य आचार्य श्री अहमदगढ़ मण्डी से रायकोट पधारे। मकर संक्रांति के पावन पर्व पर आचार्यश्री के श्रीमुख से संक्रांति श्रवण के लिए दूर-सुदूर के श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित हुए। उक्त पर्व पर जनसमुदाय को संबोधित करते हुए धर्मदेव पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया--संक्रांति संक्रमण का पर्व है। प्रकृति में संक्रमण घटित होता है। वह संक्रमण मानव के भीतर भी

घटित होना चाहिए। हमारे ऋषियों ने कहा है–

"असदो मा सद् गमय!
तमसो मा ज्योतिर्गमय!
मृत्योर्मा अमृतं गमय!"

अर्थात् मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो! अन्धेरे से प्रकाश की ओर ले चलो! मृत्यु से अमृत की ओर ले चलो!

बन्धुओ! संक्रांति के पर्व पर अपने अंतर के तमस को विदा दो। अज्ञान के अंधेरे से बाहर निकलो। अमृत पथ पर कदम बढ़ाओ। आपके भीतर सम्यक् रूपांतरण घटित हो। भीतर रूपांतरण हुआ तो बाहर भी रूपांतरण होगा। आपकी बाह्य अशांति का मूल कारण आपकी भीतरी अशांति है। भीतर शांति का साम्राज्य स्थापित होगा तो बाहर स्वतः ही शान्ति के फूल खिल आएंगे।

प्रकाश पर्व पूज्य आचार्य देव के चरण आगे बढ़े। जगराओं के श्रद्धानिष्ठ श्रावकों ने परम पूज्य आचार्य देव का भावभीना स्वागत किया। जगराओं की पुण्य-धरा परम तपस्वी चमत्कारी महापुरुष पूज्य स्वामी श्री रूपचंद जी महाराज की अंतिम साधना स्थली के रूप में विश्व-विश्रुत है। इसी पुण्य धरा पर पूज्यश्री ने अपनी संयम साधना के अंतिम सोपान पर चरणन्यास किया था। यहां पर पूज्य श्री की भव्य समाधि निर्मित की गई है। इस समाधि स्थल के लिए लोगों में बड़ी आस्था है। समाधि स्थल पर श्रद्धालुओं का आवागमन लगा ही रहता है।

परम पूज्य आचार्यश्री अपनी शिष्य मण्डली सहित समाधि स्थल पर पधारे। वहां के शांत और नैसर्गिक वातावरण में आचार्यश्री ने ध्यान-समाधि की साधना की। समाधि स्थल पर आंतरिक समाधि में आपश्री ने आत्मविहार किया।

उपस्थित जनसमूह को पूज्य आचार्य देव ने संदेश दिया–बन्धुओ! यह स्थल पूज्य स्वामी श्री रूपचंद जी महाराज की आध्यात्मिक साधना और समाधि का स्मृति स्थल है। यहां पर आने का महत्व इस बात में है कि आगन्तुक अपने चैतन्य में समता के दीप जलाए। मैंने सुना है कि यहां पर बहुत से लोग मन्नतें मांगने के लिए आते हैं। उक्त उद्देश्य से आना उचित नहीं है। प्रेय के नहीं, श्रेय के साधक बनिए। यहां आकर पूज्य श्री की साधना

को स्मरण कीजिए। उनके जीवन में घटित सत्य को अपने भीतर विकसित कीजिए। यही यहां आगमन का श्रेयस्कर फल होगा।

जगराओं से विहार करके परम पूज्य आचार्य श्री बदनीकलां होते हुए निहालसिंहवाला पधारे। वहां पर मंगलदेश की ओर से आपश्री का भव्य स्वागत किया गया। धर्म की अपूर्व प्रभावना हुई। वहां से आपश्री बाघापुराना होते हुए मोगा मण्डी पधारे। इन सभी क्षेत्रों में आपके पदार्पण से विशेष उत्साह का वातावरण निर्मित हुआ। सभी जगह ध्यान शिविरों में सकल आयोजन हुए जिनमें शैलेश जी का विशेष सहयोग रहा। मोगा से आपश्री जीरा मण्डी पधारे जहां पर बसंत पंचमी के दिन महासती कौमुदी जी म. के पास साधनाशील वैरागन की दीक्षा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

विहार-यात्रा आगे बढ़ी। जैतों, फरीदकोट और मंगलदेश की ओर से आपका स्वागत-अभिनंदन किया गया। ध्यान शिविरों में जनता ने काफी उत्साह से सहभागिता की। यहां पर श्री अनुत्तरौपपातिक सूत्र का विमोचन भी हुआ।

भठिण्डा से विहार करके छोटे-छोटे क्षेत्रों को आपश्री ने चरणरज से पावन किया। कालझराणी, खेयोवाली आदि ग्रामों के जाटों और सिखों ने पलक-पांवड़े बिछाकर आपका स्वागत किया। उसी क्रम में आपश्री गीदड़बाहा पधारे। वहां पर कविचक्र चूड़ामणि श्री चंदन मुनि जी म. ने आपश्री का स्वागत किया। वयोवृद्ध मुनिवर ने आप श्री पर हार्दिक वात्सल्य वर्षण किया। सत्संग, प्रवचन और ध्यान शिविरों के रूप में विविध कार्यक्रम संपन्न हुए। वहां पर शिवाचार्य होम्योपैथिक डिस्पेंसरी और पुस्तकालय का उद्‌घाटन हुआ।

जन्मभूमि में पदार्पण

विहार यात्रा आगे बढ़ी। जननी-जन्मभूमि ने आपको आमंत्रित किया। मलौट मण्डी के आबालवृद्ध ने पलक-पांवड़े बिछाकर आपश्री का स्वागत अभिनंदन किया। जन्मभूमि के कण-कण में जीवन उतर आया। मण्डी के प्रत्येक व्यक्ति के मन में उत्साह का ज्वार और श्रद्धा का सागर उमड़ रहा था। आपके आगमन से मलौट तीर्थ बन गया।

मां विद्यादेवी के हर्ष को सहज ही अनुभव किया जा सकता है। एक धर्मप्राण मां के लिए इससे बड़ा सुख और क्या हो सकता है कि उसका पुत्र धर्म संघ का सिरमोर बनकर लौटा है। भाबू कुल गौरवान्वित हो उठा। मलौट सम्मानित हुआ।

छह दशक पूर्व इन्हीं गलियों में घुटनों के बल चलकर आपने चलना सीखा था। कैशौर्य के मधुरिम पल यहीं बिताए और यौवन में विवेक के चक्षु भी इसी धरा पर खोले। फिर एक दिन यहीं पर संसार का विसर्जन कर संन्यास में प्रवेश लिया। और आज संन्यास के शिखर पुरुष बनकर इस धरा पर पुन: पधारे। मलौट की धरा का कण-कण धन्य हो उठा।

परम पूज्य आचार्य देव के आगमन से मलौट मण्डी में समय ठहर सा गया। सर्वत्र आपकी ही चर्चा थी, हृदय-हृदय में आपके दर्शन की उमंग थी। आपश्री ने फरमाया कि ध्यान उत्तम साधना है। आपश्री ने फरमाया और लोग ध्यान शिविर में उमड़ पड़े। 235 लोगों ने पंच दिवसीय शिविर में भाग लिया।

प्रवचन सभा में पूरा मलौट उमड़ पड़ा। आबालवृद्ध का हृदय जिनमय-शिवमय बन गया। मलौट के भगवान के रूप में लोगों ने आपकी पूजा की। मां विद्यादेवी ने केसर रंजित चादर ओढ़ाकर अपने लाल का स्वागत किया।

श्रीयुत विनयदेव बंदी द्वारा तैयार की गई भजन की कैसेट (शिव मुनि जय बोलो) का लोकार्पण किया गया। इस गीत कैसेट में शिवाचार्य के जन्म से लेकर दीक्षा, आचार्य पद, विचरण, प्रभा-क्षेत्र और सत्संग-ध्यान के द्वारा लोक को आलोक बांटते हुए मलौट पदार्पण तक के घटनाक्रम उद्धृत हुए हैं। इस गीतिका में शिवाचार्य के जीवन-दर्शन का सरल काव्य में गुंफित करने का सफल प्रयास हुआ है। भारतवर्ष के कोने-कोने में इस गीत ने सहस्त्रों अधरों पर स्थान बनाया है।

इस गीतिका की कैसेट और सीडी का निर्माण मां विद्यादेवी ने अपने सौजन्य से सम्पन्न कराया और अपने हाथों से इसे लोकार्पित करके अपने वात्सल्य और अपनी श्रद्धा को मूर्त्तरूप प्रदान किया।

मलौट प्रवास में महासती श्री कौशल्या जी म., महासती श्री सुमित्रा जी म., महासती श्री संतोष जी म., महासती श्री निर्मला जी म. एवं महासती श्री रविरश्मि जी म. भी पदार्पित हुईं। महासाध्वियों का अदम्य उत्साह, सेवा भाव और धर्म प्रभावना में संपूर्ण समर्पण प्रशंसनीय रहा।

इस अवसर पर श्री उत्तराध्ययन सूत्र का लोकार्पण अनुष्ठान भी संपन्न हुआ।

कांफ्रेंस का शिष्ट मण्डल शिवाचार्य के श्रीचरणों में उपस्थित हुआ और सामयिक दिशा-निर्देश प्राप्त किया।

शिव-अनुज श्रीयुत विजयकुमार जी ने साधर्मी सेवा का हृदय-द्वार खोलकर पुण्य लाभ प्राप्त किया।

श्रमण को प्रेम के फूल मिलें अथवा उपेक्षाओं के उपहार मिलें, दोनों ही दशाओं में वह समान रहता है, अपने धर्म से चलायमान नहीं होता है। श्रमण का धर्म है सरिता की तरह सदैव बहते रहना। शीतल सुरम्य वादियां सरिता को मोहित नहीं बना सकती हैं और कठोर तप्त चट्टानें उसके बहाव को बाधित नहीं कर सकती हैं।

मलौट को अलविदा कहकर महामुनि के सरिताधर्मी चरण आगे बढ़े। अबोहर मण्डी में पदार्पण हुआ। इस मण्डी से भी आपका बाल्यकाल का सम्बंध रहा है। यहां पर आपकी बुआ जी श्रीमती विद्यावती जी रहती हैं। बुआ जी ने आपके वैराग्य को परिपक्व और परिपुष्ट बनाया था, आपकी दीक्षार्थ अनुमति में बुआ जी का विशेष योगदान रहा था। बुआ जी की सुपुत्री शिमला जी ने भी श्रमणधर्म की दीक्षा ली थी।

पर यह सच है कि किसी ग्राम अथवा नगर में मुनि का आगमन संबंधों में बंधकर नहीं होता है। संबंध कितने ही मधुर रहे हों, मुनि के लिए उनका मूल्य गौण हो जाता है। क्योंकि कुटुम्ब के सीमित संबंधों से बाहर होकर वह 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के महान सम्बंध का सृजन कर लेता है। प्रत्येक व्यक्ति को वह अपना स्वजन बना लेता है, प्रत्येक प्राणी में वह अपने प्राणों को परिस्पंदित बनते देखता है। इसीलिए वह ग्रामानुग्राम विचरण करता है, प्रत्येक व्यक्ति को आत्मकल्याण की शिक्षा देता है।

अबोहर मण्डी में श्वेताम्बर, दिगम्बर, तेरापंथी और स्थानकवासी चारों ही समाजों ने एक साथ मिलकर आपश्री का स्वागत-अभिनंदन किया। आपश्री ने अपने साधना-स्नात प्रवचनों से, धर्म प्रेरणाओं से और ध्यान शिविरों से अबोहर नगरी को उपकृत किया।

महावीर के गढ़ में वीर जयंती

अबोहर मण्डी से श्रीगंगानगर, पद्मपुर आदि क्षेत्रों को धर्मामृत / ध्यानामृत का पान कराते हुए परम पूज्य आचार्यदेव हनुमानगढ़ पधारे। हनुमानगढ़ में आपश्री ने आत्म-साधना और समाज-समन्वय का संदेश दिया। आपके संदेश से पारस्परिक प्रेम और सौहार्द भाव में अतिशय वृद्धि हुई। चारों सम्प्रदायों ने एक मंच से आराध्य देव तीर्थंकर महावीर का जन्म कल्याणक मनाया। इस अवसर पर श्वेताम्बर परम्परा के प्रवर्तक पूज्य श्री जयानंद

विजय जी एवं तेरापंथ संघ के मुनिवर श्री सुव्रत कुमार जी विशेष रूप से उपस्थित रहे। हनुमानगढ़ में अत्यंत सुंदर और प्रभावक वातावरण रहा। वहां से संगरिया, चौटाला आदि क्षेत्रों में प्रवास रहा।

निराकार गुरु साकार शिष्य में

मण्डी गोबिन्दगढ़ में श्रद्धेय गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी म. वृद्धावस्था तथा अस्वस्थता के कारण विराजमान थे। दिनांक 23 अप्रैल 2003 को गुरुदेव का स्वास्थ्य काफी अस्थिर हो गया। जीवन दीप को प्रकम्पित देखकर गुरुदेव ने चौरासी लाख जीव योनियों से क्षमापना करके संलेखना महाभिव्रत ग्रहण कर लिया। रात्रि में साढ़े ग्यारह बजे परम पूज्य गुरुदेव ने पूर्ण समाधि की अवस्था में पंडित मरण के द्वारा नश्वर देह का विसर्जन किया।

दूसरे ही दिन उपरोक्त सूचना पूरे देश में प्रसृत हुई। श्रमण परंपरा के एक महान मुनि के चिर विरह से सर्वत्र शोक छा गया। जगह-जगह पर श्रद्धांजलि सभाओं द्वारा पूज्य गुरुदेव को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

चौटाला के मार्ग में विराजित परम श्रद्धेय आचार्य देव को उक्त सूचना प्राप्त हुई। एक अतिजात शिष्य के लिए सद्‌गुरु का चिर-विरह वज्रपात के समान अनुभव होना स्वाभाविक ही था। पूज्य आचार्य देव ने धर्म और शुक्ल ध्यान के आश्रय से उक्त वज्रपाती क्षणों को सहन किया।

समायोजित श्रद्धांजलि सभा में पूज्य आचार्य देव ने श्रद्धेय गुरुदेव को स्मरण-नमन करते हुए अपने हृदयोद्‌गार प्रस्तुत किए–शिष्य के लिए गुरु सर्वोपरि आराध्य देव होते हैं। सद्‌गुरु के बिना आध्यात्मिक प्रकाश की कल्पना कदापि सच नहीं हो सकती है। अनंत अतीत में जितने भी संबुद्ध पुरुष हुए, प्रत्येक ने संबोधि का प्रथम सूत्र सद्‌गुरु से ही प्राप्त किया। सद्‌गुरु सत्य का द्वार है, सद्‌गुरु ही प्रकाश के दाता हैं। सद्‌गुरु के बिना घोर अंधेरा है। आज श्रद्धेय गुरुदेव हमारे मध्य में नहीं रहे। ऐसे में शिष्य-मन की अनुभूति को मैं अनुभव कर रहा हूं। पर उन गुरुदेव से ही हमें यह दृष्टि भी मिली है कि मरणधर्मा ही मरता है, देह मरणधर्मा है, उसका मिटना शाश्वत सिद्धान्त है। ज्ञान-दर्शन रूप आत्मा अमर्त्य है। वह कभी नहीं मरता। उन गुरुदेव से प्राप्त यह ज्ञान दृष्टि ही हमें इस क्षण में संबल प्रदान करती है।

श्रद्धेय गुरुदेव अपने उच्च जीवनादर्शों के रूप में सदा जीवित रहेंगे–हमारे हृदय में रहेंगे। उनके आदर्शों के प्रकाश में हम अपने संयम-पथ पर आगे बढ़ते रहेंगे।

चौटाला से आपश्री रानियां मण्डी पधारे। रानियां आपकी ननिहाल नगरी है। वस्तुतः इसी भूमि पर आपश्री का जन्म हुआ था। रानियां में आपके पदार्पण से अपूर्व उत्साह फैल गया। सत्संग, प्रवचन, ध्यान के द्वारा आपने इस नगरी के भक्त-हृदयों को तृप्त किया।

सरस हुआ सिरसा

रानियां से पूज्य शिवाचार्य सिरसा पधारे, जहां अक्षय तृतीया के पारणे सम्पन्न हुए। सिरसा के धर्मनिष्ठ श्रावकों ने भारी उत्साह के साथ आचार्यश्री के प्रवचनों और ध्यान कार्यक्रमों में भाग लिया। स्थानीय अध्यक्ष श्री संदीप जैन (आचार्यश्री के संसारपक्षीय भतीजे) के नेतृत्व में सुंदर कार्यक्रम संपन्न हुए।

यहीं पर उत्तर भारतीय श्रावक सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें उत्तर भारत के प्रमुख श्रावकों ने भाग लिया। सम्मेलन में श्रमण संघ के विकास के लिए काफी चिंतन-मनन हुआ एवं तत्संबंधी आचार्यश्री के निर्देशन में कई प्रस्ताव पारित किए गए।

शासन का अनुशासन

परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री शिव मुनि जी म. का समग्र जीवन एक खुली किताब की तरह है। आपके जीवन की किताब को लाखों लोगों ने पढ़ा, और जिसने भी पढ़ा वह अंतरात्मा से आपसे प्रभावित हुआ। बाल्यकाल से ही मुमुक्षा, स्वाध्यायशीलता, विनम्रता, साधना के प्रति समर्पण, आत्मानुशासन आदि सद्गुण आपकी मूल संपदा रहे हैं। आयु के साथ-साथ इन सद्गुणों का विकास होता गया। श्रमणधर्म में दीक्षित होने के पश्चात् आध्यात्मिक साधना के प्रति आपश्री ने स्वयं को समग्रतः समर्पित कर दिया। अहर्निश साधना लीन रहने से आपका तेजस्वी व्यक्तित्व त्वरित गति से निखरता गया। आपके साधना-स्नात व्यक्तित्व से सकल संघ आत्यंतिक रूप से प्रभावित हुआ। श्रमण संघ के द्वितीय पट्टधर आचार्य सम्राट् श्री आनंदऋषि जी महाराज ने आपश्री को पूना में आमंत्रित किया। लगभग आठ मास तक आपश्री आचार्यश्री के सन्निकट रहे। स्वयं आचार्य देव आपश्री के व्यक्तित्व से प्रभावित हुए। पूना मुनि सम्मेलन के पावन प्रसंग पर श्रमण संघ के सहस्राधिक साधु-साध्वियों में से आचार्यश्री ने पूज्यश्री देवेन्द्र मुनि जी म. एवं आपश्री को भावी संघशास्ता के रूप में सर्वाधिक सुयोग्य मुनि माना और

क्रमशः श्री देवेन्द्र मुनि जी म. को उपाचार्य एवं आपश्री को युवाचार्य के महनीय पद पर नियुक्त किया। उक्त नियुक्ति से पूर्व आचार्यश्री ने श्रमण संघ के समस्त गण्यमान्य मुनियों एवं महासतियों से इस विषय में खुला चिंतन-मनन किया। जब समग्र चतुर्विध श्रीसंघ ने उक्त दोनों महामहिम मुनिराजों का एक स्वर से समर्थन किया तो पूज्य आनंदाचार्य ने अपने श्रीमुख से उक्त नियुक्तियों की घोषणा की एवं तत्सम्बंधी आदर की चादरें स्वयं ओढ़ाई। लक्षाधिक श्रावक-श्राविकाओं एवं उपस्थित चार सौ मुनियों एवं आर्याओं ने मस्तक झुकाकर, प्रशस्तियां गाकर एवं जयनादों से धरा-गगन को गुंजाकर आचार्य देव के निर्णय की अनुमोदना की।

कालांतर में आनंदाचार्य के पश्चात् परम पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज ने संघ संचालन का दायित्व ग्रहण किया। नासिक में पूज्य आचार्यश्री एवं युवाचार्यश्री का मिलन हुआ। चतुर्विध संघ इस मिलन की पारस्परिक मधुरता, प्रेम, सम्मान और आत्मीयता का साक्षी है। आचार्यश्री ने युवाचार्यश्री की ध्यान साधना और ध्यान शिविरों की स्थापना को न केवल मुखर समर्थन दिया अपितु उस वर्ष को ध्यान वर्ष के रूप में मान्यता दी।

देवेन्द्राचार्य के स्वर्गारोहण के पश्चात् पुनः चतुर्विध संघ ने एकत्रित होकर अहमदनगर में पूज्य युवाचार्यश्री को विधिवत् आचार्य पाट पर नियुक्त किया। उसके बाद दिल्ली में ऐतिहासिक समारोह के साथ आपश्री को आचार्य पद की चादर प्रदान की गई।

प्रत्येक अवसर पर समग्र चतुर्विध श्रमण संघ का पूर्ण समर्थन और पूर्ण समर्पण आपश्री के लिए रहा। प्रत्येक अवसर पर आपके जीवन की खुली किताब प्रत्येक संघीय साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका के समक्ष रही। प्रत्येक सदस्य ने आपके व्यक्तित्व और कृतित्व को सदैव सम्मानित किया। आपकी साधना और शिविरों को स्वयं देखा और उनमें साध्वाचार के प्रतिकूल कुछ भी नहीं पाया। सभी ने मुक्त-मन से शिविरों के अद्भुत परिणामों की अनुशंसा की।

आपश्री के महान नेतृत्व में श्रमण संघ ने काफी उन्नति की। सब ओर साधनात्मक रुचि का विकास हुआ। आपके विशाल और विराट व्यक्तित्व को सर्वत्र सम्मान मिला। सर्वत्र एक ही स्वर की गूंज सुनी गई कि ऐसे ध्यान योगी महामुनिवर का नेतृत्व प्राप्त कर श्रमण संघ धन्य हुआ।

ऐसे में किसी अज्ञात मानसिकता वश एक श्रमणसंघीय मुनि ने आचार्यश्री

को दिनांक 29-4-03 को एक पत्र लिखा। उन्होंने आचार्यश्री की श्रद्धा और प्ररूपणा को जिनशासन से प्रतिकूल बताते हुए उनके नेतृत्व में अनास्था व्यक्त की।

आचार्यश्री प्राणिमात्र के लिए मातृ-हृदय रखते हैं। स्व का स्वत्व अथवा पर का परत्व उनके वात्सल्य को कभी विभाजित नहीं कर पाया। प्रत्येक प्राणी पर उनका समान वात्सल्य भाव सदैव बहता रहा है। पर जब कभी अनुशासन का प्रसंग आया वहां आचार्य श्री ने संघ के गौरव के अनुरूप कठोर निर्णय लेने में भी संकोच नहीं किया। मुनिवर की टिप्पणी को आचार्यश्री ने अनुशासनहीनता का गंभीर प्रकरण मानते हुए उक्त मुनिवर को श्रमण संघ से अलग कर दिया। मुनिवर के समर्थन में खड़े हुए कुछ अन्य मुनियों को भी आचार्यश्री ने तत्काल प्रभाव से श्रमणसंघीय अनुशासन से मुक्त कर दिया।

आचार्यश्री ने श्रमण संघ को संदेश दिया–अनुशासन श्रमण संघ का प्राण है। श्रमण संघ के निरंतर विकास के लिए हमें स्वयं अनुशासित रहते हुए सकल संघ में अनुशासन को सुदृढ़ रखना होगा। संघ में साधनात्मक विकास के लिए मैं अहर्निश अपनी सेवाओं के लिए प्रस्तुत हूं। परन्तु किन्हीं अनुचित दबावों के समक्ष नतमस्तक होने के लिए मेरा आत्मसम्मान अनुमति नहीं देता है। श्रमण संघ का प्रत्येक सदस्य मेरा अपना अंग है। प्रत्येक सदस्य के लिए मेरे हृदय में समान रूप से आत्मीय भाव और सम्मान भाव है। प्रत्येक सदस्य का सुझाव मुझे विनम्रतापूर्वक स्वीकार है। धर्मसंघ में धर्मनीति मुझे प्राण-पण से स्वीकार है। परन्तु धर्मसंघ में राजनीति मुझे स्वीकार नहीं है। राजनीति के बल पर कोई भी सदस्य श्रमण संघ को दबाव में नहीं ला सकता है।

परम पूज्य आचार्य देव के उक्त संदेश का समग्र चतुर्विध संघ ने समर्थन किया। कुछेक मुनियों को छोड़कर समग्र संघ ने आचार्यश्री के नेतृत्व में पूर्ण आस्था व्यक्त की।

सिरसा में पूर्व निर्धारित उत्तर भारतीय श्रावक संघों का सम्मेलन दिनांक 3-4 मई 2003 को सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में उत्तर भारत के प्रमुख प्रतिनिधि श्रावकों ने भाग लिया। श्रमण संघ के विकास हेतु प्रमुख श्रावकों ने अपने-अपने विचार अभिव्यक्त किए। विभिन्न पहलुओं पर सकारात्मक चिन्तन-मनन किया गया। समस्त श्रावकों ने संघीय विकास के लिए अपना समर्थन और समर्पण अभिव्यक्त किया।

प्रकाश-पुरुष की प्रकाश-यात्रा आगे बढ़ी। परम पूज्य आचार्य देव सरदूलगढ़ पधारे। वहां पर 17 मई को परम पूज्य आचार्यश्री की 31वीं दीक्षा जयंती उत्साहपूर्वक मनाई गई। मान्यवर श्रावकरत्न श्री नेमचंद जी जैन, तपस्विनी बहन पुष्पा जैन (आचार्य श्री की संसार पक्षीय भगिनी), श्री धर्मेन्द्र कुमार जैन आदि भाई-बहनों ने मुनि मण्डल की सेवा का लाभ प्राप्त किया।

सरदूलगढ़ से रोड़ी, कालांवाली, रामामण्डी, मोड़मण्डी, मानसा, बरनाला, रायकोट, सुधार, मुल्लापुर आदि क्षेत्रों में विचरण करते हुए परम पूज्य आचार्य श्री जी लुधियाना पधारे। रूपा मिस्त्री गली में आचार्य श्री के सान्निध्य में त्रिदिवसीय सत्संग समारोह सम्पन्न हुआ। 29 जून को एक विशालगोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें 51 साधु-साध्वियों और भारत भर के हजारों श्रावक-श्राविकाओं ने सहभागिता की। चतुर्विध श्रीसंघ ने परम पूज्य आचार्य देव के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की एवं श्रमण संघ के विकास के लिए समर्पण के संकल्प को दोहराया। इस अवसर पर एक नौ सदस्यीय समन्वय समिति भी बनाई गई।

बत्तीसवां वर्षायोग

परम पूज्य आचार्य देव ने अपनी संयमीय साधना का बत्तीसवां वर्षावास पंजाब प्रदेश की गौरवशाली नगरी मालेरकोटला में स्थापित किया। मालेर-कोटला एक ऐतिहासिक नगरी है। यहां पर सभी धर्मों को मानने वाले लोग पारस्परिक स्नेह और सौहार्द भाव के साथ सदियों से रहते आए हैं। यहां के पारस्परिक सौहार्द भाव के विकास में जैन मुनियों का विशेष योगदान रहा है। यह नगरी परम पूज्य आचार्य श्री रामबख्श जी महाराज की तपोभूमि और साधना स्थली है। समय-समय पर यहां पर मुनिजन पधारते रहे हैं। परम पूज्य आचार्य सम्राट् श्री आनंद ऋषि जी महाराज ने भी यहां वर्षावास किया। यहां के श्रावक-श्राविकाएं श्रद्धाशील एवं भक्ति संपन्न हैं। असाम्प्रदायिक मानसिकता से सभी साधुओं और साध्वियों की आराधना-उपासना करते हैं।

परम पूज्य आचार्यश्री के प्रति यहां की जनता में विशेष श्रद्धा भक्ति है। पूज्यश्री ने अपनी संयमीय साधना का प्रथम वर्षावास यहीं पर किया था। तब से वर्तमान तक यहां के संघ की आस्थाएं आपश्री के चरणों से जुड़ी रही हैं।

अस्तु! मालेरकोटला के श्रावकों और श्राविकाओं ने पलक-पांवड़ें बिछाकर परम पूज्य आचार्य देव का स्वागत-अभिनंदन किया। प्रवचन के

लिए विशाल समवसरण मण्डप की संरचना की गई। उत्साही और श्रद्धानिष्ठ जनता शिव-समवसरण में भारी संख्या में उपस्थित होकर निरंतर चार महीनों तक धर्मामृत का पान करती रही। इस चातुर्मास की कई विशेषताएं रहीं। एक बड़ी विशेषता यह रही कि प्रवचनों में सभी धर्मों को मानने वाले लोगों की उपस्थिति निरंतर बनी रही। आपश्री द्वारा आयोजित ध्यान शिविरों में जैन श्रावकों के साथ-साथ अन्य धर्मों को मानने वाले लोगों ने भी बड़ी संख्या में भाग लिया।

अन्य सम्प्रदाय के लोगों से अक्सर सुनने में आता रहा कि यह संत केवल जैनों के नहीं हैं, यह तो मानव मात्र के संत हैं।

समय-समय पर सामाजिक और सांस्कृतिक समारोह सम्पन्न हुए। पर्युषण पर्व पर ऐतिहासिक तपाराधनाएं हुईं। श्रमण-श्रमणियों ने तप के क्षेत्र में स्वयं आदर्श प्रस्तुत किया। महासती डॉ. श्री सुनीता जी महाराज ने 117 उपवासों की आराधना की। अन्य साध्वियों ने भी दीर्घ तपस्याओं द्वारा पर्युषण की आराधना की। श्रावकों और श्राविकाओं ने भी तप के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित किया। कई मासखमणों के अतिरिक्त शताधिक अठाइयां हुईं।

परमादरणीय पूज्य आचार्य प्रवर श्री शिव मुनि जी महाराज का 62वां जन्म दिवस सप्तदिवसीय तप की आराधना और संघीय विकास के चिंतन परक कार्यक्रमों द्वारा मनाया गया। इस अवसर पर अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ का सम्मेलन हुआ जो कि श्रमण संघीय निष्ठा एवं अनुशासन दिवस तथा मानव मंगल मैत्री दिवस के रूप में मनाया गया। उक्त सम्मेलन में भारतवर्ष के प्रायः सभी शीर्षस्थ पदाधिकारी श्रावकों ने भाग लिया। श्रमण संघ के विकास के लिए पर्याप्त चिन्तन-अनुचिन्तन के साथ आचार्य श्री द्वारा निर्देशित ग्यारह सूत्री कार्यक्रम को एक स्वर से स्वीकृत किया गया। ग्यारह सूत्री कार्यक्रम की रूपरेखा इस प्रकार रखी गई–

(1) आत्म-ध्यान साधना शिविर
(2) सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन
(3) व्यसन मुक्ति अभियान
(4) अहिंसा-शाकाहार प्रचार-प्रसार
(5) जैन एकता
(6) धार्मिक समन्वय

(7) पर्यावरण सुरक्षा

(8) राष्ट्रीय एकता एवं सुरक्षा

(9) इतिहास

(10) शास्त्र सम्पादन एवं साहित्य लेखन

(11) जैन धर्म एवं साधना के प्रशिक्षण कार्यक्रम

उपरोक्त सूत्रों के प्रचार-प्रसार और कार्यान्वयन का समस्त प्रतिनिधि श्रावकों ने संकल्प लिया।

चमत्कारी क्षण

जैन साधना पद्धति विशुद्ध अध्यात्म परक रही है। उसमें चमत्कार साधन के लिए क्षणिक भी अवकाश नहीं है। परन्तु यह भी अक्षर सच है कि साधना से चमत्कारों का अविनाभावेन संबंध रहा है। साधना में उतरा सत्य अचाहे से ही चमत्कार का सेतु बनता रहा है।

मालेरकोटला के सैकड़ों श्रावकों ने अपनी आंखों से एक चमत्कार से साक्षात्कार किया। आत्म-शिव समवसरण के सिंहद्वार पर श्रमण संघ के चारों पट्टधर आचार्यों के चित्रों वाला कीर्ति-स्तंभ स्थापित किया गया था। परम पूज्य शिवाचार्य के जन्मदिवस की पूर्व संध्या में आत्म-शिव समवसरण में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए। उसी समय समवसरण द्वार पर स्थापित कीर्तिस्तंभ से अकस्मात् ही अमृत की वर्षा प्रारंभ हो गई। कार्यक्रम में उपस्थित सैकड़ों लोगों ने इस चमत्कार को स्वयं देखा और अपने अंतस् में कृतकृत्यता का अनुभव किया।

कान दर कान उपरोक्त घटना पूरे नगर में फैल गई। दूसरे दिन प्रभात में भी यह अमृतवर्षा जारी रही। सहस्त्रों लोगों ने उस अमृत वर्षा को देखा और उन अमृत-कणों को अपने शीश और अंजुरियों में समेटा।

उपरोक्त चमत्कार दर्शन से पूरा नगर मंत्रमुग्ध बन गया।

उक्त संदर्भ में आचार्यश्री से पूछा गया तो उन्होंने फरमाया—अमृत वर्षा साधना और सुगंध की प्रतीक है। साधकों की साधना की प्रशस्ति के लिए देवगण प्रसन्न होकर अमृत वर्षा बरसाते हुए सुने गए हैं। परंतु उक्त तथ्य को मैं चिन्हित करना चाहता हूं कि साधक चमत्कारों की आकांक्षा से बंधकर साधना न करें। साधना का मूल उद्देश्य परमार्थ है। हमें परमार्थ की सिद्धि के लिए साधना मार्ग पर आगे बढ़ना चाहिए। परमार्थ ही हमारा काम्य है, शेष

बातें गौण हैं।

मालेरकोटला वर्षावास में आगम संपादन-प्रकाशन कार्य भी द्रुत गति से चला। यहां के श्रद्धानिष्ठ श्रावकों के सौजन्य से श्री आचारांग सूत्र के प्रथम और द्वितीय श्रुतस्कंध का प्रकाशन संपन्न हुआ।

लोक मंगल की यात्रा

मालेरकोटला का यशस्वी वर्षावास संपन्न कर परम पूज्य आचार्य देव ने लोक मंगल की यात्रा प्रारंभ की। प्रथम पड़ाव कुप्पकलां में स्थित आदीश्वर धाम में हुआ। 'आदीश्वर धाम' विश्व केसरी श्री विमल मुनि जी महाराज की प्रेरणा से निर्मित एक जैन सांस्कृतिक तीर्थ स्थल है। पूज्यश्री ने अपनी वृद्धावस्था के कारण उक्त संस्था के संचालन दायित्व श्रमण संघ को प्रदान किए हैं। परम पूज्य आचार्य श्री के निर्देशन में यहां से सेवा, शिक्षा, योग और ध्यान के कार्यक्रम संचालित किए जाएंगे।

आदीश्वर धाम से विहार करके पूज्य आचार्य श्री अहमदगढ़ में एक दिवसीय प्रवास के पश्चात् लुधियाना पधारे। रूपा मिस्त्री गली स्थित प्रमुख जैन सभा में तपाचार्य महासती श्री मोहनमाला जी महाराज के सुदीर्घ तप का पारणक महोत्सव सम्पन्न हुआ। परम पूज्य आचार्य श्री का आत्मकुलकमल दिवाकर श्रमण संघीय वरिष्ठ सलाहकार श्री रत्न मुनि जी म., उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी महाराज आदि मुनि मण्डल से मिलन हुआ। कई श्रमणी मण्डलों ने भी पूज्य आचार्यश्री के दर्शनों का लाभ लिया।

लुधियाना के विभिन्न उपनगरों में धर्म जागरण करते हुए आप विजयेन्द्र-नगर स्थित श्री शालिग्राम जैन भवन में पधारे। वहां पर 'आत्म-ज्ञान-शिव पुस्तकालय' का उद्घाटन हुआ।

लुधियाना से पूज्य आचार्य श्री खन्ना पधारे। खन्ना से आप श्री गुरु ज्ञान की तपोभूमि मण्डी गोबिन्दगढ़ पधारे। पूज्य गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज के इस मण्डी पर महान उपकार रहे हैं। गुरुदेव की प्रेरणा से स्थापित कई जैन संस्थाएं यहां पर जन सेवा और जन कल्याण कार्यक्रमों को चला रही हैं। कुछ प्रमुख संस्थाओं की नामावली इस प्रकार है–(1) जैन सिलाई स्कूल, जैन पुस्तकालय, पूज्य शालिग्राम जैन पब्लिक स्कूल, पूज्य ज्ञान मुनि जैन पब्लिक स्कूल, ज्ञान मुनि जैन चेरिटेबल डिस्पेंसरी आदि।

परम पूज्य आचार्यश्री के मण्डी गोबिन्दगढ़ के साप्ताहिक प्रवास में

ध्यान साधना और स्वाध्याय की अच्छी प्रभावना हुई। आत्म ध्यान शिविरों के माध्यम से जैन-जैनेतर बंधुओं ने धर्म के शुद्ध स्वरूप को अनुभव किया।

पटियाला पदार्पण

मंगल-यात्रा आगे बढ़ी। परम पूज्य आचार्य श्री पटियाला पधारे। वहां पर विराजित महासती श्री शुभ जी महाराज ने 173 दिवसीय तप की आराधना की। महासती जी के पारणक प्रसंग पर समारोह आयोजित किया गया। आचार्य श्री ने महासती जी के तप की अनुशंसा की। आपश्री ने तप के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए उसे मोक्ष प्राप्ति का अनिवार्य सेतु बताया।

पटियाला आचार्यश्री की स्वाध्याय स्थली रही है। यहीं पर स्थित विश्वविद्यालय से आपश्री ने डॉक्ट्रेट की उपाधि प्राप्त की थी। आपके आगमन की सूचना प्राप्त कर विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर श्री स्वर्ण सिंह बोपाराय ने विश्वविद्यालय में पधारने की प्रार्थना की। फलतः आपश्री विश्वविद्यालय परिसर में पधारे जहां वाइस चांसलर सहित शिक्षकों और शिक्षार्थियों ने अपने पुराने विद्यार्थी का पलक-पांवड़े बिछाकर स्वागत किया। वाइस चांसलर के निवेदन पर आपश्री ने 'विश्व शांति और धर्म' उक्त विषय पर उद्बोधन दिया। आपश्री के कहने पर विश्वविद्यालय में जैन चेयर की स्थापना को स्वीकार किया गया। विश्वविद्यालय की ओर से वाइस चांसलर ने आपश्री की प्रतिष्ठा में अभिनंदन पत्र पढ़ा।

पटियाला से विहार करके परम पूज्य आचार्य देव ने सुनाम, संगरूर, धूरी, समाना, कैथल, सफीदों आदि क्षेत्रों का विचरण किया। इन सभी क्षेत्रों में आपके पदार्पण से अपूर्व धर्म जागृति हुई। सभी जगह के श्रावक-श्राविकाओं ने आपश्री द्वारा संचालित ध्यान मिशन को बहुत पसंद किया। आपके साधना-स्नात व्यक्तित्व से जन मानस अत्यधिक प्रभावित हुआ।

सफीदों से आपश्री पानीपत पधारे। श्रीसंघ ने आपश्री का अभूतपूर्व स्वागत-अभिनंदन किया। वहां पर विराजित वयोवृद्धा महासती श्री कैलाशवती जी म., श्री सुनीति जी म., श्री सारिका जी महाराज आदि साध्वी मण्डलों ने आपश्री के दर्शन किए। जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म. का 42वां स्मृति दिवस समारोह मनाया गया, जिसमें पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और उत्तरप्रदेश के सैकड़ों भाई-बहनों ने भाग लिया। आपश्री ने आचार्यश्री के बहुआयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला।

पानीपत से घरोंडा होते हुए आपश्री करनाल पधारे जहां पर उपाध्याय

श्री मनोहर मुनि जी म. से मधुर मिलन हुआ। उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी महाराज, एवं महासाध्वी श्री राजमती जी म., महासती श्री आज्ञावती जी म. आदि ने आपके दर्शनों का लाभ प्राप्त किया। करनाल से आप कुरुक्षेत्र पधारे। गीता ज्ञान की पावन स्थली कुरुक्षेत्र में जिनवाणी की गंगा को आपश्री ने प्रवाहित किया। कुरुक्षेत्र से मध्यवर्ती गांवों में धर्मजागरणा करते हुए आपश्री यमुनानगर पधारे। हुड्डा कॉलोनी जगाधरी में अक्रम विज्ञानी दादा भगवान के सुशिष्य कन्नू दादा से भेंट हुई। दो महापुरुषों के मध्य साधना संबंधी अनुभवों का आदान-प्रदान हुआ।

देहरादून में होली चातुर्मास

परम पूज्य आचार्य देव मध्यवर्ती ग्रामों-नगरों को स्पर्श करते हुए देहरादून पधारे। देहरादून में होली चातुर्मास के प्रसंग पर दूर-सुदूर के श्रीसंघों ने आचार्यश्री के दर्शन किए। व्याख्यान दिवाकर श्री रमणीक मुनि जी म. तथा कई साध्वीमंडल भी उक्त प्रसंग पर देहरादून पधारे। होलिका संबंधी उद्बोधन में पूज्य आचार्य श्री ने फरमाया–होली असद्भाव पर सद्भाव की विजय का प्रतीक पर्व है। यह पर्व मानव जाति को प्रेरणा प्रदान करता है कि मानव को अच्छाई के मार्ग पर दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ बढ़ते रहना चाहिए। भले ही उसके मार्ग में अनेक बाधाएं आएं, पर अंतत: विजय उसे ही प्राप्त होती है।

अंबाला कैंट में महावीर जयंती

परम पूज्य आचार्य देव की धर्मयात्रा देहरादून से आगे बढ़ी। अहिंसा, संयम और तप की त्रिवेणी जन-जन के मन में प्रवाहित करते हुए आपश्री ऋषिकेश, पोंटा साहिब, यमुनानगर होते हुए अंबाला कैंट पधारे जहां पर महावीर जयंती महोत्सव का समायोजन किया गया। इस पुनीत प्रसंग पर आचार्यश्री ने अपने उद्बोधन में फरमाया–तीर्थंकर महावीर के जन्मोत्सव पर उनके सिद्धांतों को हमें केवल स्मरण ही नहीं करना है बल्कि अपने जीवन में साकार करना है। तीर्थंकर महावीर के सिद्धांत वर्तमान विश्व की अनिवार्यता हैं। उनके सिद्धान्तों को अपना कर ही विश्व में शान्ति और समृद्धि का विकास हो सकता है।

उक्त अवसर पर आचार्य श्री द्वारा संपादित 'श्री नन्दीसूत्रम्' का लोकार्पण किया गया।

होशियारपुर में अक्षय तृतीया पर्व

हरियाणा के विभिन्न क्षेत्रों में विचरण के पश्चात् परम पूज्य आचार्य श्री पंजाब की धरा पर पधारे। विभिन्न नगरों और गांवों में जागरण का अलख जगाते हुए पूज्य आचार्य श्री पंजाब के गौरवशाली नगर होशियारपुर पधारे। होशियारपुर में अक्षय तृतीया पर्व पर वर्षीतप के पारणे सम्पन्न हुए। उक्त अवसर पर 21 भाई-बहनों ने पारणा किया एवं 25 भाई-बहनों ने आगामी वर्ष के लिए वर्षीतप का संकल्प लिया। उक्त अवसर पर महासती श्री कौशल्या जी महाराज, महान तपस्विनी श्री सुमित्रा जी महाराज प्रभृति साध्वी मंडल भी उपस्थित थे।

होशियारपुर से आपश्री जालंधर पधारे जहां पर महासती सुमित्रा जी म., महासती श्री शिमला जी म., महासती श्री सुलक्षणा जी म. ने आपके दर्शनों का लाभ लिया।

विरक्तमना रुबी जैन का दीक्षोत्सव

परम पूज्य आचार्य श्री की धर्मयात्रा आगे बढ़ी। आपके यात्रा-पथ पर फगवाड़ा, नवांशहर, राहों, बलाचोर आदि क्षेत्र आए। सभी क्षेत्रों में सुंदर धर्म जागरणा हुई। मई मास के तृतीय सप्ताह में आपश्री रोपड़ पधारे जहां पर आपके सान्निध्य में साधना-स्वाध्याय में संलग्न वैरागी रुबी जैन की दीक्षा संपन्न हुई।

तेंतीसवां वर्षायोग

हरियाणा और पंजाब की संयुक्त राजधानी चण्डीगढ़ में परम पूज्य आचार्यश्री जी ने अपने साधना जीवन का तेंतीसवा वर्षावास स्थापित किया। चण्डीगढ़ आचार्यश्री का प्रियपात्र क्षेत्र रहा है। आपश्री सन् 1975 एवं 1980 में भी यहां पर वर्षावास संपन्न कर चुके हैं।

चण्डीगढ़ श्रीसंघ ने परम पूज्य आचार्यश्री का हार्दिक स्वागत-अभिनंदन किया। उक्त अवसर पर हरियाणा, पंजाब और मंगल देश के कई श्रीसंघ भी उपस्थित थे। स्वागत समारोह स्थानक भवन के पार्श्व भाग में स्थापित भव्य 'शिव-समवसरण' में सम्पन्न हुआ। उक्त अवसर पर सर्वश्री हीरालाल जी जैन लुधियाना, चातुर्मास समिति के चेयरमैन श्री बी.डी. बंसल, प्रधान श्री सुदर्शन जैन, मंत्री श्री पवन कुमार जैन, मंगल देश महासभा के अध्यक्ष श्री बहादुरचंद जी जैन, महामंत्री श्री मोहनलाल जी जैन, उपाध्यक्ष श्री संदीप

जैन, हरियाणा महासभा के अध्यक्ष श्री राधेश्याम जी जैन आदि गण्यमान्य व्यक्तियों ने आचार्यश्री के स्वागत में अभिनंदन भाषण दिए।

परम पूज्य आचार्य श्री ने उक्त अवसर पर अपने सम्बोधन में फरमाया– आज वर्षावास हेतु मंगल प्रवेश हुआ। मंगल की स्थापना हुई। चतुर्विध श्रीसंघ मंगल रूप है। जीवो मंगलम्–जीव मात्र मंगल स्वरूप है। समष्टि के मंगल के लिए हमें जीवन जीना चाहिए। यही मंगलमूर्त्ति तीर्थंकर महावीर का संदेश है। वर्षावास की अवधि में हम सर्वमंगल एवं सर्वकल्याण के लिए स्वयं को समर्पित करने की साधना साधें। धर्म श्रवण और ध्यान के द्वारा यह मंगल की साधना सम्पन्न होती है। एतदर्थ आप सब लोग आमंत्रित हैं।

परम पूज्य आचार्य देव के साथ ही वर्षावास हेतु महासती श्री कौशल्या जी म. भी पधारीं। महासती जी ने भी उपस्थित जनसमुदाय को सम्बोधित किया एवं आचार्यश्री का अभिनंदन किया। महासती जी ने फरमाया–सर्वोच्च पद पर आसीन आचार्य श्री के सरलता, विनम्रता, गुणानुरागिता आदि सद्गुण अद्भुत-अद्भुत हैं। उक्त सद्गुण आपकी महानता को स्वत: सिद्ध करते हैं।

❖ ❖ ❖

नेह के
नंदन वन

आचार्यश्री स्वयं धन्य हैं। उनकी धन्यता अबाधित है। सुदूर विकट विजन गिरि-कंदराओं मे रहकर भी उनके भीतर बरसते आनद में कोई बाधा आने वाली नहीं है। भीड़ में भी वे अपने भीतर मौजूद हैं, एकात मे भी वे अपने अन्तर में सुस्थिर है। निराबाध, नि·क्लेश है उनका अस्तित्व। जन समाज का यह महापुण्य है कि उन जैसा भगवत्-स्वरूप व्यक्तित्व आज मौजूद है।

नेह के नंदन वन

परम पूज्य ध्यानयोगी आचार्यश्री की महान करुणा का वर्षण निरंतर होता रहा है और निरंतर हो रहा है। यह अत्यंत शुभ क्षण है जैन समाज के लिए और विश्व समाज के लिए। यह मिथ्याग्रहों, हठ और अहं की काराओं में बंद रहने का क्षण नहीं है। यह तो परम प्रेम का क्षण है, आध्यात्मिक महामहोत्सव में सम्मिलित होने का क्षण है। इस बहती पुण्य गंगा में गोता लगाने के लिए आचार्य देव के हृदय-तट खुले हैं। उनकी करुणा आमंत्रण है। आचार्यश्री स्वयं धन्य हैं। उनकी धन्यता अबाधित है। सुदूर विकट विजन गिरि-कंदराओं में रहकर भी उनके भीतर बरसते आनंद में कोई बाधा आने वाली नहीं है। भीड़ में भी वे अपने भीतर मौजूद हैं, एकांत में भी वे अपने अन्तर में सुस्थिर हैं। निराबाध, निःक्लेश है उनका अस्तित्व। जन समाज का यह महापुण्य है कि उन जैसा भगवत्-स्वरूप व्यक्तित्व आज मौजूद है।

तीर्थंकर देवों ने करुणा के सुमेरु शैल पर विहार करते हुए कहा था–तीर्थंकर के विदा हो जाने पर लोग पूछेंगे कि वे कैसे थे, वे क्यों विदा हो गए, हम उन्हें क्यों नहीं भेंट पाए?

एक राजस्थानी दोहे को अवतरित कर रहा हूं–

चार कोस का मांडला, वे वाणी के धोरा।
भारी कर्मा जीवड़ा, ओठे भी रह गया कोरा॥

मित्रो! मैं शिवाचार्य का शिष्य होने के नाते ऐसा नहीं लिख रहा हूं। ऐसा मैंने स्वयं अनुभव किया और उन लाखों लोगों ने अनुभव किया है जिन्होंने शिवाचार्य की करुणा गंगा में गोता लगाया है। उस गंगा में गोता लगाने वाला प्रत्येक साधक उन्हें गाएगा, क्योंकि वे परम गीत हैं। महागीत उनमें ध्वनित हो चुका है। पंचम काल में साधना का सर्वोच्च सत्य, सर्वोच्च शिवत्व और सर्वोच्च सौन्दर्य खिल चुका है।

मैं बपुरी बूडन डरी, रही किनारे बैठी।

किनारों पर विचरण करने वाले गहरे में पैठने का अनुभव कैसे कर पाएंगे? जो गहरे पैठने का साहस नहीं जुटा पाएंगे उनकी रिक्तता का दायित्व सिर्फ और सिर्फ उन्हीं पर होगा।

सर्वमंगल और सर्वकल्याण का महासंगीत सतत गूंज रहा है। इसमें सम्मिलित होने के लिए मैं सभी को आमंत्रित करता हूं।

चण्डीगढ़ वर्षावास का प्रत्येक दिन महामहोत्सव पूर्वक सम्पन्न हुआ। धर्म ध्यान की अपूर्व प्रभावना हुई। समय-समय पर महापुरुषों के जन्मोत्सवों और प्रयाणोत्सवों पर महापुरुषों को स्मरण किया जाता रहा, उनके गुणानुवादों के माध्यम से सद्गुणों की आराधना की जाती रही। आनंदाचार्य की 105वीं जन्म जयंती मनाई गई। आचार्य सम्राट् श्री आनंद ऋषि जी म. आयंबिल तप की विशेष आराधना करते थे, इसीलिए उनके जन्मोत्सव को आयंबिल दिवस के रूप में मनाया गया। 250 भाई-बहनों ने आयंबिल का पच्चक्खाण किया। उक्त अवसर पर फ्री मैडीकल चैकअप की भी व्यवस्था की गई। सभी रोगों के स्पेशलिस्ट डॉक्टरों ने लगभग 500 भाई-बहनों की मैडिकल चैकअप की।

परम पूज्य आचार्यश्री ने आराध्य स्वरूप आनंदाचार्य के जीवन पर प्रकाश डालते हुए फरमाया—आनंदाचार्य अनुशासन प्रिय आचार्य थे। समय को वे अनमोल मानते थे। उन्होंने अपने जीवन के एक-एक क्षण को आत्मकल्याण और संघ हित के लिए समर्पित कर दिया था। पूना में उन्होंने मुझे जो स्नेह दिया वह मेरे जीवन की अमूल्य धरोहर है। आत्म जयंती के अवसर पर उनका साधना सदन पधारना मैं कभी नहीं भूल सकता हूं। आनंदाचार्य की कृपा-वर्षा लाखों लोगों पर बरसी। उनकी कृपा-वर्षा का सौभाग्य पाने वालों में मैं भी सम्मिलित रहा हूं।

धर्मरथ की नई धुरियां

परमादरणीय परम पूज्य आचार्यश्री ने श्रमण संघ की सुव्यवस्था तथा अनुशासनात्मक सुचारू विकास के लिए कुछ सुयोग्य मुनियों को पद प्रदान किए। आदरणीय पंडित प्रवर श्री जितेन्द्र मुनि जी म., युवामनीषी श्री प्रवीण ऋषि जी म. एवं पंडित रत्न श्री रवीन्द्र मुनि जी म. को उपाध्याय पद पर नियुक्त किया। वाणीभूषण श्री रतन मुनि जी म. को छत्तीसगढ़ प्रांत का प्रवर्तक नियुक्त किया। पंडित श्री नेमीचंद जी म. एवं पूज्य श्री दिनेश मुनि

जी म. को 'श्रमण संघीय सलाहकार' के पद पर नियुक्त किया। आचार्यश्री की उक्त नियुक्तियों का सकल चतुर्विध संघ ने समर्थन एवं अनुमोदन किया।

जड़ से जोड़ने का आह्वान

जैन परम्परा में संघ को सर्वोच्च स्थान प्राप्त हुआ है। श्री नन्दी सूत्र में भाव-भरे शब्दों में संघ की स्तुति की गई है। संघ को सूर्य, चन्द्र, रथ, नगर, सुमेरु आदि उपमाओं से उपमित करते हुए संघ को नमन किया गया है। 'संघ रहस्स भगवओ' संघरथ भगवान जैसे महनीय शब्दों में संघ को भगवान तुल्य माना गया है।

जब हम जैन इतिहास का पर्यवेक्षण करते हैं तो कई दृष्टांत हमारे समक्ष आते हैं जब संघ के समक्ष श्रुत केवली मुनि तक ने सिर झुका दिया। उक्त तथ्यों से संघ की गरिमा, महिमा और उच्चता को सहज ही समझा जा सकता है।

परम पूज्य आचार्य देव श्री शिव मुनि जी महाराज ने संघ को सदैव सर्वोच्च महत्व दिया है। उनका प्रत्येक निर्णय संघ को सुदृढ़ करने वाला और संघ की सहमति से सम्पन्न होता है।

विगत वर्ष 27 अप्रैल 2003 को आचार्यश्री ने संघ की गरिमा के अनुरूप अनुशासनात्मक कार्रवाई करते हुए कुछ मुनियों को संघ से मुक्त करने की घोषणा की थी। आचार्यश्री की उक्त घोषणा का संघ ने पूर्ण समर्थन किया और श्रमण संघ के अधिकांश मुनियों ने आचार्यश्री के नेतृत्व में अपनी आस्था व्यक्त की।

परन्तु इस पूरे घटनाक्रम को श्रमण संघ के विभाजन के रूप में भी देखा गया। श्रमण संघ के एकीकरण के लिए प्रबुद्ध श्रावकों ने प्रयास प्रारंभ किए। प्रयास काफी लंबे समय तक चले। आचार्यश्री से श्रावकों द्वारा एकीकरण के लिए पुनः-पुनः प्रार्थनाएं की गईं। प्रत्येक बार आचार्यश्री का सटीक उत्तर रहा–समन्वय का मूल आधार अनुशासन है। प्रत्येक अनुशासित मुनि के लिए श्रमण संघ उसका अपना संघ है। पर अनुशासनहीनता के लिए संघ में कोई स्थान नहीं है।

आचार्यश्री का सटीक समाधान अकाट्य समाधान माना गया।

संघ में विचार-विमर्श जारी रहा। अखिल भारतीय जैन कांफ्रेंस के स्तर

पर सभी पक्ष-विपक्ष के मुनियों से मिलकर सर्वमान्य समाधान की तलाश की गई। प्रतिनिधि प्रमुख श्रावकों ने सभी मुनियों से मिलकर यह निर्णय किया कि आचार्य श्री 27 अप्रैल 2003 की यथास्थिति की घोषणा करें तो संघ में एकीकरण हो जाएगा।

प्रतिनिधि श्रावकों का समुदाय आचार्यश्री की सेवा में चण्डीगढ़ पहुंचा। श्रावक समुदाय के निवदेन पर आचार्यश्री ने सघन चिंतन-मनन किया। श्रावक समुदाय ने आचार्यश्री को विश्वस्त किया कि उनकी घोषणा को दोनों वर्गों द्वारा विनम्रतापूर्वक स्वीकार किया जाएगा और संघीय अनुशासन को स्वीकार कर विलग किए गए मुनि पुनः संघ में सम्मिलित हो जाएंगे।

संघहित में आचार्यश्री ने श्रावक समुदाय के मसौदे को इस वाक्य को जोड़कर मान्य किया कि संघ हित में नवीन पदों की जो घोषणा की गई है वह वापिस नहीं ली जाएगी। एतदर्थ पांच मुनियों की समिति गठित की जाएगी और समिति का निर्णय पूरे संघ को मान्य होगा।

श्रावक समुदाय की संपूर्ण सहमति और स्वीकृति पर दूसरे दिन आचार्यश्री ने तत्संबंधी घोषणा कर दी। आचार्यश्री की घोषणा के शब्दों को यथारूप प्रस्तुत कर रहा हूं–

"धर्मसंघ के विकास एवं गौरव के लिए प्रमुख मुनिवृन्द के आग्रह पर एवं चतुर्विध संघ की हार्दिक भावना को ध्यान में रखते हुए श्रमण संघ में संगठन एवं अनुशासन को सुदृढ़ बनाने के लिए मैं 27 अप्रैल 2003 की स्थिति की घोषणा करता हूं। 27 अप्रैल 2003 के बाद मेरे द्वारा घोषित पद यथावत् रहेंगे। जो मुनिवृन्द श्रमण संघीय अनुशासन में निष्ठा व्यक्त करते हैं उन्हें ससम्मान श्रमण संघ में आमंत्रित करता हूं।

कुछ पदों के समाधान के लिए आवश्यकता हुई तो पांच संतों की कमेटी बनाई जाएगी, उस कमेटी की रिपोर्ट के आधार पर समाधान कर लिया जाएगा। श्रमण संघ एक है और एक रहेगा। श्रमण संघ में साधना स्वाध्याय को लेकर हम चलें। अनुशासन एवं निष्ठा को अपने जीवन में उतारें। यही हार्दिक मंगल कामना है।"

उक्त घोषणा से सकल संघ में हर्ष की लहर दौड़ गई। परन्तु हठाग्रह के वश पूर्व में सहमति दे चुके कुछ मुनियों ने आचार्यश्री के इस स्तुत्य प्रयास को अस्वीकृत कर दिया। उनका कहना था कि उक्त तिथि के बाद आचार्य श्री द्वारा प्रदत्त पदों का निरसन किया जाए तो हम उक्त घोषणा को

मानें। आचार्य श्री ने इसे मुनियों का हठाग्रह माना।

अस्तु! श्रमण संघ अध्यात्म विकास के राजमार्ग पर सतत गतिमान है। जिन मुनियों को श्रमण संघ का अनुशासन मान्य नहीं है उनके लिए आचार्य श्री की यह मंगलकामनाएं हैं कि वे अपने ढंग से अपने संयम का पालन करें और श्रमण संघ अपनी मर्यादाओं के अनुसार संयम और साधना-पथ पर आगे बढ़े।

यहां यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि आचार्यश्री विलग हुए मुनियों के प्रति पूर्ण स्नेह और सम्मान का भाव रखते हैं। कुछेक प्रसंगों पर उक्त मुनियों से मिलन हुआ। आचार्यश्री ने अपनी स्वाभाविक गरिमा के अनुरूप उनसे पूर्ण सम्मान भाव से भेंट की। यह आचार्यश्री का स्वभाव है। प्रत्येक के लिए उनके हृदय से स्नेह और सम्मान की सरिता प्रवाहित होती है। आपके उक्त स्वभाव का विलग हुए मुनि भी सम्मान करते हैं। पारस्परिक सम्मान और स्नेह दोनों ओर विद्यमान है जो साधुता का सामान्य लक्षण है।

न्यायाधीशों के लिए संदेश

चण्डीगढ़ का ऐतिहासिक वर्षावास संपन्न कर परम पूज्य आचार्य देव ने कुछ समय तक चण्डीगढ़ के विभिन्न सैक्टरों में विचरण कर धर्म प्रभावना की। जस्टिस श्री एम.एम. कुमार जैन के आवास पर परम पूज्य आचार्यश्री के सान्निध्य में न्यायाधीशों के लिए एक सेमिनार का आयोजन हुआ जिसमें आचार्यश्री ने न्यायाधीशों को सम्बोधित किया। आचार्यश्री ने फरमाया—न्याय प्रत्येक नागरिक का अधिकार है जिसके सम्यक् संपादन का दायित्व न्यायाधीशों के कंधों पर होता है। इस विषय में न्यायाधीशों को सूक्ष्म सोच के साथ कार्य करना चाहिए। आचार्यश्री ने न्यायाधीशों के लिए ध्यान की आवश्यकता को रेखांकित किया और ध्यान के संक्षिप्त सूत्र उनको प्रदान किए।

धर्म ध्यान एवं सम्यक् शिक्षा के उपदेश कण बिखेरते हुए परम पूज्य आचार्यश्री जैनेन्द्र गुरुकुल पंचकुला पधारे जहां पर गुरुकुल के प्रबंधकों एवं लुधियाना के नवयुवकों ने आचार्यश्री का भावभीना स्वागत किया। गुरुकुल प्रवास में आपश्री ने गुरुकुल के छात्रों को नियमित रूप से नैतिक और धार्मिक प्रशिक्षण दिया। उसी क्रम में छात्रों को व्यसन मुक्ति की शिक्षा दी। 200 छात्रों को शाकाहार का संकल्प प्रदान किया।

समय-समय पर समाज और संघ के प्रमुख नेता आपश्री के दर्शनों का लाभ लेते रहे। आत्म ध्यान साधना के शिविर एवं ट्रेनिंग कैंप आयोजित होते रहे। ध्यान दीप निरंतर जलता रहा।

जैन कांफ्रेंस के अध्यक्ष श्री सुवालाल जी बाफणा, महामंत्री श्री प्रकाश बाफणा, श्री सुमतिलाल कर्णावट, श्री हीरालाल जी जैन आदि मान्य श्रावक आपश्री के चरणों में उपस्थित हुए। श्रमण संघ के विकास और संगठन के लिए आपश्री का आशीर्वाद प्राप्त किया। उक्त अवसर पर समाजरत्न श्री राधेश्याम जी जैन, मंगल देश के पूर्व प्रधान डॉ. कैलाश जैन आदि श्रावकों ने भी दर्शन एवं मार्गदर्शन प्राप्त किया।

पंचकुला में युवा तपस्विनी महासाध्वी श्री शुभ जी महाराज ने 181 उपवासों की सुदीर्घ तपस्या की। पारणक महोत्सव पर परम पूज्य आचार्य श्री पधारे। पूज्य आचार्य श्री ने महासाध्वी जी के तप की अनुमोदना और अनुशंसा की। उक्त अवसर पर आचार्यश्री जी ने आत्मसाधना में तप की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। आपश्री ने फरमाया—जैसे क्षार से वस्त्र शुद्ध हो जाता है वैसे ही तप से आत्मा शुद्ध होती है। आपश्री ने महासाध्वी शुभ जी महाराज को 'तप मुकुट मणि' के सम्माननीय अलंकरण से विभूषित किया।

परम पूज्य आचार्य देव पंचकुला से परवाणु पधारे। वहां पर आपश्री ने Self meditation course द्वारा स्थानीय जनता को धर्म और शुक्ल ध्यान की साधना करवाई। वहीं पर आचार्यश्री ने नववर्ष का संदेश प्रदान किया।

नववर्ष की प्रथम सुबह आराध्य स्वरूप आचार्य देव ने फरमाया—वर्ष 2005 का हम स्वागत करते हैं। यह वर्ष सकल जीव जगत के लिए मंगलकारी हो। प्रत्येक व्यक्ति इस वर्ष में आध्यात्मिक स्तर पर ऊपर उठे। विश्व में फैल रहा आतंकवाद विदा ले। अपनी ताकत को दूसरों को भयभीत और नष्ट करने में लगाने वाले लोग उस ताकत को जनकल्याण में लगाएं। नववर्ष की इस सुबह वे लोग इस तथ्य पर विचार करें कि आतंकवाद द्वारा वे विश्व को नहीं जीत सके हैं तो प्रेम, सेवा और सौजन्य से विश्व को जीतने का प्रयास करें। उनके इस प्रयास में पूरा विश्व उनका अनुगामी होगा।

अपनी ऊर्जा को सृजनधर्मी बनाओ! सृजन सृजन को जन्म देता है। विनाश विनाश को जगाता है। विनाश करने वाले स्वयं भी विनाश को प्राप्त होते हैं। सृजनशील विश्व-वात्सल्य का उपहार पाकर अमर हो जाते हैं। यदि

प्रत्येक व्यक्ति अपनी ऊर्जा को सर्जना और साधना में अर्पित करे तो यह धरती स्वर्ग में बदल जाएगी। मानव ही देव पद को पा लेगा।

मित्रो! इस मंगलमय प्रभात वेला में आओ हम संकल्प लें कि हम जोड़ने वाले बनेंगे। जोड़ना धर्म है, जोड़ना पुण्य है। धर्म और पुण्य के भागी बनिए।

नववर्ष की सुबह पूज्य आचार्य देव ने महामंगल का प्रतीक मंगल पाठ प्रदान किया। हजारों लोगों ने महामंगल पाठ श्रवण कर मंगलमय जीवन जीने का संकल्प धारण किया।

इसी अवसर पर परम पूज्य आचार्य देव की मंगलमयी प्रेरणा से सुनामी पीड़ितों के लिए एक बड़ी धनराशि एकत्रित करके जनमंगल के अभियान का प्रारंभ किया गया।

जन-जन में मंगल का संदेश बांटते हुए मंगलमय आचार्य देव परवाणु से चण्डीगढ़ पधारे। कोरिया से आए हुए एक प्रोफेसर से आपकी भेंट हुई। प्रोफेसर से साधना सम्बंधी चर्चाएं हुई।

चण्डीगढ़ से आपश्री खरड़ पधारे जहां पर आपश्री के सान्निध्य में भगवान पार्श्वनाथ जयंती का आयोजन हुआ। उक्त अवसर पर महासाध्वी श्री कौशल्या जी म., महासाध्वी श्री मंजुल ज्योति जी म. भी उपस्थित थे। उक्त अवसर पर परम पूज्य आचार्य देव ने फरमाया—पुरुषादानीय प्रभु पार्श्व ने धर्म के नाम पर पोषित पाखण्ड परम्पराओं को ध्वस्त कर विश्व को करुणा, परोपकार और मानवता का संदेश दिया। प्रभु पार्श्व ने गृहवास काल में कुशस्थल नरेश प्रसेनजित की अनार्य राजा से रक्षा कर आर्य धर्म की रक्षा का अनुष्ठान किया। प्रभु पार्श्व के जन्म दिवस पर हमें उनके महान आदर्शों को स्मरण कर अपने जीवन में ढालना चाहिए।

खरड़ में अभूतपूर्व उत्साह देखने को मिला। श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री राकेश कुमार जी ने इतिहास के पन्ने उलटते हुए स्मरण कराया—खरड़ एक सम्पन्न और समर्थ संघ है। यहां पर श्रमण संघ के प्रथम पट्टधर आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म. ने भी चातुर्मास किया था। समय-समय पर विभिन्न आचार्य यहां पर पधारते रहे हैं। हम परम पूज्य आचार्य देव से प्रार्थना करते हैं कि वर्ष 2005 का वर्षावास प्रदान कर हमें उपकृत करें।

परम पूज्य आचार्य देव ने खरड़ श्रीसंघ के उत्साह और श्रद्धा की प्रशंसा की।

खरड़ से मोरिण्डा, बस्सी पठाना होते हुए पूज्य आचार्यश्री मण्डी गोबिन्दगढ़ पधारे। श्रीसंघ ने आचार्यश्री का भावभीना स्वागत किया। परम पूज्य गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज की स्मृति में स्थानीय श्रीसंघ ने 'ज्ञान पावन धाम' के निर्माण का संकल्प लिया। गोबिन्दगढ़ प्रवास में विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न हुए। आत्म-ध्यान कोर्स का आयोजन किया गया जिसमें 25 साधकों ने भाग लिया। विश्व मानव मंगल मैत्री अभियान के अंतर्गत स्कूल के बच्चों के लिए 'आत्म चेतना शिविर' का आयोजन हुआ।

मण्डी गोबिन्दगढ़ से विहार करके परम पूज्य आचार्य देव खन्ना मण्डी पधारे। यहां पर भी 'आत्म ध्यान साधना कोर्स' एवं आत्म चेतना शिविरों का आयोजन किया गया।

खन्ना से परम पूज्य आचार्य देव ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए मालेर-कोटला पधारे जहां पर आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म. का 43वां पुण्य स्मृति दिवस मनाया गया। परम पूज्य आचार्यश्री ने अपने आराध्य स्वरूप आचार्य देव के जीवन पर प्रकाश डाला।

'आदीश्वर धाम' में पदार्पण

मालेर कोटला से आपश्री कुप्पकलां पधारे। कुप्पकलां में मालेरकोटला लुधियाना रोड पर 'आदीश्वर धाम' नामक पावन तीर्थ स्थल की स्थापना की गई है। साधना के लिए यह सुन्दर और स्वच्छ स्थल है। परम पूज्य आचार्यश्री के निर्देशन में श्रमण संघ ने यहां पर कई योजनाओं की संकल्पना की है। संकल्पित योजनाओं में प्रमुख हैं-1. आत्म ध्यान योग साधना केन्द्र की स्थापना, 2. वृद्ध साधु-साध्वियों की सेवा के लिए केन्द्र की स्थापना, 3. स्वाध्यायी श्रावक, श्राविकाओं के लिए स्वाध्याय केन्द्र की स्थापना, 4. नैसर्गिक एवं आयुर्वेदिक उपचार केन्द्र की स्थापना आदि।

कुप्पकलां के प्रवास में आचार्यश्री के सान्निध्य में ध्यान और योग के कई कार्यक्रम संपन्न हुए। परम पूज्य आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म. की 43वीं पुण्य स्मृति का आयोजन राष्ट्रीय स्तर पर किया गया जिसमें हजारों श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। उक्त अवसर पर आत्म ध्यान योग साधना केन्द्र की स्थापना की गई। दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश तक के श्रावक-श्राविकाओं ने इस केन्द्र की स्थापना का हार्दिक स्वागत किया।

इसी अवसर पर श्री 'दशाश्रुतस्कंध सूत्रम्' का विमोचन किया गया। परम पूज्य आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म. के जीवनादर्शों पर प्रकाश डालते हुए आपश्री ने फरमाया–परम पूज्य आचार्य देव जैन जगत के एक ज्योतिर्धर आचार्य थे। साधना और स्वाध्याय के क्षेत्र में उन्होंने जो कार्य किए वैसी मिसाल अन्यत्र दुर्लभ है। उनके पुण्य स्मृति दिवस पर हम सभी को उनके आदर्शों को अपने जीवन में ढालने का संकल्प लेना चाहिए।

कुप्पकलां के 20 दिवसीय प्रवास में ध्यान साधना की विशेष आराधना हुई। निरंतर शिविरों का क्रम चलता रहा। अनेक मुमुक्षुओं ने इनमें भाग लिया एवं शुद्ध धर्म का अनुभव प्राप्त किया।

परम पूज्य आचार्य देव आदीश्वर धाम से विहार कर 'नाहर फाइबर्स जितवाल' मिल में पधारे। मिल के अधिकारियों ने आचार्यश्री का भव्य स्वागत किया। आचार्यश्री ने मिल के अधिकारियों को ध्यान साधना संबंधी जानकारी प्रदान की। अधिकारी वर्ग में ध्यान के प्रति उत्कृष्ट जिज्ञासा जगी। मिल के मैनेजर ने आचार्यश्री से प्रार्थना की कि उनके मिल में शिविर का आयोजन करें। आचार्यश्री की स्वीकृति पर ध्यान प्रशिक्षकों के निर्देशन में वहां पर सुनिश्चित समय पर शिविर का आयोजन किया गया जिसमें मिल के 3000 अधिकारियों और श्रमिकों ने ध्यान के अमृत का पान किया।

परम पूज्य आचार्य भगवन् मण्डी गोबिन्दगढ़ का स्पर्श करते हुए लुधियाना पधारे। आत्मनगर में पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री जितेन्द्र मुनि जी म. से मिलन हुआ। आत्म नगर से आपश्री देवकी देवी जैन कॉलेज में पधारे। वहां पर परम पूज्य श्रमणसंघीय वरिष्ठ सलाहकार श्री रतन मुनि जी म., उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म., उपाध्याय प्रवर श्री रवीन्द्र मुनि जी म., महासती डॉ. श्री सरिता जी म. आदि साधु-साध्वी मण्डलों ने पूज्य प्रवर आचार्य श्री जी का स्वागत किया। आचार्यश्री के सान्निध्य में स्कूल के विद्यार्थियों ने संकल्प दिवस मनाया और प्रत्येक विद्यार्थी ने एक-एक अवगुण का जीवन भर के लिए त्याग का संकल्प ग्रहण किया।

बहन देवकी देवी के शताब्दी वर्ष के शुभारंभ पर विशेष समारोह आयोजित हुआ। इस समारोह में कई राजनेता, समाज के प्रमुख नेता एवं हजारों श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। परम पूज्य आचार्य देव के साथ लगभग साठ साधु-साध्वियां उक्त अवसर पर पधारे। सर्वश्री हीरालाल जैन के निर्देशन में यह भव्य समारोह सम्पन्न हुआ।

संक्रांति के अवसर पर परम पूज्य आचार्यश्री जी एवं परम पूज्य श्री सुमन मुनि जी म. का मधुर मिलन हुआ। उक्त अवसर पर श्रमण संघ के कई गण्यमान्य मुनिवर उपस्थित थे। आत्मीयता पूर्ण क्षणों में यह मिलन संपन्न हुआ एवं सामयिक संघीय स्थिति पर चिंतन-अनुचिंतन हुआ।

श्रमण संगीति

लुधियाना के उपनगरों में धर्म प्रभावना करते हुए परम पूज्य आचार्यश्री जी मुल्लापुर आदि क्षेत्रों को स्पर्शित करते हुए जगराओं पधारे। जगराओं में आपश्री से पूर्व ही लगभग पचपन साधु-साध्वियां पधार चुके थे। वहां पर कई कार्यक्रम संपन्न हुए।

दिनांक 20 मार्च को परम पूज्य स्वामी श्री रूपचंद जी महाराज का दीक्षा दिवस मनाया गया। 21 से 25 मार्च तक आचार्यश्री के सान्निध्य में श्रमण-श्रमणीवृन्द की संगोष्ठी हुई। इस संगोष्ठी में श्रमण संघ के विकास के लिए काफी चिंतन-मनन हुआ। मुनि-मण्डलों, साध्वी मंडलों में साधना, स्वाध्याय, धर्म प्रभावना आदि कार्यो में पारस्परिक सहयोग का संकल्प लिया गया। ध्यान साधना, बाल संस्कार, शाकाहार प्रचार, व्यसन मुक्ति, व्यक्तित्व विकास आदि कार्यक्रम जो आचार्यश्री जी द्वारा 'मानव मंगल मैत्री अभियान' के अंतर्गत चलाए जा रहे हैं उन सभी कार्यक्रमों को सभी श्रमण संघीय मुनि संयुक्त रूप से प्रचारित-प्रसारित करेंगे, ऐसा निश्चय किया गया।

25 मार्च को होली चातुर्मास के प्रसंग पर आचार्यश्री ने अपने श्रीमुख से कई वर्षावासों की घोषणा की। 28 मार्च को परम पूज्य आचार्य सम्राट् श्री आनंद ऋषि जी म. की 13वीं पुण्य तिथि मनाई गई। आचार्यश्री सहित सभी प्रवक्ता मुनिराजों और साध्वियों ने आचार्यश्री के महनीय गुणों का स्मरण किया एवं उन्हें हार्दिक श्रद्धा पुष्प अर्पित किए।

मार्च मास के अंतिम दिन अखिल भारतीय जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी कांफ्रेंस के अध्यक्ष श्री सुवालाल जी बाफणा के नेतृत्व में लगभग 150 कार्यकर्त्ताओं ने आचार्यश्री के दर्शनों का लाभ लिया। संघैक्य के प्रयासों एवं उपक्रमों की रिपोर्ट आपश्री के समक्ष रखी। आपश्री ने समन्वय प्रयासों की प्रशंसा की एवं फरमाया-श्रमण संघीय गरिमा के अनुरूप हम समन्वय के सदैव पक्षधर हैं। उसके लिए हमने पूर्व में भी सकारात्मक प्रयास किए हैं एवं भविष्य में भी हमारे प्रयास प्रगतिशील रहेंगे।

आचार्यश्री के विचारों का सभी ने अनुमोदन किया।

अवसान अदिति का

शिवाचार्य श्री की मातेश्वरी आदरणीया श्रीमती विद्यादेवी जैन का स्वर्गवास दिनांक चार मई को पूरे समाधिभाव पूर्वक उनके निवास स्थान मलौट मण्डी में हुआ। माता विद्या देवी एक आदर्श सुश्राविका एवं तपस्विनी सन्नारी थी। उनका जीवन तप, त्याग, सेवा, स्वाध्याय और समता का जीवन्त प्रतिमान था। शिवाचार्य जैसे अतिजात पुत्र रत्न को जन्म देकर उन्होंने इतिहास में अपना नाम अमर कर दिया।

आदरणीय मातेश्वरी के निधन से सर्वत्र शोक की लहर दौड़ गई। कई जगह श्रद्धांजलि सभाओं का आयोजन किया गया। विभिन्न लोगों ने माता जी को श्रद्धांजलि अर्पित की। जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् श्री शिव मुनि जी म. ने भी श्रद्धांजलि संदेश प्रेषित किया। आचार्यश्री का संदेश शब्दश: उद्धृत कर रहा हूं–"भारतीय संस्कृति में माता को सर्वोपरि स्थान दिया गया है। 'मातृ देवो भव' अर्थात् मां देवता के समान होती है। माता का ऋण चुकाना सहज नहीं होता। आगमों में कहा गया है–संतान अगर अपने माता-पिता को धर्म-मार्ग पर बढ़ने में सहयोग दे तो वह उनके महान ऋण से उऋण हो सकता है।

आदरणीय माताजी का समग्र जीवन धर्म से ओत-प्रोत रहा। उनके हृदय में प्राणीमात्र के लिए मैत्री, करुणा और सहृदयता के भाव थे। वे अपने कर्त्तव्य के प्रति सदैव जागरूक रहती थीं। जीवन में प्रत्येक परिस्थिति को उन्होंने सहजता और सरलता से स्वीकार करते हुए जीया। भारतीय नारी के समस्त गुण उनके जीवन में विद्यमान थे। उन्होंने एक आदर्श माता की भूमिका निभाते हुए बचपन से ही हमें धर्म के संस्कार प्रदान किए। प्रभु महावीर के वीतराग मार्ग पर बढ़ने के लिए हमें दीक्षा की आज्ञा प्रदान की और जीवन-भर हमें अपने कर्त्तव्य मार्ग पर आगे बढ़ते रहने की प्रेरणाएं दीं। माताजी जब भी दर्शन करने आती थीं, हमेशा एक ही बात कहती थीं–ऊपर उठो, और ऊपर उठो। फरीदकोट जब माताजी दर्शन करने आए थे, उन्होंने अपने हृदय से सब को आशीर्वाद प्रदान किए। उन्हें समाधि की ओर बढ़ने के भाव रखने की प्रेरणा भी दी गई।

उक्त अवसर पर माताजी के पुत्र-पौत्र परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।"

प्रवास कार्यक्रम

जगराओं मण्डी से परमपूज्य आचार्य देव अहमदगढ़ मण्डी पधारे जहां पर विभिन्न कार्यक्रम संपन्न हुए। 7 मई को परम पूज्य शिवाचार्य भगवन् का चादर समर्पण दिवस मनाया गया। 11 मई को परम पूज्य गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज का जन्म दिवस तथा श्रमण संघ स्थापना दिवस मनाया गया एवं अक्षय तृतीया के पारणे संपन्न हुए। इसी पवित्र दिन आचार्यश्री के सान्निध्य में चार मुमुक्षु बहनों–वैरागन प्रतिभा जैन, वैरागन प्रिया जैन, वैरागन ईशा जैन एवं वैरागन दीप्ति जैन ने आर्हती प्रव्रज्या अंगीकार की।

अहमदगढ़ मण्डी से परमपूज्य आचार्य देव कुप्पकलां स्थित आदीश्वर धाम पधारे। आदीश्वर धाम के भव्य प्रांगण में परम पूज्य आचार्य श्री का 34वां दीक्षा दिवस भव्य आयोजन पूर्वक मनाया गया। इसी दिन अहमदगढ़ मण्डी में दीक्षा लेने वाली साध्वियों को बड़ी दीक्षा का पाठ प्रदान किया गया।

परम पूज्य आचार्यश्री एक मास पर्यंत आदीश्वर धाम में विराजित रहे। इस प्रलम्ब प्रवास में आचार्य श्री ने जहां निजी साधना की वहीं सामूहिक साधनाएं भी निरंतर प्रगतिमान रहीं। एक मास की अवधि में आत्म ध्यान साधना के विभिन्न चरणों के सात शिविर स्थापित किए गए। सैकड़ों लोगों ने ध्यान की गहराई का अनुभव किया एवं कई मुमुक्षुओं ने टीचर ट्रेनिंग कोर्स संपन्न किया।

चौंतीसवां वर्षायोग

जालंधर एक ऐतिहासिक भूमि है। महायोगी शिवाचार्य भगवन् ने अपनी संयमीय साधना के चौंतीसवें पावस प्रवास की यहां पर स्थापना की। संघीय विवादों के चलते चातुर्मास की दो धाराएं यहां पर बह रही थीं। दोनों पक्षों ने बिना किसी राग-द्वेष के धर्मक्षेत्र का सिंचन किया। परम पूज्य शिवाचार्य श्री के पास संतुलन साधने की एक विलक्षण दृष्टि है। आप विवाद में पड़े बिना आत्म-संवाद की मुद्रा में रहते हैं। विरोध में विनोद के भाव को खोजते हैं। आपका विश्वास बहिष्कार में नहीं परिष्कार में है। जालंधर चातुर्मास समता योग की साधना की कसौटी था। आप श्री ने अनेकता में एकता को जीया है। इसलिए धर्मप्रभावना आपका लक्ष्य है। धर्म का विस्तार आपका मिशन है। आप मानते हैं कि सभी धार्मिकों की लड़ाई अधार्मिकों से है। कभी दो धार्मिक आपस में नहीं लड़ते।

आपश्री के जालंधर में प्रवेश के दिन से ही नगर की फिजाएं बदल गईं। जन-जन के मन में उमंग और उत्साह का संचार हुआ। वर्षावासिक प्रवेश पर श्रद्धालुओं का विशाल सागर ठाठें मार रहा था।

ऐतिहासिक वर्षावास प्रवेश यात्रा लक्ष्मी पैलेस पर संपन्न हुई। वहां पर परम पूज्य आचार्य श्री का भाव भरा अभिनंदन किया गया। उप प्रवर्तिनी महासाध्वी श्री सावित्री जी म., महासाध्वी श्री शिमला जी म. 'उमेश', महासती श्री सुलक्षणा जी म., महासती श्री संतोष जी म. 'जम्मू', आदि साध्वीवृंद तथा विभिन्न नगरों से आए हुए प्रमुख श्रावकों ने आचार्यश्री का अभिनंदन किया एवं वर्षावास की सफलता के लिए मंगल कामनाएं अभिव्यक्त की। सर्वश्री हीरालाल जी जैन लुधियाना, श्रावकरत्न श्री नृपराज जैन मुंबई, श्री सुमतिलाल जी कर्नावट मुंबई, हरियाणा महासभा के अध्यक्ष श्री राधेश्याम जी जैन चण्डीगढ़, श्री अनिल जैन वीरनगर दिल्ली, श्री अरिहंत जैन, मंगल देश महासंघ के महामंत्री श्री मोहनलाल जी जैन आदि गण्यमान्य व्यक्तियों ने परम पूज्य आचार्य देव का स्वागत-अभिनंदन किया।

उक्त अवसर पर परम पूज्य आचार्य देव ने अपने मंगलमय उद्‌बोधन में फरमाया–अरिहंत, सिद्ध, साधु और केवलि-प्ररूपित धर्म परम मंगल रूप है। ये चार ही लोक में उत्तम एवं शरण रूप हैं। वर्षावास की अवधि में इन परममंगल की तप, स्वाध्याय, ध्यान और सेवा के द्वारा हम सभी को आराधना करनी है। अरिहंत की आराधना आत्माराधना है, सिद्ध की आराधना आत्माराधना है, साधु की आराधना आत्माराधना है और केवलिप्ररूपित धर्म की आराधना भी आत्माराधना ही है। इन चारों की आराधना करते हुए निश्चय नय से आप अपनी ही आत्मा की आराधना करते हैं। इसलिए स्मरण रखें आत्यंतिक रूप से आपकी आत्मा ही मंगल रूप है। कार्यों से ध्यान को हटाकर अपनी आत्मा के कल्याण पर ध्यान लगाइए। इसी से वर्षावास का सम्यक् सुफल आपको प्राप्त होगा।

उसी अवसर पर परम पूज्य आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म. द्वारा व्याख्यायित एवं परम पूज्य आचार्य सम्राट् श्री शिव मुनि जी म. द्वारा संपादित 'श्री स्थानांग सूत्रम्–भाग प्रथम' का विमोचन सम्पन्न हुआ। इस बृहद् आगम का प्रकाशन शिवाचार्य श्री की मातेश्वरी की स्मृति में उनके पुत्र-पौत्रों द्वारा कराया गया। आचार्य श्री की एक अन्य पुस्तक Self development by meditation पुस्तक का लोकार्पण भी सम्पन्न हुआ।

जालंधर वर्षावास का प्रारंभ अपूर्व उत्साह और उमंग के साथ हुआ। नित्य प्रवचनों में भारी जनसमूह उमड़ने लगा। अखण्ड जाप, तपाराधनाएं, बाल-संस्कार शिविर, आत्म ध्यान साधना शिविर, स्वाध्याय शिविर आदि के मंगलमय अनुष्ठान पूरे वर्षावास की अवधि में गतिशील रहे। चार मास के लिए जालंधर धर्मतीर्थ के रूप में बदल गया। विभिन्न क्षेत्रों के दर्शनार्थी भाई-बहनें भारी संख्या में आचार्य देव के दर्शनार्थ आते रहे। आचार्यश्री के सामयिक और शाश्वत विषयों पर प्रवचनों में जालंधर का आबालवृद्ध बंध-सा गया। जालंधर के इतिहास में ऐसी उपस्थिति और जन-उत्साह प्रथम बार देखने को मिला। समय-समय पर महापुरुषों की जन्म-जयंतियों एवं स्मृति दिवसों को गुणानुवाद के रूप में मनाया गया। पर्युषण पर्व पर भारी संख्या में तपाराधनाएं हुईं। चौरासी लाख जीवायोनियों के जीवों से क्षमापना की गई।

धर्म और ध्यान की गंगा-यमुना में जालंधर निवासियों ने आकण्ठ गोते लगाए। जालंधर के अतिरिक्त देश के विभिन्न भागों में साधु-साध्वियों जी महाराज के नेश्राय में ध्यान शिविरों के आयोजन होते रहे।

वर्षावास की अवधि में 'आत्म-शिव-शुक्ल' जयंती के पावन प्रसंग पर बृहद् श्रावक सम्मलेन संयोजित किया गया, जिसमें भारतवर्ष के विविध अंचलों से 150 के लगभग श्रीसंघों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। श्रमण संघ के विकास हेतु श्रावक सम्मेलन में सघन चिंतन मनन किया गया। सम्मेलन में श्रावकरत्न श्री सुमतिलाल जी कर्णावट, श्रावकरत्न श्री नेमनाथ जी जैन, समाजरत्न श्री हीरालाल जी जैन, श्री नृपराज जी जैन मुंबई, श्री हुक्मचंद जी जैन, श्री कचरदास जी पोरवाल पुणे, श्री गजसिंह जी झामड़ इंदौर, श्री मांगीलाल जी जैन, श्री ओंकारसिंह जी सिरोया, डॉ. कैलाश जैन, श्री बहादुर चंद जी जैन, श्री मोहनलाल जैन, श्री निर्मल पोखरणा, श्री अमित राय जैन, श्री शांतिलाल जी जैन, श्री हस्तीमल मुणोत, श्री विमल जैन अंशु आदि ने अपने विचार रखे एवं श्रमण संघीय संगठन व सुदृढ़ता पर बल दिया।

श्रमण संघ के चहुंमुखी विकास हेतु 'अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी श्रावक समिति' का गठन किया गया। इस समिति के चेयरमैन के रूप में श्री सुमतिलाल जी कर्णावट को सर्वसम्मति से चुना गया। यह समिति सभी संतों की शिक्षा, स्वास्थ्य व सभी प्रकार के संयमीय सहयोग के साथ-साथ श्रमण संघ के विकास में अपनी बहुआयामी सेवाएं प्रदान करेगी।

❖ ❖ ❖

ध्यान :
चेतना का
ऊर्ध्वारोहण

आपकी वाणी मे, विचार में, आचार में, व्यवहार में, स्वीकार में, नकार में ध्यान की आहट है। आप इक्कीसवीं सदी के एक ऐसे ध्यानयोगी मुनीश्वर हैं जिन्होने ध्यान को जीवन शैली के साथ जोडा है। आपने ध्यान को जीया, ध्यान के रस को पीया, ध्यान आपका सास–सांस बना, पथ, पाथेय और मजिल बना। या यूं कह दे कि ध्यान के बिना शिव के अस्तित्व की कल्पना ही नहीं की जा सकती है।

ध्यान : चेतना का ऊर्ध्वारोहण

ध्यान आत्म यज्ञ का अनुष्ठान है

ध्यान मन को सामने बैठाकर समझाने की कला है।

ध्यान आवेगों, कषायों के रसायन को बदलने की किमिया है।

ध्यान अपने कांधे पर अपने अस्तित्व को उठाने का अभियान है।

ध्यान चेतना का ऊर्ध्वारोहण है।

ध्यान विराग का चिराग है।

ध्यान अपने भीतर उतरने की सीढ़ी है।

ध्यान अपने भीतर जागरण की विधि है। अपने भीतर जाग जाना, स्वयं से परिचय साध लेना, स्वयं को उपलब्ध जो जाना ध्यान है।

भगवान महावीर ने 'ध्यान' शब्द को समग्र रूप में ग्रहण किया है। भगवान ने फरमाया–ध्यान दो प्रकार का है–(1) 'पर' से जोड़ने वाला ध्यान और (2) 'स्व' से जोड़ने वाला ध्यान। प्रथम ध्यान के दो भेद हैं–आर्त्त ध्यान और रौद्र ध्यान। आर्त्त शब्द का अर्थ है दुखी होना और रौद्र शब्द का अर्थ है–क्रोधित होना। 'पर' अर्थात् दूसरे से जुड़कर व्यक्ति दुखी ही हो सकता है, क्रोधित और उन्मादित ही हो सकता है। वह 'पर' के चिंतन में निमग्न रहता है। सुंदर वस्तुओं का आकर्षण, असुंदर वस्तुओं का विकर्षण, जिन व्यक्तियों को उसने अपना माना है उनका हित चिंतन और जिनको शत्रु माना है उनके प्रति अहित का चिंतन, इसी ध्यान में संलग्न रहता है मानव। ध्यान का यही पक्ष आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान कहलाता है।

ध्यान का द्वितीय प्रकार है–स्व से जोड़ने वाला ध्यान। इसके भी दो भेद हैं–धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान। स्वयं से जुड़ने के लिए धर्मध्यान प्रथम चरण है। शुक्ल ध्यान द्वितीय और अंतिम चरण है। धर्म का अर्थ है–स्वभाव।

जो ध्यान साधक को उसके मूल स्वभाव–आत्मस्वभाव से जोड़ता है वह धर्मध्यान है। ज्ञान और दर्शन आत्मा के मूल स्वभाव हैं। धर्मध्यान की यात्रा में साधक के भीतर ज्ञाता-द्रष्टाभाव का विकास होता है। जब साधक वस्तु के स्वभाव को जानकर उसके प्रति राग और द्वेष में नहीं बहता है, मात्र द्रष्टाभाव की दशा में रहता है तब वह धर्मध्यान की उच्च भूमिका में प्रवेश करता है। धर्मध्यान की उच्चतम भूमिका का नाम ही शुक्ल ध्यान है। शुक्ल का अर्थ है विशुद्ध। शुक्ल ध्यान की अवस्था में साधक शीघ्र गति से विशाल कर्मराशि को भस्मीभूत करके परम अवस्था को प्राप्त कर लेता है।

आज विश्व में ध्यान बहुचर्चित शब्द है। ध्यान के शिक्षण और प्रशिक्षण शिविर आज सर्वत्र दिखाई दे रहे हैं। परंतु जैन ध्यान पद्धति को समझे बिना ध्यान के स्वरूप को नहीं समझा जा सकता है। आज मानसिक एकाग्रता, शारीरिक शिथिलता और श्वास की गति प्रक्रिया को ही ध्यान का स्वरूप मान लिया गया है। मन और शरीर की एकाग्रता और शिथिलता तथा विशेष श्वास प्रक्रिया से आनन्द की झलक अवश्य मिलती है, ताजगी और तन्दरुस्ती का अनुभव भी होता है, पर वह बहुत छोटी बाते हैं। जैन साधना पद्धति में ध्यान का प्रथम स्थान है। जैन मुनि के लिए स्पष्ट निर्देश है कि वह अहर्निश अप्रमत्त रहे। अप्रमत्त का अर्थ है–वह न राग में बहे और न द्वेष में बहे। राग में मन बहे तो उसे तत्क्षण विराग में लौटा ले। मन में द्वेष का भाव जगे तो उसे तत्क्षण उसके प्रति सावधान करे और प्रतिक्रमण द्वारा उसकी शुद्धि करे। जैन साधना परम्परा में प्रतिक्रमण की साधना एक आवश्यक साधना प्रक्रिया है जिसे साधक प्रतिदिन करता है। प्रतिक्रमण ध्यान का ही एक अंग है। प्रतिक्रमण में साधक बाहर से भीतर लौटता है। उस साधना में साधक दिन भर के अपने विचार, वाणी और व्यवहार का अवलोकन करता है। जहां भी उसकी साधना में स्खलना हुई है उसका वह प्रायश्चित्त और तपानुष्ठान द्वारा प्रक्षालन करता है।

जैन साधक का समग्र जीवन ही ध्यान का पर्याय है। प्रतिपल धर्मध्यान और शुक्लध्यान में संलग्न रहना ही उसकी साधना का सार है। नियमित रूप से भी उसके लिए यह विधान है कि वह प्रतिदिन दिन और रात के चौबीस घण्टों में से बारह घण्टे ध्यान साधना को समर्पित करे।

ध्यान साधु की साधना का प्राण है। ध्यान के अभाव में उसकी साधना

ऐसे है जैसे गंधहीन पुष्प। श्रमण परंपरा में ध्यान की साधना काफी समय तक अविछिन्न रूप से चलती रही। परन्तु शनैः-शनैः श्रमण परंपरा में लोक-मंगल का पक्ष प्रधानता पाता गया। उसकी साधना में ध्यान का पक्ष गौण बनता चला गया। तीर्थंकरों की ध्यान मुद्राएं तो शेष रह गईं, पर उनकी ध्यान विधियां विच्छिन्नप्रायः हो गईं।

श्रमण परंपरा में समय-समय पर क्रांतचेता मनस्वी मुनिवर उभरते रहे जो शुद्ध साधना द्वारा स्व-पर कल्याण का उद्घोष करते रहे। ऐसे मनस्वी मुनिवरों द्वारा ही समय-समय पर आगमोद्धार अथवा क्रियोद्धार के पावन अनुष्ठान संपन्न हुए। इसी परम्परा में हमारे पूज्य आचार्य देव श्री आत्माराम जी महाराज हुए। पूज्य आचार्य देव एक उच्चकोटि के साधक थे। ज्ञान और ध्यान का अद्भुत संगम उनकी प्रज्ञा में प्रवाहित हुआ था। पूज्य आचार्य देव की ध्यानमुद्रा आज भी मुमुक्षुओं को रोमांचित करती है। ध्यान द्वारा उनकी प्रज्ञा इतनी सुनिर्मल बन गई थी कि उसमें अवधिज्ञान की झलक उतर आई थी। आंखें बंद रखते हुए वे हजारों मील तक देख लेते थे।

ध्यान के उसी सिद्धान्त और प्रयोग के मंत्रद्रष्टा ऋषि हैं आचार्य प्रवर श्री शिव मुनि जी महाराज। आपका जीवन ध्यान है, आपकी साधुता ध्यान मग्न है। आपकी सोच में ध्यान डोलता है, आपके स्वर में ध्यान बोलता है। ध्यान आपके लिए कोई विधि-विधान नहीं है, बल्कि सहज जीवन धर्म है। आपकी वाणी में, विचार में, आचार में, व्यवहार में, स्वीकार में, नकार में ध्यान की आहट है। आप इक्कीसवीं सदी के एक ऐसे ध्यान योगी मुनीश्वर हैं जिन्होंने ध्यान को जीवन शैली के साथ जोड़ा है। आपने ध्यान को जीया, ध्यान के रस को पीया, ध्यान आपका सांस-सांस बना, पथ, पाथेय और मंजिल बना। या यूं कह दें कि ध्यान के बिना शिव के अस्तित्व की कल्पना ही नहीं की जा सकती है।

शिवाचार्य के आकार-निराकार व्यक्तित्व के अंतरंग-बहिरंग सभी तलों को ध्यान ने जगमगाया है। आपने ध्यान का चिराग जलाकर जगत को प्रकाश का प्रसाद बांटा है। आप ध्यानमय सोचते हैं और ध्यानमय रचते हैं, इसलिए आपकी सर्जना में एक समग्रता है जो ध्यान की ऊर्ध्वारोही यात्रा में आपको मिली है।

बाल्यावस्था से ही ध्यान ने आपको आकर्षित किया। चित्रों में तीर्थंकर

महावीर की ध्यान मुद्रा को देखकर आप उसका अनुसरण करते। युवावस्था में ध्यान प्यास बनकर आपके प्राणों में घुल गया। अंततः ध्यान को जानने और जीने की सघनतम जिज्ञासा ही आपकी दीक्षा का द्वार बना। मुनि जीवन के प्रत्येक क्षण में आपश्री ने ध्यान को जानने के लिए स्वाध्याय किया, मुनियों, मित्रों और योगियों के समक्ष जिज्ञासाएं रखीं, चर्चाएं कीं। निरंतर स्वाध्याय, साधना और अभ्यास से आपके अंतर में ध्यान का दीप जल उठा।

ध्यान की नाव पर बैठकर आपने अनन्त आत्म-सागर में पर्यटन किया। आपश्री गहरे और गहरे पैठे। नासिक की पुण्य धरा पर सघन समाधि के क्षणों में गुरुगम से एक विशिष्ट ध्यान पद्धति आपको प्राप्त हुई। साथ ही यह प्रबल प्रेरणा भी प्राप्त हुई–शिव! ध्यान में रमो और इस महाप्रसाद को जगत में बांटो!

तब से आपश्री ध्यान रूपी महाप्रसाद जगत में बांट रहे हैं। आपके आमंत्रण में बंधकर लाखों मुमुक्षुओं ने ध्यान की गंगा में गोते लगाए। जिसने भी इस गंगा में गोता लगाया वह मंत्रमुग्ध बन गया। प्रत्येक साधक को दिव्य अनुभव हुआ।

आत्मध्यान का स्वरूप

आत्मध्यान स्वयं से साक्षात्कार की एक अनुपम विधि है। आत्मध्यान एक ऐसी साधना शैली है जिसके द्वारा साधक सरलता से स्व-स्वरूप से परिचय साध लेता है। वस्तुतः ध्यान स्वयं को समझने, जानने और उपलब्ध होने का आध्यात्मिक विज्ञान है। ध्यान की हजारों विधियां हैं। सभी का लक्ष्य आत्मसंपदा की उपलब्धि है। आत्मध्यान की भी यही फल निष्पत्ति है।

'आत्मध्यान' इस शब्द में 'आत्म' शब्द के दो फलितार्थ हैं–(1) स्वात्मा और आत्मगुरु। इस साधना विधि की उपलब्धि आत्मगुरु के अदृष्ट आशीष से हुई और यह विधि स्वात्मा से जोड़ने वाली है। इसलिए पूज्य शिवाचार्य द्वारा इस विधि विज्ञान को 'आत्मध्यान' नाम प्रदान किया गया। आत्मध्यान आत्मबोध की जागृति का सरल और श्रेष्ठ उपाय है। इस साधना में सर्वप्रथम साधक की पात्रता निर्मित की जाती है। आगमों में कहा गया है कि पात्र को ही साधना देनी चाहिए। इसलिए साधक में दायित्व बोध को विकसित किया जाता है। परिवार, समाज और देश के प्रति उसके क्या दायित्व हैं, इसके लिए उसे तैयार किया जाता है।

शरीर, मन और आत्मा ये तीन तल हैं। आत्मध्यान में विभिन्न आसनों के द्वारा शरीर को स्थिर किया जाता है। श्वसन प्रक्रिया के माध्यम से मन को शांत किया जाता है और ध्यान के द्वारा आत्मशुद्धि का अनुष्ठान संपन्न किया जाता है। इन तीन तलों पर नियमित साधनात्मक अभ्यास से साधक में ज्ञाता-द्रष्टाभाव का विकास होता है। साधक परिस्थितियों से ऊपर उठकर उनका द्रष्टा मात्र शेष रह जाता है। परिस्थितियां उसे चलायमान नहीं बना पाती हैं। वह संसार में रहते हुए संसार से मुक्त हो जाता है। वह अपना मालिक बन जाता है। उसका प्रत्येक कार्य सुंदर और सुख देने वाला हो जाता है।

आत्मध्यान की साधना से व्यक्ति विशुद्ध आत्मतत्व से परिचित बनता है। उसे यह आत्मबोध प्राप्त होता है कि उस पर आरोपित शरीर, नाम, धाम, पद, प्रतिष्ठा आदि अन्य हैं और वह अन्य है। इनकी विद्यमानता और अविद्यमानता दोनों ही दशाओं में उसका अनन्य स्वरूप सदा शाश्वत और अखण्ड रहता है। शरीर, नाम, धामादि की विद्यमानता उसके हर्ष और अविद्यमानता शोक का कारण नहीं बनते। वह अपने भीतर पूर्ण समृद्धि को अनुभव कर लेता है। इसलिए वह प्रतिक्षण आनंद में रहता है।

परम पूज्य आचार्य देव ने अपनी ध्यान विधि को 'आत्म-ध्यान' नाम प्रदान किया है।

आत्मध्यान साधना के तीन चरण हैं-(1) बेसिक कोर्स (2) एडवांस कोर्स-I (3) एडवांस कोर्स-II (आवासीय)।

बेसिक कोर्स (Self meditation course)-यह दो-दो घण्टे की पंचदिवसीय साधना है जिसमें श्वास की प्रक्रिया, ध्यान एवं जीवन जीने के सूत्रों का अनुभवात्मक प्रयोग करवाया जाता है। इससे शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक तल पर लाभ होता है। जीवन के सर्वांगीण विकास में यह कोर्स बहुत ही महत्व रखता है। समता एवं शांति को प्राप्त करने की यह सरलतम विधि है।

इस कोर्स के माध्यम से अनेकानेक रोग जैसे-ब्लड प्रेशर, डायबिटिज, हृदय रोग, अस्थमा आदि में विशेष लाभ होता है। व्यसन मुक्ति एवं आदतों की गुलामी से छुड़ाने में यह कोर्स बहुत ही लाभदायक है।

एडवांस कोर्स-I (Advance course-I)-यह ध्यान साधना का द्वितीय

चरण है। एडवांस कोर्स-I में उन्हीं साधकों को बैठने की अनुमति होती है जिन्होंने बेसिक कोर्स पहले कर लिया है। इसकी अवधि तीन दिन की है जो प्रातः सूर्योदय से शाम तक चलता है। यह साधना विधि साधकों को अंतरंग अनुभूतियों से अवगत कराती है। इस त्रिदिवसीय ध्यानाभ्यास से आत्म स्वरूप का सहज बोध जागृत होता है। साधना की गहराई में प्रवेश करने के लिए यह बहुत ही उपयोगी है।

इस त्रिदिवसीय साधना में योगासन, ध्यान और मौन का अभ्यास किया जाता है। आत्मशुद्धि के लिए योगनिद्रा एवं कायोत्सर्ग की साधना का अभ्यास कराया जाता है। स्वाध्याय की दृष्टि से जीवन जीने के विविध सूत्र प्रदान किए जाते हैं। इस साधना में आहार शुद्धि पर भी विशेष बल दिया जाता है। इस साधना विधि से साधक शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक बल प्राप्त करता है। इस साधना का मुख्य आधार है–प्रतिक्षण-प्रतिपल आनंद, सुख और समृद्धि के अन्तर्भावों का विकास। सहज रूप से आत्म समाधि का अनुभव करवाने की विधि आचार्य श्री द्वारा प्रदान की जाती है।

एडवांस कोर्स-II (आवासीय) (Advance course-II /residential)– आत्म ध्यान साधना का यह तृतीय चरण है। यह चरण चार दिनों में संपन्न होता है। साधक चार दिनों के लिए समग्र सम्बंधों, कार्यों, दायित्वों से मुक्त होकर साधना स्थल पर ही रहकर साधना करता है। यह शिविर प्रथम दिन प्रातः 6 बजे प्रारंभ होता है और चतुर्थ दिन शाम को 4 बजे सम्पन्न होता है। लगभग 94 घण्टे की साधना में साधक पूर्ण रूप से स्वयं के साथ, अपनी आत्मा के साथ रहता है। आत्मानुभव की यह एक विशिष्ट साधना है जो व्यक्ति की चेतना में आध्यात्मिक क्रांति को जगा देती है। इस साधना से गुजरकर व्यक्ति का आत्मबल, मनोबल और बौद्धिक बल अविश्वसनीय रूप से वृद्धि को प्राप्त होता है।

इस तृतीय चरण में साधक निरंतर चार दिनों तक सघन मौन में रहता है। विशेष विधि से योगासन, ध्यान, कायोत्सर्ग एवं शरीर शुद्धि की क्रियाएं संपन्न कराई जाती हैं जो साधना की गहराई में जाने में सहयोग करती हैं। उक्त साधना से अधिकांश शारीरिक एवं मानसिक व्याधियां शांत हो जाती हैं। दुर्व्यसनों के चक्रव्यूह में फंसे लोगों ने अपने अनुभव बताते हुए कहा कि चार दिनों में उन्हें उनकी बुरी आदत ने तनिक भी परेशान नहीं किया। इसका

कारण है कि इस शिविर में व्यक्ति आत्मशुद्धि की गहन प्रक्रिया से गुजरता है। उसका सीधा तादात्म्य उसकी आत्मा से जुड़ता है। उस क्षण में मनस्-रोग स्वत: विलीन हो जाते हैं।

इस संपूर्ण साधना से गुजरकर साधक एक आध्यात्मिक साधक बन जाता है। उसके जीवन में क्रांति घटित हो जाती है। धुम्रपान, मदिरापान जैसे कठिन दुर्गुण सहज ही विदा हो जाते हैं।

आत्मध्यान की फल निष्पत्ति

(1) मैं शुद्ध आत्मा हूं। ज्ञान, दर्शन और परम आनंद मेरा स्वभाव है। इस परम संपदा का मैं शाश्वत स्वामी हूं।

(2) शरीर, नाम, रिश्ते, पद, प्रतिष्ठा, व्यापार–ये सब 'पर' हैं। ये सभी संबंध शरीर के हैं और मैं शरीर नहीं हूं।

(3) यह संसार व्यवस्थित रूप से चल रहा है। हम इसे चलाने वाले नहीं हैं और न ही ऊपर बैठा परमात्मा इसे चला रहा है। यह अपने स्वभाव के अनुसार चल रहा है।

(4) इस जगत में मुझे जो मिल रहा है अथवा जिससे मेरा संबंध है वह मेरे अपने कर्म के अनुसार है। मैं आनंदित रहते हुए समस्त फाइलों का निपटारा करूंगा। समभाव की ढ़ाल से विषमता के विष-प्रहारों को नि:सत्त्व करूंगा।

(5) शुद्धात्मा के बहिखाते में अप्रमत्त रहकर वृद्धि करूंगा। जगत के समस्त प्राणियों में आत्मभाव के दर्शन करते हुए राग-द्वेषादि भावों को निर्मूल करूंगा।

उपरोक्त पांच प्रकार के भावों/संकल्पों के विकास के साथ आत्मध्यान का कोर्स संपन्न होता है।

परम पूज्य आचार्य श्री के निर्देशन में आत्म-ध्यान शिविर देश के विभिन्न नगरों में निरंतर चल रहे हैं। आचार्यश्री द्वारा प्रशिक्षित साधक शिविरों का संचालन करते हैं।

पाठकों के मानस में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि आत्म-ध्यान की सामान्य जानकारी ही यहां दी गई है। उसकी विधि विशेष का विश्लेषण नहीं किया गया। इस विषय में स्पष्ट करना चाहूंगा कि–वस्तुत: ध्यान लेखन या संभाषण का विषय नहीं है। ध्यान अनुभव का सच है। लेखन अथवा

संभाषण द्वारा स्थूल को ही प्रकट किया जा सकता है, सूक्ष्म को नहीं। ध्यान सूक्ष्म से भी सूक्ष्म जीवन शैली है। उसे जीकर ही, उसे चख कर ही उसके स्वाद को अनुभव किया जा सकता है। परम पूज्य शिवाचार्य अभी मौजूद हैं। उनकी उपस्थिति भव्य मुमुक्षुओं के लिए परम सौभाग्य की बात है। मैं अपने पाठकों को आग्रह करूंगा कि उन द्वारा बहाई जा रही ध्यान गंगा में एक डुबकी अवश्य लगाएं। वह एक डुबकी आपको जीवन का सर्वोच्च और मधुरतम अनुभव देगी।

शिव साहित्य :
एक अवलोकन

शिवाचार्य के प्रत्येक वचन में जीवन का संदेश है। उनकी कलम से सृजित प्रत्येक अक्षर अनक्षर की आहट उत्पन्न करता है। उनका शब्द–ससार भव–ससार से मुक्ति प्रदान करने वाला महामत्र है।

शिव साहित्य : एक अवलोकन

संत विश्व की सर्वोच्च सत्ता है। असंत द्वारा सृजित सत्ताएं निर्मित होती हैं और खो जाती हैं। पर संत की सत्ता अनादि निधान है। वह सदा से है, सदैव रहेगी।

संत की सत्ता त्याग के धरातल पर खिलती है।

संसारी की सत्ता भोग के कीच में पलती है।

निस्पृह, निपट और नग्न संत-व्यक्तित्व में जिस समृद्धि और सम्मोहकता के दर्शन होते हैं उस समृद्धि और सम्मोहकता के दर्शन किसी राजाधिराज में नहीं हो पाते हैं।

बाहर में आंख मूंदकर संत अपने भीतर में विकासमान बनता है।

संसारी स्व से अपरिचित बनकर बाहर में समृद्धि के शिखर तलाशता है।

संतत्व एक विलक्षण घटना है। संत की सत्ता उसके स्वयं के सुख का संधान नहीं करती है, बल्कि समष्टि के सुख का साम्राज्य स्थापित करती है। संत समष्टि के कल्याण का स्रोत प्रवाहित करता है। अपनी जीवन शैली से वह जगत को सत्य का राजमार्ग देता है जिस पर कदम बढ़ाकर जगत जगदीश्वर की सत्ता का सौभाग्य पा सकता है।

संत की मौन साधना संसारियों के लिए सर्वोच्च जीवन शैली का आदर्श है।

संत का वचन परम जीवन का आध्यात्मिक अनुसंधान है।

और संत का सृजन सृष्टि की सर्वोच्च सत्ता का संविधान है।

भारतीय साहित्य की परम्परा में संतों के सृजनधर्मी साहित्य का एक विशिष्ट स्थान है। संत साहित्य में ऐकान्तिक रूप से स्व-पर कल्याण की अभिव्यंजना हुई है। संतों ने जो भी रचा उसमें उनका लोक मंगल का स्वर

सर्वाधिक ध्वनित हुआ है। 'स्वांत: सुखाय और सर्वजन-सर्वजीव हिताय' उनके साहित्य का प्राणतत्त्व रहा है।

अत्यंत प्राचीन काल से भारतीय ऋषियों, मुनियों और संतों में साहित्य साधना के लिए आकर्षण रहा है। वर्तमान में उपलब्ध उपनिषद, आगम, त्रिपिटक, संत साहित्य आदि उनकी साहित्य साधना का परिणाम है। वर्तमान में भी संतों द्वारा उत्कृष्ट साहित्य की रचना की जा रही है।

साहित्य के इतिहास का अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि विगत शताब्दी के प्रारंभ से वर्तमान तक साहित्य का जिस गति से विकास और आलेखन हुआ है उतना विकास और आलेखन विगत दो हजार वर्षो में भी नहीं हुआ। साहित्य-सृजन की इस रफ्तार में निश्चित रूप से उसकी गुणवत्ता भी प्रभावित हुई है। पर कुछ उत्कृष्ट साहित्य भी रचा गया है।

जैन साहित्य का विहंगम अवलोकन करने पर उसकी समृद्धि और विशालता के सहज दर्शन होते हैं। आगम साहित्य के रूप में वर्तमान में बत्तीस आगम उपलब्ध हैं। आगम साहित्य के आधार पर रचित आगमिक साहित्य की परम्परा भी अतीव समृद्ध है। आचार्य हरिभद्र सूरि, आचार्य हेमचन्द्र सूरि प्रभृति आचार्यों ने कई उत्कृष्ट ग्रन्थों की रचना की जिनमें से कतिपय ग्रन्थ वर्तमान में भी उपलब्ध हैं। वर्तमान कालीन साहित्यकार मुनियों की भी एक लम्बी शृंखला है जिनमें आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म., आचार्य प्रवर श्री अमोलक ऋषि जी म., आचार्य श्री घासीलाल जी म., अनुयोग प्रवर्तक श्री कन्हैयालाल जी म. 'कमल', आचार्य सम्राट् श्री आनंद ऋषि जी म., आचार्य सम्राट् श्री देवेन्द्र मुनि जी म., युवाचार्य श्री मधुकर मुनि जी म., आदि मनीषी मुनिवर तो स्थानकवासी जैन परम्परा से सम्बन्ध रखते हैं। तेरापंथ जैन परम्परा में आचार्य श्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने विपुल और उत्कृष्ट साहित्य की रचना की है। श्वे. मूर्तिपूजक एवं दिगम्बर सम्प्रदाय में कई विद्वान मुनियों ने जैन साहित्य की विपुल रचना द्वारा भारतीय साहित्य को समृद्ध किया है।

साहित्यकार जैन मनीषी मुनियों में स्थानकवासी श्रमण संघ के आचार्य सम्राट् श्री शिव मुनि जी महाराज का अपना एक विशिष्ट स्थान है। आचार्य प्रवर सरस्वती पुत्र हैं। ज्ञानाराधना और सृजन-साधना में आपकी सघन रुचि है। मुनि-जीवन में प्रवेश लेने के समय से ही आपमें सृजनधर्मिता का विकास हुआ। ज्ञान की प्यास तो आपमें जन्मजात रही है। अपने साधु-जीवन

के प्रथम कुछेक वर्षों में आपने कई छोटी-छोटी पुस्तकों कीं रचना की। पत्र-पत्रिकाओं में भी आपके चिंतनपूर्ण आलेख स्थान पाते रहे। यह आपके सृजनात्मक स्वभाव का ही प्रमाण है कि आपने मुनि दीक्षा के प्रथम वर्ष में ही शोध-प्रबन्ध लिखने का संकल्प संजोया। जैन परम्परा में यह एक क्रांतिकारी शुरुआत थी। आप प्रथम मुनि हैं जिन्होंने मुनि जीवन में रहते हुए विश्वविद्यालयी अध्ययन को जारी रखा। उस समय आपके इस निर्णय की परम्परावादियों द्वारा आलोचना भी हुई! पर बाद में इस स्वस्थ परम्परा को स्वीकृति और सम्मान मिला और आज अनेक श्रमण-श्रमणियों ने उच्च शिक्षा द्वारा संघ का मान बढ़ाया है।

परम पूज्य आचार्यश्री की कई कृतियों ने राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान अर्जित किया है। आप द्वारा लिखित शोध प्रबन्ध 'भारतीय धर्मों में मुक्ति विचार' एक उत्कृष्ट शोधपूर्ण ग्रन्थ है। 'ध्यान एक दिव्य साधना' आपकी द्वितीय ऐसी रचना है जिस पर आपको डी.लिट. की उपाधि से सम्मानित किया गया। उसके बाद समय-समय पर आपकी रचनाएं प्रकाशित होती रही। विद्वद् वर्ग और सामान्य मुमुक्षु जनता द्वारा आपकी रचनाएं रुचि से पढ़ी जा रही हैं।

आगम संपादन

आचार्य पद पर आसीन होने पर पूज्य शिवाचार्य का दायित्व क्षेत्र अत्यंत विस्तृत हो गया। एक सामान्य मुनि के रूप में आपके दायित्व सीमित थे। तदनुसार आपश्री आत्मसाधना और लोकमंगल के पथ पर यात्रा करते रहे। पर आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होने के पश्चात् विशाल संघ के सुचारू संचालन का विशाल दायित्व आप पर आ गया। संघ में आचार-विचार के समुन्नयन के लिए स्वाध्याय और साधना की अपरिहार्यता को आपने अनुभव किया। साधना के लिए आपने ध्यान का मिशन चलाया और स्वाध्याय के लिए सरल भाषा में आगमों को सर्वसुलभ बनाने का संकल्प संजोया। संघ के वरिष्ठ मुनियों से तत्संबंधी चिंतन के पश्चात् आपश्री ने स्वाध्याय और ध्यान को संघ मे प्रबल प्रश्रय प्रदान किया।

श्रमणसंघ के प्रथम पट्टधर आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म. द्वारा व्याख्यायित आगम साहित्य को आधुनिक संस्करणों में संपादित रूप में प्रस्तुत करने का आपने स्वप्न संजोया। उसके लिए आपने आचार्य श्री द्वारा व्याख्यायित अनुपलब्धप्राय: आगमों की प्रतियों को एकत्रित किया। उन

आगमों का आपने शब्दश: अध्ययन किया। अपेक्षित संपादन कार्य कर उन ग्रन्थों को आधुनिक सज्जा के साथ प्रकाशित कराया। इस कार्य को वर्ष 2001 में प्रारंभ किया गया। अद्यतन बारह आगमों के सतरह संस्करण सर्वसुलभ बन चुके हैं। आगे भी यह कार्य जारी है। आचार्य श्री आत्माराम जी म. की आगम साधना जो उनके जीवन काल में पूर्ण नहीं हो पाई, उन्हीं की शैली में पूर्ण करने के लिए आपश्री संकल्पित हैं।

आचार्य श्री आत्माराम जी म. द्वारा व्याख्यायित और आपश्री द्वारा संपादित-प्रकाशित आगम साहित्य की तालिका इस प्रकार है-

1. श्री आचारांग सूत्रम् (प्रथम श्रुतस्कंध)
2. श्री आचारांग सूत्रम् (द्वितीय श्रुतस्कंध)
3. श्री स्थानांग सूत्रम् (भाग एक)
4. श्री स्थानांग सूत्रम् (भाग दो)
5. श्री उपासकदशांग सूत्रम्
6. श्री अंतकृद्दशांग सूत्रम्
7. श्री अंतकृद्दशांग सूत्रम् (पर्युषण संस्करण)
8. श्री अनुत्तरौपपातिक सूत्रम्
9. श्री विपाक सूत्रम्
10. श्री निरयावलिका सूत्रम्
    (कल्पिका- कल्पावतंसिका-पुष्पिका, पुष्पचूलिका-वृष्णिदशा- पांच उपांगों का संयुक्त संस्करण)
11. श्री उत्तराध्ययन सूत्रम् (भाग एक)
12. श्री उत्तराध्ययन सूत्रम् (भाग दो)
13. श्री उत्तराध्ययन सूत्रम् (भाग तीन)
14. श्री दशवैकालिक सूत्रम्
15. श्री नन्दीसूत्रम्
16. श्री दशाश्रुतस्कंध सूत्रम्
17. श्री आवश्यक सूत्रम् (श्रावक प्रतिक्रमण)

उपरोक्त सोलह आगम सतरह जिल्दों में आज सर्वसुलभ हैं। इसके लिए विगत 5-6 वर्षों में आचार्य श्री ने महान श्रम किया है। उक्त आगमों के संक्षिप्त वर्ण्य-विषयों की अपेक्षा है जो निम्न प्रकार से है।

आगम : एक परिचय

आगम वह साहित्य है जिसमें तीर्थंकर महावीर के वचन अर्थ रूप में संकलित हैं। अर्थरूप महावीर के वचनों को गणधर देवों ने सूत्र रूप में गुंफित किया। अर्थरूप में महावीर से आने के कारण अथवा परम्परा से गुरु से शिष्य तक आने के कारण यह ज्ञान राशि आगम एवं श्रुत नाम से विश्रुत हुई। वर्तमान में आगमों की संख्या बत्तीस है। इनमें ग्यारह अंग, बारह उपांग, चार मूल, चार छेद और एक आवश्यक सूत्र है।

बारह अंगों के नाम

1. आचारांग	7. उपासकदशांग
2. सूत्रकृतांग	8. अन्तकृद्दशांग
3. स्थानांग	9. अनुत्तरौपपातिकदशांग
4. समवायांग	10. प्रश्नव्याकरण
5. भगवती	11. विपाक
6. ज्ञाताधर्मकथांग	12. दृष्टिवाद

वर्तमान में दृष्टिवाद का विच्छेद हो चुका है। वर्तमान में ग्यारह अंग ही उपलब्ध हैं।

बारह उपांग

1. औपपातिक सूत्र	7. कल्पावर्तसिका सूत्र
2. राजप्रश्नीय सूत्र	8. पुष्पिका
3. जीवाभिगम सूत्र	9. पुष्पचूलिका
4. प्रज्ञापना सूत्र	10. वृष्णिदशा
5. जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र	11. चंद्र प्रज्ञप्ति
6. निरयावलिका सूत्र	12. सूर्यप्रज्ञप्ति

चार मूल सूत्र

1. दशवैकालिक सूत्र	3. नन्दी सूत्र
2. उत्तराध्ययन सूत्र	4. अनुयोगद्वार सूत्र

चार छेद सूत्र

1. निशीथ सूत्र	3. व्यवहार सूत्र
2. बृहत्कल्प सूत्र	4. दशाश्रुतस्कंध सूत्र

एक आवश्यक सूत्र

1. आवश्यक सूत्र अथवा प्रतिक्रमण सूत्र।

उपरोक्त बत्तीस आगमों में धर्म और दर्शन का विशद व्याख्यान हुआ है। आध्यात्मिक साधना का विशद विश्लेषण जैसा इन आगमों में उपलब्ध है वैसा विश्लेषण विश्व के किन्हीं भी ग्रन्थों में नहीं हुआ है। जैन मनीषी साधकों ने इस विशाल श्रुतराशि को पहले श्रुत परम्परा द्वारा और बाद में स्मरण और लेखन के बल पर सुरक्षित रखा। हां, इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि वर्तमान में जो श्रुत उपलब्ध है वह श्रुत सागर की बूंद मात्र शेष है। निरंतर ह्रासमान बनती स्मरण शक्ति और कालप्रभाव से बढ़ती प्रमाद वृत्ति के कारण श्रुत का विशाल भाग विच्छिन्न हो गया। पर जो उपलब्ध है उसकी संरक्षा का संवहन भी कम आश्चर्यजनक नहीं है। श्रुतधर आचार्यों की श्रुतनिष्ठा ही इस संरक्षा का प्रधान कारण रहा है।

निम्न पंक्तियों में हम उन आगमों का संक्षिप्त परिचय-क्रम प्रस्तुत करेंगे जिन पर आचार्य देव श्री आत्माराम जी म. ने व्याख्याएं लिखी हैं एवं जिनका संपादन-प्रकाशन पूज्य शिवाचार्य श्री ने संपन्न किया है।

श्री आचारांग सूत्रम्

श्री आचारांग सूत्रम् का द्वादशांगी में प्रथम स्थान है। इस आगम में 'आचार' पर विशद चिंतन हुआ है। आचार का अर्थ है ज्ञान, दर्शन और चारित्र की आराधना करने का विधि-विधान। आचार का प्रकाशक और धारक होने के कारण इस आगम का उक्त नाम पूर्ण सार्थक है। आचारांग सूत्र में दो श्रुतस्कंध है। अध्ययनों के समुदाय को श्रुतस्कंध कहा जाता है। प्रथम श्रुतस्कंध में नौ और द्वितीय श्रुतस्कंध में सोलह अध्याय हैं तथा कुल पिच्चासी उद्देशक हैं।

इस आगम पर आचार्य देव श्री आत्माराम जी म. ने विशाल व्याख्या की रचना की। पूर्व में भी इस आगम पर विभिन्न आचार्यों और विद्वानों द्वारा टीकाएं और व्याख्याएं लिखी जा चुकी थीं। पर आचार्य देव ने जिस विशालता और विराटता से कार्य किया वह अपने आप में अद्‌भुत और अपूर्व है।

आचार्य देव द्वारा व्याख्यायित इस बृहद् आगम का संपादन पूज्य आचार्य सम्राट् श्री शिव मुनि जी महाराज ने अपनी कलम कुशलता से किया है। इस विशाल व्याख्या के साथ आचार्यश्री ने विभिन्न सूत्रों पर 'अध्यात्म सार' के

रूप में कुछ विशेष टिप्पणियां लिखकर इस आगम को और अधिक सरल और सरस रूप प्रदान किया है। मुमुक्षु पाठकों और स्वाध्याय प्रेमी साधकों द्वारा इस संस्करण का हार्दिक स्वागत हुआ है।

श्री स्थानांग सूत्रम्

यह तृतीय अंग आगम है। इसमें एक से शुरू करके क्रमशः दस बोलों तक का वर्णन हुआ है। इसमें दस स्थान तथा इक्कीस उद्देशक हैं। स्थान शब्द अध्याय शब्द का पर्यायवाची है। इस आगम में जीव, अजीव, स्व-सिद्धान्त, पर-सिद्धान्त, लोक, अलोक, पर्वत, द्वीप आदि चेतन और जड़ का विशाल वर्णन हुआ है। दार्शनिक चर्चाएं इस आगम में विशद रूप में हुई हैं।

परम पूज्य आचार्य देव श्री आत्माराम जी म. ने इस आगम पर विशाल व्याख्या की रचना की। इस आगम का प्रथम प्रकाशन उपाध्याय श्रमण श्री फूलचंद जी म. के संपादन में तीस वर्ष पूर्व हुआ था। गतवर्ष पूज्य आचार्य श्री शिव मुनि जी म. की संपादन कला में इस आगम का पुनर्प्रकाशन हुआ।

श्री उपासकदशांग सूत्रम्

अंग सूत्रों में इस आगम का सातवां स्थान है। इस आगम में दस अध्ययन हैं तथा प्रत्येक अध्ययन में एक-एक श्रावक के धार्मिक और पारिवारिक जीवन का वर्णन है। आनन्द, कामदेव आदि ये दसों श्रावक भगवान महावीर के प्रति अनन्य आस्था रखने वाले गृहस्थ साधक थे। ये दसों श्रावक विशाल संपदा और सामाजिक प्रतिष्ठा रखने वाले थे। इस पर भी उनकी धर्मनिष्ठा अत्यंत उच्च थी। भगवान महावीर के प्रति उनकी श्रद्धा को दिव्य ताकतें भी चुनौती नहीं दे सकी थीं। इस आगम का मूल स्वर है–गृहस्थ जीवन में रहकर भी व्यक्ति धर्म और मोक्ष की साधना कर सकता है।

परम पूज्य आचार्य देव श्री आत्माराम जी म. ने इस आगम की सुन्दर सरल व्याख्या प्रस्तुत की एवं परम पूज्य आचार्य श्री शिव मुनि जी म. ने अपने संपादन कौशल से इसे नई सज्जा में प्रस्तुत किया है।

श्री अंतकृद्दशांग सूत्रम्

यइ अष्टम अंग है। जीवन के अंतिम क्षणों में कैवल्य को साधकर मोक्ष का वरण करने वाले साधक अंतकृत् साधक कहलाते हैं। इस आगम के एक श्रुतस्कंध के आठ वर्गों में संकलित नब्बे अध्ययनों में नब्बे ही अंतकृत् साधकों की जीवन गाथाएं प्रस्तुत की गई हैं। अंतकृत् साधकों का व्याख्याता

होने से इस आगम का नाम अंतकृद्दशांग प्रसिद्ध है। सुदर्शन, अर्जुन, गजसुकुमाल, पद्मावती, काली आदि साधक और साधिकाओं के त्याग और तप का उत्कृष्ट व्याख्यान इस आगम में हुआ है। तप द्वारा आत्मशुद्धि की प्रबल प्रेरणा देने वाले इस आगम की अष्ट दिवसीय पर्युषण बेला में सामूहिक स्वाध्याय की पवित्र परम्परा जैन परम्परा में रही है। इस आगम के स्वाध्याय/श्रवण से अल्प सत्त्व साधक भी बड़ी-बड़ी तपस्याओं को करते देखे जाते हैं। आचार्य देव द्वारा व्याख्यायित इस आगम का संपादन पूज्य आचार्य श्री जी द्वारा दो वर्ष पूर्व किया गया। साथ ही पर्युषण उपयोगी मूल, शब्दार्थ और भावार्थ के साथ एक छोटे संस्करण का भी प्रकाशन किया गया।

श्री अनुत्तरौपपातिकदशांग सूत्रम्

यह द्वादशांगी का नवम अंग है। इसमें तीन वर्ग और तैंतीस अध्याय हैं। प्रथम दो वर्गों के तेईस अध्ययनों में राजा श्रेणिक के तेईस पुत्रों की संयम साधना का वर्णन है। तृतीय वर्ग में काकंदी नगरी के धन्ना सेठ का अधिकार है। इस आगम में वर्णित तैंतीस ही साधक उत्कृष्ट संयम का पालन कर अनुत्तर विमान के अधिकारी बने। ये सभी आत्माएं आगामी भव में मोक्ष का वरण करेंगे।

आचार्य देव द्वारा व्याख्यायित और आचार्य श्री द्वारा संपादित इस आगम का द्वितीय संस्करण सन् 2002 में संपन्न हुआ।

श्री विपाक सूत्रम्

द्वादश अंगों में श्री विपाक सूत्रम् ग्यारहवां अंग आगम है। यह आगम दो श्रुतस्कंधों में विभक्त है, जिनमें प्रथम श्रुतस्कंध का नाम दुख विपाक और द्वितीय श्रुतस्कंध का नाम सुखविपाक है। प्रथम श्रुतस्कंध में पापी जीवों के पापमय आचरणों और उनके पापमय विपाक का दिग्दर्शन प्रस्तुत किया गया है। द्वितीय श्रुतस्कंध में धर्मात्मा और सदाचारी पुरुषों की जीवनगाथाएं और उनके स्वर्णिम भविष्य के चित्र अंकित हैं। विपाक का मूल कथ्य है–पाप का फल दुखप्रद और धर्म का फल आनन्दप्रद होता है।

परम पूज्य आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म. के विद्वान शिष्य पूज्य पंजाब केसरी श्री ज्ञान मुनि जी म. ने इस आगम पर विशाल व्याख्या की रचना की है। पूज्य आचार्य श्री शिव मुनि जी म. ने अपने संपादन कौशल से सुसज्जित कर नवीन संस्करण में प्रस्तुत किया है।

श्री निरयावलिका सूत्रम्

श्री निरयावलिका सूत्रम् पांच उपांग सूत्रों का सम्मिलित संस्करण है। इसमें संकलित पांच उपांगों के नाम इस प्रकार हैं–1. कल्पिका, 2. कल्पावर्तंसिका, 3. पुष्पिका, 4. पुष्पचूलिका, 5. वृष्णिदशा। इनमें से कल्पिका सूत्र उपासकदशांग सूत्र का उपांग है और इसमें दस अध्ययन हैं। इसमें श्रेणिक राजा के दस पुत्रों के जीवन वृत्त वर्णित हैं। कल्पावर्तंसिका अंतगडसूत्र का उपांग है और इसमें दस अध्ययन हैं। इसमें महाराज श्रेणिक के दस पौत्रों के जीवन वृत्त अंकित हैं। पुष्पिका अनुत्तरोववाई सूत्र का उपांग है। इसमें दस अध्ययन हैं जिनमें चंद्र, सूर्य आदि दशविध देवों का वर्णन किया गया है। पुष्पचूलिका प्रश्नव्याकरण सूत्र का उपांग है। इसमें श्रीदेवी, ह्रीदेवी आदि के दस अध्ययन दिए गए हैं। वृष्णिदशा विपाक सूत्र का उपांग है और इसमें 12 अध्ययन हैं। इसमें निषधादिक कुमारों के जीवन वृत्त हैं।

पांच उपांगों के समूह रूप इस आगम की व्याख्या परम पूज्य आचार्य देव श्री आत्माराम जी म. ने की है तथा संपादन पूज्य आचार्य श्री शिवमुनि जी म. ने किया है। एक ही ग्रन्थ में पांच उपांग आगमों का अध्ययन पाठकों के लिए सुलभ है।

श्री दशवैकालिक सूत्रम्

यह चार मूल सूत्रों में प्रथम मूल सूत्र है। जैसे मूल के सुदृढ़ होने से वृक्ष पत्र, पुष्प, फलादि से समृद्ध होता है ऐसे ही इस आगम के स्वाध्याय से साधक का सम्यक्त्व रूप मूल सुदृढ़ बनता है और उसका जीवन रूपी वृक्ष ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि आध्यात्मिक पुष्पों-फलों से सुसमृद्ध बन जाता है। इस आगम के दस अध्ययन और दो चूलिकाएं हैं। इसकी रचना आचार्य शय्यंभव ने बाल-साधक मनक के लिए की थी। वर्तमान में भी नवदीक्षित साधकों के लिए यह आगम अवश्य पठनीय माना जाता है। साधु के आचार-विचार का इस आगम में विधिवत् निरूपण किया गया है।

आचार्य देव श्री आत्माराम जी म. ने इस आगम पर श्रमसाध्य बृहद् व्याख्या लिखी है। संपादक आचार्य प्रवर श्री शिव मुनि जी म. हैं।

श्री उत्तराध्ययन सूत्रम्

वैदिक परम्परा में जो स्थान गीता का है वही स्थान जैन परम्परा में

उत्तराध्ययन सूत्र का है। मूल आगमों में इसका स्थान द्वितीय है। कार्तिक अमावस्या की रात्रि को भगवान महावीर ने इस सूत्र का प्रतिपादन किया था। इस में जैन आचार, विचार, धर्म और दर्शन का विचित्र उपदेश संग्रहीत है।

परम पूज्य आचार्य देव श्री आत्माराम जी म. ने इस आगम पर बृहद् व्याख्या की रचना की। पूर्व में इस आगम का प्रकाशन तीन भागों में किया गया था। वर्तमान में आचार्य प्रवर श्री शिव मुनि जी म. के संपादन-निर्देशन में इस आगम का पुनः तीन भागों में प्रकाशन किया गया है। पूर्व संस्करण में रह गई अशुद्धियों के दूर होने से और आवश्यक टिप्पणियों से स्वाध्यायियों के लिए यह आगम पूर्वापेक्षया अधिक उपयोगी बन गया है।

श्री नंदी सूत्रम्

यह आगम मूल सूत्रों में तृतीय क्रम पर है। 'नंदी' शब्द का अर्थ होता है–हर्ष या मंगल। स्पष्ट है कि इस आगम के अध्ययन / स्वाध्याय / श्रवण / मनन से आत्मिक प्रसन्नता की प्राप्ति होती है और वाचक / श्रोता / पाठक का सर्वत्र मंगल होता है। इस आगम में प्रमुख रूप से पांच ज्ञान का विशद विश्लेषण हुआ है। चार प्रकार की बुद्धियों और चौदह प्रकार के श्रोताओं का सुन्दर शब्दावली में वर्णन किया गया है।

इस आगम पर पूज्य आचार्य देव श्री आत्माराम जी म. ने सरल और सरस व्याख्या की रचना की है। पूर्व में उपाध्याय श्रमण श्री फूलचंद जी म. के संपादन में इस आगम का प्रकाशन हुआ। वर्तमान में आचार्य श्री शिव मुनि जी म. के कुशल निर्देशन में इस आगम का पुनर्प्रकाशन हुआ है।

श्री दशाश्रुतस्कंध सूत्रम्

चार छेद सूत्रों में इस आगम का चतुर्थ स्थान है। इस आगम में दस दशाएं-अध्ययन हैं जिससे इसका उक्त नाम प्रचलित / प्रसिद्ध है। इसमें असमाधि, शबल दोष, आशातना, गणि संपद्, चित्त समाधि, उपासक प्रतिमाओं, भिक्षु प्रतिमाओं आदि विषयों का अत्यन्त विस्तृत वर्णन है।

परम पूज्य आचार्य देव श्री आत्माराम जी म. ने आज से सत्तर वर्ष पूर्व सर्वप्रथम इस आगम पर व्याख्या का लेखन किया था। आचार्य श्री की यह व्याख्या शैली देश और विदेशों तक में चर्चित व अनुमोदित हुई थी। परम पूज्य आचार्य श्री शिवमुनि जी म. के निर्देशन में इस आगम का पुनः प्रकाशन हुआ है।

श्री आवश्यक सूत्रम्

आत्म शुद्धि के लिए जिस आगम का विधिवत् पाठ प्रतिदिन आवश्यक रूप से किया जाता है वह आवश्यक सूत्र कहलाता है। आवश्यक सूत्र के लिए 'प्रतिक्रमण सूत्र' नाम भी प्रचलित है। प्रतिक्रमण का अर्थ है–बाहर से भीतर लौटना। प्रतिक्रमण की साधना आवेगों-उद्वेगों से पीछे हटकर संवेग में लौट आने की साधना है। प्रतिक्रमण के दो भेद हैं–साधु प्रतिक्रमण और श्रावक प्रतिक्रमण। साधु प्रतिक्रमण में पांच महाव्रतों की शुद्धि और श्रावक प्रतिक्रमण में बारह व्रतों की शुद्धि के पाठ हैं। इस सूत्र की दैनिक स्वाध्याय से श्रमण और श्रमणोपासक आत्मशुद्धि का दैनिक अनुष्ठान करते हैं।

परम पूज्य आचार्य देव श्री आत्माराम जी म. ने आवश्यक सूत्र के दोनों भागों पर व्याख्याएं लिखी हैं। परम पूज्य आचार्य श्री शिव मुनि जी म. के निर्देशन में श्रावक प्रतिक्रमण का प्रकाशन संपन्न हो चुका है।

आचार्य देव द्वारा व्याख्यायित समस्त आगमों के संपादन-प्रकाशन के लिए आचार्य श्री शिव मुनि जी म. कृतसंकल्प हैं। शेष आगमों पर भी आचार्य श्री पूज्य आचार्य देव की व्याख्या शैली में ही आगम-साधना में संलग्न हैं। आगम साहित्य और आराध्यस्वरूप आचार्य देव के प्रति आचार्य श्री का यह समर्पण स्तुत्य और अभिनंदनीय है।

आगम संपादन-प्रकाशन रूपी श्रुतयज्ञ में समर्पित आचार्य श्री शिव मुनि जी म. ने अन्य विपुल साहित्य का भी संपादन और स्वतंत्र लेखन किया है। आचार्य देव श्री आत्माराम जी म. द्वारा लिखित 1. श्री तत्त्वार्थ सूत्र जैनागम समन्वय, 2. श्री जैन तत्त्व कलिका विकास एवं, 3. जैनागमों में अष्टांग योग–इन तीन ग्रन्थों का प्रकाशन आचार्य श्री के संपादन निर्देशन में संपन्न हो चुका है। इसके अतिरिक्त हिन्दी की लगभग डेढ़ दर्जन पुस्तकों का लेखन आचार्य श्री ने किया है। अंग्रेजी भाषा में भी आपकी कई पुस्तकें प्रकाशन में आ चुकी हैं। आप द्वारा संपादित और लिखित साहित्य की तालिका और संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है–

1. श्री तत्त्वार्थ सूत्र जैनागम समन्वय — संपादित
2. श्री जैन तत्त्व कलिका विकास — ''
3. जैनागमों में अष्टांग योग — ''

लिखित

1. ध्यान : एक दिव्य साधना
2. ध्यान पथ
3. योग-मन-संस्कार
4. जिनशासनम्
5. पढमं नाणं
6. अहासुहं देवाणुप्पिया
7. शिव धारा
8. अन्तर्यात्रा
9. नदी नाव संजोग
10. अनुश्रुति
11. मा पमायए
12. अमृत की खोज
13. आ घर लौट चलें
14. संबुज्झह किं ण बुज्झह
15. सद्गुरु महिमा
16. अध्यात्म सार
17. आत्म-ध्यान साधना कोर्स
18. प्रकाश पुंज महावीर

अंग्रेजी साहित्य

1. द जैना पाथवे टू लिब्रेशन
2. द फण्डामेंटल प्रिंसिपल्स ऑफ जैनिज्म
3. द डॉक्ट्रीन ऑफ द सेल्फ इन जैनिज्म
4. द जैना ट्रेडिशन
5. द डॉक्ट्रीन ऑफ लिब्रेशन इन इंडियन रिलिजन्स विद रैफरेंस टू जैनिज्म
6. स्परीच्युल प्रैक्टेसिज ऑफ लॉर्ड महावीरा
7. रिटर्न टू सैल्फ
8. सेल्फ डवलपमैंट बाई मेडिटेशन

तत्वार्थ सूत्र जैनागम समन्वय

'तत्वार्थ सूत्र' जैन धर्म और जैन साहित्य परम्परा का एक प्रामाणिक और उत्कृष्ट ग्रन्थ है। जैन तत्व ज्ञान का यह अमर कोष है जिसमें सूत्र शैली में विशाल अर्थ का संचयन किया गया है। इस ग्रन्थ के रचयिता वाचक उमास्वाति हैं जिनका समय विक्रम की तीसरी-चौथी शती माना जाता है। वाचक उमास्वाति के आगमों के सागरवर गहन गंभीर ज्ञान का यह ग्रन्थ स्वयं मुखर प्रमाण है। आगमीय विशद ज्ञान के साथ ही उमास्वाति की चयन और निरूपण कुशलता भी उनकी अतिशयी विद्वत्ता को सिद्ध करती है। आगम के गहन गंभीर और विस्तृत विषयों को उन्होंने जिस कुशलता से सूत्रबद्ध किया है उसे देखकर विद्वद्वर्ग आश्चर्य करता रहा है।

तत्वार्थ सूत्र की रचना लगभग सतरह-अठारह सौ वर्ष पूर्व हुई थी। तब से वर्तमान तक इस ग्रन्थ पर अनेक टीकाएं लिखी गई हैं। विद्वद्वर्य पूज्यपाद,

अकलंकाचार्य आदि की विशद टीकाओं के अतिरिक्त आचार्य सिद्धसेन और आचार्य हरिभद्र जैसे दिग्गज विद्वानों ने इस ग्रन्थ पर वृत्तियों की रचना की। विगत शती में भी कई विद्वानों ने इस दिशा में कार्य किया। जैनागम दिवाकर पूज्य आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म. भी उसी श्रृंखला के एक दिग्-जयी विद्वान मुनि थे जिन्होंने तत्वार्थ सूत्र पर काम किया। पर आचार्य देव का कार्य अन्य विद्वानों की अपेक्षा विलक्षण है। आचार्य देव ने तत्वार्थ सूत्र पर वह कार्य किया जिस ओर अन्य विद्वानों का ध्यान ही नहीं गया। वह कार्य है—यह सिद्ध करना कि तत्वार्थ सूत्र आगम वाङमय का ही सार-सूत्र रूप में संकथन/संचयन है। आचार्य देव ने तत्वार्थ सूत्र के प्रत्येक सूत्र के आगमीय आधार को प्रस्तुत ग्रन्थ में उद्धृत किया है। आचार्य देव का यह कार्य अपने आप में अनुपम और अद्भुत है। आचार्य देव की इस अमर आगम साहित्य साधना से पहले से ही शिखरो-शेखरायमाण यह ग्रन्थ और अधिक आस्था का केन्द्र बन गया है।

परम पूज्य आचार्य देव के पौत्र शिष्य एवं उन्हीं के चतुर्थ पाट पर विराजित शिवाचार्य ने इस ग्रन्थ रत्न को अपनी संपादन शैली से सुसज्जित कर प्रकाशित कराया है। ग्रन्थ का वर्तमान स्वरूप भव्य और आकर्षक है।

जैनागमों में अष्टांग योग

महर्षि पतंजलि कृत 'योग सूत्र' वैदिक योग परंपरा का एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। योग क्षेत्र का यह एक उत्कृष्ट और प्रामाणिक ग्रन्थ है। इसमें योग के आठ अंगों—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि का सारगर्भित और सुव्यवस्थित वर्णन किया गया है।

जैन आगम वाङमय का पारायण करते हुए परम पूज्य आचार्य देव श्री आत्माराम जी म. ने पाया कि अष्टांग योग का कथ्य शब्द भेद से आगमों में भी उपलब्ध है। जैनागमों में रहे हुए योग सूत्रों को कुशल मालाकार की भांति चुनकर परम पूज्य आचार्य देव ने अष्टांग योग से उसका तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। आचार्य श्री की इस प्रस्तुति ने यह सिद्ध किया कि योग जैनधर्म साधना का प्रमुख अंग है।

परम पूज्य शिवाचार्य ने आचार्य देव कृत इस मूल्यवान ग्रन्थ का अध्ययन किया। ध्यान योग को मन:-प्राण से समर्पित शिवाचार्य इस ग्रन्थ का अध्ययन करके चमत्कृत बन गए। ध्यान-योग के स्वानुभवों को इस ग्रन्थ

के साथ संयोजित करते हुए पूज्य शिवाचार्य ने इसका प्रकाशन कराया। विद्वद्वर्ग में इस ग्रन्थ को भारी रुचि और उत्साह से पढ़ा गया।

श्री जैन तत्व कलिका विकास

'श्री जैन तत्व कलिका विकास' आचार्य देव श्री आत्माराम जी म. की एक उत्कृष्ट रचना है। इस में जैन तत्व विद्या का स्वरूप सरल और तरल शब्दावली में प्रस्तुत किया गया है। आज से सत्तर वर्ष पूर्व जब हिन्दी भाषा अविकसित अवस्था में थी एस समय आचार्य देव ने पूरे अधिकार के साथ हिन्दी भाषा में इस ग्रन्थ की रचना की। आचार्य देव की इस साहित्य साधना से अध्येता मुमुक्षुओं को तात्विक ज्ञान का एक कोष तो प्राप्त हुआ ही, साथ ही इस ग्रन्थ के उदय से राष्ट्रभाषा हिंदी भी समृद्ध हुई।

परम पूज्य आचार्य देव ने इस ग्रन्थ को नौ कलिकाओं/अध्ययनों में संपन्न किया है। प्रथम से नवम कलिका तक क्रमशः अरिहंत देव स्वरूप, गुरु स्वरूप, धर्म प्रकरण, गृहस्थ धर्म का स्वरूप, श्रावक धर्म का स्वरूप, षडद्रव्य लक्षण, लोक स्वरूप प्रकरण, मोक्ष विषय और जीव-अजीव परिणाम विषयों का विशद और तात्विक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि जैन धर्म और दर्शन का व्याख्यान प्रस्तुत करने वाला यह अद्वितीय और संपूर्ण ग्रंथ रत्न है।

परम पूज्य शिवाचार्य ने इस ग्रन्थ का अध्ययन और मनन किया तथा अपेक्षित संपादन के साथ इसका प्रकाशन संपन्न कराया। भाव, भाषा, संस्करण सुंदरता आदि समस्त दृष्टियों से यह ग्रन्थ ग्रन्थराज का पद सुशोभित करता है।

भारतीय धर्मों में मुक्ति विचार

मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण—ये पर्यायवाची शब्द हैं। सभी का एक ही अर्थ है—मुक्त हो जाना, स्वतंत्र हो जाना। प्रश्न उठता है—किससे मुक्त हो जाना, कौन है जो बन्धनों में बंधा है, और कैसे हैं वे बंधन। विश्व के समस्त धर्म, धर्मगुरु और धर्मशास्त्र इन्हीं प्रश्नों के समाधान में जन्मते, पलते और बढ़ते हैं। समस्त धर्मों, धर्मगुरुओं और धर्मशास्त्रों के अनुसंधान, साधना और व्याख्या का आत्यन्तिक बिन्दु है—मुक्ति।

क्या है मुक्ति? यह एक ज्वलंत प्रश्न है। यह ज्वलंत प्रश्न उसी प्रज्ञा में प्रज्ज्वलित हो सकता है जिसने बंधन के दर्शन को जान लिया है। बंधन का बोध मुक्ति का पथ सृजन करता है। बंधन का बोध प्रथम पात्रता है। इस

पात्रता का निर्माण एक लम्बी साधना से होता है, फिर भले ही वह साधना इस जन्म में साधी गई हो या फिर उसका संबंध पूर्वजन्म से जुड़ा हो।

शिव मुक्ति की प्यास का प्रज्ज्वलित हृदय-पात्र लेकर जन्मे, इस तथ्य के दर्शन हम उनके जीवन-दर्शन में कर चुके हैं। होश संभालते ही शिव का सम्यक् संस्कार कोश विकासमान बनने लगा था। प्रतीत होता था कि पूर्वजन्मों की अधूरी साधना को शिव आगे बढ़ाने को उत्सुक हैं। यह उत्सुकता उनके जीवन के प्रत्येक क्षण में अनुभव की गई। आखिर यही उत्सुकता उनके संन्यास में प्रवेश का कारण बनी।

मुक्ति क्या है ? विभिन्न भारतीय धर्मों में मुक्ति पर कैसा विचार हुआ है? ये प्रश्न शिव के चिन्तन-गगन के प्रज्ज्वलित प्रश्न बन गए। शोध तो एक बहाना था स्वाध्याय का। मूल बात तो मुक्ति के स्वरूप को जानना था। 'भारतीय धर्मों में मुक्ति विचार' इस विषय को आपने स्वाध्याय साधना का केन्द्र बनाया। जैन, बौद्ध, वैदिक और सिख परम्परा के धर्मग्रन्थों का आपने तलस्पर्शी अध्ययन किया। निरंतर छह वर्षों की समाधिस्थ स्वाध्याय के पश्चात् आपने जिस ग्रंथ की रचना की उसका नाम है–'भारतीय धर्मों में मुक्ति।' इसी शोध ग्रन्थ पर पंजाब यूनिवर्सिटी पटियाला ने आपको डॉक्ट्रेट के रूप में सर्वोच्च अकादमिक उपाधि प्रदान की।

'The doctrine of liberation in Indian religion' आप द्वारा लिखित शोध प्रबन्ध का मूल नाम है। जैन धर्म की चारों परम्पराओं के लगभग दस हजार साधु- साध्वियों में आप प्रथम मुनि रहे जिन्होंने सर्वप्रथम डॉक्ट्रेट की उपाधि प्राप्त की। आपके बाद साधु-साध्वी संघ में एक स्वस्थ परम्परा प्रचलित हो गई और आज कई साधु-साध्वी डॉक्ट्रेट की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं।

'भारतीय धर्मों में मुक्ति' अपने विषय का एक उत्कृष्ट ग्रन्थ है। भारतीय विद्वानों के साथ ही पाश्चात्य विद्वानों ने भी इस ग्रन्थ की मुक्त-मन से अनुशंसा की है।

ध्यान : एक दिव्य साधना

देह में रहकर दिव्य की अनुभूति जिस साधन / साधना से संभव है, वह ध्यान है। इसी तथ्य को प्रकट करने के लिए आचार्य श्री ने अपनी इस सृजन साधना को उक्त नाम दिया है। आचार्य श्री मुखर होकर इस बात को भी स्वीकार करते हैं कि ध्यान लेखन अथवा संभाषण का विषय नहीं है।

ध्यान तो एक अवस्था है जिसको सांस-सांस में जीया जाता है। रोटी का विज्ञान जैसे तृप्ति का सुख नहीं बन सकता है वैसे ही ध्यान का विज्ञान आनंद का स्रोत नहीं बन सकता है। रोटी का आहार ही रोटी के दर्शन को सिद्ध करता है, ऐसे ही ध्यान में पैठना ही ध्यान को अनुभव करना हो सकता है।

पर शब्द को सेतु बनाना महापुरुषों की करुणा की विवशता है। 'गुलाब' शब्द की व्याख्या से उसकी सुंदरता और सुगंध तो नहीं मिलती, पर उसकी सूचनाएं तो मिल ही जाती हैं। सूचनाएं भी जिज्ञासा के जागरण का कारण बनती हैं। ध्यान के संबंध में ऐसी ही सूचनाएं प्रस्तुत ग्रन्थ में आचार्य श्री ने प्रस्तुत की है।

'ध्यान : एक दिव्य साधना' नामक ग्रन्थ में तेरह आलेखों को प्रस्तुत किया गया है। वैदिक, बौद्ध और जैन धाराओं में ध्यान के स्वरूप चिंतन का दिग्दर्शन कराया गया है। महर्षि रमण और योगिराज अरविन्द की ध्यान पद्धति पर भी प्रकाश डाला गया है। इससे ध्यान के सम्बन्ध में विशेष जिज्ञासा रखने वाले पाठकों के लिए यह ग्रन्थ विशेष आकर्षण का केन्द्र बन गया है। आगमों में प्रकीर्ण रूप में रहे हुए ध्यान के सूत्रों को एक आलेख में प्रस्तुत किया गया है। इससे पूज्य आचार्यश्री के विशाल अध्ययन और अन्वेषणधर्मी सूक्ष्म प्रज्ञा के दर्शन होते हैं। 'भगवान महावीर की ध्यान साधना' आलेख में भगवान की ध्यान मुद्रा, ध्यान के अवलम्बनों और सहयोगी साधना विधियों पर विशद् प्रकाश डाला गया है।

आचार्य श्री ने ध्यान को साधना का सहज मार्ग और आत्मशुद्धि का परम उपाय माना है। आचार्य श्री कहते हैं–ध्यान का उत्तम फल–आत्मिक आनंद आपको आगे किसी स्वर्ग या मोक्ष में नहीं मिलेगा। बल्कि अभी और यहीं आप आनंद से भर जाएंगे। भोजन करने से जैसे तत्क्षण तृप्ति का सुख अनुभव होता है ऐसे ही ध्यान में प्रवेश लेते ही आप आनंद की अनुभूति में पहुंच जाते हैं।

'ध्यान : एक दिव्य साधना' आचार्य श्री की एक कालजयी कृति है। ध्यान के अभिप्सु पाठकों के लिए इस ग्रन्थ में पर्याप्त सामग्री है। भाषा सरल और शैली मधुर है। पाठक बिना किसी विशेष बौद्धिक व्यायाम के कथ्य को हृदयंगम कर लेता है। इसी ग्रन्थ पर आपको डी.लिट. की उपाधि प्राप्त हुई जो इस ग्रन्थ की मौलिकता और उत्कृष्टता का सहज प्रमाण है।

योग मन संस्कार

परम पूज्य शिवाचार्य द्वारा रचित यह एक मूल्यवान ग्रन्थ है। इसमें विभिन्न विषयों पर प्रवचनांशों को संकलित किया गया है। मानव के आचार, विचार, संस्कार-आहार आदि विषयों पर सूक्ष्म चिंतन प्रस्तुत किया गया है। छोटे-छोटे आलेखों में सुगुंफित यह पुस्तक सद्शिक्षा रूपी पुष्पों के पुष्पाहार के समान है। अज्ञ-विज्ञ पाठक वर्ग में इस पुस्तक को अत्यंत रुचि से पढ़ा गया। इस पुस्तक के अद्यतन कई संस्करण निकल चुके हैं।

ध्यान पथ

ध्यान शिवाचार्य का सर्वाधिक प्रिय विषय है। ध्यान के आप प्रवाचक और शिक्षक ही नहीं हैं बल्कि स्वयं ध्यानयोगी हैं। ध्यान आपका श्वास-उच्छवास है, ध्यान आपकी हृदय की धड़कनों में धड़कता है। आप विश्राम में, विहार में, शयन में, जागरण में, एकान्त में, भीड़ में, संवाद में, मौन में प्रतिक्षण ध्यान में रहते हैं। ध्यान आपका स्वभाव है, इसलिए कायोत्सर्ग अवस्था के बिना भी आप ध्यानस्थ रहते हैं।

'ध्यान पथ' आप द्वारा सृजित ऐसा ग्रन्थ है जिसमें ध्यान पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। इस ग्रंथ में ध्यान का सामान्य परिचय, उद्देश्य और विधियों को सरल शब्दावली में समझाया गया है। धर्म का शुद्ध स्वरूप, सद्गुरु की पहचान, शरण भाव, ओंकार एक अनुचिंतन, सामायिक, मौन, प्रतिक्रमण आदि विषयों को स्पष्ट किया गया है। पुस्तक के अंत में सचित्र योगासनों की प्रस्तुति से पुस्तक का महत्त्व और अधिक बढ़ गया है।

'ध्यान अध्यात्म का परम शिखर है' आचार्य श्री का यह उद्घोष सिद्ध करता है कि ध्यान आत्मरूपांतरण का मंगलमय अनुष्ठान है। प्रवेश पृष्ठ आह्वान आलेख में शिवाचार्य अपनी कलम से लिखते हैं–ध्यान आत्म परिष्कार है, आत्म आविष्कार है। ध्यान से जीवन की धरती पर वे पुष्प सुरभित होते हैं जो निपट आध्यात्मिक सुवास से पूर्ण हैं। इसलिए मैं जगत का आह्वान करता हूं कि ध्यान के माध्यम से धर्म की सुवास से परिचित बनें। 'ध्यान पथ' कोई दार्शनिक अथवा जटिल ग्रन्थ नहीं है। हां जटिल और गूढ़ अध्यात्म विज्ञान का सरल विश्लेषण करने वाली एक पुस्तक है जो अज्ञ विज्ञ सभी के लिए नवीन चिंतन क्षितिज प्रदान करती है।

जिनशासनम्

जिनशासन आत्मानुशासन का राजपथ है। इसे यूं भी कहा जा सकता

है कि स्वयं को अनुशासित करने वाले साधकों का संघ जिनशासन कहलाता है। जिनशासन रूपी सिंहासन के चार पाए हैं–साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका। इन चार सुदृढ़ स्तंभों पर जिनशासन सुशोभित होता है।

तीर्थंकर भगवंत जिनशासन के प्रवर्तक और आचार्य भगवंत उसके संवाहक और संरक्षक होते हैं। क्षेत्र और काल के अनुसार श्रमण संघ के रूप में जिनशासन का धर्मध्वज फहरा रहा है। जैन दर्शन के दर्पण नवतत्त्व में लोक के आलोक धर्म के बिम्ब प्रतिबिम्बित हो रहे हैं। जिनशासन के निर्देशन में करोड़ों भव्य आज भी आत्मानुशासन के आत्म-पथ पर यात्राशील हैं।

शिवाचार्य कृत 'जिनशासनम्' जैन तत्त्व मीमांसा को सरल और तरल रूप में प्रस्तुत करने वाली एक पुस्तिका है जिसमें विषय की विवेचना की अपेक्षा विषय की चेतना को प्रस्तुत किया गया है। इस कृति में धर्म के स्वरूप पर विभिन्न सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में प्रकाश डाला गया है। नवतत्वों का संक्षिप्त परंतु सारगर्भित विवेचन प्रस्तुत किया गया है। श्रमण संघ की व्यवस्था और समन्वय के संगम श्रमण सम्मेलनों का इतिहास भी दिया गया है।

परम पूज्य आचार्य श्री ने जिनशासन नायक आचार्य को संघरथ के सारथी के रूप में उद्धृत करते हुए आचार्य की पात्रता और अर्हता का प्रतिपादन किया है तथा वर्तमान श्रमण संघ की आचार्य परंपरा का परिचय दिया है। संत और श्रावक के स्वरूप पर प्रकाश डालने के पश्चात् अंत में आहार विवेक की बात कहकर कृति की इतिश्री की है। यह ग्रंथ छोटा होते हुए भी जैन दर्शन की आधारभूत सामग्री से संपन्न है।

पढमं नाणं

'पढमं नाणं' नामक पुस्तक में आचार्य सम्राट् श्री शिव मुनि जी महाराज का उस समय का चिन्तन नवनीत संकलित है जब वे एक सिद्धयोगी की भांति एकाग्रचित्त से स्वाध्याय रत थे। अहर्निश साहित्य साधना और आत्म-आराधना में गहरे पैठकर पूज्य श्री ने स्वयं ज्ञान की अनिवार्यता को पहचाना और उसका निरूपण किया। 'भारतीय धर्मों में मुक्ति' विषय पर गहन अध्ययन करते हुए आप इस चिन्तन बिन्दु पर पहुंचे कि ज्ञान ही मुक्ति का प्रथम सोपान है। उसी समय आपने शोध प्रबन्ध के प्रणयन के साथ-साथ तीन कालजयी कृतियों की रचना की, जो उस समय 'पढमं नाणं', 'अनुशीलन' और 'समयं गोयम मा पमायए' नाम से प्रकाशित हुईं। इन लघु कृतियों का

उस समय सामान्य पाठक वर्ग और विद्वद् पाठक वर्ग में स्वागत हुआ। उन तीनों ही कृतियों का प्रमुख विषय एक ही था–पढमं नाणं। उन्हीं तीन कृतियों का संयुक्त संस्करण है प्रस्तुत पुस्तक। प्रस्तुत पुस्तक में जैन आगमों के मूल तत्त्वों–ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप तथा जैन दर्शन के कर्मवाद, अनेकांतवाद, आत्मवाद आदि तत्त्वों पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। यह पुस्तक सभी श्रेणियों के पाठकों के लिए पठनीय है।

अहासुहं देवाणुप्पिया

'अहासुहं देवाणुप्पिया' तीर्थंकर महावीर का विश्रुत वचन है। यह एक स्वीकारात्मक एवं आज्ञात्मक वचन है जिसका अर्थ है–हे देवानुप्रिय! जैसा तुम्हें सुख हो। तीर्थंकर महावीर के धर्मोपदेश को सुनकर जब भी और जिस भी मुमुक्षु ने श्रावक धर्म अथवा श्रमण धर्म में संन्यस्त होने के लिए प्रभु से आज्ञा मांगी तो प्रत्येक के लिए प्रभु का एक ही उत्तर था–अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह। अर्थात् हे देवानुप्रिय! जैसा तुम्हें सुख हो वैसा करो, परन्तु शुभ कार्य में तनिक भी विलम्ब मत करो।

यह पुस्तक अंतगडसूत्र पर आधृत है। अंतगडसूत्र में नब्बे महापुरुषों के चरित्रों का चित्रण हुआ है जिसमें पुन: पुन: 'अहासुहं देवाणुप्पिया' वचन का अनुवर्तन हुआ है। उक्त आगम का मधुरतम वचन होने से पुस्तक के शीर्षक के रूप में यह अत्यंत आकर्षक बन पड़ा है।

शिवाचार्य ने नौ प्रवचनों में अपने कथ्य को कहने का प्रयास किया है। इसके पीछे पर्युषण के आठ दिनों का होना दृष्टिपथ में रखा गया है। आचार्यश्री ने अंतगड के प्रत्येक पक्ष पर सूक्ष्म प्रकाश डाला है। पर आचार्य श्री स्वयं मानते हैं कि जो कहा गया है वह पर्याप्त नहीं है। आचार्य श्री स्वयं लिखते हैं–अंतगड आगम वाङ्मय का बहुमूल्य ग्रन्थ है, उस पर बहुत कुछ कहा जा सकता है। जितना कहो उतना ही कम है। जितना कहोगे अंतत: पाया जाएगा कि इंगित भी ठीक से नहीं कर पाए हैं। अंतगड अक्षय सागर है और मेरा कहा अंजुरी भर है। इसे पूर्ण मत मान लेना। पूर्ण को कहना असंभव है। फिर जितना मैं कह पाया हूं वह उससे भी कम है जितना कहा जा सकता था। अंतगड सूत्र के कई मूल पाठों की मूलार्थ सहित प्रस्तुति ने पुस्तक की उपयोगिता और कथ्य की प्रामाणिकता को सबल आधार प्रदान किया है। विद्वद् वर्ग में प्रस्तुत पुस्तक को विशेष आकर्षण के साथ पढ़ा गया है जो पुस्तक की उपयोगिता को सहज सिद्ध करता है।

शिव धारा

सत्य सहज, सरल और सुगम होता है। सत्य को जानने और जीने के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति स्वयं भी सहज और सरल बने। जहां जटिलता और वक्रता है वहां से सत्य तिरोहित हो जाता है। वहां शृंगार, सजावट और आकर्षण तो हो सकते हैं, पर सत्य नहीं हो सकता है। क्योंकि सत्य की स्थिति और सुस्थिरता के लिए तो सरलता, सहजता और समता आधारभूत अनिवार्यताएं हैं। सत्य की धारा अजस्र बहती है, वह मानव निर्मित उस नदी की भांति कृत्रिम नहीं होती जिसे गति देने के लिए समानांतर अंतराल पर अवरोध, प्रतिरोध और बांध निर्मित किए जाते हैं। वह तो उस दरिया की भांति होती है जो समस्त कृत्रिमताओं से परे उन्मुक्त बहता है, स्वतंत्र और स्वच्छंद विहार करता है।

शिवाचार्य कृत शिवधारा पुस्तक में सत्य की ऐसी ही असंख्य धाराएं प्रवहमान हैं जो दरिया की भांति उन्मुक्त बहती हैं। सरल, सहज और सरस शब्दों में बहता सत्य का यह महानद निश्चित ही पाठकों को परम तृप्ति देगा। क्योंकि प्रस्तुत कृति में न कहीं जटिलता है और न ही कहीं क्लिष्टता है। शब्द-शब्द में सहज सत्य का रस प्रवाहित है। शब्द-शब्द में महाप्राण साधक परम गुरु शिवाचार्य के शिवसंदेश हैं।

अन्तर्यात्रा

इस जगत में प्रत्येक प्राणी यात्री है। अनादिकाल से यह यात्रा चल रही है। जब तक आत्मबोध नहीं जगता है तब तक इस यात्रा की कोई मंजिल नहीं है। आत्मबोध के जागने पर मंजिल पर दृष्टि स्थिर हो जाती है और तब वह यात्रा 'अंतर्यात्रा' कहलाती है। जिस क्षण से जीव की अंतर्यात्रा की शुरूआत होती है उसी क्षण से उसके अंतर में आनंद के निर्झर बहने लगते हैं। अन्तर्यात्रा के द्वारा साधक 'पर' से मुक्त होकर 'स्व' से जुड़ता है और स्व अर्थात् आत्मा आनन्द रूपा है।

शिवाचार्य के स्वयं के शब्दों में–आनन्द आत्मा का निजी स्वरूप और स्वभाव है। उस आनंद को अन्यत्र नहीं खोजा जा सकता है। पदार्थ से आनन्द की खोज बालू से रस निचोड़ने का प्रयास है जो कदापि संभव नहीं हो सकता है। इस बोध की उपलब्धि ही अन्तर्जगत के द्वार पर प्रथम दस्तक है।

प्रस्तुत पुस्तक में अन्तर्जगत की विभिन्न संपदाओं पर पूज्य शिवाचार्य

श्री ने प्रभूत प्रकाश डाला है। पुस्तक में प्रत्येक प्रवचन भाषा, भाव और विषय की दृष्टि से समृद्ध है। 'सरस और स्वस्थ वार्द्धक्य के बीजमंत्र' विषय को दो प्रवचनों में प्रस्तुत किया गया है। आयुष्य के शिखर पर विचर रहे लोगों के लिए ये प्रवचन विशेष पठनीय, मननीय और आचरणीय हैं।

कुल 14 सारगर्भित प्रवचनों में संकलित यह पुस्तक सभी वर्ग के पाठकों के लिए पठनीय है। पदार्थ से अनमने पाठकों के लिए यह पुस्तक अन्तर्यात्रा के प्रवेशद्वार के समान है।

नदी नाव संजोग

तुलसी इस संसार में भांत-भांत के लोग।
सबसे हिलमिल चालिए, नदी नाव संजोग॥

रामचरितमानस के रचयिता तुलसीदास जी के इस दोहे का कथ्य ही इस कृति का विराट सत्य है। इस संसार में भांति-भांति विचारों और संस्कारों वाले लोग हैं, विभिन्न मत-मतांतर हैं, विभिन्न धर्म और सम्प्रदाय हैं, विभिन्न आचार और विचार हैं। सभी के साथ प्रेम और सम्मान का भाव रखते हुए साधक को अपनी मंजिल पर पहुंचना है। साधक को संसार में किस प्रकार रहना चाहिए, अपने भीतर सद्‌गुणों का विकास कैसे करना चाहिए और आत्मा में परमात्मा को कैसे प्रगट किया जा सकता है आदि उपायों का सरल कथात्मक शैली में वर्णन किया गया है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, भावना योग, संवेग, निर्वेद, अवैर, अप्रमाद, मैत्रिभाव आदि आगमीय संदेशों को पदों, दोहों, गाथाओं और संक्षिप्त दृष्टांतों में पिरोकर प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक में पच्चीस आलेख संकलित हैं, सरल, सरस शब्दावली में गूढ़ आध्यात्मिक रहस्यों से पाठक सहज ही तादातम्य स्थापित कर लेता है।

मा पमायए

'मा पमायए' तीर्थंकर महावीर का वह संदेश/उपदेश है जिसका उपयोग वे जीवन भर करते रहे। मा पमायए अर्थात् प्रमाद मत करो। 'प्रमाद' इस शब्द का व्यवहार जैन आगमों में दो अर्थों में हुआ है–(1) आलस्य और 2. पाप। वस्तुत: आलस्य अपने आप में पाप ही है।

इस पुस्तक की भूमिका में आचार्य देव स्वयं कहते हैं–जगत में जितने भी बुद्धपुरुष हुए हैं उन सबका जगत के लिए एक ही संदेश रहा है–मा पमायए। किसी भी जागृत पुरुष ने जगत को जागरण के संदेश के अतिरिक्त

कुछ नहीं दिया है। परंतु उन परम पुरुषों का यह संदेश ही–यह पुकार ही परम अवदान है जगत के लिए। क्योंकि इसके अतिरिक्त कुछ भी आदान-प्रदान जैसा नहीं है।

'मा पमायए' इस सूत्र के आलोक में आचार्य श्री भी जगत् को अप्रमाद/जागरण का संदेश देते हैं। ग्यारह प्रवचनों के इस संकलन के भले ही विषय विविध रहे हों, पर मूल संदेश जागरण ही रहा है। कहावत है जो जागा सो पाया। वस्तुतः जागना ही पाना है। क्योंकि बाहर में पाने योग्य कुछ भी नहीं है। व्यक्ति अपनी आत्मा के भीतर ही परमात्मा जैसी परम संपदा का स्वामी है। उसका बोध जग जाना ही उसे पा लेना है। पुस्तक में संकलित प्रवचनों की भाषा प्रांजल और प्रवाहमयी है। पाठक को औपन्यासिक सरसता और उत्सुकता अंत तक बांधे रखती है।

अमृत की खोज

'अमृत' मानव मन की सघनतम अभिप्सा है। मनुष्य अमर होना चाहता है, क्योंकि मृत अर्थात् मृत्यु उसे अप्रिय है। मनस् विज्ञान कहता है–मानव का मन प्रतिपल मृत्यु से भयभीत रहता है और मृत्यु से पार जाने के लिए, अथवा मृत्यु से मुक्ति के लिए कल्पनाशील रहता है। मानव मन की यही कल्पनाशीलता सिद्ध करती है अमृत के अस्तित्व को। परंतु पदार्थ के जगत् में अमृत का अस्तित्व सच नहीं है। यदि वह सच होता तो कुछ ऐसे लोग आज विद्यमान होते जिन्होंने अमृतपान किया है।

बाह्य जगत में अमृत का अस्तित्व असत्य है। पर इससे यह नहीं मान लेना चाहिए कि अमृत एक कल्पना-सृजित शब्द है। अमृत मनुष्य के भीतर मौजूद है। मानव मन अमृत को धारण करने वाला स्वर्णघट है। सरलता, निर्मलता, पवित्रता आदि मानव मन के सद्गुण ही अमृत हैं। इन सद्गुणों का हृदयघट में आत्यंतिक विकास ही अमृत की साधना अथवा अमृत की खोज है। परम पूज्य शिवाचार्य की कृति–'अमृत की खोज' अपने हृदय में अमृत रूपा सद्गुणों के विकास की प्रेरणा देती है। सात प्रवचनों में संकलित इस पुस्तिका का एक-एक शब्द अमृत के एक-एक निर्झर के समान है। प्रत्येक प्रवचन के प्रत्येक शब्द में शिवाचार्य को पाठक अपने आस-पास पाते हैं। नदी की अजस्र धारा के समान प्रवाहमयी भाषा-शैली पाठक को कहीं भी उबने नहीं देती है।

उपनिषद् के ऋषियों ने कहा–प्रभु! मुझे मृत्यु से अमृत/अमरत्व की

ओर ले चलो। शिवाचार्य कहते हैं–मित्रो! अमृत के अक्षय निधान तुम स्वयं हो। कहीं जाने की जरूरत नहीं है, किसी सहारे की आवश्यकता नहीं है। स्वयं में लौटना और स्वयं को टटोलना ही पर्याप्त है। तुम पाओगे कि अमृतघट तुम्हारे अधरों की बाट जोह रहा है।

आ घर लौट चलें

मानव का घर कहीं बाहर नहीं है। उसकी आत्मा ही उसका घर है। मानव जब तक आत्मघर में नहीं लौटता है तब तक उसे सम्यक् विश्राम प्राप्त नहीं हो सकता है। ईंटों और पत्थरों से निर्मित घर वस्तुत: घर नहीं है। वह एक सराय से अधिक नहीं है जहां कुछ समय ठहर कर व्यक्ति विदा हो जाता है। 'आ घर लौट चलें' इस प्रवचन पुस्तक में शिवाचार्य आत्मघर में लौटने की बात कहते हैं। सात प्रवचनों के इस संकलन में विषय भले ही विभिन्न हैं, पर सभी विषय स्वयं में लौट आने के मूल दर्शन की पोषणा करते हैं। भाव और भाषा की दृष्टि से यह पुस्तक अत्यंत समृद्ध है। इसे पढ़ते हुए पाठक पाता है कि इस का प्रत्येक शब्द उसी के लिए कहा गया है।

संबुज्झह किं ण बुज्झह

सम्बोधि जीवन से महाजीवन में प्रवेश का द्वार है, सम्बोधि आत्मा से परमात्मा के परिणय-सूत्र का परम-सूत्र है। सम्बोधि प्राणों में महाप्राण के अवतरण का परम उपाय है। सम्बोधि के सधते ही नर में नारायण जाग जाता है, आत्मा में परमात्मा अवतरण ले लेता है, शव में शिव उतर आता है।

सम्बोधि अमृत का मूल और समस्त साधना का सार-सूत्र है। संबोधि परम संपदा है। समस्त संपदाएं सम्बोधि की संपदा के समक्ष तुच्छ और नि:सार हैं। संबोधि रूप यही संपदा आदीश्वर प्रभु ऋषभदेव ने अपने अठानवें पुत्रों को दी थी जिसे प्राप्त कर वे परम संबुद्ध अवस्था को उपलब्ध हो गए।

सूत्रकृतांग के सूक्त–'संबुज्झह किं ण बुज्झह' का संदेश/उद्‌बोधन पूज्य शिवाचार्य ने प्रस्तुत पुस्तक में दिया है। पुस्तक के अठारह ही प्रवचनों में आचार्य श्री जागरण का संदेश देते प्रतीत होते हैं। सत्य, सरलता, समता, मनुष्यता, सम्यक्‌दर्शन, अमूर्च्छा, मोक्ष आदि समीचीन विषय आचार्य श्री के चिंतन और वचन में निबद्ध बनकर अत्यंत सरल, सरस और सुगम बन गए हैं।

सद्गुरु महिमा

इस पुस्तक में देव, गुरु और धर्म की महिमा-गरिमा, गुरु के गुण-गौरव, सद्‌गुरु के लक्षण, जीवन में सद्‌गुरु की आवश्यकता आदि विचार बिन्दुओं पर संक्षिप्त किन्तु हृदयग्राही विवेचन हुआ है। परम पूज्य आचार्य श्री के प्रवचनों से उद्‌धरण एकत्रित करके पंडित मुनि श्री नेमिचंद जी ने इस पुस्तक का संकलन किया है। छह प्रवचनों का संकलन भाव और भाषा की दृष्टि से काफी समृद्ध है।

अध्यात्म सार

'अध्यात्म सार' प्रथम अंग आचारांग के अमृत सूत्रों पर आचार्य श्री शिव मुनि जी महाराज द्वारा प्रस्तुत तात्विक विश्लेषण का संकलन है। इस विश्लेषण में आत्मसाधना के अंतरंग पक्ष पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है। आचार्य श्री ने आचारांग के सूत्रों में बिखरे ध्यान तथा आत्मसाधना के तत्त्वों का स्पर्श कर उनके मौलिक अर्थों को प्रकट किया है। आचारांग जैसे विशाल और गुरु-गंभीर आगम में प्रवेश के लिए प्रस्तुत आलेख एक प्रवेशद्वार के रूप में सिद्ध हुआ है।

इस पुस्तक को आध्यात्मिक-चिंतन का अमृत कोश कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। पुस्तक के शब्द-शब्द में आचार्य श्री की साधना-सुगंध को स्पष्ट अनुभव किया जा सकता है। साहित्यिक पक्ष की तुलना में इसका भाव पक्ष अत्यंत समृद्ध है। अध्ययन के साथ-साथ गूढ़ आगमीय रहस्य स्वत: अनावृत्त होते चले जाते हैं। साथ ही साधना के अंत:-बाह्य आधारों और सहायक तत्त्वों पर भी विशद चिंतन हुआ है जिससे पाठक सामान्य सी दिखाई देने वाली बातों के अंत:पक्ष को सहज ही समझ सकते हैं।

प्रकाश पुंज महावीर

तीर्थंकर महावीर के जीवन पर प्रकाश डालने वाली यह एक लघुकृति है। एक ऐसी सरल कृति जिसे पाठक प्रारंभ करते ही अंत तक पढ़ना चाहता है। थोड़े से पृष्ठों में पूज्य आचार्य श्री ने तीर्थंकर महावीर के विराट व्यक्तित्व को ऐसे निबद्ध कर दिया है जैसे कुशल मालाकार छोटे से पुष्पाहार में विविधवर्णी सुगंधित पुष्पों को पिरो देता है। अज्ञ-विज्ञ मुमुक्षुओं के लिए आराध्य देव महावीर के जीवन को जानने के लिए यह पुस्तिका अत्यंत उपयोगी है।

❖ ❖ ❖

प रि शि ष्ट

परिशिष्ट-१

पट्ट परम्परा
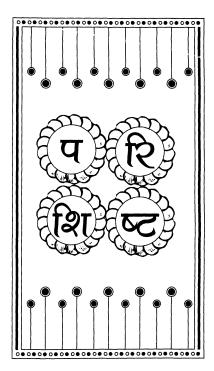
पंचविहं आयारं आयरमाणा तहा पभासंता।
आयारं देसंता आयरिया तेण वुच्चंति॥

पंचविध आचार का जो स्वयं पालन करते हैं, दूसरों को कथन करते हैं, स्वयं आचरण द्वारा दूसरों को प्रदर्शित करते हैं, उन्हें आचार्य कहा जाता है।

उपरोक्त सूत्र से स्पष्ट है कि सामान्य श्रमण से आचार्य का दायित्व बहुत विशाल होता है। सामान्य श्रमण का दायित्व स्वयं के आचार पालन तक सीमित होता है। आचार्य का दायित्व होता है कि वह स्वयं पंचाचार की आराधना और साधना में निष्णात हो तथा समग्र संघ को पंचाचार की साधना और आराधना हेतु प्रेरित करने वाला हो।

जैसे राजनीति में राज्य संचालन के लिए, अर्थात् मानवीय अधिकारों के पोषण और रक्षण के लिए राजा की आवश्यकता होती है ऐसे ही धर्मशासन में देश-कालानुसार नियम निर्धारण और पालन करने व कराने के लिए आचार्य की आवश्यकता होती है। आचार्य के नेतृत्व में धर्मसंघ प्रगतिमान होता है।

जैन धर्म परम्परा में आचार्य परम्परा उसके प्रवर्तनकाल से ही प्रवहमान रही है। आगमीय प्रमाणानुसार जैन धर्म अनादिकालीन धर्म है। प्रत्येक कालचक्र में जैन धर्म प्रवर्तित होता है। उसके प्रवर्तक को तीर्थंकर कहा जाता है। वर्तमान अवसर्पिणीकाल के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव और अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर थे। दोनों तीर्थंकरों के मध्य में बावीस अन्य तीर्थंकर हुए। जंबूद्वीप के अंतर्गत भरत क्षेत्र की मर्यादानुसार यहां पर प्रत्येक अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी में 24-24 तीर्थंकर होते हैं।

तीर्थंकरों की विद्यमानता में उनके प्रमुख शिष्य धर्मसंघ का नेतृत्व

करते हैं। वे प्रमुख शिष्य गणधर कहलाते हैं। तीर्थंकरों के महाप्रयाण के पश्चात् धर्मसंघ का नेतृत्व करने वाले महापुरुष को आचार्य कहा जाता है।

तीर्थंकर ऋषभदेव से लेकर तीर्थंकर महावीर तक के मध्यवर्ती कालखण्ड में असंख्य आचार्य हुए। पौराणिक कथा साहित्य में अनेक आचार्यों के नाम भी प्राप्त होते हैं। पर समग्र आचार्य-परम्परा को खोज पाना अतीन्द्रिय ज्ञानी के लिए ही संभव है।

तीर्थंकर ऋषभदेव से लेकर तीर्थंकर महावीर तक कुल चौबीस तीर्थंकर हुए। उक्त चौबीस तीर्थंकरों की पवित्र नामावली इस प्रकार है–

1. तीर्थंकर श्री ऋषभदेव जी
2. तीर्थंकर श्री अजितनाथ जी
3. तीर्थंकर श्री संभवनाथ जी
4. तीर्थंकर श्री अभिनंदननाथ जी
5. तीर्थंकर श्री सुमतिनाथ जी
6. तीर्थंकर श्री पद्मप्रभ जी
7. तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ जी
8. तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभ जी
9. तीर्थंकर श्री सुविधि नाथ जी
10. तीर्थंकर श्री शीतलनाथ जी
11. तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथ जी
12. तीर्थंकर श्री वासुपूज्य जी
13. तीर्थंकर श्री विमलनाथ जी
14. तीर्थंकर श्री अनंतनाथ जी
15. तीर्थंकर श्री धर्मनाथ जी
16. तीर्थंकर श्री शांतिनाथ जी
17. तीर्थंकर श्री कुंथुनाथ जी
18. तीर्थंकर श्री अरनाथ जी
19. तीर्थंकर श्री मल्लीनाथ जी
20. तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत जी
21. तीर्थंकर श्री नमिनाथ जी
22. तीर्थंकर श्री अरिष्टनेमि जी
23. तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ जी
24. तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी जी

भगवान ऋषभदेव से लेकर भगवान अजितनाथ जी के मध्य का समय भगवान ऋषभदेव का शासन काल कहलाया। ऐसे ही भगवान अजितनाथ जी से लेकर भगवान संभवनाथ जी तक का काल भगवान अजितनाथ जी का शासन काल कहलाया। इसी क्रम से वर्तमान काल भगवान महावीर का शासन काल कहलाता है।

भगवान महावीर की विद्यमानता में उनके प्रमुख ग्यारह शिष्यों-गणधरों ने धर्मसंघ का नेतृत्व किया।

उक्त ग्यारह गणधरों की पवित्र नामावली इस प्रकार है–

1. श्री इन्द्रभूति जी (गौतम स्वामी जी),

2. श्री अग्निभूति जी	3. श्री वायुभूति जी
4. श्री व्यक्त स्वामी जी	5. श्री सुधर्मा स्वामी जी
6. श्री मण्डितपुत्र जी	7. श्री मौर्यपुत्र जी
8. श्री अकंपित जी	9. श्री अचलभ्राता जी
10. श्री मेतार्य जी	11. श्री प्रभास जी

भगवान महावीर की विद्यमानता में ही प्रथम गणधर श्री इन्द्रभूति गौतम एवं पंचम गणधर श्री सुधर्मा स्वामी के अतिरिक्त नौ गणधर मोक्ष को प्राप्त हो गए। अत: उक्त दो गणधरों ने सकल धर्मसंघ का नेतृत्व किया। कालांतर में तीर्थकर महावीर निर्वाण को उपलब्ध हुए। जिस रात्रि में तीर्थंकर महावीर निर्वाण को उपलब्ध हुए, उस रात्रि के व्यतीत होते ही प्रथम गणधर इन्द्रभूति गौतम कैवल्य को उपलब्ध हो गए। केवली संघ का नेतृत्व नहीं करते यह शाश्वत नियम है। अत: ग्यारह ही गणों का नेतृत्व पंचम गणधर आर्य सुधर्मा स्वामी जी ने किया। इस प्रकार तीर्थंकर महावीर के धर्मसंघ के प्रथम अनुशास्ता / आचार्य आर्य श्री सुधर्मा स्वामी जी हुए।

सुधर्मा स्वामी जी से लेकर वर्तमान तक जिनशासन नायक आचार्यों की एक अजस्र परम्परा रही है। इस महती महनीया आचार्य परम्परा में एक से एक प्रभावशाली और महान आचार्य हुए हैं। तीर्थंकर महावीर के शासन के प्रथम आचार्य आर्य सुधर्मा से लेकर वर्तमान आचार्य प्रवर श्री शिवमुनि जी म. तक की पट्ट-परम्परा की तालिका यहां प्रस्तुत की जा रही है-

केवलिकाल 'वीर निर्वाण संवत् 1 से 64'

	आचार्य का नाम	आचार्य काल
1.	आर्य सुधर्मा स्वामी	वीर निर्वाण संवत् 1 से 20
2.	आर्य जम्बू स्वामी	वीर निर्वाण संवत् 20 से 64
	श्रुत केवली-काल 'वीर निर्वाण संवत् 64 से 170'	
3.	आचार्य प्रभव स्वामी	वीर निर्वाण संवत् 64 से 75
4.	आचार्य शय्यंभव स्वामी	वीर निर्वाण संवत् 75 से 98
5.	आचार्य यशोभद्र स्वामी	वीर निर्वाण संवत् 98 से 148
6.	आचार्य संभूतविजय स्वामी	वीर निर्वाण संवत् 148 से 156
7.	आचार्य भद्रबाहु स्वामी	वीर निर्वाण संवत् 156 से 170

पूर्वधर काल 'वीर निर्वाण संवत् 170 से 985'

8.	आचार्य स्थूलभद्र	वीर निर्वाण संवत् 170 से 215
9.	आचार्य आर्य महागिरी	वीर निर्वाण संवत् 215 से 245
10.	श्री बलसिंह स्वामी	वीर निर्वाण संवत् 245 से 303
11.	श्री सुवन्न स्वामी	वीर निर्वाण संवत् 303 से 332
12.	श्री वीर स्वामी	वीर निर्वाण संवत् 332 से 376
13.	श्री स्थंडिल स्वामी	वीर निर्वाण संवत् 376 से 409
14.	श्री जीतधर स्वामी	वीर निर्वाण संवत् 409 से 445
15.	श्री आर्य समद	वीर निर्वाण संवत् 445 से 506
16.	श्री नन्दला स्वामी	वीर निर्वाण संवत् 506 से 591
17.	श्री नागहस्ति	वीर निर्वाण संवत् 591 से 664
18.	श्री रेवन्त स्वामी	वीर निर्वाण संवत् 664 से 716
19.	श्री सिंहगणि स्वामी	वीर निर्वाण संवत् 716 से 780
20.	श्री स्थंडिलाचार्य	वीर न्र्विाण संवत् 780 से 814
21.	श्री हेमवन्त स्वामी	वीर निर्वाण संवत् 814 से 848
22.	श्री नागजिन स्वामी	वीर निर्वाण संवत् 848 से 875
23.	श्री गोबिन्द स्वामी	वीर निर्वाण संवत् 875 से 877
24.	श्री भूतदिन्न स्वामी	वीर निर्वाण संवत् 877 से 914
25.	श्री छोहगणि स्वामी	वीर निर्वाण संवत् 914 से 942
26.	श्री दुष्यगणि स्वामी	वीर निर्वाण संवत् 942 से 960
27.	श्री देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण	वीर निर्वाण संवत् 960 से 985

सामान्य श्रुतधर काल 'वीर निर्वाण संवत् 985 से वर्तमान तक'

28.	श्री वीरभद्र स्वामी	वीर निर्वाण संवत् 985 से 1064
29.	श्री शंकरभद्र स्वामी	वीर निर्वाण संवत् 1064 से 1094
30.	श्री जसभद्र स्वामी	वीर निर्वाण संवत् 1094 से 1116
31.	श्री वीरसेन स्वामी	वीर निर्वाण संवत् 1116 से 1132
32.	श्री वीरग्राम सेन स्वामी	
33.	श्री जिनसेन स्वामी	

34. श्री हरिषेण स्वामी — वीर निर्वाण संवत् 1167 से 1197
35. श्री जयसेन स्वामी — वीर निर्वाण संवत् 1197 से 1223
36. श्री जगमाल स्वामी — वीर निर्वाण संवत् 1223 से 1229
37. श्री देवर्षिजी स्वामी — वीर निर्वाण संवत् 1229 से 1234
38. श्री भीम ऋषिजी स्वामी — वीर निर्वाण संवत् 1234 से 1263
39. श्री कर्म जी स्वामी
40. श्री रामऋषि जी स्वामी — वीर निर्वाण संवत् 1284 से 1299
41. श्री देवसेन जी — वीर निर्वाण संवत् 1299 से 1324
42. श्री शंकर सेन जी — वीर निर्वाण संवत् 1324 से 1354
43. श्री लक्ष्मीलाभ जी स्वामी — वीर निर्वाण संवत् 1354 से 1371
44. श्री रामरिष जी स्वामी — वीर निर्वाण संवत् 1371 से 1402
45. श्री पद्मसूरि जी स्वामी — वीर निर्वाण संवत् 1402 से 1434
46. श्री हरिसेन जी स्वामी — वीर निर्वाण संवत् 1434 से 1461
47. श्री कुशलदत्त जी स्वामी — वीर निर्वाण संवत् 1461 से 1474
48. श्री जीवन ऋषि जी — वीर निर्वाण संवत् 1474 से 1494
49. श्री जयसेन जी स्वामी — वीर निर्वाण संवत् 1494 से 1524
50. श्री विजय ऋषि जी — वीर निर्वाण संवत् 1524 से 1589
51. श्री देवऋषि जी स्वामी — वीर निर्वाण संवत् 1589 से 1644
52. श्री सूरसेन स्वामी — वीर निर्वाण संवत् 1644 से 1708
53. श्री महासूरसेन स्वामी — वीर निर्वाण संवत् 1708 से 1738
54. श्री महासेन जी स्वामी — वीर निर्वाण संवत् 1738 से 1758
55. श्री जयराम जी स्वामी — वीर निर्वाण संवत् 1758 से 1779
56. श्री गजसेन जी स्वामी — वीर निर्वाण संवत् 1779 से 1806
57. श्री मिश्रसेन जी स्वामी — वीर निर्वाण संवत् 1806 से 1842
58. श्री विजयसिंह जी स्वामी — वीर निर्वाण संवत् 1842 से 1913
59. श्री शिवराज ऋषि जी — वीर निर्वाण संवत् 1913 से 1957
60. श्री लालजी मल स्वामी — वीर निर्वाण संवत् 1957 से 1987
61. श्री ज्ञानजी ऋषि स्वामी — वीर निर्वाण संवत् 1987 से 2007

62. श्री भानुलूणा जी स्वामी
63. श्री पुरुरूप जी स्वामी वीर निर्वाण संवत् 2032 से 2052
64. श्री जीवराज जी स्वामी वीर निर्वाण संवत् 2052 से 2057
65. श्री भावसिंह जी स्वामी वीर निर्वाण संवत् 2057 से 2065
66. श्री लघुवर सिंह जी स्वामी वीर निर्वाण संवत् 2065 से 2075
67. श्री यशवन्त सिंह जी वीर निर्वाण संवत् 2075 से 2086
68. श्री रूपसिंह जी स्वामी वीर निर्वाण संवत् 2086 से 2106
69. श्री दामोदरजी स्वामी वीर निर्वाण संवत् 2106 से 2126
70. श्री धनराज जी स्वामी वीर निर्वाण संवत् 2126 से 2148
71. श्री चिन्तामण जी स्वामी वीर निर्वाण संवत् 2148 से 2163
72. श्री खेमकरण जी स्वामी वीर निर्वाण संवत् 2163 से 2168
73. श्री धर्मसिंह जी स्वामी
74. श्री नगराज जी स्वामी
75. श्री जयराज जी स्वामी
76. श्री लवजी ऋषि स्वामी
77. श्री सोमजी ऋषि स्वामी
78. पूज्य श्री हरिदास जी म.
79. पूज्य श्री वृन्दावनलाल जी ऋषि
80. श्री भवानीदास जी म.
81. पूज्य आचार्य श्री मलूकचन्द्र जी म.
82. आचार्य श्री महासिंह जी म.
83. पूज्य श्री कुशलचंद जी म.
84. पूज्य श्री छजमल जी ऋषि
85. पूज्य श्री रामलाल जी म.
86. पूज्य आचार्य श्री अमरसिंह जी म.
87. आचार्य श्री रामबख्श जी म.
88. आचार्य श्री मोतीराम जी म.
89. युग प्रधान आचार्य श्री सोहनलाल जी म.

90. आचार्य श्री काशीराम जी म.
91. आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म.
92. आचार्य सम्राट् श्री आनंद ऋषि जी म.
93. आचार्य सम्राट् श्री देवेन्द्र मुनि जी म.
94. आचार्य सम्राट् श्री शिव मुनि जी म.

परम पूज्य ध्यान योगी आचार्य सम्राट् श्री शिव मुनि जी म. तीर्थंकर महावीर के धर्म शासन की पट्ट परम्परा के 94वें आचार्य हैं। पूर्ववर्ती सभी आचार्यों ने जिनशासन की प्रभूत प्रभावना की है। उसी कड़ी में वर्तमान शासन नायक जिनशासन की प्रभावना कर रहे हैं। आपश्री का ध्यान के रूप में विशेष अवदान रहा है। आपश्री ने श्रमण परंपरा में मंद पड़ रही ध्यान की ज्योति को पुन: प्रखर रूप में प्रज्ज्वलित किया है।

परम पूज्य आचार्य देव के अनुशासन में जिनशासन उन्नति के शिखर पर आरूढ़ है। संघ में साधनात्मक एवं समन्वयात्मक विकास आपश्री के नेतृत्व में निरंतर प्रगतिमान रहेगा इसके लिए सकल संघ पूर्ण विश्वस्त है।

❖❖❖

परिशिष्ट-२

गुरु परंपरा : संक्षिप्त परिचय

अनन्त जीवन पथ पर सद्‌गुरु से भेंट परम सौभाग्य का क्षण है। सद्‌गुरु से भेंट से व्यक्ति के जीवन में प्रकाश की एक किरण का जन्म होता है। प्रकाश की वह किरण उसके आगामी जीवन का पथ प्रशस्त करने वाली सिद्ध होती है। उस भेंट के पश्चात् उसके जीवन की दशा और दिशा में एक गुणात्मक परिवर्तन पैदा हो जाता है। सद्‌गुरु से प्राप्त वह प्रकाश-किरण ही अंततः उसके लिए परम प्रकाश रूप मोक्ष का द्वार सिद्ध होती है।

सद्‌गुरु शिष्य के तृतीय नेत्र का उद्‌घाटन करता है, जिसके उद्‌घाटित होने पर शिष्य शिव-पथ का यात्री बन जाता है। उसमें शेष शव का विलीनीकरण हो जाता है। अन्त में वह शिव रूप शेष बचता है।

सद्‌गुरु के स्वरूप का वर्णन करते हुए रायचंद भाई कहते हैं-

सद्‌गुरु की महिमा अनन्त, अनन्त किया उपकार।
लोचन अनन्त उघाड़िया, अनन्त दिखावणहार॥

सद्‌गुरु अनन्त महिमामय हैं। सद्‌गुरु से बड़ा उपकारी अन्य कोई नहीं है।

महात्मा कबीर भी सद्‌गुरु से ऊपर किसी को नहीं मानते। परमात्मा को भी नहीं। उनका प्रख्यात पद है-

गुरु गोबिन्द दोउ खड़े, काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपनो, जिन गोबिन्द दियो बताय॥

गुरु की महिमा ईश्वर से भी बड़ी है। उसका कारण स्पष्ट है कि ईश्वर का पता गुरु से ही प्राप्त होता है।

अनन्त अतीत से वर्तमान तक जितने भी भव्य जीवों ने परमपद प्राप्त किया है तथा जितने भी भव्य जीव परमपद प्राप्ति की दिशा में यात्राशील हैं

उन्हें सम्बोधि का प्रथम सूत्र सद्‌गुरु से ही प्राप्त हुआ है। प्रस्तुत भूमिका के साथ श्रद्धेय आचार्य प्रवर गुरुदेव श्री शिव मुनि जी महाराज को जिस सद्‌गुरु से सम्बोधि का सूत्र प्राप्त हुआ तथा प्रव्रज्या में प्रवेश प्राप्त हुआ उस सद्‌गुरु एवं गुरु-परम्परा का परिचय अपेक्षित है।

प्रश्न उपस्थित होता है कि गुरु-परम्परा का आदि स्रोत कौन हैं? उत्तर में निवेदन है कि गुरु-परम्परा का आदि स्रोत भगवान ऋषभदेव हैं। भगवान ऋषभदेव से लेकर भगवान महावीर तक और भगवान महावीर से लेकर पंजाब परम्परा के आद्य आचार्य श्री अमरसिंह जी म. तक, तथा वर्तमान तक सद्‌गुरु परम्परा का प्रवाह प्रवाहित है। वह पावन प्रवाह आगे भी यथावत् प्रवाहित रहेगा।

संक्षेप शैली की सीमाओं को स्वीकार करते हुए मैं गुरु परम्परा का संक्षिप्त परचिय पंजाब परम्परा के आद्य आचार्य श्री अमरसिंह जी म. से प्रारंभ करता हूं।

यह भी ऐतिहासिक सच है कि परमपूज्य आचार्य प्रवर श्री अमर सिंह जी म. से पूर्व भी पंजाब में जैन धर्म का प्रचार-प्रसार था। पूज्य जैन श्रमण-श्रमणियां काफी प्राचीन समय से इस क्षेत्र में विचरण कर धर्म प्रचार करते रहे हैं। कुछ इतिहासकारों ने तो इस दिशा में काफी अन्वेषण किए हैं और सिद्ध किया है कि तीर्थंकर महावीर का विचरण भी पंजाब में हुआ है।

अस्तु! गुरु-परम्परा के परिचय क्रम में हम सर्वप्रथम शेरे पंजाब श्री अमरसिंह जी म. का संक्षिप्त जीवनवृत्त यहां प्रस्तुत कर रहे हैं।

शेरे पंजाब आचार्य श्री अमरसिंह जी म.

पंजाब श्रमण संघ गौरव आचार्य श्री अमरसिंह जी म. पंजाब परंपरा के एक तेजस्वी आचार्य थे। उत्तर भारत का समस्त मुनि मण्डल आचार्य श्री अमरसिंह जी म. के शिष्यानुशिष्य क्रम से ही विकसित एवं फलित हुआ है।

परम पूज्य आचार्य प्रवर का जन्म अमृतसर नगर में वि.सं. 1862, वैशाख कृष्णा द्वितीया को हुआ था। आपके पूज्य पिता का नाम श्री बुधसिंह जी तातेड़ एवं माता का नाम श्रीमती कर्मादेवी था। 16 वर्ष की अवस्था में आपका विवाह ज्वालादेवी नामक कन्या से सम्पन्न हुआ। कालक्रम से आपको पांच संतान हुईं, जिनमें दो पुत्रियां एवं तीन पुत्र थे।

आपके वैराग्य का कारण रहा–पुत्र विरह। प्रथम और द्वितीय पुत्र स्वल्पायु में ही चल बसे। तृतीय पुत्र आठ वर्ष का हुआ तो उसका भी निधन हो गया। इस घटना ने आपके हृदय को दहला दिया। जीवन की नश्वरता का दर्शन आपके लिए आत्मदर्शन का द्वार बन गया। संसार से मन उचट गया और आपश्री दिल्ली बारादरी में विराजित पंडितरत्न श्री रामलाल जी म. के सान्निध्य में पहुंच गए। पूज्य पंडित जी म. के सान्निध्य में आपश्री ने ज्ञान-ध्यान की आराधना की और उसकी परिपक्वता पर संवत् 1898, वैशाख कृष्ण द्वितीया के दिन बारादरी में आर्हती दीक्षा धारण की।

मुनिवर श्री अमरसिंह जी म. ने आगम वाङ्मय का पारायण किया। आप प्रतिभासंपन्न और प्रभावशाली मुनिराज बने। आपकी वक्तृत्व कला काफी प्रभावक थी। उत्तर भारत के अतिरिक्त राजस्थान और मध्यप्रदेश तक आपश्री ने विचरण कर जैन धर्म की महान प्रभावना की।

परम पूज्य श्री अमरसिंह जी म. ने उत्तर भारत में जिनत्व की चेतना को अतिशयी रूप में जागृत किया। आपके सान्निध्य में बारह मुमुक्षुओं ने जिनदीक्षा धारण की। शिष्य परिवार में प्रभूत वृद्धि हुई। आपके विराट व्यक्तित्व के कारण तत्कालीन मुनियों और जैन संघों ने मिलकर आपश्री को आचार्य पाट पर मनोनीत किया। संवत् 1913 वैशाख कृष्ण द्वितीया के दिन चांदनी चौक बारादरी में आचार्य पद पर आपश्री का अभिषेक हुआ।

परम पूज्य आचार्य श्री अमरसिंह जी म. उत्तर भारत के जैन क्षितिज पर सूर्य बनकर चमके। 76 वर्ष की अवस्था में सं. 1938, आषाढ़ शुक्ल द्वितीया के दिन पूर्ण समाधिभाव पूर्वक अमृतसर नगर में आपश्री ने नश्वर देह का परित्याग किया।

आपश्री के 12 शिष्य हुए जिनकी पवित्र नामावली निम्न प्रकार से है–

1. श्री मुश्ताक राय जी म.
2. श्री गुलाबराय जी म.
3. श्री विलासराय जी म.
4. श्री रामबख्श जी म.
5. श्री सुखदेव राम जी म.
6. श्री मोतीराम जी म.
7. श्री मोहनलाल जी म.
8. श्री खेताराम जी म.
9. श्री रतनचंद जी म.
10. श्री खूबचंद जी म.
11. श्री बालकराम जी म.
12. श्री राधाकृष्ण जी म.

उत्तर भारत का समस्त मुनि संघ उपरोक्त बारह मुनिराजों का शिष्यानुशिष्य मुनि परिवार है।

आचार्य श्री मोतीराम जी महाराज

गुरु परम्परा के क्रम में आचार्य श्री अमरसिंह जी म. के छठे शिष्य आचार्य श्री मोतीराम जी म. का परिचय अभीष्ट है।

परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री मोतीराम जी म. का जन्म लुधियाना के निकटवर्ती ग्राम बहलोलपुर में वि.सं. 1878 आषाढ़ शुक्ल पंचमी के दिन क्षत्रिय कुल में हुआ। आपके पिता का नाम श्रीमान् मुसद्दी लाल जी एवं माता भगवती का नाम श्रीमती जशवंती देवी था। उक्त क्षत्रिय कुल में धर्म संस्कारों का पर्याप्त विकास था। शिशु मोतीराम को धर्म संस्कार विरासत में प्राप्त हुए।

युवा होने पर मोतीराम ने लुधियाना को अपनी कर्मस्थली के रूप में चुना। क्षत्रिय स्वभाव के विपरीत आपने व्यवसाय प्रारंभ किया। परंतु व्यवसाय में मन नहीं रमा। आपकी दुकान व्यवसाय का कम और धर्मचर्चा का प्रमुख केन्द्र बन गई। श्री रतनचंद जी, श्री मोहनलाल जी एवं श्री खेताराम जी–ये तीन युवक आपके संपर्क में आए। पारस्परिक धर्म स्वभाव की युति आपके मैत्री का अनुबंध बना और यही अनुबंध आपके वैराग्य का धरातल सिद्ध हुआ। आप चारों मित्रों ने संसार को त्याग कर संयम-पथ पर अग्रसर होने का निश्चय किया। आप चारों का निश्चय अंततः भीष्म प्रतिज्ञा सिद्ध हुआ और आप चारों मित्र तन-मन से संसार का त्याग कर दिल्ली में विराजित परम पूज्य आचार्य श्री अमरसिंह जी महाराज के चरणों में जा पहुंचे।

परम पूज्य आचार्य श्री अमरसिंह जी म. ने आप चारों विरक्त मुमुक्षु मित्रों के मन को पढ़ा और अनुभव किया कि आपका वैराग्य भावातिरेक का परिणाम नहीं है। पूज्य आचार्यश्री ने आप चारों मित्रों को साध्वोचित अध्ययन प्रारंभ कराया। कुशाग्र बुद्धि सम्पन्न होने से आप चारों मित्रों ने प्रतिक्रमण आदि आवश्यक ज्ञान स्वल्प समय में ही सीख लिया। आखिर परिजनों की अनुज्ञा प्राप्त कर वि.सं. 1908, आषाढ़ सुदी दसवीं के दिन आप चारों मित्रों ने आर्हती प्रव्रज्या में प्रवेश किया।

पूज्य श्री मोतीराम जी म. ने ज्ञान-ध्यान के क्षेत्र में स्वयं को समर्पित किया। आगम वाङमय के आप गहन ज्ञाता और सूक्ष्म व्याख्याता बने। आचार्य श्री के शिष्य समूह में आपश्री सूर्य के समान तेजस्वी मुनि बने।

परम पूज्य आचार्य श्री अमरसिंह जी म. के स्वर्गारोहण के पश्चात् पूज्य श्री रामबख्श जी म. आचार्य पाट पर मनोनीत किए गए। पर आचार्य पद पर नियुक्ति के मात्र इक्कीस दिन बाद पूज्य श्री का स्वर्गवास हो गया। तदनंतर चतुर्विध श्रीसंघ ने एकत्रित होकर परम पूज्य श्री मोतीराम जी म. को आचार्य पाट पर नियुक्त किया। वि.सं. 1939 ज्येष्ठ मास में आपश्री को आचार्य पद की प्रतीक चादर चतुर्विध संघ ने प्रदान की।

परम पूज्य आचार्य श्री मोतीराम जी म. के नेतृत्व में सकल संघ का चहुंमुखी विकास हुआ। आचार, विचार और धर्मप्रभावना के क्षेत्र में संघ ने काफी उन्नति की। आपश्री ने लगभग उन्नीस वर्षों तक श्रमण संघ को सफल नेतृत्व प्रदान किया। वि.सं. 1958 आसोज वदी द्वादशी के दिन लुधियाना में पूर्ण समाधि भाव के साथ आपश्री का स्वर्गवास हुआ।

परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री मोतीराम जी म. के पांच शिष्य थे–1. स्वामी श्री गंगाराम जी म., 2. गणावच्छेदक श्री गणपतराय जी म., 3. पूज्य श्री श्रीचंदजी म., 4. तपस्वी रत्न श्री हीरालाल जी म. एवं 5. तपस्वी श्री हर्षचंद्र जी म.।

गणावच्छेदक श्री गणपतराय जी महाराज

परम पूज्य स्वनाम धन्य गणावच्छेदक श्री गणपतराय जी म. परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री मोतीराम जी म. के द्वितीय शिष्य रत्न थे।

पूज्य प्रवर श्री गणपतराय जी म. का जन्म जिला स्यालकोट के अंतर्गत पसरूर नामक नगर (वर्तमान पाकिस्तान) में वि.सं. 1906 भाद्रपद कृष्णा तृतीया के दिन हुआ। काश्यप गोत्रीय लाला श्री गुरुदासमल जी श्रीमाल एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गौर्या देवी आपके जनक और जननी थे।

कालक्रम से आप युवा हुए। पारिवारिक धार्मिक संस्कार आपकी निजी संपत्ति बने। जैन मुनियों के निरंतर संपर्क से सामायिक-संवर की आस्था सुदृढ़ बनी। योग्य वय में समान कुल गोत्र की सुशील कन्या से आपका पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न हुआ।

युवक गणपतराय ने जवाहरात का व्यवसाय प्रारंभ किया। सुतीक्ष्ण बु र से आपने व्यवसाय में पर्याप्त प्रगति की। परंतु पौद्गलिक व्यवसाय में आप ा चित्त अधिक न रम सका। आपका जन्मना वैरागी मन धर्मध्यान और ज्ञानाराधना में ही सच्चा सुख देखता था। आखिर एक घटना ने आपके वैराग्य को सुदृढ़ बना दिया।

घटना इस प्रकार घटी–एक बार व्यावसायिक कार्य वश आपको मुकाम नारोवाल जाना पड़ा। मार्ग में बरसाती नदी पड़ती थी। जाते हुए नदी में पानी अधिक नहीं था। परंतु जब आप वापस लौटे तो पीछे बरसात होने से नदी में जल प्रवाह बढ़ गया। नदी पार कराने के लिए आपने केवट की सहायता ली। वहां अन्य दो लोग भी उपस्थित थे। उन्होंने केवट से नदी पार कराने के लिए कहा। केवट अपने अनुभव के आधार पर लोगों के हाथ पकड़कर नदी पार करवाता था और पारिश्रमिक लेता था।

आप तीनों लोगों के हाथ पकड़कर केवट ने जल में प्रवेश किया। शनैः-शनैः आप सभी नदी की मध्य धारा में पहुंचे। उसी समय जल प्रवाह अचानक तीव्र हो गया। केवट को स्वयं संभलना भी कठिन हो गया। उसने आप तीनों के हाथ छोड़ दिए और स्वयं तैर कर किनारे पर पहुंच गया।

आप तैरना नहीं जानते थे और जलप्रवाह काफी तीव्र था। आप नदी में डूबने लगे। जीवन की डोर खिसक रही थी। उस क्षण आपके हृदय में जीवन की अशाश्वतता का जीवंत बोध जागृत हुआ। आपने पलक झपकते ही निर्णय कर डाला कि यदि मेरा जीवन बच जाए तो मैं संसार का त्याग कर साधु बन जाऊंगा।

सम्यक् संकल्प के उदय के साथ जी जल के तीव्र प्रवाह ने आपको किनारे पर फैंक दिया। पैरों को धरातल प्राप्त होते ही आप जल से बाहर आ गए। घर पहुंचे और पूरी बात परिजनों से कही। आपके सुरक्षित लौट आने से तो परिजन आनंदित हुए पर आपके गृहत्याग के संकल्प से चिंतित बन गए। परंतु महापुरुषों के वज्रसंकल्प की भांति आपका संकल्प भी वज्रसंकल्प सिद्ध हुआ। अंततः परिजनों ने आपको आज्ञा प्रदान कर दी।

अमृतसर में विराजित आचार्य श्री अमरसिंह जी म. के सान्निध्य में आपश्री ने वि.सं. 1933, मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी के दिन अर्हत् धर्म की प्रव्रज्या धारण की। परम पूज्य आचार्य देव ने आपको अपने शिष्य श्री मोतीराम जी म. का शिष्य घोषित किया।

मुनिवर श्री गणपतराय जी म. दीक्षाव्रत ग्रहण के साथ ही सेवा और संयम की साधना में रम गए। आपने सेवा और संयम की उत्कृष्ट आराधना की। स्वाध्याय और तप के क्षेत्र में भी आप पीछे नहीं रहे। आपने गुरुदेव के सान्निध्य में आगम साहित्य का अध्ययन किया। अनुक्रम से तपस्या द्वारा आत्मकल्याण करते रहे।

आपश्री सूक्ष्म सूझ-बूझ के स्वामी थे। पूज्य आचार्य श्री मोतीराम जी म. भी संघीय निर्णयों पर आपश्री से चिंतन-मनन किया करते थे। अपने विशाल ज्ञान-ध्यान और सूक्ष्म सूझ से संघ में आपश्री ने काफी सुयश अर्जित किया। उसी के फलस्वरूप प्रधानाचार्य श्री सोहनलाल जी म. ने आपश्री को गणावच्छेदक पद पर नियुक्त किया।

आपश्री की संयम साधना उच्च कोटि की थी। आपके जीवन से जुड़े हुए अनेक चामत्कारिक घटनाक्रम पंजाब में विश्रुत हैं।

विक्रम सं. 1988, ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया के दिन लगभग 81 वर्ष की अवस्था में पूर्ण समाधि भाव पूर्वक आपश्री ने देह का विसर्जन किया।

आपश्री के एक शिष्य थे जिनका नाम गणावच्छेदक श्री जयराम दास जी म. था।

गणावच्छेदक स्वामी श्री जयराम दास जी महाराज

गणावच्छेदक पूज्य श्री गणपतराय जी म. के एक शिष्य हुए- परम पूज्य गणावच्छेदक स्वामी श्री जयरामदास जी म.।

स्वामी श्री जयरामदास जी म. पंजाब मुनि परंपरा के एक तेजस्वी मुनि थे। उनकी संयम साधना एवं ज्ञानाराधना उच्च कोटि की थी। अपने श्रद्धेय गुरुदेव के पश्चात् आपश्री गणावच्छेदक पद पर नियुक्त किए गए।

स्वामी श्री शालिग्राम जी महाराज

परम पूज्य महामहिम मुनिराज स्वामी श्री शालिग्राम जी म. पूज्यपाद गणावच्छेदक श्री जयराम दास जी म. के सुशिष्य थे तथा श्रमण संघ के प्रथम पट्टधर आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म. के सद्गुरु थे। संयम और साधना के शिखर पुरुष स्वामी श्री शालिग्राम जी म. का संक्षेप में जीवनवृत्त निम्न प्रकार से है-

पंजाब प्रांत में भद्लबड़ नाम का एक छोटा-सा ग्राम है। वहां पर वैश्य वंश के श्रेष्ठी श्री कालूराम जी निवास करते थे। इन्हीं सद्गृहस्थ की धर्मप्राण पत्नी ने वि.सं. 1924 में एक तेजस्वी पुत्र को जन्म दिया जो आगे चलकर स्वामी श्री शालिग्राम जी म. के नाम से जगत में विख्यात हुए।

श्री शालिग्राम जी स्वयं सहित तीन भाई थे। आपका क्रम द्वितीय था। आपकी शिक्षा-दीक्षा उत्तम ढंग से हुई। विद्यालय के आप मेधावी छात्र माने गए। बाल्यकाल से ही आपके जीवन में कुछ विशिष्ट गुण थे। आप जन्मना

करुणाशील थे। प्रत्येक प्राणी की पीड़ा आपके हृदय को प्रकंपित कर देती थी।

जब आपने युवावस्था में प्रवेश किया तो एक दिन आपके बड़े भाई का सहसा निधन हो गया। भ्रातृमृत्यु से आप विचलित बन गए। आप उक्त आघात से उभर भी नहीं पाए थे कि लघु सहोदर बीमार हो गया। त्रिदिवसीय स्वल्प-सी रुग्णता के बाद लघु सहोदर का भी देहांत हो गया। आप वज्राहत हो उठे। संसार स्वप्नवत् दिखाई देने लगा। जीवन की अशाश्वतता को बहुत निकट से आपने देखा था। लघु और ज्येष्ठ भ्राताओं का विरह आपके लिए विरक्ति का द्वार बन गया।

पुण्य का प्रभात खिला और आपको परम पूज्य गणावच्छेदक स्वामी श्री जयरामदास जी का सान्निध्य प्राप्त हो गया। पूज्यश्री के चरणों में आपश्री ने सं. 1946 में खरड़ में दीक्षा ग्रहण की। श्रद्धेय गुरुदेव ने आपको सेवा और स्वाध्याय के दो महान सूत्र प्रदान किए। गुरु प्रदत्त सूत्रों में आपश्री ने स्वयं को समग्र भावेन अनुस्यूत कर दिया। लुधियाना में रहकर आपश्री ने क्रमशः आचार्य श्री मोतीराम जी म, गणावच्छेदक श्री गणपतराय जी म., गुरुदेव श्री जयरामदास जी म. प्रभृति महामहिम मुनिराजों की सेवा-आराधना में स्वयं को समग्रतः समर्पित कर दिया। मुनिराजों की सेवा आराधना के कारण आपश्री का अधिकांश संयमी जीवन लुधियाना में ही व्यतीत हुआ।

सेवा के अतिरिक्त आपकी स्वाध्याय साधना भी काफी गहन थी। आपश्री आगम वाङ्मय के गंभीर ज्ञाता थे। ज्योतिष शास्त्र के भी आपश्री अधिकारी विद्वान थे। वि.सं. 1996 में महामहिम मुनिराज स्वामी श्री शालिग्राम जी म. ने लुधियाना नगर में पूरे समाधि भाव के साथ पंडित मृत्यु का वरण किया।

आपश्री के एक शिष्य हुए--आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी महाराज। अपने अतिजात शिष्य के जीवन निर्माण में आपश्री की सम्यक् श्रम साधना सदैव अभिनंदनीय-वंदनीय रहेगी।

अध्यात्म के आदित्य :
आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी महाराज

ध्यान योगी श्रद्धेय शिवाचार्य श्री के गुरुमह गुरुदेव अध्यात्म आदित्य आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज थे। स्वनाम धन्य आचार्य श्री विगत सदी

के सर्वाधिक तेजस्वी, वर्चस्वी और यशस्वी महामहिम मुनिराज थे। उनका व्यक्तित्व आकाश के समान विशाल और सागर के समान गंभीर था। श्रुतज्ञान राशि के वे साक्षात् स्वयंभूरमण समुद्र थे। उनकी संयम साधना उत्कृष्ट कोटि की थी। उनकी समता, तितिक्षा, संघीय निष्ठा अद्‌भुत-अद्‌भुत थी। पंचम काल में वे चतुर्थ कालीन संयम साधना के संवाहक साधक थे। उनके विशाल-विराट व्यक्तित्व और कृतित्व को शब्दों की सीमा में बांध पाना संभव नहीं है।

गुरुमह गुरुदेव श्रुत-सागर आचार्य देव श्री आत्माराम जी महाराज का जन्म वि. सं. 1939 भादों सुदी द्वादशी के दिन पंजाब प्रांत के राहों ग्राम में हुआ था। मान्यवर श्रीयुत मनसाराम जी एवं मातेश्वरी परमेश्वरी देवी को पुण्यपुंज आचार्य देव के जनक-जननी का पुण्य पद प्राप्त हुआ।

वही सूक्ष्म सा बीज विशाल वटवृक्ष होने तक की यात्रा कर सकता है जो प्रथमत: मिट्टी की अंधेरी परतों में स्वयं के अस्तित्व के खो जाने से भयभीत नहीं होता तथा कोंपल के रूप में प्रकट होकर प्रचण्ड तूफानों, विध्वंसकारी आँधियों और विकराल घन-गर्जनाओं का हंसते-मुस्काते सामना करता है। ऐसी पात्रता से युक्त बीज ही एक दिन विराट वृक्ष बनकर अनन्त नभ में स्वाभिमान का सिर उठाकर खड़ा होता है और सहस्त्रों श्रांत-क्लांत प्राणियों की सुख-शीतलता का आधार बनता है।

इसी प्रकार मानव के सम्बंध में भी समझना चाहिए। वही मानव महामानव बनता है जो संकटों की तमस निशाओं में भी आशंकित नहीं बनता है। क्रूर काल द्वारा जीवन द्वारों पर सख्त कपाट जड़ दिए जाने पर भी जीवन का स्वागत करते हुए अपनी यात्रा को अवरुद्ध नहीं बनने देता। वह पुरुष जो विकट वादियों और दुर्लंघ्य पर्वत शिखरों को अपनी जीवन यात्रा में माइल-स्टोन का मान देता है, एक दिन अनन्त नभ का संस्पर्श कर लेता है। उसकी मानवता में महामानवता आकार पाती है।

आचार्य देव के जीवन में साकार हुए महाजीवन की कथा भी ऐसी ही है। आचार्य देव जब दो वर्ष के ही थे तब मातृभगवती परमेश्वरी देवी का निधन हो गया। आठ वर्ष के हुए तो पितृदेव की छाया सिर से विदा हो गई। ग्यारह वर्ष के हुए तो इकलोता आधार वृद्धा दादी भी चल बसी। ऐसे में शिशु आत्माराम साधारण शिशु होते तो विषाद-निशा में कहां खो जाते, कोई भी न जान पाता। परन्तु वे साधारण शिशु न थे। उनके व्यक्तित्व की सूक्ष्म सी

कोंपल काल-रात्रियों और घनघनाती आंधियों में पराजय को तैयार नहीं थी। उनके साहस ने शनैः शनैः अंधेरी वादियों को लांघ दिया। किन्हीं जन्मों के दु:सह असातावेदनीय कर्मदल का उन्होंने दलन कर दिया। पुण्य के प्रभात में नवीन सूर्योदय हुआ और शिशु आत्माराम महामहिम गुरुदेव श्री शालिगराम जी महाराज के सान्निध्य में पहुंच गए।

संतदर्शन/संतसान्निध्य सृष्टि तल का सर्वोच्च सौभाग्य है। बालक आत्माराम सर्वोच्च सौभाग्य को प्राप्त हुए। फलत: उनके जीवन का त्वरित विकास हुआ। श्रद्धा, समर्पण, सद्गुरु-निष्ठा जैसे परम सद्गुणों का अक्षय कोष वे पूर्वजन्मों से ही साथ लेकर जन्मे थे। संयोग मिला और संस्कार साकार हो चले। शिशु आत्माराम की विनीतता, श्रद्धा और स्वाभाविक प्रतिभा से गुरुदेव मुनि श्री सालिगराम जी महाराज सहित समग्र मुनिमण्डल मंत्रमुग्ध हो उठा।

वि. सं. 1951 में मात्र बारह वर्ष की अवस्था में बालक आत्माराम ने संयम के क्षुर-धार पथ पर चरणन्यास किया। पाद-प्रहारों से धरा को कंपायमान करने वाले मदोन्मत्त गजराजों की विकराल चिंघाड़ें भी जैसे सिंह शावकों में भय की सूक्ष्म सी रेखाओं को भी जन्म नहीं दे पाती हैं वैसे ही संयम-पथ के विकट उपसर्ग और दु:सह परीषह भी बाल-मुनि आत्माराम को क्षणमात्र के लिए भी विचलित नहीं बना सके। 'भारण्डपक्खीव चरे अपमत्ते' रूपी श्रुत-सूत्र को जीवन सूत्र बनाकर श्रद्धेय मुनि प्रवर श्री आत्माराम जी महाराज संयमीय पथ पर ज्ञान और ध्यान के सुदृढ़ कदमों के साथ आगे और आगे बढ़ते चले गए। जैन जगत में शीघ्र ही श्रद्धेय मुनिवर की उपस्थिति को अनुभव किया जाने लगा। आपका प्रत्येक कदम चरणचिन्ह बनकर समाज का आदर्शपथ बनता गया। संस्कृत, प्राकृत, पाली, अपभ्रंश आदि प्राचीन भाषाओं का अधिकृत ज्ञान आपकी प्रज्ञा में प्रवहमान होने लगा। विद्वत्ता के क्षेत्र में मुनि समाज में उभरे शून्य को आपके अवतरण ने शून्य कर दिया। जैन, बौद्ध और वैदिक साहित्य के साथ-साथ आपने पाश्चात्य साहित्य का भी गंभीर अध्ययन किया। आपकी बुद्धि इतनी कुशाग्र थी कि आप जो भी पढ़ते थे वह आपकी स्मृति में अंकित हो जाता था। पठित पुस्तक के पदों को आप पृष्ठ और पंक्ति सहित उद्धृत किया करते थे।

श्रद्धेय प्रवर मुनि श्री आत्माराम जी महाराज की ज्ञान गंभीरता, चारित्र साधना और संघीय निष्ठा सकल जैन जगत में चर्चित होने लगी। विद्वद्

मुनिमण्डल में आपको आचार्य हरिभद्र, आचार्य सिद्धसेन दिवाकर और आचार्य हेमचंद्र की कोटि का विद्वान मुनि माना जाने लगा। आपने अठारह आगमों पर सरल हिन्दी भाषा में बृहद् व्याख्याएं लिखीं। इसके अतिरिक्त लगभग चार दर्जन अन्य स्वतंत्र ग्रन्थों की रचना की। 'तत्त्वार्थ सूत्र जैनागम समन्वय' नामक ग्रन्थ आपके अगाध आगमीय ज्ञान का गंभीर उद्घोष करता है।

वि. सं. 1989 में आप श्री को पंजाब सम्प्रदाय का उपाध्याय नियुक्त किया गया तथा वि. सं. 2003 में आप श्री पंजाब परम्परा के आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए। आपके कुशल नेतृत्व में पंजाब मुनि सम्प्रदाय का विमल सुयश दिग्-दिगन्तों में परिव्याप्त हुआ। वि. सं. 2009 में राजस्थान के सादड़ी नगर में बृहद् मुनि सम्मेलन का आयोजन हुआ। उस अवसर पर विभिन्न सम्प्रदायों के विभिन्न आचार्यों ने अपने-अपने पदों को त्याग कर आप श्री को समग्र स्थानकवासी श्रमण संघ का आचार्य चुना। अखिल भारतीय स्तर पर आप श्री की विद्वत्ता और संघ संचालन की कुशलता को एकस्वर से स्वीकृत किया गया। आप श्री के निर्देशन में विशाल श्रमण संघ का चहुंमुखी विकास हुआ। श्रमण संघ में ज्ञान और ध्यान की अभिवृद्धि हुई।

परम श्रद्धेय आचार्य देव का समग्र जीवन महनीय सद्गुणों का अक्षय कोष था। आपकी सरलता और समता पराकाष्ठा की थी। एक बार फिसल जाने से आपकी जंघा की हड्डी में तीन फ्रेक्चर हो गए। संघ के प्रमुख श्रावकों ने क्रिश्चियन अस्पताल में आपके ऑप्रेशन की व्यवस्था की। डा. वर्जन ने आपका ऑप्रेशन किया। ऑप्रेशन से पूर्व आपने डॉ. वर्जन से कहा—भाई! आप ऑप्रेशन कीजिए पर उसके लिए मुझे अचेत करने की आवश्यकता नहीं है।

डॉ. के लिए उसके जीवन का यह प्रथम केस था जहां उसे एक ऐसे पुरुष का ऑप्रेशन करना था जो पूर्ण होश में हो। आखिर डॉ. ने ऑप्रेशन किया! असह्य पीड़ा का होना स्वाभाविक था। परन्तु डॉ. ने देखा कि आचार्य देव के आनन पर पीड़ा की एक सूक्ष्म सी रेखा भी नहीं उभरी। डॉ. ऑप्रेशन करते रहे और आप श्री अपनी आत्म साधना में तल्लीन रहे।

ऑप्रेशन पूर्ण करने पर चकित-विस्मित डॉ. वर्जन ने कहा—ईसा की शांति की कथाएं आज तक मात्र पढ़ी और सुनी ही थीं, उस शांति के आज मैंने प्रत्यक्ष दर्शन किए हैं।

उस घटना के पश्चात् डॉ. वर्जन आचार्य देव के दृढ़ अनुरागी बन गए। एक प्रसंग पर आचार्य देव ने अपने दिव्य नेत्रों से देखकर जर्मन स्थित डॉ. वर्जन के घर की स्थितियों का अक्षरश: वर्णन कर दिया था। उक्त घटना सहज सिद्ध करती है कि आचार्य देव की साधना में अवधि दर्शन का प्रकाश उतर आया था। संघ में समन्वय और ज्ञान-ध्यान की अभिवृद्धि के लिए आचार्य देव ने अपना समग्र जीवन अर्पित कर दिया था। संघ के एक छोटे से मुनि को भी आचार्य देव से वही अपनत्व और सम्मान प्राप्त होता था जो प्रमुख मुनियों को प्राप्त होता था।

आचार्य देव वस्तुत: विगत शती के भगवत् तुल्य महान साधक थे। उनकी यशोगाथाओं का वर्णन सहस्रों लेखनियों से भी संभव नहीं है। पंडित जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभ भाई पटेल जैसे दिग्गज नेताओं के सिर उनके चरणों पर अवनत होते थे।

अंतिम अवस्था में जैन जगत के उस जाज्वल्यमान नक्षत्र को कैंसर रूप राहु ने ग्रस लेना चाहा। पर कैंसर ने उनके नश्वर शरीर को तो मिटा दिया, लेकिन उनकी अप्रतिम शांति और सहज प्रसन्नता को वह नहीं मिटा सका।

मिटना देह का स्वभाव है। आचार्य देव सन् 1962 में देह से मिट गए। पर उनका विदेह स्वरूप आज भी चिरंजीव है और सदैव चिरंजीव रहेगा। उनके चरणचिन्ह आज भी प्रकाश की मीनारें बनकर जगत का मार्गदर्शन कर रहे हैं।

श्रद्धेय आचार्य देव के नौ शिष्य हुए। शिष्यों की नामावली इस प्रकार है–

1. परम श्रद्धेय श्री खजानचंद जी महाराज
2. पंडित रत्न श्री ज्ञानचंद्र जी महाराज
3. पंडित रत्न श्री हेमचंद्र जी महाराज
4. श्रद्धेय पंजाब केसरी श्री ज्ञान मुनि जी महाराज
5. पूज्य श्री प्रकाशचंद जी महाराज
6. परमपूज्य श्री रत्न मुनि जी महाराज
7. ग्रामोद्धारक श्री क्रांति मुनि जी महाराज
8. उपाध्याय श्री मनोहर मुनि जी महाराज
9. पूज्य श्री मथुरा मुनि जी महाराज

उपरोक्त सभी मुनि ज्ञान-ध्यान और संयमीय साधना में एक से बढ़कर एक हुए हैं। प्रस्तुत संदर्भ में आचार्यश्री के चतुर्थ शिष्य का विशेष परिचय अभिप्रेत है।

पंजाब केसरी बहुश्रुत गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज

श्रद्धाधार आचार्य सम्राट् श्री शिव मुनि जी महाराज के सद्गुरु का नाम है—पंजाब केसरी बहुश्रुत गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज। श्रद्धेय श्री ज्ञानमुनि जी महाराज आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी महाराज के प्रमुख शिष्य थे। पूज्य गुरुदेव महान यशस्वी और पुण्यशाली मुनिराज थे। उनकी पुण्य गाथा को इसी रूप में समझा जा सकता है कि उनके गुरुदेव ने भी आचार्य पाट को सुशोभित किया और उनके शिष्य ने भी आचार्य पाट रूप उत्तम पद प्राप्त किया।

श्रद्धेय गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज का जन्म वि. सं. 1979 वैशाख सुदि 3 को अक्षय तृतीया के पावन दिवस साहोकी (पंजाब) में हुआ। मात्र 15 वर्ष की अवस्था में वि. सं. 1993 वैशाख शुक्ल त्रयोदशी के दिन रावलपिण्डी (पाकिस्तान) में आपने आचार्य देव श्री आत्माराम जी महाराज के चरणों में आर्हती प्रव्रज्या अंगीकार की।

मुनि-जीवन में प्रवेश के पश्चात् श्रद्धेय गुरुदेव ने स्वयं को सेवा और स्वाध्याय में पूर्णत: अर्पित कर दिया। परम श्रद्धेय गुरुदेव आचार्य श्री की सेवा में आप उनके साथ देहच्छाया वत् जुड़े रहे। आचार्य श्री की वैयावृत्य के साथ-साथ साहित्य सेवा में भी आप श्री अहर्निश संलग्न रहे। आचार्य श्री द्वारा रचित आगमों की बृहद् व्याख्याओं में आप श्री का श्रम भी उल्लेखनीय रहा। आचार्य श्री के निर्देशन में संघीय दायित्वों का भी आप श्री ने कुशलतापूर्वक निर्वहन किया।

संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी आदि भाषाओं के आप अधिकारी विद्वान थे। न्याय, दर्शन और व्याकरण का गंभीर ज्ञान आपने प्राप्त किया था। आचार्य हेमचन्द्र द्वारा रचित प्राकृत व्याकरण पर संस्कृत और हिन्दी भाषाओं में टीका की रचना कर विद्वद् वर्ग में आप श्री ने प्रभूत सुयश अर्जित किया था। अनुयोग द्वार सूत्र, प्रज्ञापना सूत्र, विपाक सूत्र आदि आगमों की सरल एवं विशाल व्याख्याएं आप श्री द्वारा लिखी गईं। आप श्री ने अपने जीवन काल में लगभग तीन दर्जन छोटे और बड़े ग्रन्थों की रचना कर जैन साहित्य के ज्ञान कोष में अभिवृद्धि कर ज्ञान की महान आराधना की।

श्रद्धेय गुरुदेव प्रखर वक्ता और मधुर गायक थे। आपके ओजस्वी व्याख्यानों में जनसमूह उमड़ पड़ता था। जब आप दोहा, पद या गीत गाते थे तो श्रोता परिषद मंत्रमुग्ध बनकर संगीत के अतल में डुबकियां लगाने लगती थी।

काव्य रचना में भी आपका सफल प्रवेश था। बातों ही बातों में आपश्री छन्दबद्ध रसात्मक कविताओं की रचना कर देते थे। आप द्वारा सृजित 'महावीर स्तुति' आज समग्र जैन जगत में गाई जाती है।

जैन जगत के ज्येष्ठ-श्रेष्ठ और प्रतिभा पुरुष गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज समन्वय तथा शांतिपूर्ण क्रान्त जीवन के मंगल पथ पर बढ़ने वाले धर्मनेता, विचारक, समाज सुधारक एवं आत्मदर्शन की गहराई में पहुंचे हुए साधक थे। पंजाब तथा भारत वर्ष के विभिन्न अंचलों में बसे हजारों जैन-जैनेतर परिवारों में आपके प्रति गहरी श्रद्धा एवं भक्ति है। आप श्री स्थानकवासी जैन समाज के उन गिने-चुने प्रभावशाली संतों में प्रमुख थे जिनका वाणी और व्यवहार सदा ही सत्य का समर्थक रहा है। जिनका नेतृत्व समाज को सुखद, संरक्षक और प्रगति-पथ पर बढ़ाने वाला रहा है।

23 अप्रैल 2003 को रात साढ़े ग्यारह बजे संलेखना और समाधि की अवस्था में नश्वर देह का परित्याग कर ज्ञान के गौरी शिखर श्रद्धेय गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज देवलोक के लिए प्रस्थान कर गए। आपकी विदायगी से जैन जगत में उभरा शून्य भरा जाना सहज नहीं है। अपने व्यक्तित्व और कालजयी कृतित्व के रूप में आप श्री सदैव अमर रहेंगे।

परम श्रद्धेय गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज के चार शिष्य हैं– (1) वयोवृद्ध मुनिवर श्री भगवत मुनि जी म. (2) जैन धर्म दिवाकर श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर श्री शिव मुनि जी म. (3) पूज्य श्री सरपंच मुनि जी महाराज एवं (4) श्री सौरभ मुनि जी म.।

आचार्य श्री की शिष्य-संपदा

परम पूज्य शिवाचार्य भगवन् के 6 शिष्य हैं–(1) श्री शिरीष मुनि जी म. (श्रमण संघीय मंत्री) (2) श्री शुभम मुनि जी म. (3) श्री श्रीयश मुनि जी म. (4) श्री सुव्रत मुनि जी म. (5) श्री शमित मुनि जी म. एवं (6) श्री शालीन मुनि जी म.।

आपश्री के दो प्रशिष्य हैं–(1) श्री निशांत मुनि जी म. एवं श्री निरंजन मुनि जी म.।

परम पूज्य शिवाचार्य भगवन् के सभी शिष्य-प्रशिष्य स्वाध्यायशील और विनीत हैं। तप, स्वाध्याय और ध्यान में समर्पित हैं। आचार्य श्री की लोकमंगलयात्रा में उनके अनुगामी हैं।

श्रमणसंघ नायक ध्यानयोगी आचार्य सम्राट् श्री शिव मुनि जी म.

वर्षावास तालिका

क्रम	वर्षावास स्थल	(राज्य)	ई. सन्
	(अध्ययनशील प्रवचन प्रभावक मुनि के रूप में)		
1.	मालेरकोटला	(पंजाब)	1972
2.	राहों	,,	1973
3.	पटियाला	,,	1974
4.	चण्डीगढ़	,,	1975
5.	खन्ना	,,	1976
6.	राजपुरा	,,	1977
7.	बरनाला	,,	1978
8.	पंचकुला	(हरियाणा)	1979
9.	चण्डीगढ़	(पंजाब)	1980
10.	रोपड़	,,	1981
11.	मेरठ	(उत्तर प्रदेश)	1982
12.	वीर नगर	(दिल्ली)	1983
13.	जयपुर	(राजस्थान)	1984
14.	जोधपुर	,,	1985
15.	पूना	(महाराष्ट्र)	1986
	श्रमण संघीय 'युवाचार्य' के रूप में		
16.	खार, मुंबई	(महाराष्ट्र)	1987
17.	सिकंदराबाद	(आंध्र प्रदेश)	1988
18.	बोलारम	,,	1989
19.	रायचूर		1990

20.	बैंगलोर	(कर्नाटक)	1991
21.	धोबी पेठ, चेन्नई	(तमिलनाडु)	1992
22.	वेपेरी चेन्नई	(तमिलनाडु)	1993
23.	पूना	(महाराष्ट्र)	1994
24.	अहमदनगर	,,	1995
25.	मुंबई खार	,,	1996
26.	नासिक	,,	1997
27.	औरंगाबाद	,,	1998

चतुर्थ पट्टधर 'आचार्य सम्राट्' के रूप में

28.	जालना	(महाराष्ट्र)	1999
29.	सूरत	(गुजरात)	2000
30.	वीर नगर	(दिल्ली)	2001
31.	लुधियाना	(पंजाब)	2002
32.	मालेर कोटला	,,	2003
33.	चण्डीगढ़	,,	2004
34.	जालंधर	,,	2005
35.	जम्मू	(कश्मीर)	2006

❖❖❖

जैन धर्म दिवाकर, आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी महाराज : शब्द चित्र

जन्म भूमि	: राहों
पिता	: लाला मनसारामजी चौपड़ा
माता	: श्रीमती परमेश्वरी देवी
वंश	: क्षत्रिय
जन्म	: विक्रम सं. 1939 भाद्र सुदि वामन द्वादशी (12)
दीक्षा	: वि.सं. 1951 आषाढ़ शुक्ला 5
दीक्षा स्थल	: बनूड़ (पटियाला)
दीक्षा गुरु	: मुनि श्री सालिगराम जी महाराज
विद्यागुरु	: आचार्य श्री मोतीराम जी महाराज (पितामह गुरु)
साहित्य सृजन	: अनुवाद, संकलन-सम्पादन-लेखन द्वारा लगभग 60 ग्रन्थ
आगम अध्यापन	: शताधिक साधु-साध्वियों को।
कुशल प्रवचनकार	: तीस वर्ष से अधिक काल तक।
आचार्य पद	: पंजाब श्रमण संघ, वि.सं. 2003, लुधियाना।
आचार्य सम्राट् पद	: अ.भा. श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ सादड़ी (मारवाड़) 2009 वैशाख शुक्ला
संयम काल	: 67 वर्ष लगभग।
स्वर्गवास	: वि.सं. 2019 माघवदि 9 (ई. 1962) लुधियाना।
आयु	: 79 वर्ष 8 मास, ढाई घंटे।
विहार क्षेत्र	: पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली आदि।
स्वभाव	: विनम्र-शान्त-गंभीर प्रशस्त विनोद।
समाज कार्य	: नारी शिक्षण प्रोत्साहन स्वरूप कन्या महाविद्यालय एवं पुस्तकालय आदि की प्रेरणा।

जैनभूषण, पंजाब केसरी, बहुश्रुत, महाश्रमण, गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी महाराज : शब्द चित्र

जन्म भूमि	:	*साहोकी (पंजाब)*
जन्म तिथि	:	*वि.सं. 1979 वैशाख शुक्ल 3 (अक्षय तृतीया)*
दीक्षा	:	*वि.सं 1993 वैशाख शुक्ल 13*
दीक्षा स्थल	:	*रावलपिंडी (वर्तमान पाकिस्तान)*
गुरुदेव	:	*आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी महाराज*
अध्ययन	:	*प्राकृत, संस्कृत उर्दू, फारसी, गुजराती, हिन्दी, पंजाबी, अंग्रेजी आदि भाषाओं के जानकार तथा दर्शन एवं व्याकरण शास्त्र के प्रकाण्ड पण्डित, भारतीय धर्मों के गहन अभ्यासी।*
सृजन	:	*हेमचन्द्राचार्य के प्राकृत व्याकरण पर भाष्य, अनुयोगद्वार, प्रज्ञापना आदि कई आगमों पर बृहद् टीका लेखन तथा तीस से अधिक ग्रन्थों के लेखक।*
प्रेरणा	:	*विभिन्न स्थानकों, विद्यालयों, औषधालयों, सिलाई केन्द्रों के प्रेरणा स्रोत।*
विशेष	:	*आपश्री निर्भीक वक्ता, सिद्धहस्त लेखक एवं कवि थे। समन्वय तथा शान्तिपूर्ण क्रान्त जीवन के मंगलपथ पर बढ़ने वाले धर्मनेता, विचारक, समाज सुधारक एवं आत्मदर्शन की गहराई में पहुंचे हुए साधक थे। पंजाब तथा भारत के विभिन्न अंचलों में बसे हजारों जैन-जैनेतर परिवारों में आपके प्रति गहरी श्रद्धा एवं भक्ति है। आप स्थानकवासी जैन समाज के उन गिने-चुने प्रभावशाली संतों में प्रमुख थे जिनका वाणी-व्यवहार सदा ही सत्य का समर्थक रहा है। जिनका नेतृत्व समाज को सुखद, संरक्षक और प्रगति पथ पर बढ़ाने वाला रहा है।*
स्वर्गारोहण	:	*मण्डी गोविन्दगढ़ (पंजाब)* *23 अप्रैल, 2003 (रात 11.30 बजे)*

आचार्य सम्राट् श्री शिवमुनि जी महाराज : शब्द चित्र

जन्म स्थान	:	मलौटमंडी, जिला-फरीदकोट (पंजाब)
जन्म	:	18 सितम्बर, 1942 (भादवा सुदी सप्तमी)
माता	:	श्रीमती विद्यादेवी जैन
पिता	:	स्व. श्री चिरंजीलाल जी जैन
वर्ण	:	वैश्य ओसवाल
वंश	:	भाबू
दीक्षा	:	17 मई, 1972, (समय 12.00 बजे)
दीक्षा स्थान	:	मलौटमण्डी (पंजाब)
दीक्षा गुरु	:	बहुश्रुत, जैनागमरत्नाकर, राष्ट्रसंत श्रमणसंघीय सलाहकार श्री ज्ञानमुनि जी महाराज
शिष्य-सपंदा	:	श्री शिरीष मुनि जी, श्री शुभममुनि जी श्री श्रीयशमुनि जी, श्री सुव्रतमुनि जी, श्री शमितमुनि जी, श्री शालीन मुनि जी
प्रशिष्य	:	श्री निशांत मुनि जी श्री निरंजन मुनि जी
युवाचार्य पद	:	13 मई, 1987 पूना, महाराष्ट्र
आचार्य पदारोहण	:	9 जून, 1999 अहमदनगर, महाराष्ट्र
चादर महोत्सव	:	7 मई, 2001, ऋषभ विहार, दिल्ली में
अध्ययन	:	डबल एम.ए., पी-एच.डी., डी.लिट्. आगमों का गहन गंभीर अध्ययन, ध्यान-योग-साधना में विशेष शोध कार्य

श्रमणश्रेष्ठ कर्मठयोगी, मंत्री श्री शिरीष मुनि जी महाराज : शब्द चित्र

जन्म स्थान	:	नाई, उदयपुर, (राजस्थान)
जन्मतिथि	:	19 फरवरी, 1964
माता	:	श्रीमती सोहनबाई
पिता	:	श्रीमान ख्यालीलाल जी कोठारी
वंश, गौत्र	:	ओसवाल, कोठारी
दीक्षार्थ प्रेरणा	:	दादीजी मोहन बाई कोठारी द्वारा
दीक्षा तिथि	:	7 मई, 1990
दीक्षा स्थल	:	यादगिरी (कर्नाटक)
गुरु	:	श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर आचार्य सम्राट् श्री शिवमुनिजी महाराज
शिक्षा	:	एम. ए. (हिन्दी साहित्य)
अध्ययन	:	आगमों का गहन गंभीर अध्ययन, जैनेतर दर्शनों में सफल प्रवेश तथा हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, प्राकृत, मराठी, गुजराती भाषाविद्।
उपाधि	:	श्रमण संघीय मंत्री, साधुरत्न, श्रमणश्रेष्ठ कर्मठयोगी
शिष्य सम्पदा	:	श्री निशांत मुनि जी श्री निरंजन मुनि जी
विशेष प्रेरणादायी कार्य	:	ध्यान योग साधना शिविरों का संचालन, बाल-संस्कार शिविरों और स्वाध्याय-शिविरों के कुशल संचालक। आचार्य श्री के अनन्य सहयोगी।

आत्म-शिव साहित्य

आगम संपादन :

(व्याख्याकार आचार्य श्री आत्माराम जी म.)	*सहयोग राशि*
* श्री आचारांग सूत्रम् (भाग एक)	450.00
* श्री आचारांग सूत्रम् (भाग दो)	450.00
* श्री स्थानांग सूत्रम् (भाग एक)	500.00
* श्री स्थानांग सूत्रम् (भाग दो)	400.00
* श्री उपासकदशांग सूत्रम्	300.00
* श्री अन्तकृद्दशांग सूत्रम्	300.00
* श्री अन्तकृद्दशांग सूत्रम् (संक्षिप्त संस्करण)	50.00
* श्री अनुत्तरौपपातिक सूत्रम्	100.00
* श्री विपाक सूत्रम्	500.00
* श्री निरयावलिका सूत्रम् (कल्पिका-कल्पावतसिका-पुष्पिका-पुष्पचूलिका-वृष्णिदशा)	300.00
* श्री उत्तराध्ययन सूत्रम् (भाग एक)	300.00
* श्री उत्तराध्ययन सूत्रम् (भाग दो)	300.00
* श्री उत्तराध्ययन सूत्रम् (भाग तीन)	300.00
* श्री दशवैकालिक सूत्रम्	300.00
* श्री नन्दीसूत्रम्	400.00
* श्री दशाश्रुतस्कन्ध सूत्रम्	200.00
* श्री आवश्यक सूत्रम् (श्रावक प्रतिक्रमण)	30.00

साहित्य (हिन्दी)

* श्री तत्वार्थ सूत्र जैनागम समन्वय	(समन्वय प्रधान ग्रन्थ)	100.00
* श्री जैनतत्वकलिका विकास	(जैन तत्व विद्या)	75.00
* जैनागमों में अष्टांग योग	(जैन योग)	60.00

*	भारतीय धर्मो में मोक्ष विचार	(शोध प्रबन्ध)	220.00
*	ध्यान : एक दिव्य साधना	(ध्यान पर शोध-पूर्ण ग्रन्थ)	120.00
*	ध्यान-पथ	(ध्यान सम्बन्धी चिन्तन)	60.00
*	योग मन संस्कार	(निबन्ध)	50.00
*	जिनशासनम्	(जैन तत्व मीमांसा)	40.00
*	पढमं नाणं	(चिन्तनपरक निबन्ध)	50.00
*	अहासुहं देवाणुप्पिया	(अन्तगडसूत्र प्रवचन)	100.00
*	शिव-धारा	(प्रवचन)	50.00
*	अन्तर्यात्रा	"	50.00
*	नदी नाव संजोग	"	60.00
*	अनुश्रुति	"	35.00
*	मा पमायए	"	60 00
*	अमृत की खोज	"	40.00
*	आ घर लौट चलें	"	60.00
*	संबुज्झह किं ण बुज्झह	"	50.00
*	सद्गुरु महिमा	"	50.00
*	प्रकाशपुञ्ज महावीर	(संक्षिप्त महावीर जीवन-वृत्त)	20.00
*	अध्यात्म-सार	(आचारांग सूत्र पर एक बृहद् आलेख)	60.00
*	आत्म-ध्यान साधना कोर्स	(सचित्र ध्यान-योग बिन्दु)	10.00
*	शिवाचार्य प्रवचन गीत		10.00

साहित्य (अंग्रेजी)

* दी जैना पाथवे टू लिब्रेशन
* दी फण्डामेन्टल प्रिंसीपल्स ऑफ जैनिज्म
* दी डॉक्ट्रीन ऑफ द सेल्फ इन जैनिज्म
* दी जैना ट्रेडिशन
* दी डॉक्ट्रीन ऑफ लिब्रेशन इन इंडियन रिलीजन्स विथ रेफरेंस टू जैनिज्म
* स्परीच्युल प्रक्टेसीज़ ऑफ लॉर्ड महावीरा
* रिटर्न टू सैल्फ